राजकमल पेपरबैक्स

3

देवकीनन्दन खत्री

चन्द्रकान्ता सन्तति

चन्द्रकान्ता सन्तति-3

बाबू देवकीनन्दन खत्री

जन्म : 18 जून 1861 (आषाढ़ कृष्ण 7, संवत् 1918)। **जन्मस्थान** : मुजफ्फरपुर (बिहार)।

बाबू देवकीनन्दन खत्री के पिता लाला ईश्वरदास के पुरखे मुल्तान और लाहौर में बसते-उजड़ते हुए काशी आकर बस गये थे। इनकी माता मुजफ्फरपुर के रईस बाबू जीवनलाल महता की बेटी थीं। पिता अधिकतर ससुराल में ही रहते थे। इसी से इनके बाल्यकाल और किशोरावस्था के अधिसंख्य दिन मुजफ्फरपुर में ही बीते।

हिन्दी और संस्कृत में प्रारम्भिक शिक्षा भी ननिहाल में हुई। फारसी से स्वाभाविक लगाव था, पर पिता की अनिच्छावश शुरू में उसे नहीं पढ़ सके। इसके बाद 18 वर्ष की अवस्था में, जब गया स्थित टिकारी राज्य से सम्बद्ध अपने पिता के व्यवसाय में स्वतन्त्र रूप से हाथ बँटाने लगे तो फारसी और अंग्रेजी का भी अध्ययन किया। 24 वर्ष की आयु में व्यवसाय सम्बन्धी उलट-फेर के कारण वापस काशी आ गये और काशी नरेश के कृपापात्र हुए। परिणामतः मुसाहिब बनना तो स्वीकार न किया, लेकिन राजा साहब की बदौलत चकिया और नौगढ़ के जंगलों का ठेका पा गये। इससे उन्हें आर्थिक लाभ भी हुआ और वे अनुभव भी मिले जो उनके लेखकीय जीवन में काम आये। वस्तुतः इसी काम ने उनके जीवन की दिशा बदली।

स्वभाव से मस्तमौला, यारबाश किस्म के आदमी और शक्ति के उपासक। सैर-सपाटे, पतंगबाजी और शतरंज के बेहद शौकीन। बीहड़ जंगलों, पहाड़ियों और प्राचीन खँडहरों से गहरा, आत्मीय लगाव रखनेवाले। विचित्रता और रोमांचप्रेमी। अद्भुत स्मरण-शक्ति और उर्वर, कल्पनाशील मस्तिष्क के धनी।

चन्द्रकान्ता पहला ही उपन्यास, जो सन् 1888 में प्रकाशित हुआ। सितम्बर 1898 में लहरी प्रेस की स्थापना की। 'सुदर्शन' नामक मासिक पत्र भी निकाला। चन्द्रकान्ता और चन्द्रकान्ता सन्तति (छः भाग) के अतिरिक्त देवकीनन्दन खत्री की अन्य रचनाएँ हैं : नरेन्द्र-मोहिनी, कुसुम कुमारी, वीरेन्द्र वीर या कटोरा-भर खून, काजल की कोठरी, गुप्त गोदना तथा भूतनाथ (प्रथम छः भाग)।

निधन : 1 अगस्त, सन् 1913।

देवकीनन्दन खत्री

चन्द्रकान्ता सन्तति

3

राजकमल पेपरबैक्स

राजकमल पेपरबैक्स में
पहला संस्करण : 1987

© राजकमल प्रकाशन प्रा. लि.

राजकमल पेपरबैक्स : उत्कृष्ट साहित्य के जनसुलभ संस्करण

राजकमल प्रकाशन प्रा. लि.,
8, नेताजी सुभाष मार्ग,
नयी दिल्ली-110002
से प्रकाशित

मुद्रक :

कोणार्क प्रेस
लक्ष्मी नगर, दिल्ली-९२

मूल्य :
प्रति खण्ड रु. 12.00
चन्द्रकान्ता सहित
पूरा सैट रु. 84.00

आवरण पारदर्शी : मोहन गुप्त

CHANDRAKANTA SANTATI
Novel *by* Devaki Nandan Khatri

नौवाँ भाग

पहिला बयान

अब वह मौका आ गया है कि हम अपने पाठकों को तिलिस्म के अन्दर ले चलें और वहाँ की सैर करावें, क्योंकि कुँअर इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह मायारानी के तिलिस्मी बाग के चौथे दर्जे में जा विराजे हैं, जिसे एक तरह पर तिलिस्म का दरवाजा कहना चाहिए। ऊपर के भाग में यह लिखा जा चुका है कि भैरोसिंह को रोहतासगढ़ की तरफ और राजा गोपालसिंह और देवीसिंह को काशी की तरफ रवाना करने बाद इन्द्रजीतसिंह, आनन्दसिंह, तेजसिंह, तारासिंह, शेरसिंह और लाडिली को साथ लिये हुए कमलिनी तिलिस्मी बाग़ के चौथे दर्जे में जा पहुँची और उसने राजा गोपालसिंह के कहे अनुसार देवमन्दिर में, जिसका हाल आगे चलकर खुलेगा, डेरा डाला। हमने कमलिनी और कुँअर इन्द्रजीतसिंह वगैरह को दारोगावाले मकान के पास के एक टीले पर ही पहुँचाकर छोड़ दिया था, और यह नहीं लिखा कि वे लोग तिलिस्मी बाग के चौथे दर्जे में किस राह से पहुँचे या वह रास्ता किस प्रकार का था। खैर, हमारे पाठक महाशय ऐयारों के साथ कई दफे उस तिलिस्मी बाग में जाँयगे, इसलिए वहाँ के रास्ते का हाल उनसे छिपा न रह जायगा।

तिलिस्मी बाग का चौथा दर्जा अद्भुत और भयानक रस का खजाना था। वहाँ का पूरा हाल तो तब मालूम होगा, जब तिलिस्म बखूबी टूट जायगा, मगर जाहिरी हाल, जिसे कुँअर इन्द्रजीतसिंह और उनके साथियों ने वहाँ पहुंचने के साथ ही देखा, हम इस जगह लिख देते हैं :

उस हिस्से में फूल-फल और पत्ते की किस्म में से ऐसा कुछ विशेष न था जिससे हम उसे बाग कहते। हाँ, चारों तरफ़ तरह-तरह की इमारतें जरूर बहुतायत से बनी हुई थीं, जिनका हाल हम उस देवमन्दिर को मध्य

मानकर लिखते हैं, जिसमें इस समय हमारे दोनों कुमार और दोनों नेकदिल खैरख्वाह और मुहब्बत का नमूना दिखानेवाली नायिकाएँ तथा उनके साथी लोग विराज रहे हैं। जैसाकि नाम से समझा जाता है, वह देवमन्दिर वास्तव में कोई मन्दिर या शिवालय नहीं था, वह केवल एक मकान सुर्ख पत्थर का बना हुआ था, जिसमें दस हाथ की कुर्सी के ऊपर चालीस खम्भों का केवल एक अपूर्व कमरा था, जिसके बीचोबीच में दस हाथ के घेरे का एक गोल खम्भा था और उस पर तरह-तरह की तस्वीरें बनी हुई थीं। बस इसके अतिरिक्त देवमन्दिर में और कोई बात न थी। उस देवमन्दिरवाले कमरे में जाने के लिए जाहिर में कोई भी रास्ता न था, इसके सिवाय एक बात यह और थी कि कमरा चारों तरफ़ से परदेनुमा ऊँची दीवारों से ऐसा घिरा हुआ था कि उसके अन्दर रहनेवाले आदमियों को बाहर से कोई देख नहीं सकता था। उस देवमन्दिर के चारों तरफ थोड़ी-सी जमीन में बाग की पक्की क्यारियाँ बनी हुई थीं और उनमें तरह-तरह के पेड़ लगे हुए थे, मगर ये पेड़ सच्चे न थे, बल्कि एक प्रकार की धातु के बने हुए थे और असली मालूम होने के लिए उन पर तरह-तरह के रंग चढ़े हुए थे, यदि इस ख्याल से उसे हम बाग कहें तो हो भी सकता है, और ताज्जुब नहीं कि इन्हीं पेड़ों की वजह से वह हिस्सा बाग के नाम से पुकारा भी जाता हो। उस नकली बाग में दो-दो आदमियों के बैठने लायक कई कुर्सियाँ भी जगह-जगह बनी हुई थीं।

उन क्यारियों के चारों तरफ छोटी-छोटी कई कोठरियाँ और मकान भी थे, जिनका अलग-अलग हाल लिखना इस समय आवश्यक नहीं, मगर उन चार मकानों का हाल लिखे बिना काम न चलेगा, जोकि देवमन्दिर या यों कहिए कि इस नकली बाग के चारों तरफ, एक-दूसरे के मुक़ाबले में बने हुए थे, और जिन चारों ही मकानों के बगल में एक कोठरी, और कोठरी से थोड़ी दूर के फासले पर एक-एक कूआँ भी बना हुआ था।

पूरब तरफवाले मकान के चारों तरफ पीतल की ऊँची दीवार थी, इसलिए उस मकान का केवल ऊपरवाला हिस्सा दिखायी देता था, और कुछ मालूम नहीं होता था कि उसके अन्दर क्या है, हाँ, छत के ऊपर एक लोहे का पतला महराबदार खम्भा निकला हुआ जरूर दिखायी दे रहा था, जिसका दूसरा सिरा उसके पासवाले कूएँ के अन्दर गया हुआ था। उस मकान के चारों तरफ जो पीतल की दीवार थी, उसी में एक बन्द दरवाजा भी दिखायी देता था, जिसके दोनों तरफ़ पीतल के दो-दो आदमी हाथ में नंगी तलवारें लिये खड़े थे।

पश्चिम तरफ़वाले मकान के दरवाज़े पर हड्डियों का एक बड़ा ढेर था,

और उसके बीचोबीच में लोहे की एक जंजीर गड़ी थी, जिसका दूसरा सिरा उसके पासवाले कूएँ के अन्दर गया हुआ था।

उत्तर तरफ़वाला मकान गोलाकार स्याह पत्थर का बना हुआ था, और उसके चारों तरफ चर्खियाँ और तरह-तरह के कल-पुर्ज़े लगे हुए थे। इसी मकान के पासवाले कूएँ के अन्दर मायारानी अपने पति का काम तमाम करने के लिए गयी थी।

दक्खिन की तरफ़वाले मकान के ऊपर चारों कोनों पर चार बुर्जियाँ थीं, और उनके ऊपर लोहे का जाल पड़ा हुआ था। उन चारों बुर्जियों पर (जाल के अन्दर) चार मोर न मालूम किस चीज के बने हुए थे, जो हर वक्त नाचा करते थे।

आज उसी देवमन्दिर के कमरे में दोनों कुमार, कमलिनी, लाडिली और ऐयार लोग बैठे आपुस में कुछ बातें कर रहे हैं। रिक्तगन्थ अर्थात् किसी के खून से लिखी हुई किताब, कुँअर इन्द्रजीतसिंह के हाथों में है, और वह बड़े प्रेम से उसकी ज़िल्द देख रहे हैं, मगर अभी तक उस किताब को पढ़ने की नौबत नहीं आयी है। कमलिनी मुहब्बत की निगाह से इन्द्रजीतसिंह को देख रही है, और उसी तरह लाडिली भी छिपी निगाहें आनन्दसिंह पर डाल रही है।

कमलिनी : (इन्द्रजीतसिंह से) अब आपको चाहिए कि जहाँ तक जल्द हो सके, यह रिक्तगन्थ पढ़ जाँय।

इन्द्रजीत : हाँ, मैं भी यही चाहता हूँ, परन्तु पहिले उन कामों से छुट्टी पा लेना चाहिए, जिनके लिए तेजसिंह चाचा और ऐयारों को हम लोग यहाँ तक साथ लाये हैं।

कमलिनी : मैं इन लोगों को केवल रास्ता दिखाने के लिए यहाँ तक लायी थी, सो काम तो हो ही चुका, अब इन लोगों को यहाँ से जाना और कोई नया काम करना चाहिए, और आपको भी रिक्तगन्थ पढ़ने बाद तिलिस्म तोड़ने में हाथ लगा देना चाहिए।

इन्द्रजीत : राजा गोपालसिंह ने कहा था कि किशोरी और कामिनी को छुड़ाकर जब हम आ जाँय, तब तिलिस्म तोड़ने में हाथ लगाना। इसके अतिरिक्त तेजसिंह चाचा से मुझे राजा गोपालसिंह के छुड़ाने का हाल सुनना भी बाक़ी है।

तेज : उस बारे में कुछ हाल तो मैं आपसे कह भी चुका हूँ?

आनन्द : जी हाँ, वहाँ तक कह चुके हैं, जब (कमलिनी की तरफ़ देखकर) ये चण्डूल की सूरत बनकर आपके पास आयी थीं, मगर यह न मालूम हुआ कि इन्होंने हरनामसिंह, बिहारीसिंह और मायारानी के कान में क्या

कहा, जिसे सुन सभों की अवस्था बदल गयी थी। जहाँ तक मैं समझता हूँ, शायद इन्होंने राजा गोपालसिंह के ही बारे में कोई इशारा किया होगा।

कमलिनी : जी हाँ, यही बात है। राजा गोपालसिंह के कैद करने में हरनामसिंह और बिहारीसिंह ने भी मायारानी का साथ दिया था और धनपत इस काम का जड़ है।

इन्द्रजीत : (हँसकर) धनपति इस काम 'का' जड़ है !

कमलिनी : जी हाँ, मैं बोलने में भूलती नहीं, धनपति वास्तव में औरत नहीं बल्कि मर्द है। उसकी खूबसूरती ने मायारानी को फँसा लिया और उसी की मुहब्बत में पड़कर उसने यह अनर्थ किया था। ईश्वर ने धनपति का चेहरा ऐसा बनाया है कि वह मुद्दत तक औरत बनकर रह सकता है, एक तो वह नाटा है, दूसरे अठारह वर्ष की अवस्था हो जाने पर भी दाढ़ी-मोंछ की निशानी नहीं आयी। लेकिन जनानी सूरत होने पर भी उसमें ताक़त बहुत है।

इन्द्रजीत : (ताज्जुब से) यह तो एक नयी बात तुमने सुनायी। अच्छा तब ?

लाडिली : क्या धनपति मर्द है ?

कमलिनी : हाँ, और यह हाल मायारानी, बिहारीसिंह और हरनामसिंह के सिवाय और किसी को मालूम नहीं है। कुछ दिन बाद मुझे मालूम हो गया था, मगर आज के पहिले यह हाल मैंने भी किसी से नहीं कहा था। इसी तरह राजा गोपालसिंह का हाल भी उन चारों के सिवाय और कोई नहीं जानता था, और मुझे भी इत्तिफाक ही से इस बात का पता लग गया। उन लोगों को यही विश्वास था कि राजा गोपालसिंह का हाल सिवाय हम चारों के और कोई भी नहीं जानता, और जब कोई पाँचवाँ आदमी उस भेद को जानेगा तो बेशक हम चारों की जान जायगी, और यही सबब उस समय उन लोगों की बदहवासी का था, जब मैंने चण्डूल बनकर, उन तीनों के कानों में पते की बात कही थी, मगर उस समय इसके साथ-साथ ही मैंने यह भी कह दिया था कि राजा गोपालसिंह का हाल हजारों आदमी जान गये हैं और राजा बीरेन्द्रसिंह के लश्कर में भी यह बात मशहूर हो गयी है।

आनन्द : ठीक है, मगर बिहारीसिंह ने मायारानी से यह हाल क्यों नहीं कहा ?

कमलिनी : इसका एक खास सबब है।

इन्द्रजीत : वह क्या ?

कमलिनी : बिहारी और हरनाम ने मायारानी के दो प्रेमी-पात्रों का खून किया है, जिसका हाल मायारानी को भी मालूम नहीं है, उसका भी

इशारा मैंने उन दोनों के कानों में किया था।

इन्द्रजीत : (हँसकर) तुम्हारी बहिन बड़ी ही शैतान है ! मगर देखा चाहिए, तुम कैसी निकलती हो, खून का साथ देती हो या नहीं !

कमलिनी : (हाथ जोड़कर) बस, माफ़ कीजिए, ऐसा कहना हम दोनों बहिनों (लाडिली की तरफ इशारा करके) के लिए उचित नहीं ! इसका एक सबब भी है।

इन्द्रजीत : वह क्या ?

कमलिनी : मेरे पिता की दो शादियाँ हुई थीं। मैं और लाडिली एक माँ के पेट से हुईं और कमबख्त मायारानी दूसरी माँ के पेट से, इसलिए हम दोनों का खून उसके संग नहीं मिल सकता।

इन्द्रजीत : (हँसकर) शुक्र है। ख़ैर, यह कहो कि चण्डूल बनने के बाद तुमने क्या किया ?

कमलिनी : चण्डूल बनने के बाद मैंने नानक को बाग के बाहर कर दिया और तेजसिंह को राजा गोपालसिंह के पास ले जाकर, दोनों की मुलाकात करायी, इसके बाद वहाँ रहने का स्थान, राजा गोपालसिंह के छुड़ाने की तरकीब और उन्हें साथ लेकर बाग के बाहर हो जाने का रास्ता बताकर, मैं तेजसिंह से बिदा हुई, और आप लोगों को क़ैद से छुड़ाने का उद्योग करने लगी। इसके बाद जोकुछ हुआ आप जान ही चुके हैं। हाँ, राजा गोपालसिंह को छुड़ाने के समय तेजसिंह ने क्या-क्या किया, सो आप इन्हीं से पूछिए।

अब पाठक समझ ही गये होंगे कि राजा गोपालसिंह को कैद से छुड़ाने-वाले तेजसिंह थे, और जब राजा गोपालसिंह को मारने के लिए मायारानी कैदखाने में गयी थीं, तो तेजसिंह ही ने आवाज़ देकर उसे परेशान कर दिया था। दोनों कुमारों के पूछने पर तेजसिंह ने अपना पूरा-पूरा हाल बयान किया, जिसे सुनकर कुमार बहुत प्रसन्न हुए।

दूसरा बयान

ऐयारों को जो कुँअर इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह के साथ थे, बाग के चौथे दर्जे के देवमन्दिर में आने-जाने का रास्ता बताकर कमलिनी ने तेजसिंह को रोहतासगढ़ जाने के लिए कहा और बाकी ऐयारों को अलग-अलग काम सुपुर्द करके दूसरी तरफ बिदा किया।

इस बाग के चौथे दर्जे की इमारत का हाल हम ऊपर लिख आये हैं और यह भी लिख आये हैं कि वहाँ असली फूल-पत्तों का नाम-निशान भी न था।

यहाँ की ऐसी अवस्था देखकर कुँअर इन्द्रजीतसिंह ने कमलिनी से पूछा, "राजा गोपालसिंह ने कहा था कि 'चौथे दर्जे में मेवे बहुतायत से हैं, खाने-पीने की तकलीफ न होगी' मगर यहाँ तो कुछ भी दिखायी नहीं देता ! हम लोगों को यहाँ कई दिनों तक रहना होगा, कैसे काम चलेगा ?" इसके जवाब में कमलिनी ने कहा, "आपका कहना ठीक है और राजा गोपालसिंह ने भी ग़लत नहीं कहा। यहाँ मेवों के पेड़ नहीं हैं, मगर (हाथ का इशारा करके) उस तरफ थोड़ी-सी जमीन मजबूत चहारदीवारी से घिरी हुई है, जिसे आप मेवों का बाग़ कह सकते हैं। उसको कोई सींचता या दुरुस्त नहीं करता है, बाहर से एक नहर दीवार तोड़कर उसके अन्दर पहुँचायी गयी है, और उसी की तरावट से वह बाग सूखने नहीं पाता। कई पेड़ पुराने होकर मर जाते हैं, और कई नये पैदा होते हैं, और इस तिलिस्मी बाग का राजा दस-पन्द्रह वर्ष पीछे उसकी सफाई करा दिया करता है। मैं वहाँ जाने का रास्ता आपको बता दूंगी !"

ऐयारों को बिदा करने बाद ही कमलिनी भी लाडिली को लेकर दोनों कुमारों से यह कहकर बिदा हुई – "कई ज़रूरी काम पूरा करने के लिए मैं जाती हूँ, परसों यहाँ आऊँगी।"

तीन दिन तक कुँअर इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह देवमन्दिर में रहे। जब आवश्यकता होती, मेवोंवाले बाग में चले जाते, और पेट भर-कर फिर उस देवमन्दिर में चले आते। इस बीच में दोनों भाइयों ने मिलकर 'रिक्तगन्थ' (खून से लिखी किताब) भी पढ़ डाली, मगर रिक्तगन्थ में जो भी बातें लिखी थीं, वे सब-की-सब बखूबी समझ में न आयीं क्योंकि उसमें बहुत से शब्द इशारे के तौर पर लिखे थे, जिनका भेद जाने बिना असल बात का पता लगाना बहुत ही कठिन था, तथापि तिलिस्म के कई भेदों और रास्तों का पता उन दोनों को मालूम हो गया, और बाकी के विषय में निश्चय किया कि कमलिनी से मुलाकात होने पर उन शब्दों का अर्थ पूछेंगे, जिनके जाने बिना कोई काम नहीं चलता।

यद्यपि कुँअर इन्द्रजीतसिंह किशोरी के लिए और आनन्दसिंह कामिनी के लिए बेचैन हो रहे थे, मगर कमलिनी और लाडिली की भोली सूरत के साथ-साथ उनके अहसानों ने भी दोनों कुमारों के दिलों को पूरी तरह से अपने काबू में कर लिया था, फिर भी किशोरी और कामिनी की मुहब्बत के खयाल से दोनों कुमार अपने दिलों को कोशिश के साथ दबाये जाते थे।

दोनों कुमारों को देवमन्दिर में टिके हुए आज तीसरा दिन है। ओढ़ने और बिछावन का कोई सामान न होने पर भी, उन दोनों को किसी तरह की तकलीफ नहीं मालूम होती। रात आधी से ज्यादे जा चुकी है। तिलिस्मी

बाग के दूसरे दर्जे से होती और वहाँ के खुशबूदार फूलों से बसी हुई मन्द चलनेवाली हवा ने नर्म थपकियाँ लगाकर, दोनों नौजवान, सुन्दर और सुकुमार कुमारों को सुला दिया है। ताज्जुब नहीं कि दिन-रात ध्यान बने रहने के कारण दोनों कुमार इस समय स्वप्न में भी अपनी-अपनी माशूकाओं से लाड़-प्यार की बातें कर रहे हों, और उन्हें इस बात का गुमान भी न हो कि पलक उठते ही रंग बदल जायगा, और नर्म कलाइयों का आनन्द लेने-वाला हाथ सर तक पहुँचने का उद्योग करेगा।

यकायक घड़घड़ाहट की आवाज़ ने दोनों को जगा दिया। वे चौंककर उठ बैठे और ताज्जुब-भरी निगाहों से चारों तरफ देखने और सोचने लगे कि यह आवाज़ कहाँ से आ रही है। ज़्यादे ध्यान देने पर भी यह निश्चय न हो सका कि आवाज किस चीज की है। हाँ, इतनी बात मालूम हो गयी कि देवमन्दिर के पूरब तरफ़वाले मकान के अन्दर से यह आवाज़ आ रही है। दोनों राजकुमारों को देवमन्दिर से नीचे उतरकर उस मकान के पास जाना उचित न मालूम हुआ, इसलिए वे देवमन्दिर की छत पर चढ़ गये और बड़े ग़ौर से उस तरफ देखने लगे।

आधे घण्टे तक वह आवाज एक रंग से बराबर आती रही और इसके बाद धीरे-धीरे कम होकर बन्द हो गयी। उस समय दरवाजा खोलकर अन्दर से आता हुआ एक आदमी उन्हें दिखायी पड़ा। वह आदमी धीरे-धीरे देव-मन्दिर के पास आया और थोड़ी देर तक खड़ा रहकर उस कूएँ की तरफ़ लौटा, जो पूरब की तरफवाले मकान के साथ और उससे थोड़ी ही दूर पर था। कूएँ के पास पहुँचकर थोड़ी देर तक वहाँ भी खड़ा रहा और फिर आगे बढ़ा, यहाँ तक कि घूमता-फिरता छोटे-छोटे मकानों की आड़ में जाकर, वह न जाने कहाँ नजरों से गायब हो गया और इसके थोड़ी ही देर बाद उस तरफ से एक कमसिन औरत के रोने की आवाज़ आयी।

इन्द्रजीत : जिस तौर से यह आदमी इस चौथे दर्जे में आया है, वह बेशक ताज्जुब की बात है।

आनन्द : तिस पर इस रोने की आवाज ने और भी ताज्जुब में डाल दिया है। मुझे आज्ञा हो तो जाकर देखूँ कि क्या मामला है?

इन्द्र : जाने में कोई हर्ज तो नहीं है मगर···ख़ैर, तुम इसी जगह ठहरो, मैं जाता हूँ।

आनन्द : यदि ऐसा ही है तो चलिए हम दोनों आदमी चलें।

इन्द्रजीत : नहीं एक आदमी का यहाँ रहना बहुत जरूरी है। ख़ैर, तुम ही जाओ कोई हर्ज नहीं, मगर तलवार लेते जाओ।

दोनों भाई छत के नीचे उतर आये। आनन्दसिंह ने खूँटी से लटकती हुई

अपनी तलवार ले ली और कमरे के बीचोबीचवाले गोल खम्भे के पास पहुँचे। हम ऊपर लिख आये हैं कि उस खम्भे में तरह-तरह की तस्वीरें बनी हुई थीं। आनन्दसिंह ने एक मूरत पर हाथ रखकर ज़ोर से दबाया, साथ ही एक छोटी-सी खिड़की अन्दर जाने के लिए दिखायी दी। छोटे कुमार उसी खिड़की की राह उस गोल खम्भे के अन्दर घुस गये और थोड़ी ही देर बाद उस नकली बाग में दिखायी देने लगे। खम्भे के अन्दर रास्ता कैसा था और वह नकली बाग के पास क्योंकर पहुँचे, इसका हाल आगे चलकर दूसरी दफ़े किसी और के आने या जाने के समय बयान करेंगे, यहाँ मुख्तसर ही में लिखकर मतलब पूरा करते हैं।

आनन्दसिंह उस तरफ़ गये जिधर वह आदमी गया था, या जिधर से किसी औरत के रोने की आवाज़ आयी थी। घूमते-फिरते एक छोटे मकान के आगे पहुँचे, जिसका दरवाज़ा खुला हुआ था। वहाँ औरत तो कोई दिखायी न दी, मगर उस आदमी को दरवाज़े पर खड़े हुए जरूर पाया।

आनन्दसिंह को देखते ही वह आदमी झट मकान के अन्दर घुस गया और कुमार भी तेजी के साथ उसका पीछा किये बेखौफ मकान के अन्दर चले गये। वह मकान दो मंजिल का था, उसके अन्दर छोटी-छोटी कई कोठरियाँ थीं और हरएक कोठरी में दो-दो दरवाज़े थे, जिससे आदमी एक कोठरी के अन्दर जाकर कुल कोठरियों की सैर कर सकता था।

यद्यपि कुमार तेजी के साथ पीछा किये हुए चले गये, मगर वह आदमी एक कोठरी अन्दर जाने के बाद कई कोठरियों में घूम-फिरकर कहीं गायब हो गया। रात का समय था और मकान के अन्दर तथा कोठरियों में बिल्कुल अन्धकार छाया हुआ था, ऐसी अवस्था में कोठरियों के अन्दर घूम-घूमकर उस आदमी का पता लगाना बहुत ही मुश्किल था, दूसरे इसका भी शक था कि वह कहीं हमारा दुश्मन न हो, लाचार होकर कुमार वहाँ से लौटे, मगर मकान के बाहर न निकल सके, क्योंकि वह दरवाजा बन्द हो गया था, जिस राह से कुमार मकान के अन्दर घुसे थे। कुमार ने दरवाजा उतारने का भी उद्योग किया, मगर उसकी मजबूती के आगे कुछ बस न चला। आखिर दुखी होकर फिर मकान के अन्दर घुसे और एक कोठरी के दरवाजे पर जाकर खड़े हो गये। थोड़ी देर के बाद ऊपर की छत पर से फिर किसी औरत के रोने की आवाज आयी, गौर करने से कुमार को मालूम हुआ कि यह बेशक उसी औरत की आवाज है, जिसे सुनकर यहाँ तक आये थे। उस आवाज़ की सीध पर कुमार ने ऊपर की दूसरी मंजिल पर जाने का इरादा किया, मगर सीढ़ियों का पता न था।

इस समय कुमार का दिल कैसा बेचैन था, यह वही जानते होंगे। हमारे

पाठकों में भी जो दिलेर और बहादुर होंगे, वह उनके दिल की हालत कुछ समझ सकेंगे। बेचारे आनन्दसिंह हर तरह से उद्योग करके रह गये, पर कुछ भी न बन पड़ा। न तो वे उस आदमी का पता लगा सकते थे, जिसके पीछे-पीछे मकान के अन्दर घुसे थे, न उस औरत का हाल मालूम कर सकते थे, जिसके रोने की आवाज से दिल बेताब हो रहा था, और न उस मकान ही से बाहर होकर, अपने भाई इन्द्रजीतसिंह को इन सब बातों की ख़बर कर सकते थे, बल्कि यों कहना चाहिए कि सिवाय चुपचाप खड़े रहने या बैठ जाने के और कुछ भी नहीं कर सकते थे।

जोकुछ रात थी, खड़े-खड़े बीत गयी। सुबह को सुफेदी ने जिधर से रास्ता पाया मकान के अन्दर घुसकर उजाला कर दिया, जिससे कुँअर आनन्द-सिंह को वहाँ की हरएक चीज़ साफ़-साफ़ दिखायी देने लगी। यकायक पीछे की तरफ से दरवाजा खुलने की आवाज कुमार के कान में पड़ी। कुमार ने घूमकर देखा तो एक कोठरी का दरवाजा जो इसके पहिले बन्द था, खुला हुआ पाया। वे बेधड़क उसके अन्दर घुस गये और वहाँ ऊपर की तरफ गयी हुई छोटी-छोटी खूबसूरत सीढ़ियाँ देखीं। धड़धड़ाते हुए दूसरी मंज़िल पर चढ़ गये और हर तरफ गौर करके देखने लगे। इस मंज़िल में बारह कोठरियाँ एक ही रंग-ढंग की देखने में आयीं। हर एक कोठरी में दो दरवाजे थे, एक दरवाजा कोठरी के अन्दर घुसने के लिए और दूसरा अन्दर की तरफ से दूसरी कोठरी में जाने के लिए था। इस तरह पर किसी एक कोठरी के अन्दर घुसकर, कुल कोठरियों में आदमी घूम आ सकता था। धीरे-धीरे अच्छी तरह उजाला हो गया और वहाँ की हरएक चीज़ बखूबी देखने का मौका कुमार को मिला। छोटे कुमार एक कोठरी के अन्दर घुसे और देखा कि वहाँ सिवाय एक चबूतरे के और कुछ भी नहीं है। यह चबूतरा स्याह पत्थर का बना हुआ था, और उसके ऊपर एक कमान और पाँच तीर रक्खे हुए थे। कुमार ने तीर और कमान पर हाथ रक्खा, मालूम हुआ कि सब पत्थर का बना हुआ है, और किसी काम में आने योग्य नहीं है। दूसरे दरवाज़े से दूसरी कोठरी में घुसे तो वहाँ एक लाश पड़ी देखी, जिसका कटा हुआ सिर पास ही पड़ा हुआ था और वह लाश भी पत्थर ही की थी। उसे अच्छी तरह देख-भालकर तीसरी कोठरी में पहुँचे।

इसके अन्दर चारों तरफ दीवार में कई खूँटियाँ थीं, और हरएक खूँटी से एक-एक नंगी तलवार लटक रही थी। ये तलवारें नकली न थीं, बल्कि असली लोहे की थीं, मगर हरएक पर जंग चढ़ा हुआ था। जब चौथी कोठरी में पहुँचे तो वहाँ चाँदी के सिंहासन पर बैठी हुई एक मूरत दिखायी पड़ी। यह मूरत किसी प्रकार की धातु की बहुत ही खूबसूरत और ठीक-ठीक बनी

हुई थी, जिसे देखने के साथ ही कुमार ने पहिचान लिया कि यह मायारानी की छोटी बहिन लाडिली की मूरत है। कुमार मुहब्बत-भरी निगाहें, उस मूरत पर डालने लगे। निराली जगह अपने माशूक को देखने का उन्हें अच्छा मौका मिला, यद्यपि वह माशूक असली नहीं, बल्कि केवल उसकी एक छवि मात्र थी, तथापि इस सबब से कि यहाँ पर कोई ऐसा आदमी न था, जिसका लिहाज या खयाल होता, उन्हें एक निराले ढंग की खुशी हुई और वे देर तक उसके हरएक अंग की खूबसूरती को देखते रहे। इसी बीच बगलवाली कोठरी में से यकायक एक खटके की आवाज आयी। कुमार चौंक पड़े और यह सोचते हुए उस कोठरी की तरफ बढ़े कि शायद वह आदमी उसमें मिले, जिसके पीछे-पीछे इस मकान के अन्दर आये हैं, मगर इस कोठरी में भी किसी की सूरत दिखायी न दी।

इस कोठरी में, जिसमें कुमार पहुँचे चाँदी का केवल एक सन्दूक था, जिसके बीच में हाथ डालने के लायक एक छेद भी बना हुआ था और छेद के ऊपर सुनहले हर्फों में यह लिखा हुआ था :—

"इस छेद में हाथ डालके देखो क्या अनूठी चीज है।"

कुँअर आनन्दसिंह ने बिना सोचे-विचारे उस छेद में हाथ डाल दिया, मगर फिर हाथ निकाल न सके। सन्दूक के अन्दर हाथ जाते ही मानो लोहे की हथकड़ी पड़ गयी, जो किसी तरह हाथ बाहर निकालने की इजाजत नहीं देती थी। कुमार ने झुककर सन्दूक के नीचे की तरफ देखा तो मालूम हुआ कि सन्दूक जमीन से अलग नहीं है, और इसलिए उसे किसी तरह खिसका भी नहीं सकते थे।

तीसरा बयान

कुँअर आनन्दसिंह के जाने बाद इन्द्रजीतसिंह देर तक उनके आने की राह देखते रहे। जैसे-जैसे देर होती थी, जी बेचैन हो जाता था। यहाँ तक कि तमाम रात बीत गयी, सवेरा हो गया, और पूरब तरफ से सूर्य भगवान दर्शन देकर धीरे-धीरे आसमान पर चढ़ने लगे। जब पहर-भर से ज्यादे दिन चढ़ गया, तब इन्द्रजीतसिंह बहुत ही बेताब हुए और उन्हें निश्चय हो गया कि आनन्दसिंह जरूर किसी आफत मे फँस गये!

कुँअर इन्द्रजीतसिंह सोच ही रहे थे कि स्वयं चलके आनन्दसिंह का पता लगाना चाहिए कि इतने ही में लाडिली को साथ लिये हुए कमलिनी वहाँ आ पहुँची। इन्हें देख कुमार की बेचैनी कुछ कम हुई और आशा की सूरत दिखायी देने लगी। कमलिनी ने जब कुमार को उस जगह अकेले और

उदास देखा तो उसे ताज्जुब हुआ, मगर वह बुद्धिमान औरत तुरन्त ही समझ गयी कि इनके छोटे भाई आनन्दसिंह इनके साथ नहीं दिखायी देते, ज़रूर वे किसी मुसीबत में पड़ गये हैं, और ऐसा होना कोई ताज्जुब की बात नहीं है, क्योंकि यह तिलिस्म का मौका है और यहाँ का रहनेवाला थोड़ी भूल में तकलीफ़ उठा सकता है।

कमलिनी ने कुँअर इन्द्रजीतसिंह से उदासी का कारण और कुँअर आनन्दसिंह के न दिखने का सबब पूछा, जिसके जवाब में इन्द्रजीतसिंह ने जोकुछ हुआ था, बयान करके कहा कि 'आनन्द को गये हुए नौ घण्टे के लगभग हो गये'।

इस समय कोई लाडिली की सूरत गौर से देखता तो बेशक समझ जाता कि आनन्दसिंह का हाल सुनकर उसको हद से ज्यादे रंज हुआ है। ताज्जुब नहीं कि कमलिनी और इन्द्रजीतसिंह भी उसके दिल की हालत जान गये हों, क्योंकि वह अपनी आँखों को डबडबाने और आँसू के निकलने को बड़े परिश्रमपूर्वक रोक रही थी। यद्यपि उसे निश्चय था कि दोनों कुमार इस तिलिस्म को अवश्य तोड़ेंगे, तथापि उसका दिल दुःख गया था। कौन ऐसा है, जो अपने प्यारे पर आयी हुई मुसीबत का हाल सुनकर बेचैन न हो?

कमलिनी : (सब बातें सुनकर) किसी का आना ताज्जुब नहीं है, हाँ किसी औरत का आना बेशक ताज्जुब है, क्योंकि (इन्द्रजीतसिंह की तरफ़ इशारा करके) आप कहते हैं कि एक औरत के रोने की आवाज़ आयी थी।

लाडिली : ठीक है, जहाँ तक मैं समझती हूँ सिवाय तुम्हारे, मायारानी के और मेरे, किसी चौथी औरत को यहाँ आने का रास्ता मालूम नहीं है, हाँ, मर्दों में कई जरूर ऐसे हैं, जो यहाँ आ सकते हैं।

कमलिनी : मगर इस देवमन्दिर के अन्दर हम लोगों के अतिरिक्त राजा गोपालसिंह के सिवाय और कोई भी नहीं आ सकता। ख़ैर, इन बातों को जाने दो, अब यहाँ से चलकर कुँअर साहब का पता लगाना बहुत ज़रूरी है। यद्यपि यहाँ किसी दुश्मन का आना बहुत कठिन है, तथापि खुटका लगा ही रहता है। जब दोनों कुमारों को मायारानी के कैदखाने से छुड़ाकर हम लोग सुरंग-ही-सुरंग तिलिस्मी बाग से बाहर हो रहे थे तो उस हरामजादे के आ पहुँचने की कौन उम्मीद थी, जिसने कुमार को जख्मी किया था! इसी तरह कौन ठिकाना यहाँ भी कोई दुष्ट आ पहुँचा हो।

आख़िर कुँअर आनन्दसिंह को खोजने के लिए तीनों वहाँ से रवाना हुए और देवमन्दिर के नीचे उतर उसी तरफ चले जिधर आनन्दसिंह गये थे। जब एक मकान के दरवाजे पर पहुँचे तो कमलिनी रुकी और बड़े गौर से उस दरवाजे को जो बन्द था, देखने लगी, इसके बाद फिर आगे बढ़ी,

दूसरे मकान के दरवाजे पर पहुँचकर उसे भी गौर से देखा और सिर हिलाती हुई फिर आगे बढ़ी। इसी तरह कुँअर इन्द्रजीतसिंह और लाडिली को साथ लिये हुए कमलिनी सात-आठ मकानों के दरवाजे पर गयी। हर-एक मकान का दरवाजा बन्द था और हरएक दरवाजे को कमलिनी ने गौर से देखा, लेकिन कुछ काम न चला, मगर जब उस मकान के दरवाजे पर पहुँची, जिसमें कँअर आनन्दसिंह गये थे तो रुककर मामूली तौर पर उसके दरवाजे को भी बड़े गौर से देखने लगी और थोड़ी ही देर में बोल उठी, "बेशक, कुँअर आनन्दसिंह इसी मकान के अन्दर हैं। (उँगली से दरवाजे के ऊपरवाले चौखटे की तरफ इशारा करके) देखिए, वह स्याह पत्थर की तीन खूँटियाँ नीचे की तरफ़ झुक गयी हैं।"

कुमार : इन खूँटियों से क्या मतलब है ?

कमलिनी : इस मकान के अन्दर जितने आदमी जाँयगे, उतनी खूँटियाँ नीचे की तरफ झुक जाँयगी।

कुमार : (ऊपरवाले चौखटे की तरफ इशारा करके) ऊपर कुल बारह खूँटियाँ हैं, मान लिया जाय कि बारहों खूँटियाँ उस समय झुक जायँगी, जब बारह आदमी इस मकान के अन्दर जा पहुँचेंगे, मगर जब बारह से ज्यादे आदमी इस मकान के अन्दर जायँगे, तब क्या होगा ?

कमलिनी : बारह से ज्यादे आदमी इस मकान के अन्दर जा ही नहीं सकते ! तिलिस्मी बातों में किसी की जबर्दस्ती नहीं चल सकती।

कुमार : ठीक है, मगर तुमने यह कैसे जाना कि आनन्दसिंह इसी मकान के अन्दर है ?

कमलिनी : सिर्फ अन्दाज से समझती हूँ कि आनन्दसिंह इसी मकान में होंगे, क्योंकि इस बाग में एक आदमी का आना आपने बयान किया था, इसके बाद कहा था कि किसी औरत के रोने की आवाज आयी थी, दो तो हो चुके, तीसरे आनन्दसिंह भी पीछा किये हुए इधर ही आये हैं, और इस तरह इस मकान के अन्दर तीन आदमियों का होना साबित होता है। इन्ही सब बातों से मुझे विश्वास होता है कि वे ही तीन आदमी इस मकान के अन्दर हैं।

कुमार : तुम्हारा सोचना बहुत ठीक है, मगर जहाँ तक जल्द हो सके, इस बात का निश्चय करके आनन्द को छुड़ाना चाहिए, न मालूम वह किस आफ़त में फँस गया है।

कमलिनी : देखिए मैं बहुत जल्द इसका बन्दोबस्त करती हूँ।

इसके बाद कमलिनी ने कुँअर इन्द्रजीतसिंह से कहा, "इस मकान का दरवाजा खोलना तो ज़रा मुश्किल है, मगर चौखट के ऊपर जो बारह

खूँटियाँ हैं, उनमें से तीन नीचे की तरफ झुक गयी हैं, और बाक़ी नौ ऊपर की तरफ उठी हुई हैं, उनमें से किसी एक को आप उछलकर थाम लीजिए और ज़ोर करके नीचे की तरफ झुकाइए, देखिए क्या होता है।" कुँअर इन्द्रजीतसिंह ने वैसा ही किया। उछलकर एक खूँटी को थाम लिया और झटका देकर उसे नीचे की तरफ झुकाया तथा जब वह नीचे को झुक गयी तो उसे छोड़कर अलग हो गये। यकायक मकान के अन्दर से इस तरह की आवाज़ आने लगी, जैसे बड़े-बड़े कल-पुर्जे और चरखे घूमते हों या कई गाड़ियाँ मकान के अन्दर दौड़ रही हों। तीनों आदमी दरवाजे से हटकर खड़े हो गये, और देखने लगे कि अब क्या होता है।

थोड़ी ही देर बाद मकान की छत पर से एक आवाज़ आयी—"इधर देखो," जिसे सुनते ही तीनों आदमी चौंके और ऊपर की तरफ़ देखने लगे। एक आदमी जो अपने चेहरे पर नकाब डाले हुए था, छत पर से नीचे की तरफ झाँकता हुआ दिखायी दिया। उसने कमलिनी, लाडिली और कुँअर इन्द्रजीतसिंह को अपनी तरफ देखते-देख एक लपेटा हुआ कागज नीचे गिरा दिया, जिसे कमलिनी ने झट उठा लिया और बढ़कर कुँअर इन्द्रजीतसिंह से कहा, "बस अब जिस तरह हो सके आप इस खूँटी को जिसे झुकाया है, ज्यों-का-त्यों सीधा कर दीजिए।"

इन्द्रजीत : आख़िर इसका क्या सबब है? इस पुर्जे में क्या लिखा हुआ है?

कमलिनी : पहिले आप उसे कीजिए जो मैं कह चुकी हूँ, देर करने में हमारा ही हर्ज होगा।

लाचार कुँअर इन्द्रजीतसिंह ने वैसा ही किया। उछलकर नीचे की तरफ़ से एक झटका ऐसा दिया कि वह खूँटी सीधी हो गयी, और इसके साथ ही मकान के अन्दर सन्नाटा छा गया, अर्थात् वह जोर-शोर की आवाज जो खूँटी झुकने के साथ ही आने लगी थी, एकदम बन्द हो गयी। इसके बाद कमलिनी ने वह कागज़ का पुरजा, जो मकान की छत पर से गिराया गया था, कुमार के हाथ में दे दिया। कुमार ने उसे देखा, यह लिखा हुआ था :—

1	2	3	4	5	6
एच	मेमचे	काटनो	केअरियां	डेह	नेपो
7	8	9	10	11	12
किमटू	च्वाला	मेम	कुम	नीपो	इत्ती
				13	लव
				14	कचीचा
				15	टेप

इस चीठी का मतलब तो कुमार तुरन्त समझ गये, क्योंकि यह ऐयारी भाषा में लिखी हुई थी और कुमार ऐयारी भाषा बखूबी जानते थे, मगर यह उनकी समझ में न आया कि चीठी लिखनेवाला कौन है क्योंकि उसने अपना नाम 'टेप' लिखा था। कुमार ने कमलिनी से 'टेप' का अर्थ पूछा, जिसके जवाब में उसने कहा, "थोड़ी देर सब्र कीजिए, आप-से-आप उस आदमी का पता लग जायगा।" कुमार चुप हो रहे और दरवाज़े की तरफ देखने लगे। हमारे पाठक महाशय ऐयारी भाषा शायद न जानते होंगे। अस्तु, उन्हें समझाने के लिए उस चीठी का अर्थ हम नीचे लिखे देते हैं—

1	2	3	4	5	6
यहाँ	मैं हूँ	डरो मत	कुमार को	तकलीफ	न होगी
7	8	9	10	11	12
थोड़ी देर	सब्र करो	मैं	स्वयं	नीचे	आता हूँ
				13	वही
				14	दिलजला
				15	टेप

चौथा बयान

मायारानी आज यह विचारकर बहुत खुश है कि आधी रात के समय कमलिनी इस बाग में आयेगी और मैं उसे अवश्य गिरफ़्तार करूँगी, मगर इस बात को जानने के लिए उसका जी बेचैन हो रहा है कि उसके सोनेवाले कमरे में रात को कौन आया था? वह चारों तरफ़ खयाल दौड़ाती थी, मगर कुछ समझ में न आता था और आखिर दिल में यही कहती थी कि आनेवाला चाहे कोई हो, मगर काम कमलिनी ही का है, आज अगर कमलिनी गिरफ्तार हो जायगी तो सब टण्टा मिट जायगा, जितनी बेफिक्री राजा गोपालसिंह के मारने से मिली है, उतनी ही कमलिनी के भी मारने से मिलेगी, क्योंकि उसके मरने बाद, मेरे साथ दुश्मनी करने का साहस फिर कोई भी नहीं कर सकता।

आधी रात जाने के पहिले ही मायारानी धनपति को साथ लिये हुए, उस दरवाज़े के पास आ पहुँची, जिधर से कमलिनी के आने की खबर सुनी थी। मायारानी के कहे मुताबिक पहरा देनेवाली कई औरतें भी नंगी तलवार लिये उस चोर दरवाजे के पास पहुँचकर इधर-उधर पेड़ों और झाड़ियों की आड़ में दबक रही थीं और धनपति भी उस चोर दरवाज़े के बगल ही में एक झाड़ी के अन्दर घुस गयी थी। मायारानी अपने को हर

बला से बचाये रहने की नीयत से कुछ दूर पर छिपकर बैठ रही।

अब वह समय आ गया कि चोर दरवाजे की राह से कमलिनी बाग के अन्दर आवे, इसलिए धनपति अपने छिपे रहनेवाले स्थान से उठकर चोर दरवाजे के पास आयी और यह विचार कर बैठ गयी कि बाहर से कोई आदमी दरवाज़ा खोलने का इशारा करे तो मैं झट से दरवाज़ा खोल दूं। इस समय धनपति अपने चेहरे पर नकाब डाले हुए थी और हाथ में खंजर लिये मौक़ा पड़ने पर लड़ने के लिए भी तैयार थी। थोड़ी ही देर बाद बाहर से किसी ने चोर दरवाजे पर थपकी मारी। धनपति खुश होकर उठी और झट से दरवाज़ा खोलकर एक किनारे हो गयी। दो आदमी बाग के अन्दर दाखिल हुए। इन दोनों ही का बदन स्याह कपड़ों से ढँका हुआ था और दोनों ही के चेहरों पर नकाब पड़ी हुई थी, जिससे रात के समय यह जानना बहुत ही कठिन था कि ये औरतें हैं या मर्द, हाँ, एक का कद कुछ लम्बा था, इसलिए उस पर मर्द होने का गुमान हो सकता था।

जब दोनों नकाबपोश बाग के अन्दर आ गये तो धनपति ने चोर दरवाज़ा बन्द कर दिया और उन दोनों को अपने पीछे-पीछे आने का इशारा किया। मालूम होता था कि वे दोनों नकाबपोश बेफिक्र हैं, और उन्हें इस बात की जरा भी खबर नहीं कि यहाँ का रंग बदला हुआ है। उन दोनों को साथ लिये, धनपति जब उस जगह पहुँची, जहाँ पहरा देनेवाली लौंडियाँ नंगी तलवारें लिये हुए छिपी हुई थीं, तो खड़ी हो गयी और उन दोनों की तरफ़ देखकर बोली, "आपकी आज्ञानुसार मैंने अपना काम पूरा कर दिया, अब मुझे इनाम मिलना चाहिए!" इसके जवाब में उस नकाबपोश ने जिसका कद बनिस्बत दूसरे के छोटा था जवाब दिया, "धनपति को, जो मर्द होकर औरत की सूरत में मायारानी के साथ रहता है, किसी से इनाम लेने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि वह स्वयं मालदार है, मगर मैं समझता हूँ कि कमबख्त मायारानी भी हम लोगों को गिरफ़्तार करने की नीयत से इसी जगह आकर कहीं छिपी होगी, उसे जल्द बुला, क्योंकि खास उसी को इनाम देने के लिए, हम लोग यहाँ आये हैं।"

धनपत* वास्तव में मर्द था, मगर यह हाल किसी को मालूम न था इसलिए हम भी उसे अभी तक औरत ही लिखते चले आये मगर अब पूरी तरह से निश्चय हो गया कि वह मर्द है और हमारे पाठकों को भी यह बात मालूम हो गयी इसलिए अब हम उसके लिए उन्हीं शब्दों का बर्ताव करेंगे जो मर्दों के लिए उचित है।

---

*अब तक धनपत ही धनपति नाम से था।

उस आदमी की बात सुनकर धनपत परेशान हो गया, उसे यह फिक्र पैदा हुई कि अब हमारा भेद खुल गया और इसलिए जान बचना मुश्किल है। केवल धनपत ही नहीं बल्कि मायारानी और उन कुल लौंडियों ने भी उस आदमी की बातें सुन लीं, जो उसी के आस-पास पेड़ों के नीचे छिपी हुई थीं। मायारानी के दिल में भी तरह-तरह की बातें पैदा होने लगीं। उसने पहिचानने की नीयत से उस नकाबपोश की आवाज पर ध्यान दिया, मगर कुछ काम न चला, क्योंकि उसकी आवाज़ फँसी हुई थी, और इस समय हरएक आदमी जो उसकी बात सुनता कह सकता था कि वह अपनी आवाज़ को बिगाड़कर बातें कर रहा है।

धनपत यद्यपि इस फिक्र में था कि दोनों नकाबपोशों को गिरफ़्तार करना चाहिए, मगर इस नकाबपोश की गहरी और भेद से भरी हुई बात ने उसका कलेजा यहाँ तक दहला दिया कि उसके लिए बात का जवाब देना भी कठिन हो गया, मगर वे लौंडियाँ जो उस जगह छिपी हुई थीं, चारों तरफ से आकर ज़रूर वहाँ जुट गयी, और उन्होंने दोनों नक़ाबपोशों को घेर लिया। धनपत सोच रहा था कि मायारानी भी इसी जगह आ पहुँचेगी, लेकिन यह आशा उसकी वृथा ही हुई, क्योंकि उस नकाबपोश की आवाज का सबसे ज्यादे असर मायारानी ही पर हुआ। वह घबड़ाकर वहाँ से भागी और अपने दीवानखाने में जाकर बैठी रही, जहाँ कई लौंडियाँ पहरा दे रही थीं। आते ही उसने एक लौंडी की जुबानी अपने सिपाहियों को जो बाग के पहिले दर्जे में रहा करते थे, कहला भेजा कि 'खास बाग में फलानी जगह दो दुश्मन घुस आये हैं, उन्हें जाकर फौरन गिरफ्तार करो और उनका सिर काटकर मेरे पास भेजो'। इधर धनपत ने देखा कि बहुत-सी लौंडियाँ हमारी मदद पर आ पहुँची हैं, तो उसे भी कुछ हिम्मत हुई और वह उस नकाबपोश की तरफ देखकर बोला—

धनपत : तुम लोग यहाँ किस काम के लिए आये हो ?

नकाबपोश : इसका जवाब हम तुझ कमबख्त को क्यों दें ?

धनपत : मालूम होता है कि मौत तुम दोनों को यहाँ तक खैंच लायी है !

नकाबपोश : (हँसकर) हाँ, मैं भी यही समझता हूँ कि तेरी मौत हम दोनों को यहाँ तक खैंच लायी है।

इतना सुनते ही धनपत ने उस नक़ाबपोश पर खंजर का वार किया, मगर उसने फुर्ती से पैंतरा बदलकर, वार खाली कर दिया, उस दूसरे नकाबपोश ने चालाकी से धनपत के पीछे जाकर एक लात उसकी कमर में ऐसे जोर से मारी कि वह औंधे मुँह जमीन पर गिर पड़ा, मगर तुरन्त ही सम्हल-

कर उठ बैठा, और दोनों नकाबपोशों को गिरफ्तार करने के लिए लौंडियों को ललकारा। लौंडियाँ, दोनों नकाबपोशों की अवस्था देखकर परेशान हो रही थीं। एक तो उन्हें विश्वास हो गया कि ये दोनों नकाबपोश मर्द हैं। दूसरे, धनपत की ताकत पर उन सभों को बहुतकुछ भरोसा था, सो उसकी भी दुर्दशा आँखों के सामने देखने में आयी। तीसरे, नकाबपोश की जुबानी यह सुनकर कि धनपत मर्द है और उसके जवाब में धनपत को चुप पाकर लौंडियों का ख्याल बिल्कुल ही बदल गया था, तिस पर भी वे सब दोनों नक़ाबपोशों को घेरकर खड़ी हो गयीं। धनपत ने फिर ललकार कर कहा, "देखो ये दोनों चोर हैं, भागने न पावें।"

लम्बे नकाबपोश ने लपक के बहादुरी के साथ धनपत की दाहिनी कलाई, जिसमें खंजर था, पकड़ ली और कहा, "हम लोग भागने के लिए नहीं आये हैं, बल्कि गिरफ्तार होकर एक अनूठा तमाशा दिखाने के लिए आये हैं, मगर तुमको भाग जाने का मौका न देंगे। (लौंडियों की तरफ देखकर) हम लोग स्वयं यहाँ से टलनेवाले नहीं हैं, और जहाँ कहो चलने के लिए तैयार हैं।"

धनपत को मालूम हो गया कि ये दोनों नकाबपोश कोई साधारण आदमी नहीं हैं, और इनके सामने ताकत का घमण्ड करना वृथा है। वह सोचने लगा—"अफसोस, अब भारी मुसीबत का सामना हुआ चाहता है।"

इतने ही में 'चोर चोर' का गुल मचा और कई मशालों की रोशनी दिखायी दी। यह रोशनी उन सिपाहियों के साथ थी, जो बाग के पहिले दर्जे में रहनेवाले सिपाहियों में से थे, और इस समय वे सब मायारानी की आज्ञानुसार दोनों चोरों को, अर्थात् इन नकाबपोशों को गिरफ़्तार करने के लिए यहाँ आये थे। बात-की-बात में वे सब वहाँ पहुँच गये, और उन्होंने देखा कि लौंडियों के घेरे में दो नकाबपोश छाती ऊँची किये खड़े हैं, और उनमें से एक धनपत की कलाई पकड़े हुए है।

इसके पहिले कि सिपाहियों को दोनों नकाबपोशों के साथ किसी तरह के बर्ताव की नौबत आवे, छोटे नकाबपोश ने ऊँची आवाज़ में ललकारके कहा, "भाइयो, तुम लोग यह न समझो कि हम लोग भाग जायेंगे, मैं भागने के लिए नहीं आया हूँ, मैं तुम लोगों का दुश्मन नहीं हूँ और न तुम लोगों के दुश्मनों का साथी हूँ, बल्कि तुम्हारा सच्चा दोस्त और ख़ैरख़ाह हूँ। जिस समय सूर्य भगवान के दर्शन होंगे और मैं अपने चेहरे पर से नकाब उठाऊँगा, तुम लोगों का मालूम हो जायगा कि मैं तुम्हारा पुराना साथी हूँ। इस समय मैं तुम लोगों की वह बेवकूफी जाहिर करने आया हूँ, जिसे तुम

लोग खुद नहीं जानते हो। हाय, तुम्हारे प्यारे मालिक राजा गोपालसिंह के गले पर छुरी फिर जाय और तुम लोगों को खबर तक न हो? इससे भी बढ़कर अफसोस की बात तो यह कि राजा गोपालसिंह को मारनेवाला, उनकी उम्मीदों का खून करनेवाला, उनकी रिआया के दिल पर सदमा पहुँचानेवाला, उनकी इज्जत और हुर्मत को बिगाड़नेवाला, उनके धर्म और अर्थ का सत्यानाश करनेवाला, दिन-रात तुम्हारे पास रहे, तुम पर हुकूमत करे, तुम्हें बेवकूफ़ बनावे, और तुम उसका कुछ भी न कर सको! यह मत समझो कि राजा गोपालसिंह को मरे हुए कई वर्ष हो गये, मैं साबित कर दूंगा कि उनके खून से गीली हुई जमीन भी अभी तक सूखी नहीं है, और अगर तुम मुझसे पूछने और यह जानने की इच्छा करोगे कि तुम्हारे प्यारे राजा गोपालसिंह को किसने मारा, या उनका कातिल कौन है तो मैं जरूर उसका भी पता दूंगा और वास्तव में मैं इसी काम के लिए, यहाँ आया भी हूँ।"

छोटे नक़ाबपोश की इस बात ने सिपाहियों और पहरा देनेवाली लौंडियों का दिल हिला दिया। राजा गोपालसिंह की याद ने और इस ख़बर ने कि— 'उन्हें मरे बहुत दिन नहीं हुए और उनका कातिल इसी जगह रहकर उन पर हुकूमत करता है' उनके दिलों को बेचैन कर दिया। सभी की आँखों से आँसू की बूँदें जारी हो गयीं, और हर तरफ से आवाज आने लगी— "कहो कहो, जल्द कहो! नेकदिल, गरीब-परवर और हमारे हितैषी राजा को मारनेवाला कौन है और कहाँ है?" इसके जवाब में छोटे नकाबपोश ने पुनः कहा, "यही कमबख्त धनपत, जिसे इस समय मेरे साथी ने पकड़ रक्खा है, तुम्हारे राजा का कातिल तथा उसकी इज्जत और हुर्मत को बिगाड़ने-वाला है। इस बात से मत डरो कि इसकी इज़्ज़त मायारानी के दरबार में बहुत है, बल्कि आजमाओ और देखो कि यह मर्द है या औरत! मैं सच कहता हूँ कि यह कई वर्ष से तुम लोगों की आँखों में धूल डालकर अर्थात् औरत बन-कर तुम्हारे घर में रहता है और इस राज्य को चौपट कर रहा है, मगर तुम लोगों को इसकी कुछ भी ख़बर नहीं है। इतना ही नहीं, मैं तुम लोगों से एक बात और कहूँगा, मगर अभी नहीं, ज़रा ठहरो, घण्टे-भर और गम खाओ, सवेरा होने दो और हम दोनों को इसी जगह रहने देकर और कहीं ले जाने का उद्योग मत करो!"

छोटे नकाबपोश की इस दूसरी बात ने रंग और भी चोखा कर दिया। चारों तरफ सिपाहियों और लौंडियों में गुरचूं-गुरचूं और कानाफूसी होने लगी। किसी की आँखों से आँसू जारी था, किसी की गर्दन शर्म से नीचे हो रही थी, किसी ने अफसोस से अपना हाथ अपने कलेजे पर रख लिया था, कोई ठुड्डी पकड़कर सोच रहा था, और कोई दाँत पीस-पीसकर धनपत की

तरफ देख रहा था। यद्यपि रात का समय था, मगर उन मशालों की रोशनी बखूबी हो रही थी, जो मायारानी के सिपाहियों के साथ थे और इस सबब से वहाँ की हरएक चीज साफ़ दिखायी दे रही थी। सिपाहियों ने धनपत का चेहरा गौर से देखा और उसमें बहुत फर्क पाया। खौफ़ और तरद्दुद ने धनपत को अधमुआ कर दिया था और उसका रंग जर्द हो रहा था। दोनों नकाबपोशों ने जब देखा कि इस समय सिपाहियों के दिलों में जोश बखूबी पैदा हो गया और वे लोग अब सब्र करना पसन्द न करेंगे तो आपुस में कुछ इशारा करने बाद, छोटे नकाबपोश ने धनपत की साड़ी का ऊपरी भाग फुर्ती से खैंच लिया और उसकी चोली फाड़ डाली, इसके साथ ही दो बनावटी गेंद बाहर गिर पड़े और उसकी सूरत से मर्दानापन झलकने लगा। अब तो मायारानी के सिपाहियों को पूरे दर्जे पर क्रोध चढ़ आया और उन्हें निश्चय हो गया कि उनके मालिक राजा गोपालसिंह, इसी कमबख्त के सबब से मारे गये हैं। पहरा देनेवाली जितनी औरतें थीं, सब ताज्जुब में आकर एक दूसरे की सूरत देखने लगीं और उधर सिपाहियों ने पास पहुँचकर धनपत को घेर लिया तथा उसकी दुर्गत करने लगे। ऐसी अवस्था में दोनों नक़ाबपोश धनपत को छोड़ अलग जा खड़े हुए। सिपाहियों ने बारी-बारी से धनपत से प्रश्न करना शुरू किया, मगर उसकी अवस्था इस लायक न थी कि वह किसी के प्रश्न का उत्तर देता। बहुतकुछ सोचने-विचारने बाद यह राय पक्की हुई कि धनपत को राजदीवान के पास ले चलना चाहिए और इसी के साथ-साथ इन दोनों नकाबपोशों को भी उन्हीं के सामने पेश करना उचित होगा।

सिपाही लोग, जिस समय धनपत के विषय में सोच-विचार कर रहे और क्रोध में भरे हुए थे, दोनों नकाबपोशों से जो धनपत को छोड़ अलग हो गये थे, थोड़ी देर के लिए बिल्कुल बेफिक्र और लापरवाह हो गये थे, मगर इस समय जब यह राय पक्की हुई कि धनपत के साथ-ही-साथ उन दोनों को भी दीवान साहब के पास ले चलना चाहिए, तो उन दोनों की खोज करने लगे, मगर वे दोनों नकाबपोश मौका पाकर ऐसा गायब हुए कि उनकी झलक तक दिखायी न दी। एक बोला, "अजी इसी जगह तो थे!" दूसरे ने कहा, "यह तो हम भी जानते हैं, मगर यह बताओ कि वे चले कहाँ गये?" तीसरे ने कहा, "भाई वे दोनों भागनेवाले तो हैं नहीं, इसी जगह कहीं छिपकर हम लोगों का तमाशा देखते होंगे!" इत्यादि तरह-तरह की बातें सब लोग आपुस में करने और दोनों नकाबपोशों को चारों तरफ ढूँढ़ने लगे, लेकिन वे दोनों वहाँ थे कहाँ, जो पता लगता! आखिर खोजते-ढूँढ़ते सुबह हो गयी और इतनी ही देर में इस आश्चर्यजनक घटना की ख़बर जादू की

तरह हवा के साथ मिलकर दूर-दूर तक फैल गयी। इस समय मायारानी के सिपाही बिल्कुल ही स्वतन्त्र और खुदराय बल्कि बागियों की तरह हो रहे थे। बहुत खोजने और ढूँढ़ने पर भी उन्हें जब दोनों नकाबपोशों का पता न लगा, तब लाचार होकर कमबख्त धनपत को घसीटते हुए, वे बाग के बाहर की तरफ रवाना हुए।

जब इन बातों की खबर मायारानी को पहुँची तो वह बहुत ही घबरायी। अपनी तथा धनपत की जान से नाउम्मीद होकर सोचने लगी कि अब क्या करना चाहिए? इस समय उसकी सूरत से उसके दिल का बहुत-कुछ पता लगता था। उसका चेहरा जर्द और पलकें नीचे की तरफ झुकी हुई थीं। कभी-कभी उसके बदन में कम्प हो जाता और कभी आँखें चंचल होकर सुर्ख हो जातीं। मगर थोड़ी ही देर बाद उसके होठ काँपने लगे और आँखों की सुर्खी बढ़ जाने के साथ ही उसका चेहरा भी लाल हो गया, जिसे देखते ही वे लौंडियाँ, जो उसके सामने मौजूद थीं, समझ गयीं कि अब उसे हद दर्जे का क्रोध चढ़ आया है। कुछ सोच-विचारकर मायारानी बोल उठी, "इस समय उन कमबख्तों को समझाने-बुझाने का उद्योग करना वृथा समय नष्ट करना है, दूसरे मैं तिलिस्म की रानी ही क्या ठहरी जो इन थोड़े से कमबख्तों को काबू में न कर सकी या इन थोड़े सिपाहियों को आज्ञा भंग करने की सजा न दे सकी!" इतना कहते ही मायारानी अपने स्थान से उठी और दीवानखाने में से होती हुई, उस कोठरी में जा पहुँची, जहाँ से बाग के तीसरे दर्जे में जाने का वह रास्ता था, जिसका जिक्र हम उस समय कर आये हैं, जब पागल बने हुए तेजसिंह मायारानी की आज्ञानुसार हरनामसिंह द्वारा बाग के तीसरे दर्जे में पहुँचाये गये थे।

मायारानी कोठरी के अन्दर गयी। वहाँ एक दूसरी कोठरी में जाने के लिए दरवाजा था, उस दरवाजे को खोलकर दूसरी कोठरी में गयी। वहाँ एक छोटा-सा कूआँ था, जिसमें उतरने के लिए जंजीर लगी हुई थी। वह इस कूएँ के अन्दर उतर गयी और एक लम्बे-चौड़े स्थान में पहुँची, जहाँ बिल्कुल ही अन्धकार था। मायारानी टटोलती हुई एक कोने की तरफ चली गयी, और वहाँ उसने कोई पेंच घुमाया, जिसके साथ ही उस स्थान में बखूबी रोशनी हो गयी और वहाँ की हरएक चीज साफ-साफ दिखायी देने लगी। यह रोशनी शीशे के एक गोले में से निकल रही थी जो छत के साथ लटक रहा था। यह स्थान जिसे एक लम्बा-चौड़ा दालान या चारों तरफ दीवार होने के कारण, कमरा कहना चाहिए अद्भुत चीजों और तरह-तरह के कल-पुर्जों से भरा हुआ था। बीच में कतार बाँधकर चौबीस खम्भे संगमर्मर के खड़े थे और हर दो खम्भों के ऊपर एक-एक महराबदार पत्थर चढ़ा

हुआ था, जिसे मामूली तौर पर आप बिना दरवाजे का फाटक कह सकते हैं। इन महराबी पत्थरों के बीचोबीच बड़े-बड़े घण्टे लटक रहे थे और हर-एक घण्टे के नीचे एक गड़ारीदार पहिया था।

मायारानी ने हरएक महराब को जिस पर मोटे-मोटे अक्षर लिखे हुए थे गौर से देखना शुरू किया और एक महराब के नीचे पहुँचकर खड़ी हो गयी, जिस पर यह लिखा हुआ था—"दूसरे दर्जे का तिलिस्मी दरवाजा।" मायारानी ने उस पहिए को घुमाना शुरू किया, जो उस महराब में लटकते हुए घण्टे के नीचे था। पहिया चार-पाँच दफे घूमकर रुक गया, तब मायारानी वहाँ से हटी और यह कहती हुई घूमकर सामनेवाली दीवार के पास गयी कि 'देखें अब वे कमबख्त क्योंकर बाग के बाहर जाते हैं'! दीवार में नम्बरवार बिना पल्ले की पाँच आलमारियाँ थीं और हरएक आलमारी में चार दर्जे बने हुए थे। पहिली आलमारी में शीशे की सुराहियाँ थीं, दूसरी में ताँबे के बहुत-से डिब्बे थे, तीसरी कागज के मुट्ठों से भरी हुई थी, जिन्हें दीमकों ने बर्बाद कर डाला था, चौथी में अष्टधातु की छोटी-छोटी बहुत-सी मूरतें थीं और पाँचवीं आलमारी में केवल चार ताम्रपत्र थे, जिनमें खूबसूरत उभड़े हुए अक्षरों में कुछ लिखा हुआ था।

मायारानी उस आलमारी के पास गयी, जिसमें शीशे की सुराहियाँ थीं और एक सुराही उठा ली। शायद उसमें किसी तरह का अर्क था, जिसे थोड़ा-सा पीने के बाद सुराही हाथ में लिये हुए वहाँ से हटी और दूसरी आलमारी के पास गयी, जिसमें ताँबे के डिब्बे थे। एक डिब्बा उठा लिया और वहाँ से रवाना हुई। जिस तरह उसका जाना हम लिख आये हैं, उसी तरह घूमती हुई वह अपने दीवानखाने में पहुँची, जिसके आगे तरह-तरह के खुशनुमा पत्तोंवाले खूबसूरत गमले सजाये हुए थे। वहाँ पहुँचकर उसने वह डिब्बा खोला। उसके अन्दर एक प्रकार की बुकनी भरी हुई थी। उसमें से आधी बुकनी अपने हाथ से खूबसूरत गमलों में छिड़कने के बाद, बची हुई आधी बुकनी डिब्बे में लिये हुए वह दीवानखाने की छत पर चढ़ गयी और अपने साथ केवल एक लौंडी को, जिसका नाम लीला था और जो उसकी सब लौंडियों की सरदार थी, लेती गयी। यह सब काम जो हम ऊपर लिख आये हैं, मायारानी ने बड़ी फुर्ती से उसके पहिले ही कर लिया, जब तक कि उसके बागी सिपाही धनपत को लिये हुए बाग के दूसरे दर्जे के बाहर जायँ।

जब मायारानी लीला को साथ लिये हुए दीवानखाने की छत पर चढ़ गयी तब उसने सुराही दिखाकर लीला से कहा, "चिल्लू कर, इसमें से थोड़ा-सा अर्क तुझे देती हूँ, उसे पी जा और उस आफत से बची रह, जो

थोड़ी ही देर में यहाँ के रहनेवालों पर आनेवाली है।"

लीला : (हाथ फैलाकर) मैं खूब जानती हूँ कि आपकी मेहरबानी जितनी मुझ पर रहती है, उतनी और किसी पर नहीं।

माया : (लीला की अंजुली में अर्क डालकर) इसे जल्दी पी जा, और जोकुछ मैं कहती हूँ, उसे गौर से सुन।

लीला : बेशक मैं ध्यान देकर सुनूँगी, क्योंकि इस समय आपकी अवस्था बिल्कुल ही बदल रही है, और यह जानने के लिए मेरा जी बहुत बेचैन है कि अब क्या किया जायगा ?

माया : मैं अपने भेद तुझसे छिपा नहीं रखती, जोकुछ मैं कर चुकी हूँ तुझे सब मालूम है, केवल दो भेद मैंने तुझसे छिपाये थे, जिनमें से एक तो आज खुल ही गया और एक का हाल मैं तुझसे फिर किसी समय कहूँगी। इन भेदों के विषय में मेरा विश्वास था कि यदि किसी को मालूम हो जायगा तो मेरी जान आफत में फँस जायगी और आखिर वैसा ही हुआ। तू देख ही चुकी है कि दो कमबख्त नकाबपोशों ने यहाँ पहुँचकर क्या गजब मचा रक्खा है। अब जहाँ तक मैं समझती हूँ, धनपत का भेद छिपा रहना बहुत ही मुश्किल है, और साथ ही इसके कमबख्त सिपाहियों का भी मिजाज बिगड़ गया है। मान लिया जाय कि अगर मैंने किसी तरह की बुराई की भी तो उनको मेरे खिलाफ होना मुनासिब न था। खैर, सिपाही लोग तो उजड्ड हुआ ही करते हैं, मगर मुझसे बुराई करने का नतीजा कदापि अच्छा न होगा। अफसोस, उन लोगों ने इस बात पर ध्यान न दिया कि आखिर मायारानी तिलिस्म की रानी है। देख, मैंने इस बाग के बाहर जाने का रास्ता बन्द कर दिया, अब उन लोगों की मजाल नहीं कि यहाँ से बाहर जा सकें, बल्कि थोड़ी ही देर में तू देखेगी कि उन लोगों को मैं कैसे हलाल करती हूँ। यह दवा जो मैंने गमलों में छिड़की है, बहुत ही तेज और अपनी महक दूर-दूर तक फैलानेवाली है, इससे बढ़कर बेहोशी की दवा दुनिया में न होगी, और यही उन बदमाशों के साथ जहर का काम करेगी। तू उन सभी के पास जा और उन्हें ऊँच-नीच समझाकर मेरे पास ले आ - या—नहीं, अच्छा देख—खैर, जाने दे—मैं तुझसे एक बात और कहती हूँ—यह तो मैं समझ ही चुकी कि अब मेरी जान जाया चाहती है, मगर तब भी हजारों को मारे बिना मैं न छोड़ूँगी। अफसोस, वे दोनों कमबख्त नकाबपोश न मालूम कहाँ चले गये। खैर, देखा जायगा—ओफ, (अपनी ठुड्डी पकड़के) मुझे शक है—एक तो उनमें से जरूर—हाँ, जरूर—जरूर—बेशक वही है और होगा, दूसरा भी—मैं समझ गयी, मगर ओफ, उस चीज का जाना ही बुरा हुआ। अच्छा अब मैं दूसरे काम की फिक्र करती हूँ, अब

तो जान पर खेलना ही पड़ा, एक दफे तो मुझे तुझे छोड़—हाँ, तू मेरा मतलब तो समझ गयी न इस समय मेरी तबीयत—अच्छा तू जा, देख मान जाँय तो ठीक है, नहीं तो आज इस बाग को मैं उन्हीं के खून से तर करूँगी !

इस समय मायारानी की बातें यद्यपि बिल्कुल बेढंगी और बेतुकी थीं, तथापि चालाक और धूर्त लीला उसका मतलब समझ गयी और यह कहती हुई वहाँ से रवाना हुई, "आप चिन्ता न कीजिए, मैं अभी जाकर उन सभों को ठीक करती हूँ, जरा आप अपना मिजाज ठिकाने कीजिए और तिलिस्मी कवच को भी झटपट···"

पाँचवाँ बयान

मायारानी के सिपाही जो दोनों नकाबपोशों को गिरफ्तार करने आये थे धनपत को लिये हुए बाग के पहिले दर्जे की तरफ रवाना हुए, जहाँ वे रहा करते थे, मगर वे इच्छानुसार अपने ठिकाने न पहुँच सके, क्योंकि बाग के दूसरे दर्जे के बाहर निकलने का रास्ता मायारानी की कारीगरी से बन्द हो गया था। ये दरवाजे तिलिस्मी और बहुत ही मजबूत थे और इनका खोलना या तोड़ना कठिन ही नहीं, बल्कि असम्भव था। पाठकों को याद होगा कि बाग के दूसरे दर्जे और पहिले दर्जे के बीच में एक बहुत लम्बी-चौड़ी दीवार थी, जिस पर कमन्द लगाकर चढ़ना असम्भव था और सीढ़ियों के जरिए उस दीवार पर चढ़ और उसे लाँघकर ही एक दर्जे से, दूसरे दर्जे में जाना होता था। इस समय जो दरवाजा मायारानी ने तिलिस्मी रीति से बन्द किया है, इसी के बाद वह दीवार पड़ती थी, जिसे लाँघकर सिपाही लोग पहिले दर्जे में जाते थे। उस दीवार पर चढ़ने के लिए जो सीढ़ियाँ थीं, वे लोहे की थीं और इस समय दोनों तरफ की सीढ़ियाँ दीवार के अन्दर घुस गयी थीं, इसलिए दीवार पर चढ़ना एकदम असम्भव हो गया था।

दरवाजे को तिलिस्मी रीति से बन्द देख सिपाही लोग समझ गये कि यह मायारानी की कार्रवाई है। इसलिए उन लोगों के दिल में डर पैदा हुआ और वे सोचने लगे कि कहीं ऐसा न हो कि मायारानी हम लोगों को इसी बाग में फँसाकर मार डाले, क्योंकि आखिर वह तिलिस्म की रानी है, मगर यह विचार उन लोगों के दिल में ज्यादा देर तक न रहा, क्योंकि राजा गोपालसिंह के साथ दगा किये जाने का जो हाल नकाबपोशों की जुबानी सुना था, उस पर उन लोगों को पूरा-पूरा विश्वास हो गया था, और इसी सबब से गुस्से के मारे उन सभों की अवस्था बिल्कुल ही बदली हुई थी।

आखिर धनपत को साथ लिये हुए वे सिपाही यह सोचकर पीछे की तरफ लौटे कि उस चोर दरवाजे की राह से बाहर निकल जाँयगे, जिस राह से दोनों नकाबपोश बाग के अन्दर घुसे थे, मगर उस ठिकाने पहुँचकर वे लोग बहुत ही घबड़ाये और ताज्जुब करने लगे, क्योंकि उन्हें वह खिड़की कहीं नजर न आयी। हाँ, एक निशान दीवार में जरूर पाया जाता था, जिससे यह कहा जा सकता था कि शायद इसी जगह वह खिड़की रही होगी। यह निशान भी मामूली न था, बल्कि ऐसा मालूम होता था कि दीवारवाले चोर दरवाजे पर फौलादी चादर जड़ दी गयी है। अब उन सिपाहियों को पहिले से भी ज़्यादे तरद्दुद हुआ, क्योंकि सिवाय उन दोनों रास्तों के बाग के बाहर निकलने का कोई और जरिया न था। एक बार उन सिपाहियों के दिल में यह भी आया कि मायारानी की तरफ़ चलना चाहिए, मगर खौफ से ऐसा करने की हिम्मत न पड़ी।

उस समय दिन घण्टे-भर से ज्यादे चढ़ चुका था। सिपाही लोग क्रोध की अवस्था में भी तरद्दुद और घबराहट से खाली न थे और खड़े-खड़े सोच ही रहे थे कि किधर जाना और क्या करना चाहिए कि इतने ही में सामने से लीला आती हुई दिखायी पड़ी। जब वह पास पहुँची तो सिपाहियों की तरफ़ देखकर ऊँची आवाज में बोली, "तुम लोग अपनी जान के दुश्मन क्यों हो रहे हो? क्या जमानिया राज्य के नौकर होकर भी इस बात को भूल गये कि मायारानी एक भारी तिलिस्म की रानी हैं, और जो चाहे कर सकती हैं? दो-चार सौ आदमियों को बर्बाद कर डालना, उनके आगे एक अदना काम है। अफसोस, ऐसे मालिक के खिलाफ होकर तुम अपनी जान बचाया चाहते हो। याद रक्खो कि इस बाग में भूखे-प्यासे मर जाओगे पर तुम्हारे किये कुछ भी न होगा। मैं तुम लोगों को समझाती हूँ और कहती हूँ कि अपने मालिक के पास चलो और उनसे माफी माँगकर अपनी जान बचाओ।"

इसी तरह की ऊँच-नीच की बहुत-सी बातें लीला उन सिपाहियों से देर तक कहती रही और सिपाही लोग भी लीला की बात पर गौर कर ही रहे थे कि यकायक बायीं तरफ से एक शंख के बजने की आवाज आयी, घूमकर देखा तो वे ही दोनों नकाबपोश दिखायी पड़े, जो हाथ के इशारे से उन सिपाहियों को अपनी तरफ बुला रहे थे। उन्हें देखते ही सिपाहियों की अवस्था बदल गयी और उनके दिल के अन्दर उम्मीद, रंज, डर और तरद्दुद का चर्खा तेजी के साथ घूमने लगा। लीला की बातों पर जोकुछ सोच कर रहे थे, उसे छोड़ दिया और धनपत को साथ लिये हुए, इस तरह दोनों नकाबपोशों की तरफ बढ़े, जैसे प्यासे पंसाले (पौसरे) की तरफ लपकते हैं।

जब उन दोनों नकाबपोशों के पास पहुँचे तो एक नकाबपोश ने पुकार-

कर कहा, "इस बात से मत घबराओ कि मायारानी ने तुम लोगों को मजबूर कर दिया और इस बाग से बाहर जाने लायक नहीं रक्खा। आओ हम तुम सभों को इस बाग से बाहर कर देते हैं, मगर इसके पहिले तुम्हें एक ऐसा तमाशा दिखाया चाहते हैं, जिसे देखकर तुम बहुत ही खुश हो जाओगे और हद से ज्यादे बेफ़िक्री तुम लोगों के भाग में पड़ेगी, मगर वह तमाशा हम एकदम से सभों को नहीं दिखाया चाहते। मैं एक कोठरी में (हाथ का इशारा करके) जाता हूँ, तुम लोग बारी-बारी से पाँच-पाँच आदमी आओ और अद्भुत, अद्वितीय, अनूठा तथा आश्चर्यजनक तमाशा देखो।"

इस समय दोनों नकाबपोश जिस जगह खड़े थे, उसके पीछे की तरफ एक दीवार थी, जो बाग के दूसरे और तीसरे दर्जे की हद को अलग कर रही थी, और उसी जगह पर एक मामूली कोठरी भी थी। बात पूरी होते ही दोनों नकाबपोश पाँच सिपाहियों को अपने साथ आने के लिए कहकर उस कोठरी के अन्दर घुस गये। इस समय इन सिपाहियों की अवस्था कैसी थी, इसे दिखाना ज़रा कठिन है। न तो इन लोगों का दिल उन दोनों नकाबपोशों के साथ दुश्मनी करने की आज्ञा देता था, और न यही कहता था कि उन दोनों को छोड़ दो, और जिधर जायें जाने दो।

जब दोनों नकाबपोश कोठरी के अन्दर घुस गये तो उसके बाद पाँच सिपाही जो दिलावर और ताकतवर थे, कोठरी में घुसे और चौथाई घड़ी तक उसके अन्दर रहे। इसके बाद जब वे उस कोठरी के बाहर निकले, तो उनके साथियों ने देखा कि उन पाँचों के चेहरे से उदासी झलक रही है, आँखों से आँसू की बूँदें टपक रही हैं और सिर झुकाये अपने साथियों की तरफ आ रहे हैं। जब पास आये तो उन पाँचों की अवस्था एकदम बदल जाने का सबब सिपाहियों ने पूछा, जिसके जवाब में उन पाँचों ने कहा, "पूछने की कोई आवश्यकता नहीं है, तुम लोग पाँच-पाँच आदमी बारी-बारी से जाओ और जोकुछ है, अपनी आँखों से देख लो, हम लोगों से पूछोगे तो कुछ भी न बतावेंगे, हाँ, इतना अवश्य कहेंगे कि वहाँ जाने में किसी तरह का हर्ज नहीं है।"

आपुस में ताज्जुब-भरी बातें करने के बाद और पाँच सिपाही उस कोठरी के अन्दर घुसे, जिसमें दोनों नकाबपोश थे और पहिले पाँचों की तरह ये पाँचों भी चौथाई घड़ी तक उस कोठरी के अन्दर रहे। इसके बाद जब बाहर निकले तो इन पाँचों की भी वही अवस्था थी, जैसी उन पाँचों की, जो इनके पहिले कोठरी के अन्दर से होकर आये थे। इसके बाद फिर पाँच सिपाही कोठरी के अन्दर घुसे और उनकी भी वही अवस्था हुई, यहाँ तक कि जितने सिपाही वहाँ मौजूद थे, पाँच-पाँच करके सभी कोठरी के अन्दर

से हो आये और सभों ही की वही अवस्था हुई, जैसी पहिले गये हुए पाँचों सिपाहियों की हुई थी। धनपत ताज्जुब-भरी निगाहों से यह तमाशा देख और असल भेद जानने के लिए बेचैन हो रहा था, मगर इतनी हिम्मत न पड़ती थी कि किसी से कुछ पूछता, क्योंकि नकाबपोशों की आज्ञानुसार सिपाहियों की तरह वह उस कोठरी के अन्दर जाने नहीं पाया था, जिसमें दोनों नकाबपोश थे। अन्त में सब सिपाहियों ने आपुस में बातें करके इशारे में इस बात का निश्चय कर लिया कि कोठरी के अन्दर उन सभों ने एक ही रंग-ढंग का तमाशा देखा था।

थोड़ी देर बाद दोनों नकाबपोश उस कोठरी के बाहर निकल आये और उनमें से नाटे नकाबपोश ने सिपाहियों की तरफ देखकर कहा, "धनपत को मेरे हवाले करो।" सिपाहियों ने कुछ भी उज्र न किया, बल्कि अदब के साथ आगे बढ़कर धनपत को नकाबपोश के हवाले कर दिया। दोनों नकाबपोश उसे साथ लिये हुए फिर उस कोठरी के अन्दर घुस गये और आधे घण्टे तक वहाँ रहे, इसके बाद जब कोठरी के बाहर निकले तो नाटे नकाबपोश ने सिपाहियों से कहा, "धनपत को हमने ठिकाने पहुँचा दिया, अब आओ तुम लोगों को भी इस बाग के बाहर कर दें।" सिपाहियों ने कुछ भी उज्र न किया और दो-तीन झुण्डों में होकर नकाबपोश के साथ-साथ उस कोठरी के अन्दर गये और गायब हो गये। दोनों नकाबपोश भी उसी कोठरी के अन्दर जाकर गायब हो गये और उस कोठरी का दरवाज़ा भीतर से बन्द हो गया।

इस पचड़े में दो पहर दिन चढ़ आया, लीला दूर से खड़ी यह तमाशा देख रही थी, जब सन्नाटा हो गया तो वह भी लौटी और उसने इन बातों की खबर मायारानी तक पहुँचायी।

छठवाँ बयान

लीला की जुबानी दोनों नकाबपोशों, सिपाहियों और धनपत का हाल सुनकर मायारानी बहुत ही उदास और परेशान हो गयी। वह आशा, जो तिलिस्मी दरवाजा बन्द करने और बेहोशी का अद्भुत धूरा छिड़कने पर उसे बँधी थी, बिल्कुल जाती रही। तिलिस्म में जाकर तिलिस्मी दरवाजे को बन्द करना, तिलिस्मी दवा पीना और लीला को पिलाना, बेहोशी की बुकनी फूलों के गमलों में डालना, सब बिल्कुल ही व्यर्थ हो गया। धनपत दोनों नकाबपोशों के कब्जे में पड़ गया और सब सिपाही भी सहज ही में बाग के बाहर हो गये। इस समय उन दोनों नकाबपोशों की कार्रवाइयों ने उसे इतना बदहवास कर दिया कि वह अपने बचाव की कोई अच्छी सूरत

सोच नहीं सकती थी। आखिर वह हर तरह से दुःखी होकर फिर उसी तहखाने के अन्दर गयी, जिसमें पहिली दफे जाकर बाग के दूसरे दर्जे का दरवाजा तिलिस्मी रीति से बन्द किया था। हम ऊपर लिख आये हैं कि वहाँ दीवार में बिना दरवाजे की पाँच आलमारियाँ थीं और एक आलमारी में ताँबे के बहुत-से डिब्बे रक्खे थे। इस समय मायारानी ने उन्हीं डिब्बों को खोल-खोलकर देखना शुरू किया। ये डिब्बे छोटे और बड़े हर प्रकार के थे। कई डिब्बे खोल-खोलकर देखने बाद मायारानी ने एक डिब्बा खोला, जिसका पेटा एक हाथ से कम न होगा। उस डिब्बे में एक हाथीदाँत का तमंचा बारह अंगुल का और छोटी-छोटी बहुत-सी गोलियाँ रक्खी हुई थीं। उन गोलियों का रंग लाल था, और उनके अलावे एक ताम्रपत्र भी उस डिब्बे के अन्दर था। मायारानी इस डिब्बे को लेकर वहाँ से रवाना हुई और तहखाने का दरवाजा बन्द करती हुई, अपने स्थान पर उस जगह पहुँची, जहाँ उसकी लौंडियाँ, उसकी राह देख रही थीं। उसने सब लौंडियों के सामने ही उस डिब्बे को खोला और ताम्रपत्र हाथ में लेकर पढ़ने लगी, जब पूरी तरह पढ़ चुकी तो लीला की तरफ देखकर बोली, "तू देखती है कि मैं किस बला में फँस गयी हूँ?"

लीला : जी हाँ, मैं बखूबी देख रही हूँ। दोनों नकाबपोशों की तरफ जब ध्यान देती हूँ, तो कलेजा काँप जाता है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि अब कोई भारी उपद्रव उठनेवाला है, क्योंकि नकाबपोशों की बदौलत इस बाग के सिपाही भी बागी हो गये हैं।

माया : बेशक, ऐसा ही है और ताज्जुब नहीं कि वे सिपाही लोग जो इस समय मेरे पंजे से निकल गये हैं, मेरे बाकी के फौजी सिपाहियों को भी भड़कावें।

लीला : इसमें कुछ भी सन्देह नहीं, बल्कि इन सिपाहियों की बदौलत आपकी रिआया भी बागी हो जायगी और तब जान बचाना मुश्किल हो जायगा। अफसोस, आपने व्यर्थ ही अपने दोनों भेद मुझसे छिपा रक्खे, नहीं तो मैं इस विषय में कुछ राय देती!

माया : (ताज्जुब से) दोनों भेद कौन-से?

लीला : एक तो यही धनपतवाला।

माया : हाँ, ठीक है, और दूसरा कौन?

लीला : (मायारानी के कान की तरफ झुककर धीरे से) 'राजा गोपालसिंहवाला, जिन्हें भूतनाथ की मदद से आपने मार डाला!'

लीला की बात सुनकर मायारानी चौंक पड़ी, अपनी जगह से उठ खड़ी हुई और लीला का हाथ पकड़के किनारे ले जाकर धीरे-से बोली, "देख

लाला, तू केवल मेरी लौंडियों की सरदार ही नहीं है, बल्कि बचपन की साथी और मेरी सखी भी है। सच बता गोपालसिंहवाला भेद तुझे कैसे मालूम हुआ ?"

लीला : आप जानती ही हैं कि मुझे कुछ ऐयारी का भी शौक है।

माया : हाँ, मैं खूब जानती हूँ कि तू ऐयारी भी कर सकती है, लेकिन इस किस्म का काम मैंने तुझसे कभी लिया नहीं।

लीला : यह मेरी बदकिस्मती थी, नहीं तो मैं अब तक ऐयारा की पदवी पा चुकी होती।

माया : ठीक है, खैर, तो इससे मालूम हुआ कि तूने ऐयारी से गोपाल-सिंहवाला भेद मालूम कर लिया ?

लीला : जी हाँ, ऐसा ही है, मैंने ऐयारी से और भी बहुत-से भेद मालूम कर लिये हैं, जिनकी खबर आपको भी नहीं और जिनको इस समय कहना मैं उचित नहीं समझती, मगर शीघ्र ही उस विषय में मैं आपसे बातचीत करूँगी। इस समय तो मुझे केवल इतना ही कहना है कि किसी तरह अपनी जान बचाने की फ़िक्र कीजिए, क्योंकि मुझे भूतनाथ की दोस्ती पर शक है।

माया : क्या तू समझती है कि भूतनाथ ने मुझे धोखा दिया ?

लीला : जी हाँ, बल्कि मैं तो यही समझती हूँ कि राजा गोपालसिंह मारे नहीं गये, बल्कि जीते हैं।

माया : अगर ऐसा है तो बड़ा ही गजब हो जायगा, मगर इसका कोई सबूत भी है ?

लीला : आज तो नहीं, मगर कल तक मैं इसका सबूत आपको दे सकूँगी।

माया : अफसोस, अफसोस। मैं इस समय किले में जाकर अपने दीवान से राय लेनेवाली थी, मगर अब तो कुछ और ही सोचना पड़ा।

लीला : (उस डिब्बे की तरफ इशारा करके जो अभी तिलिस्मी तहखाने में से मायारानी लायी थी) पहिले यह बताइये कि इस डिब्बे को आप किस नीयत से लायी हैं ? यह हाथीदाँत का तमंचा कैसा है, और ये गोलियाँ क्या काम दे सकती हैं ?

माया : ये गोलियाँ इसी तमंचे में रखकर चलायी जाँयगी। इसके चलाने में किसी तरह की आवाज नहीं होती और गोली भी आध-कोस तक जा सकती है। जब यह गोली किसी के बदन पर लगेगी या जमीन पर गिरेगी तो एक आवाज देकर फट जायगी और इसके अन्दर से बहुत-सा जहरीला धुआँ निकलेगा। वह धुआँ जिस-जिसके नाक में जायगा, वह आदमी फौरन ही बेहोश हो जायगा। अगर हजार आदमियों की भीड़ आ रही हो, तो उन

सभों को बेहोश करने के लिए, केवल दस-पाँच गोलियाँ काफी हैं।

लीला : बेशक, यह बहुत अच्छी चीज है और ऐसे समय में आपको बड़ा काम दे सकती है, मगर मैं समझती हूँ कि उस डिब्बे में पाँच सौ से ज्यादे गोलियाँ न होंगी, इसके बाद कदाचित् वह ताम्रपत्र* कुछ काम दे सके जो उस डिब्बे में है, और जिसे आपने हम लोगों के सामने पढ़ा था।

माया : वाह, तुम बहुत समझदार हो। बेशक, ऐसा ही है। इस ताम्रपत्र में उन गोलियों के बनाने की तरकीब लिखी है। इस तिलिस्म में ऐसी हजारों चीज़ें हैं, मगर लाचार हूँ कि तिलिस्म का पूरा हाल मुझे मालूम नहीं है, बल्कि चौथे दर्जे के विषय में तो मैं कुछ भी नहीं जानती। फिर भी जोकुछ मैं जानती हूँ या जहाँ तक तिलिस्म में मैं जा सकती हूँ, वहाँ ऐसी और भी कितनी ही चीज़ें हैं, जो समय पर मेरे काम आ सकती हैं।

लीला : अब यही समय है कि उन चीजों को लेकर आप यहाँ से चल दीजिए, क्योंकि इस बाग तथा आपके राज्य पर अब आफत आया ही चाहती है। मैंने सुना है कि राजा बीरेन्द्रसिंह की बेशुमार फौज जमानिया की तरफ आ रही है, बल्कि यों कहना चाहिए कि आजकल में पहुँचा ही चाहती है।

माया : हाँ, यह खबर मैंने भी सुनी है। यदि गोपालसिंह का और धनपत का मामला न बिगड़ा होता तो मैं मुकाबिला करने के लिए तैयार हो जाती, परन्तु इस समय तो मुझे अपनी रिआया में से किसी का भी भरोसा नहीं है।

लीला : भरोसे के साथ-ही-साथ आप समझ रखिए कि आप अपने किसी नौकर पर हुकूमत की लाल आँख भी अब नहीं दिखा सकतीं। मगर इन बातों में वृथा देर हो रही है। इस विषय को बहुत जल्द तय कर लेना चाहिए कि अब क्या करना और कहाँ जाना मुनासिब होगा।

माया : हाँ, ठीक है, मगर इसके भी पहिले मैं तुमसे यह पूछती हूँ कि तुम इस मुसीबत में मेरा साथ देने के लिए कब तक तैयार रहोगी?

लीला : जब तक मेरी जिन्दगी है, या जब तक आप मुझ पर भरोसा करेंगी।

माया : यह जवाब तो साफ नहीं है, बल्कि टेढ़ा है।

लीला : इस पर आप अच्छी तरह गौर कीजियेगा, मगर यहाँ से निकल चलने के बाद।

माया : अच्छा यह तो बताओ कि मेरी और लौंडियों का क्या हाल है?

---

* ताम्रपत्र—ताँबे की तख्ती, जिस पर कुछ लिखा या खुदा हुआ हो।

लीला : आपकी लौंडियों में केवल चार-पाँच ऐसी हैं, जिन पर मैं भरोसा कर सकती हूँ, बाकी लौंडियों के विषय में, मैं कुछ भी नही कह सकती और न उनके दिल का हाल ही जाना जा सकता है।

माया : (ऊँची साँस लेकर) हाय, यहाँ तक नौबत पहुँच गयी ! यह सब मेरे पापों का फल है। अच्छा जो होगा देखा जायगा। इस अनूठे तमंचे और गोलियों को मैं सम्हालती हूँ और थोड़ी देर के लिए पुनः तिलिस्मी तहखाने में जाकर देखती हूँ कि मेरे काम की ऐसी कौन-सी चीज है जिसे सफर में अपने साथ ले जा सकूँ ! जोकुछ हाथ लगे सो ले आती हूँ और बहुत जल्द तुमको और उन लौंडियों को साथ लेकर निकल भागती हूँ, जिन पर तुम भरोसा रखती हो। कोई हर्ज नहीं, इस गयी-गुजरी हालत में भी मैं एक दफे लाखों दुश्मनों को जहन्नुम में पहुँचाने की हिम्मत रखती हूँ !!

इसके जवाब में पीछे की तरफ से किसी गुप्त मनुष्य ने कहा—"बेशक बेशक, तुम मरते-मरते भी हजारों घर चौपट करोगी !!"

सातवाँ बयान

ऐयारी भाषा की चीठी पढ़ने और कमलिनी के ढाढ़स दिलाने पर कुँअर इन्द्रजीतसिंह की दिलजमई तो हो गयी, परन्तु 'टेप' का परिचय पाने के लिए वे बेचैन हो रहे थे। अस्तु, उससे मिलने की आशा में दरवाजे की तरफ ध्यान लगाकर थोड़ी देर तक खड़े हो गये। यकायक उस मकान का दरवाजा खुला और धनपत की कलाई पकड़े 'टेप' महाशय अपने चेहरे पर नकाब डाले हुए आते दिखायी दिये। दरवाजे के बाहर निकलते ही 'टेप' ने अपने चेहरे पर से नकाब हटा दी, सूरत देखते ही कुँअर इन्द्रजीतसिंह हँस पड़े और लपकके उनकी कलाई पकड़कर बोले, "अहा, यह किसे आशा थी कि यहाँ पर राजा गोपालसिंह से मुलाकात होगी ? (कमलिनी की तरफ देखकर) तो क्या इन्हीं ने अपना नाम 'टेप' रक्खा है ?"

कमलिनी : जी हाँ।

इन्द्रजीत : (गोपालसिंह से) क्या आनन्दसिंह इसी मकान के अन्दर है ?

गोपाल : जी हाँ, आप मकान के अन्दर चलिए और उनसे मिलिए।

इन्द्रजीत : एक औरत के रोने की आवाज हम लोगों ने सुनी थी, शायद वह भी इसी मकान के अन्दर हो ?

गोपाल : जी नहीं, वह कमबख्त औरत (धनपत की तरफ इशारा करके) यही है। न मालूम ईश्वर ने इस हरामजादे को कैसा मर्द बनाया है कि आवाज से भी कोई इसे मर्द नहीं समझ सकता !

कमलिनी : इसे आपने कब पकड़ा ?

गोपाल : यह कल से मेरे कब्जे में है और मैं कल ही इसे इस मकान में कैद कर गया था, बल्कि आज छुड़ाने के लिए आया था।

इन्द्रजीत . तो आप कल भी इस मकान में आ चुके हैं ! मगर मुझसे मिलने के लिए शायद कसम खा चुके थे !

गोपाल : (हँसकर) नहीं नहीं, मेरा वह समय बड़ा ही अनमोल था, एक-एक पल की देर बुरी मालूम होती थी, इसी से आपसे मिलने के लिए मैं रुक न सका। इसका खुलासा हाल आप सुनेंगे तो बहुत ही हँसेंगे और खुश होंगे। मगर पहिले मकान के अन्दर चलकर आनन्दसिंह से मिल लीजिए तब यह अनूठा किस्सा आपसे कहूँगा।

इन्द्रजीत : क्या आनन्द यहाँ तक नहीं आ सकता ?

गोपाल : नहीं वे यहाँ नहीं आ सकते। वे तिलिस्मी कारखाने में फँस चुके हैं इसलिए छूटने का उद्योग नहीं कर सकते, बल्कि तिलिस्म के अन्दर जा सकते हैं और उसे तोड़कर निकल आ सकते हैं। मगर अब उनसे मिलने में देर न कीजिए।

इन्द्रजीत : आप जिस काम के लिए गये थे, वह हुआ ?

गोपाल : वह काम बखूबी हो गया, उसका खुलासा हाल थोड़ी देर में आपसे कहूँगा।

कमलिनी : भूतनाथ को आपने कहाँ छोड़ा ?

गोपाल : वह भी आता ही होगा। वास्तव में वह बड़ा ही चालाक और धूर्त ऐयार है। उसने जो काम किये हैं, सुनोगी तो हँसते-हँसते लोटन कबूतर बन जाओगी। (इन्द्रजीतसिंह की तरफ देखकर) आप आनन्दसिंह के फँसने से दुःखी न होइए, क्योंकि आप दोनों भाइयों के लिए इस तिलिस्म का तोड़ना जरूरी हो चुका है।

इन्द्रजीत : ठीक है, मगर रिक्तगन्थ का पूरा-पूरा मतलब उसकी समझ में नहीं आया है, और इससे तिलिस्म के काम में उसे तकलीफ होना सम्भव है। उसमें दस-बारह शब्द ऐसे हैं, जिनका अर्थ नहीं लगता और उन शब्दों का अर्थ जाने बिना बहुत-सी बातों का मतलब समझ में नहीं आता।

गोपाल : (हँसकर) आपका कहना ठीक है, मगर मैं एक बात आपको ऐसी बताता हूँ कि जिससे आप हरएक तिलिस्मी ग्रन्थ को अच्छी तरह पढ़ और समझ लेंगे और उनमें चाहे कैसे ही टेढ़े शब्द क्यों न हों, मगर मतलब समझने में कठिनता न होगी।

इन्द्रजीत : वह क्या ?

गोपाल : केवल एक छोटी-सी बात है।

इन्द्रजीत : मगर उसके बताने में आप हुज्जत बड़ी कर रहे हैं।

गोपालसिंह ने झुककर इन्द्रजीतसिंह के कान में कुछ कहा, जिसे सुनते ही कुमार हँस पड़े और बोले, "बेशक बड़ी चतुराई की गयी है ! जरा-सा फेर में मतलब कैसा बिगड़ जाता है ! आपका कहना बहुत ठीक है। अब कोई शब्द ऐसा नहीं निकलता, जिसका अर्थ मैं न लगा सकूँ ! क्यों न हो, आखिर आप तिलिस्म के राजा ही ठहरे।"

कमलिनी से इस समय चुप न रहा गया, वह ताने के तौर पर सिर नीचा करके बोली, "बेशक राजा ही ठहरे, इसी से तो बेमुरौवती कूट-कूट-कर भरी है !" इसके जवाब में गोपालसिंह ने कहा, "नहीं नहीं, ऐसा मत खयाल करो। तुम्हारा उदास चेहरा कहे देता है कि तुम्हें इस बात का रंज है कि हमने जोकुछ कुमार के कान में कहा, उससे तुमको जान-बूझके वंचित रक्खा, मगर नहीं (धनपत की तरफ इशारा करके) इस कमबख्त के खयाल से मैंने ऐसा किया। आखिर वह भेद तुमसे छिपा न रहेगा।"

इस पर कुअर इन्द्रजीतसिंह ने एक विचित्र निगाह कमलिनी पर डाली, जिसे देखते ही वह हँस पड़ी, और मकान के अन्दर जाने के लिए दरवाजे की तरफ बढ़ी। कुँअर इन्द्रजीतसिंह, कमलिनी, लाडिली और साथ उनके धनपत का हाथ पकड़े हुए राजा गोपालसिंह उस मकान के अन्दर चले।

इस मकान की हालत हम ऊपर लिख आये हैं, इसलिए पुनः नहीं लिखते। राजा गोपालसिंह सभों को साथ लिये हुए उस कोठरी में पहुँचे, जिसमें कुँअर आनन्दसिंह फँसे हुए थे, मगर इस समय वहाँ की अवस्था वैसी न थी, जैसीकि हम ऊपर लिख आये हैं, अर्थात् वह तिलिस्मी सन्दूक, जिसमें आनन्दसिंह का हाथ फँस गया था, वहाँ न था और न आनन्दसिंह वहाँ थे, हाँ, उस कोठरी की जमीन का वह हिस्सा, जिस पर सन्दूक था, जमीन के अन्दर धँस गया था और वहाँ एक कूएँ की शक्ल दिखायी दे रही थी। यह देख राजा गोपालसिंह ताज्जुब में आ गये और उस कूएँ की तरफ देखकर कुछ सोचने लगे। आखिर कुँअर इन्द्रजीतसिंह ने उन्हें टोका और चुप रहने का सबब पूछा।

इन्द्रजीत : आप क्या सोच रहे हैं ? शायद आनन्दसिंह को आपने इसी कोठरी में छोड़ा था ?

गोपाल : जी हाँ, इस जगह जहाँ आप कूएँ की तरह का गड़हा देखते हैं एक सन्दूक था और उसमें एक छेद था, उसी छेद के अन्दर हाथ डालकर कुमार ने अपने को फँसा लिया था। मालूम होता है कि अब वे तिलिस्म के अन्दर चले गये। इसी खयाल से मैंने आपसे कहा था कि कुँअर आनन्दसिंह अपने को छुड़ा नहीं सकते, बल्कि तिलिस्म के अन्दर जा सकते हैं।

इन्द्रजीत : अफसोस, खैर, मरजी परमेश्वर की ? इस समय मेरा दिमाग परेशान हो रहा है। धनपत को मैं इस अवस्था में क्यों देख रहा हूँ ? यकायक आपका इस बाग में आना कैसे हुआ ? आप मुझसे मिले बिना सीधे इस मकान में क्यों आये ? आनन्द को इस मकान में आपने ठहरने क्यों दिया, अथवा उसे बचाने का उद्योग क्यों न किया ? इत्यादि बहुत-सी बातें जानने के लिए मैं इस समय परेशान हो रहा हूँ, मगर इसके पहिले मैं इस कूएँ की अवस्था जानने का उद्योग करूँगा। (कमलिनी की तरफ देखकर) जरा तिलिस्मी खंजर मुझे दो, उसके जरिए से इस कुएँ में उजाला करके मैं देखूंगा कि इसके अन्दर क्या है ?

कमलिनी : (तिलिस्मी खंजर और अँगूठी कुमार के सामने रखकर) लीजिए, शायद इससे कुछ काम चले !

कुँअर इन्द्रजीतसिंह ने अँगूठी पहिर खंजर हाथ में लिया और धीरे-धीरे उस गड़हे के किनारे गये, जो ठीक कूएँ की तरह का हो रहा था। खंजरवाला हाथ कुमार ने कूएँ के अन्दर डाला और उसका कब्जा दबाकर उजाला करने बाद झाँककर देखा कि उसके अन्दर क्या है।

न मालूम कुँअर इन्द्रजीतसिंह ने कूएँ के अन्दर क्या देखा कि वे यकायक बिना किसी से कुछ कहे तिलिस्मी खंजर हाथ में लिये हुए, उस कूएँ के अन्दर कूद पड़े। यह देखते ही कमलिनी और लाडिली परेशान हो गयीं और राजा गोपालसिंह को भी बहुत ताज्जुब हुआ। इन्द्रजीतसिंह की तरह राजा गोपालसिंह ने भी अपना तिलिस्मी खंजर हाथ में लेकर कूएँ के अन्दर किया और उसका कब्जा दबा रोशनी करने बाद झाँककर देखा कि क्या बात है, मगर कुछ दिखायी न पड़ा।

कमलिनी : कुछ मालूम हुआ कि इस गड़हे में क्या है ?

गोपाल : कुछ भी मालूम नहीं होता, न जाने क्या देखकर कुमार इसमें कूद गये।

कमलिनी : खैर, आप यहाँ से हटिए और सोचिए कि अब क्या करना होगा ?

गोपाल : यद्यपि मैं जानता हूँ कि यहाँ का तिलिस्म कुमार के हाथ से टूटेगा, परन्तु इस रीति से दोनों कुमारों का तिलिस्म के अन्दर जाना ठीक न हुआ। देखा चाहिए ईश्वर क्या करता है ? चलो अब यहाँ रहना उचित नहीं है, और न कुमार से मुलाकात होने की ही कोई आशा है।

कमलिनी : (अफसोस के साथ) चलिए।

गोपाल : (बाहर की तरफ चलते हुए) अफसोस ! कुमार से कई बातें कहने की आवश्यकता थी, मगर लाचार !

कमलिनी : (धनपत की तरफ इशारा करके) इसे आप कहाँ-कहाँ लिये फिरेंगे और यहाँ क्यों लाये थे ?

गोपाल : इसे मैं कल गिरफ्तार करके इसी मकान के अन्दर छोड़ गया था। मुझे आशा थी कि यह स्वयं इस मकान से बाहर न निकल सकेगा, मगर आज इस मकान में आकर देखा तो बड़ा ही आश्चर्य हुआ। इस मकान के तीन दरवाजे यह खोल चुका था और चौथा दरवाजा खोला ही चाहता था। न मालूम इस मकान का भेद इसे क्योंकर मालूम हुआ।

कमलिनी : इसे आपने किस रीति से गिरफ्तार किया ?

गोपाल : पहले इस कमबख्त का इन्तजाम कर लूँ, तो इसका अनूठा किस्सा कहूँ।

कमलिनी और लाडिली के साथ धनपत का हाथ पकड़े हुए राजा गोपालसिंह उस मकान के बाहर आये और देवमन्दिर की तरफ रवाना होकर उसके पश्चिम तरफवाले मकान के पास पहुँचे। हम ऊपर लिख आये हैं कि देवमन्दिर के पश्चिम तरफवाले मकान के पास दरवाजे पर हड्डियों का एक ढेर था और उसके बीचोबीच में लोहे की एक जंजीर पड़ी हुई थी, जिसका दूसरा सिरा उसके पासवाले कूएँ के अन्दर गया हुआ था।

धनपत को घसीटते हुए राजा गोपालसिंह उसी कूएँ पर गये और उस हरामजादे स्त्री रूपधारी मर्द को जबर्दस्ती उसी कूएँ के अन्दर ढकेल दिया। इसके साथ ही उस कुएँ के अन्दर से धनपत के चिल्लाने की आवाज आने लगी, परन्तु राजा गोपालसिंह, कमलिनी और लाडिली ने उस पर कुछ ध्यान न दिया। तीनों आदमी देवमन्दिर में आकर बैठ गये और बातचीत करने लगे।

कमलिनी : हाँ, अब पहिले यह कहिए कि भूतनाथ ने क्या किया। मैंने उसे आपके पास भेजा था, इसलिए पूछती हूँ कि उसने अपना काम ईमानदारी से किया या नहीं !

गोपाल : बेशक, भूतनाथ ने अपना काम हद से ज्यादा ईमानदारी के साथ किया। वह जाहिर में मायारानी के साथ ऐसा मिला कि उसे भूतनाथ पर विश्वास हो गया और वह समझने लगी कि भूतनाथ इनाम की लालच से मेरा काम उद्योग के साथ करेगा।

कमलिनी : हाँ, उसने मायारानी के साथ मेल पैदा करने का हाल मुझसे कहा था। (मुस्कुराकर) अजीब ढंग से उसने मायारानी को धोखा दिया। हमारी तरफ की मामूली सच्ची बातें कहकर, उसने अपना काम पूरा-पूरा निकाला, मगर मैं उसके बाद का हाल पूछती हूँ, जब उसे आपके पास काशी में मैंने भेजा था, क्योंकि उसके बाद अभी तक वह मुझसे नहीं

मिला ।

गोपाल : उसके बाद भूतनाथ ने दो-तीन काम बड़े अनूठे किये, जिनका खुलासा हाल मैं तुमसे कहूँगा, लेकिन उन कामों में एक काम सबसे बढ़-चढ़ के हुआ !

कमलिनी : वह क्या ?

गोपाल : उसने मायारानी से कहा कि मैं गोपालसिंह को गिरफ्तार करके दारोगावाले मकान में कैद कर देता हूँ, तुम उसे अपने हाथ से मार-कर निश्चिन्त हो जाओ । यह सुनकर मायारानी बहुत ही खुश हुई और भूतनाथ ने भी वह काम बड़ी खूबी के साथ किया, बल्कि इसके इनाम में अजायबघर की ताली मायारानी से ले ली !

कमलिनी : क्या अजायबघर की ताली भूतनाथ ने ले ली ?

गोपाल : हाँ ।

कमलिनी : यह बड़ा काम हुआ और इस काम के लिए मैंने उसे सख्त ताकीद की थी । अब वह ताली किसके पास है ?

गोपाल : ताली मेरे पास है, मुझे आशा न थी कि भूतनाथ मुझे देगा, मगर उसने कोई उज्र न किया ।

कमलिनी : वह आपसे किसी तरह उज्र नहीं कर सकता, क्योंकि मैंने उसे कसम देकर कह दिया था कि जितना मुझे मानते हो, उतना ही राजा गोपालसिंह को मानना । असल बात तो यह है कि भूतनाथ बड़े काम का आदमी है । इसमें कोई सन्देह नहीं कि वह राजा बीरेन्द्रसिंह का गुनहगार है और उसने सजा पाने लायक काम किया है, मगर वह कसूर उससे धोखे में हुआ । इश्क का भूत उसके ऊपर सवार था और उसी ने उससे वह काम कराया, पर वास्तव में उसकी नीयत साफ है और उस कसूर का उसे सख्त रंज है, ऐसी अवस्था में जिस तरह हो उसका कसूर माफ होना ही चाहिए ।

गोपाल : बेशक बेशक, और उसके बाद तुम्हारी बदौलत उसके हाथ से कई ऐसे काम निकले हैं, जिनके आगे वह कसूर कुछ भी नहीं है ।

कमलिनी : अच्छा अब खुलासा कहिए कि भूतनाथ ने आपके मारने के विषय में किस तरह मायारानी को धोखा दिया और अजायबघर की ताली क्योंकर ली ?

राजा गोपालसिंह के विषय में भूतनाथ ने जिस तरह मायारानी को धोखा दिया था, उसका हाल हम ऊपर के बयानों में लिख आये हैं । इस समय वही हाल राजा गोपालसिंह ने अपने तौर पर कमलिनी से बयान किया । ताज्जुब नहीं कि भूतनाथ के विषय में हमारे पाठकों को धोखा हुआ

हो, और वे समझ बैठे हों कि भूतनाथ वास्तव में मायारानी से मिल गया, मगर नहीं, उन्हें अब मालूम हुआ होगा कि भूतनाथ ने मायारानी से मिल-कर केवल अपना काम साधा, और मायारानी को हर तरह से नीचा दिखाया।

आठवाँ बयान

अहा, ईश्वर की महिमा भी कैसी विचित्र है। बुरे कर्मों का बुरा फल अवश्य ही भोगना पड़ता है। जो मायारानी अपने सामने किसी को कुछ समझती ही न थी, वही आज किसी के सामने जाने या किसी को मुँह दिखाने का साहस नहीं कर सकती। जो मायारानी कभी किसी से डरती ही न थी, वही आज एक पत्ते के खड़खड़ाने से भी डरकर बदहवास हो जाती है। जो मायारानी दिन-रात हँसी-खुशी में बिताया करती थी, वह आज रो-रोकर अपनी आँखें सुजा रही है। सन्ध्या के समय भयानक जंगल में उदास और दुःखी मायारानी केवल पाँच लौंडियों के साथ सिर झुकाये अपने किये हुए बुरे कर्मों को याद कर-करके पछता रही है। रात की अवाई के कारण जैसे-जैसे अँधेरा होता जाता है, तैसे-तैसे उसकी घबराहट भी बढ़ती जाती है। इस समय मायारानी और उसकी लौंडियाँ मर्दाने भेष में हैं। लौंडियों के पास नीमचा तथा तीरकमान मौजूद है, परन्तु मायारानी केवल तिलिस्मी तमंचा कमर में छिपाये हुए है। वह घबड़ा-घबड़ाकर बार-बार पूरब की तरफ देख रही है, जिससे मालूम होता है कि इस समय उधर से कोई उसके पास आनेवाला है। थोड़ी ही देर बाद अच्छी तरह अँधेरा हो गया और इसी बीच में पूरब तरफ से किसी के आने की आहट मालूम हुई। यह लीला थी, जो मर्दाने भेष में पीतल की जालदार लालटेन लिये हुए कहीं दूर से चली आ रही थी। जब वह पास आयी, मायारानी ने घबराहट के साथ पूछा, "कहो क्या हाल है?"

लीला : हाल बहुत ही खराब है, अब तुम्हें जमानिया की गद्दी कदापि नहीं मिल सकती।

माया : यह तो मैं पहिले ही से समझे बैठी हूँ। तू दीवान साहब के पास गयी थी?

लीला : हाँ, गयी थी। उस समय उन सिपाहियों में से कई सिपाही वहाँ मौजूद थे, जो आपके तिलिस्मी बाग में रहते हैं और जिन्होंने दोनों नकाबपोशों का साथ दिया था। उस समय वे सिपाही दीवान साहब से दोनों नकाबपोशों का हाल बयान कर रहे थे, मगर मुझे देखते ही चुप हो गये।

माया : तब क्या हुआ।

लीला : दीवान साहब ने मुझे एक तरफ बैठने का इशारा किया और पूछा कि 'तू यहाँ क्यों आयी है' ? इसके जवाब में मैंने कहा कि 'मायारानी हम लोगों को छोड़कर न मालूम कहाँ चली गयी। जब चारों तरफ ढूंढ़ने पर भी पता न लगा तो इत्तिला के लिए आपके पास आयी हूँ'। यह सुनकर दीवान साहब ने कहा कि 'अच्छा ठहर, मैं इन सिपाहियों से बातें कर लूँ तब तुझसे करूँ'।

माया : अच्छा तब तूने उन सिपाहियों की बातें सुनीं ?

लीला : जी नहीं, सिपाहियों ने मेरे सामने बात करने से इन्कार किया और कहा कि 'हम लोगों को लीला पर विश्वास नहीं है' ! आखिर दीवान साहब ने मुझे बाहर जाने का हुक्म दिया। उस समय मुझे अन्दाज से मालूम हुआ कि मामला बेढब हो गया और ताज्जुब नहीं कि मैं गिरफ्तार कर ली जाऊँ इसलिए पहरेवालों से बात बनाकर मैंने अपना पीछा छुड़ाया और भागकर मैदान का रास्ता लिया।

माया : संक्षेप में कह कि उन दोनों नकाबपोशों का कुछ भेद मालूम हुआ कि नहीं।

लीला : दोनों नकाबपोशों का असल भेद कुछ भी मालूम न हुआ, हाँ, उस आदमी का पता लग गया, जिसने बाग से निकल भागने का विचार करती समय गुप्त रीति से कहा था कि 'बेशक-बेशक, तुम मरते-मरते भी हजारों घर चौपट करोगी' !

माया : हाँ, कैसे पता लगा ? वह कौन था ?

लीला : वह भूतनाथ था। जब मैं दीवान साहब के यहाँ से भागकर शहर के बाहर हो रही थी। तब यकायक उससे मुलाकात हुई। उसने स्वयं मुझसे कहा कि 'फलानी बात का कहनेवाला मैं हूँ, तू मायारानी से कह दीजियो कि अब तेरे दिन खोटे आये हैं, अपने किये का फल भोगने के लिए तैयार हो रहे, हाँ, यदि मुझे कुछ देने की सामर्थ्य हो तो मैं तेरा साथ दे सकता हूँ।

माया : (ऊँची साँस लेकर) हाय ! अच्छा और क्या-क्या मालूम हुआ ?

लीला : हाल क्या कहूँ ? राजा बीरेन्द्रसिंह की बीस हजार फौज आ गयी है, जिसकी सरदारी नाहरसिंह कर रहा है। दीवान साहब ने एक सरदार को पत्र देकर नाहरसिंह के पास भेजा था, मालूम नहीं इस पत्र में क्या लिखा था, मगर नाहरसिंह ने उसका यह जवाब, जुबानी कहला भेजा कि हम केवल मायारानी को गिरफ्तार करने के लिए आये हैं। इसके बाद

पता चला कि दीवान साहब ने आपकी खोज में कई जासूस रवाना किये हैं।

माया : तो इससे निश्चित होता है कि कमबख्त दीवान भी मेरा दुश्मन हो गया।

लीला : क्या इस बात में अब भी शक है ?

माया : (लम्बी साँस लेकर) अच्छा और क्या मालूम हुआ ?

लीला : एक बात सबसे ज्यादे ताज्जुब की मालूम हुई।

माया : वह क्या ?

लीला : रात के समय भेष बदलकर मैं राजा बीरेन्द्रसिंह के लश्कर में गयी थी। घूमते-फिरते ऐसी जगह पहुँची, जहाँ से नाहरसिंह का खेमा सामने दिखायी दे रहा था और उस खेमे के दरवाजे पर मशाल हाथ में लिये हुए पहरा देनेवाले सिपाहियों की चाल साफ-साफ दिखायी दे रही थी। मैंने देखा कि खेमे के अन्दर से दो नकाबपोश निकले और जहाँ मैं खड़ी थी, उसी तरफ आने लगे।

मैं किनारे हट गयी। जब वे मेरे पास से होकर निकले तो उनकी चाल और उनके कद से मुझे निश्चय हो गया कि वे दोनों नकाबपोश वही हैं, जो हमारे बाग में आये थे और जिन्होंने धनपत को पकड़ा था।

माया : हाँ !

लीला : जी हाँ !

माया : अफसोस, इसका पता कुछ भी न लगा कि वे दोनों आखिर हैं कौन, मगर इसमें कोई सन्देह नहीं कि वे खास बाग के तिलिस्मी भेदों को जानते हैं और इस समय तेरी जुबानी सुनने से यह जाना जाता है कि वे दोनों राजा बीरेन्द्रसिंह के पक्षपाती भी हैं।

लीला : इसका निश्चय नहीं हो सकता कि वे दोनों नकाबपोश राजा बीरेन्द्रसिंह के पक्षपाती हैं, शायद वे नाहरसिंह से मदद लेने गये हों।

माया : ठीक है, यह भी हो सकता है। लेकिन बात तो यह है कि मैं सिवाय गोपालसिंह के और किसी से नहीं डरती, न मुझे रिआया के बिगड़ने का डर है, न सिपाहियों या फौज के बागी होने का खौफ, न दीवान मुत्सद्दियों के बिगड़ने का अन्देशा और न कमलिनी और लाडिली की बेवफाई का रंज—क्योंकि मैं इन सभी को अपनी करामात से नीचा दिखा सकती हूँ, हाँ, यदि गोपालसिंह के बारे में कमबख्त भूतनाथ ने मुझे धोखा दिया है जैसा कि तू कह चुकी है तो बेशक खौफ की बात है। अगर वह जीता है तो मुझे बुरी तरह हलाल करेगा। वह इस बात से कदापि नहीं डरेगा कि मेरा भेद खुलने से उसकी बदनामी होगी, क्योंकि मैंने उसके साथ बहुत बुरा सलूक

किया है। जिस समय कमबख्त कमलिनी और बीरेन्द्रसिंह के ऐयारों ने गोपालसिंह को कैद से छुड़ाया था, यदि गोपालसिंह चाहता तो उसी समय मुझे जहन्नुम में मिला सकता था, मगर उसका ऐसा न करना मेरा कलेजा और भी दहला रहा है, शायद मौत से भी बढ़कर कोई सजा उसने मेरे लिए सोच ली है, हाय अफसोस ! मैंने तिलिस्मी भेद जानने के लिए, उसे क्यों इतने दिनों तक कैद में रख छोड़ा ! उसी समय उसे मार डाला होता तो यह बुरा दिन क्यों देखना पड़ता ? हाय, अब तो मौत से भी कोई भारी सजा मुझे मिलनेवाली है। (रोती है)

लीली : अब रोने का समय नहीं है, किसी तरह जान बचाने की फिक्र करनी चाहिए।

माया : (हिचकी लेकर) क्या करूँ ? कहाँ जाऊँ ? किससे मदद माँगूं ? ऐसी अवस्था में कौन मेरी सहायता करेगा ? हाय, आज तक मैंने किसी के साथ किसी तरह की नेकी नहीं की, किसी को अपना दोस्त न बनाया और किसी पर अहसान का बोझ न डाला, फिर किसी को क्या गरज पड़ी है, जो ऐसी अवस्था मे मेरी मदद करे ! बीरेन्द्रसिंह के लड़कों के साथ दुश्मनी करना मेरे लिए और भी जहर हो गया।

लीला : खैर, जो हो गया सो हो गया, इस समय इन सब बातों का सोच-विचार करना और भी बुरा है। मैं इस मुसीबत में हर तरह तुम्हारा साथ देने के लिए तैयार हूँ, और अब भी तुम्हारे पास ऐसी-ऐसी चीजें हैं कि उनसे कठिन-से-कठिन काम निकल सकता है, रुपये-पैसे की तरफ से कुछ तकलीफ हो ही नहीं सकती, क्योंकि सेरों जवाहिरात पास में मौजूद है, फिर इतनी चिन्ता क्यों कर रही हो ?

माया : चिन्ता क्यों न की जाय ? एक मनोरमा का मकान छिपकर रहने योग्य था, सो वहाँ भी बीरेन्द्रसिंह के ऐयारों के चरण जा पहुँचे। तू ही कह चुकी है कि किशोरी और कामिनी को ऐयार लोग छुड़ाकर ले गये। नागर को भी उन लोगों ने फँसा लिया होगा। अब सबसे पहिला काम तो यह है कि छिपकर रहने के लिए कोई जगह खोजी जाय, इसके बाद जोकुछ करना होगा किया जायगा। हाय, अगर गोपालसिंह की मौत हो गयी होती तो न मुझे रिआया के बाग़ी होने का डर था और न राजा बीरेन्द्रसिंह की दुश्मनी का।

लीला : छिपकर रहने के लिए मैं जगह का बन्दोबस्त कर चुकी हूँ। यहाँ से थोड़ी ही दूर पर···

लीला इससे ज्यादे कुछ कहने न पायी थी कि पीछे की तरफ से कई आदमियों के दौड़ते हुए आने की आहट मालूम हुई। बात-की-बात में वे

लोग जो वास्तव में चोर थे, चोरी का माल लिये हुए उस जगह आ पहुँचे, जहाँ मायारानी और उसकी लौंडियाँ बैठी बातें कर रही थीं। ये चोर गिनती में पाँच थे और उनके पीछे-पीछे कई सवार भी उनकी गिरफ़्तारी के लिए चले आ रहे थे, जिनके घोड़ों के टापों की आवाज बखूबी आ रही थी। जब वे चोर मायारानी के पास पहुँचे तो यह सोचकर कि पीछा करने-वाले सवारों के हाथ से बचना मुश्किल है, चोरी का माल उसी जगह पटक-कर आगे की तरफ भाग गये और इसके थोड़ी ही देर बाद वे कई सवार भी उसी जगह (जहाँ मायारानी थी) आ पहुँचे। उन्होंने देखा कि कई आदमी* बैठे हुए हैं, बीच में एक लालटेन जल रही है, और चोरी का माल भी उसी जगह पड़ा हुआ है। उन्हें निश्चय हो गया कि ये ही चोर हैं, अस्तु, उन्होंने मायारानी तथा उसकी लौंडियों को चारों तरफ से घेर लिया।

नौवाँ बयान

आधी रात का समय है, चाँदनी खिली हुई है। मौसम में पूरा-पूरा फर्क पड़ गया है। रात की ठण्डी-ठण्डी हवा अब प्यारी मालूम होती है। ऐसे समय में उस सड़क पर जो काशी से जमानिया की तरफ गयी है दो मुसाफिर धीरे-धीरे काशी की तरफ जा रहे हैं। ये दोनों मुसाफिर साधारण नहीं हैं, बल्कि अमीर, बहादुर और दिलावर मालूम पड़ते हैं। दोनों की पोशाक बेशकीमत और सिपाहियाना ठाठ की है, तथा दोनों ही की चाल से दिलेरी और लापरवाही मालूम होती है। खंजर, कटार, तलवार, तीर-कमान और कमन्द से दोनों ही सजे हुए हैं और इस समय मस्तानी चाल से धीरे-धीरे टहलते हुए जा रहे हैं। इनके पीछे-पीछे दो आदमी दो घोड़ों की बागडोर थामे हुए जा रहे हैं, मगर ये दोनों साईस नहीं हैं, बल्कि सिपाही और सवार मालूम होते हैं।

दोनों मुसाफिर जाते-जाते ऐसी जगह पहुँचे जहाँ सड़क से कुछ हटकर पाँच-सात पेड़ों का एक झुण्ड था। दोनों खड़े हो गये और उनमें से एक ने जोर से सीटी बजायी, जिसकी आवाज सुनते ही पेड़ों की आड़ में से दस आदमी निकल आये और दूसरी सीटी की आवाज के साथ ही वे दोनों आदमियों के पास पहुँच हाथ जोड़कर खड़े हो गये। उन सभी की पोशाक उस समय के डाकुओं की-सी थी। जाँघिया पहिरे हुए, बदन में केवल एक मोटे कपड़े की नीमास्तीन, ढाल-तलवार लगाये और हाथों में एक-एक

---

* मायारानी और उसकी लौंडियाँ मर्दाने भेष में थीं।

गड़ाँसा लिये हुए थे, और सभी के बगल में एक-एक छोटा बटुआ भी लटक रहा था। इन दसों के आ जाने पर उन दो बहादुरों में से एक ने उनकी तरफ देखा और पूछा, "उसका कुछ पता लगा ?"

एक डाकू : (हाथ जोड़कर) जी हाँ, बल्कि वह काम भी बखूबी कर आये हैं, जो हम लोगों के सुपुर्द किया गया था और जिसका होना कठिन था।

जवान : उसके साथ और कौन-कौन हैं ?

डाकू : लीला के अतिरिक्त केवल पाँच लौंडियाँ और थीं।

जवान : उसे तुमने किस इलाके में पाया और क्या किया सो खुलासा कहो।

डाकू : उसने जमानिया की सरहद को छोड़ दिया और काशी रहने का विचार करके, उसी तरफ का रास्ता लिया। जब काशीजी की सरहद में पहुँची तो गंगापुर नामक एक स्थान के पासवाले जंगल में एक दिन तक उसे अटकना पड़ा, क्योंकि वह लीला को हालचाल लेने और कई भेदों का पता लगाने के लिए पीछे छोड़ आयी थी। हम लोगों को उसी समय अपना काम करने का मौका मिला। मैं कई आदमियों को साथ लेकर काशीराज की तहसील में जो गंगापुर में है, घुस गया और कुछ असबाब चुराकर इस तरह भागा कि पहरेवालों को पता लग गया और कई सवारों ने हम लोगों का पीछा किया। आखिर हम लोग उन सवारों को धोखा देकर घुमाते हुए उसी जंगल में ले गये, जिसमें मायारानी थी। जब हम लोग मायारानी के पास पहुँचे तो चोरी का माल उसी के पास पटककर भाग गये और सवारों ने वहाँ पहुँच और चोरी का माल मायारानी के पास देखकर उन्हीं लोगों को चोर या चोरों का साथी समझा और उन्हें चारों तरफ़ से घेर लिया।

जवान : बहुत अच्छा हुआ, शाबाश, तुम लोगों ने अपना काम खूबी के साथ पूरा किया। अच्छा इसके बाद क्या हुआ ?

डाकू : इसके बाद की हम लोगों को कुछ भी खबर नहीं है, क्योंकि आज्ञानुसार आपके पास हाजिर होने का समय बहुत कम बच गया था, इसलिए फिर उन लोगों का पीछा न किया।

जवान : कोई हर्ज नहीं, हमें इतने ही से मतलब था, अच्छा अब तुम जाओ, जमानिया के पास गंगा के किनारे जो झाड़ी है, उसी में परसों रात को किसी समय हम तुम लोगों से मिलेंगे, कदाचित कोई काम पड़े। (अपने साथी की तरफ़ देखकर) कहिए देवीसिंहजी, अब इन दोनों सवारों के लिए क्या आज्ञा होती है, जो हम लोगों के साथ आये हैं ?

देवी : अगर ये लोग जासूसी का काम दे सकें तो इन्हें काशी भेजना

चाहिए ।

जवान : ठीक है, और इसके बाद जहाँ तक जल्द हो सके कमलिनीजी से मिलना चाहिए, ताज्जुब नहीं वे कहती हों कि भूतनाथ बड़ा ही बेफिक्रा है ।

पाठक तो समझ ही गये होंगे कि ये दोनों बहादुर देवीसिंह और भूतनाथ हैं । डाकुओं और दोनों सवारों को विदा करने बाद दोनों ऐयार लौटे और तेजी के साथ जमानिया की तरफ रवाना हुए । इस जगह से जमानिया केवल चार कोस की दूरी पर था, इसलिए ये दोनों ऐयार सवेरा होने के पहिले ही उस टीले पर जा पहुँचे, जो दारोग़ावाले बंगले के पीछे की तरफ था और जहाँ से दोनों ऐयारों और कुमारों को साथ लिये हुए कमलिनी मायारानी के तिलिस्मी बागवाले देवमन्दिर में गयी थी । हम पहिले लिख आये हैं कि इस टीले पर एक कोठरी थी, जिसमें पत्थर के चबूतरे पर पत्थर ही का एक शेर बैठा हुआ था । वह चबूतरा और शेर देखने में पत्थर का मालूम होता था, मगर वास्तव में किसी मसाले का बना हुआ था । दोनों ऐयार उस शेर के पास जाकर खड़े हो गये और बातचीत करने लगे । भूतनाथ और देवीसिंह को इस समय इस बात का गुमान भी न था कि उनके पीछे-पीछे दो औरतें कुछ दूर से आ रही हैं, और इस समय भी कोठरी के बाहर छिपकर खड़ी उन दोनों की बातें सुनने के लिए तैयार हैं । इन दोनों औरतों में से एक तो मायारानी और दूसरी नागर है । पाठकों को शायद ताज्जुब हो कि मायारानी को तो चोरी की इल्लत में काशीराज के सवारों ने गिरफ्तार कर लिया था, फिर वह यहाँ क्योंकर आयी ? इसलिए थोड़ा हाल मायारानी का इस जगह लिख देना उचित जान पड़ता है ।

जब उन सवारों ने चारों तरफ से मायारानी को घेर लिया, तब एक दफ़े तो वह बहुत ही परेशान हुई, मगर तुरन्त ही सम्हल बैठी और फुर्ती के साथ उसने अपने तिलिस्मी तमंचे से काम लिया । उसने तमंचे में तिलिस्मी गोली भरकर उसी जगह जमीन पर मारी, जहाँ आप बैठी हुई थी । एक आवाज हुई, और गोली में से बहुत-सा धुआँ निकलकर धीरे-धीरे फैलने लगा, मगर सवारों ने इस बात पर कुछ ध्यान न दिया और मायारानी तथा उसकी लौंडियों को गिरफ्तार कर लिया । मायारानी के तमंचा चलाने पर सवारों को क्रोध आ गया था, इसलिए कई सवारों ने मायारानी की जूते और लात से खातिरदारी भी की, यहाँ तक कि वह बेताब होकर जमीन पर गिर पड़ी, उसके साथ-ही-साथ लीला और लौंडियों ने भी खूब मारें खायी, मगर इस बीच में तिलिस्मी गोली का धुआँ हल्का होकर चारों तरफ फैल गया और सभों के आँख-नाक में घुसकर अपना काम कर

गया। मायारानी और लीला को छोड़, बाकी जितने वहाँ थे, सब-के-सब बेहोश हो गये थे, न सवारों को दीन-दुनिया की खबर रही और न मायारानी की लौंडियों को तनोबदन की सुध रही ! पाठकों को याद होगा कि बेहोशी का असर न होने के लिए मायारानी ने तिलिस्मी अर्क पी लिया था और वही अर्क लीला को पिलाया था। अभी तक इस अर्क का असर बाक़ी था, जिसने मायारानी और लीला को बेहोश होने से बचाया।

मार के सदमे से आधी घड़ी तक तो मायारानी में उठने की सामर्थ्य न रही, इसके बाद जान के खौफ से वह किसी तरह उठी और लीला को साथ लेकर वहाँ से भागी। बेचारी लौंडियों को जिन्होंने ऐसे दुःख के समय में भी मायारानी का साथ दिया था, मायारानी ने कुछ भी न पूछा। हाँ, लीला का ध्यान उस तरफ जा पड़ा। उसने अपने ऐयारी के बटुए में से लखलखा निकाला और लौंडियों को सुघाकर होश में लाने बाद सभों को भाग चलने के लिए कहा।

लौंडियों को साथ लिये हुए लीला और मायारानी वहाँ से भागीं, मगर घबराहट के मारे इस बात को न सोच सकीं कि कहाँ छिपकर अपनी जान बचानी चाहिए, अस्तु, वे सब सीधे दारोग़ावाले बंगले की तरफ रवाना हुईं। उस समय सवेरा होने में कुछ विलम्ब था, वे खौफ के मारे छिपती-छिपाती दिन-भर बराबर चली गयीं, और रात को भी कहीं ठहरने की नौबत न आयी। आधी रात से कुछ ज्यादे जा चुकी थी, जब वे सब दारोग़ा-वाले बंगले पर जा पहुँची। इत्तिफाक से नागर भी रास्ते ही में इन लोगों से मिली, जो मायारानी से मिलने के लिए मुश्की घोड़ी पर सवार खास बाग की तरफ जा रही थी। इस समय नागर ने मायारानी को न पहिचाना मगर लीला ने नागर को पहिचानकर आवाज दी। नागर जब मायारानी के पास आयी तो उसे ऐसी अवस्था में देखकर ताज्जुब करने लगी। माया-रानी ने संक्षेप में अपना हाल नागर से कहा, जिसे सुन वह अफसोस करने लगी और बोली, "मुझको भी भूतनाथ पर कुछ-कुछ शक होता है ताज्जुब नहीं कि उसने धोखा दिया हो। खैर, कोई हर्ज नहीं है मैं बहुत जल्द इस बात का पता लगा लूँगी। आप काशीजी चलकर मेरे मकान में रहिए और देखिए कि मैं भूतनाथ को क्योंकर फँसाती हूँ।"

मायारानी और नागर की बातें पूरी न होने पायी थीं कि सामने से दो आदमियों के आने की आहट मालूम हुई। वे दोनों देवीसिंह और भूतनाथ थे। यद्यपि अँधेरे के कारण मायारानी ने उन दोनों को न पहिचाना और पहिचानने की उसे कोई आवश्यकता भी न थी, मगर जब वे दोनों टीले की तरफ मुड़े, तब मायारानी को शक पैदा हुआ और उसने धीरे से नागर के

कान में कहा—"दोनों टीले पर जा रहे हैं, इससे मालूम होता है कि कमलिनी के साथी हैं, क्योंकि उस टीले पर बिना जानकार आदमी के और कोई इस समय कदापि न जायगा।"

नागर : हाँ, मुझे भी यही शक होता है कि वे दोनों कमलिनी के साथी या बीरेन्द्रसिंह के ऐयार हैं और ताज्जुब नहीं कि आपके तिलिस्मी बाग में जाने की नीयत से उस टीले पर जा रहे हों, क्योंकि बाबाजी की जुबानी मैं कई दफ़े सुन चुकी हूँ कि तिलिस्मी बाग में जाने के लिए इस टीले पर से भी एक रास्ता है।

माया : हाँ, यह तो मैं भी जानती हूँ कि इस टीले पर से मेरे तिलिस्मी बाग में जाने का रास्ता है, मगर इस राह से क्योंकर जाया जा सकता है, इसकी मुझे खबर नहीं है। ताज्जुब नहीं कि खून से लिखी किताब की बदौलत कमलिनी को इन सब रास्तों का हाल मालूम हो गया हो, क्योंकि वह किताब, नानक और भूतनाथ की बदौलत कमलिनी के हाथ में पहुँची ही होगी।

नागर : बेशक, ऐसा ही है। खैर, चलिए इन दोनों के पीछे-पीछे चलें, ताज्जुब नहीं कि बहुत-सी बातों का पता लग जाय।

इसके बाद मायारानी केवल नागर को साथ लिये हुए भूतनाथ और देवीसिंह के पीछे-पीछे छिपकर टीले पर गयी, और जब वे दोनों ऐयार कोठरी के अन्दर घुसे तो बाहर छिपकर भूतनाथ तथा देवीसिंह आपुस में जो बातें करने लगे, उन्हें सुनने लगी जैसाकि हम ऊपर लिख आये हैं।

उस चबूतरे पर बैठे हुए शेर के पास खड़े होकर भूतनाथ और देवीसिंह नीचे लिखी बातें करने लगे।

भूतनाथ : (शेर के सिर पर हाथ रखकर) तिलिस्म के चौथे दर्जे में जो देवमन्दिर है, उसमें जाने का यही रास्ता है।

देवीसिंह : क्या राजा गोपालसिंह से वहाँ मुलाकात होगी ?

भूतनाथ : अवश्य, बल्कि कमलिनी, लाडिली और दोनों कुमार भी वहाँ मौजूद होंगे।

देवीसिंह : इस दरवाजे के खोलने की तरकीब राजा गोपालसिंह ने आपको बता दी ?

भूतनाथ : हाँ, राजा गोपालसिंह और कमलिनी ने भी इस दरवाजे के खोलने की तरकीब बतायी थी, मगर यह रास्ता बड़ा ही खतरनाक है। अच्छा अब मैं दरवाजा खोलता हूँ।

इतना कहकर भूतनाथ ने शेर की बायीं आँख में उँगली डाली। आँख अन्दर की तरफ घुस गयी और इसके साथ ही शेर ने मुँह खोल दिया।

भूतनाथ ने दूसरा हाथ शेर के मुँह में डाला और कोई पेंच घुमाया, जिससे उस चबूतरे के आगेवाला पत्थर हटकर जमीन के साथ सट गया, जिस पर शेर बैठा हुआ था, और नीचे उतरने के लिए रास्ता मालूम पड़ने लगा। देवीसिंह ने बत्ती जलाने का इरादा किया, मगर भूतनाथ ने मना किया और कहा कि नहीं, तुम चुपचाप मेरे पीछे-पीछे चले आओ, नीचे उतर जाने के बाद बत्ती जलावेंगे। आगे-आगे भूतनाथ और पीछे-पीछे देवीसिंह, दोनों ऐयार नीचे उतरे और वहाँ बटुए में से सामान निकालकर भूतनाथ ने मोम-बत्ती जलायी। वह एक कोठरी थी, जिसमें तीन तरफ तो दीवार थी, और एक तरफ की दीवार सुरंग के रास्ते के तौर पर थी, अर्थात् उधर से किसी सुरंग में जाने का रास्ता था। कोठरी के बीचोबीच में लोहे का एक खम्भा था और खम्भे के ऊपर एक गड़ारीदार पहिया था, जिसे भूतनाथ ने घुमाया और देवीसिंह से कहा, "जिस राह से हम आये हैं, उसे यहाँ से बन्द करने की यही तरकीब है और (हाथ का इशारा करके) यही सुरंग तिलिस्मी बाग के चौथे दर्जे में गयी है!" इसके बाद भूतनाथ और देवीसिंह सुरंग में घुस-कर आगे की तरफ बढ़े।

इस सुरंग की चौड़ाई चार हाथ से ज्यादे न होगी। यहाँ की जमीन स्याह और सुफेद पत्थरों से बनी हुई थी, अर्थात् एक पत्थर सुफेद तो दूसरा स्याह, इसके बाद सुफेद और फिर स्याह, इसी तरह दोनों रंग के पत्थर सिलसिलेवार लगे हुए थे। सुरंग के दोनों तरफ की दीवारें लोहे की थीं और थोड़ी-थोड़ी दूर पर लोहे के बनावटी आदमी दीवार के साथ खड़े थे, जो अपने लम्बे हाथ फैलाए हुए थे। भूतनाथ ने देवीसिंह की तरफ देखकर कहा, "इस राह से जाना और अपनी जान पर खेलना एक बराबर है। देखिए बहुत सम्हलकर मेरे पीछे चले आइए और इस बात का पूरा-पूरा ध्यान रखिए कि स्याह पत्थर पर पैर न पड़ने पावे, नहीं तो जान न बचेगी। कमलिनी ने मुझे अच्छी तरह समझाकर कहा था कि सुरंग की दीवार के साथ जो लोहे के आदमी हाथ फैलाये खड़े हैं वे उस समय काम करते हैं, जब कोई स्याह पत्थर पर पैर रखता है, अर्थात् स्याह पत्थर पर पैर रखते ही वे उसको अपने दोनों हाथों से ऐसा पकड़ लेते हैं कि फिर किसी तरह वह उनके कब्जे से निकल नहीं सकता। मैं समझता हूँ कि इस सुरंग में कई आदमी धोखे में पड़कर मारे गये होंगे, इसलिए उचित है कि मेरे और तुम्हारे दोनों के हाथ में एक-एक मोमबत्ती रहे।"

भूतनाथ की बातें सुनकर देवीसिंह ताज्जुब करने लगे, आखिर लाचार होकर एक मोमबत्ती और जलायी और तब बड़ी होशियारी से सुफेद पत्थरों पर पैर रखते हुए आगे बढ़े। यह सुरंग एकदम सीधी बनी हुई थी और

इसकी जमीन हर तरह से साफ थी, जिसका सबब शायद यह हो कि यहाँ कहीं से गर्द, गुब्बार के आने की जगह नहीं थी। फिर इस सुरंग में ऐसी कारीगरी भी की गयी थी कि किसी-किसी जगह दीवार में से साफ छनी हुई हवा आती और दूसरी राह से निकल जाती थी, जिससे सुरंग की हवा हरदम साफ बनी रहती थी और उसमें जहर का असर पैदा नहीं होने पाता था।

लगभग दो-सौ कदम जाने बाद देखा कि दाहिनी तरफ दीवार के साथवाले लोहे के एक आदमी का दोनों हाथ सिमटा हुआ है और उसके बीच में हड्डी का एक ढाँचा फँसा हुआ है। वह ढाँचा मनुष्य के शरीर का था, जिसे देखते ही भूतनाथ ने देवीसिंह से कहा, "देखिए यह धोखा खाने का नमूना है। कोई अनजान आदमी सुरंग में आकर जान दे बैठा है, अनजान कैसे कहें, क्योंकि यहाँ तक तो आ ही चुका था, शायद धोखा खा गया हो।" दोनों ऐयार ताज्जुब से उस पंजर को देखने लगे, पर इसी समय यकायक देवीसिंह की निगाह पीछे की तरफ (जिधर से ये दोनों आये थे) जा पड़ी और एक रोशनी देख देवीसिंह ने ताज्जुब के साथ भूतनाथ से कहा, "देखिए तो वह रोशनी कैसी है?"

भूतनाथ : (बत्ती के आगे हाथ रखकर और गौर से रोशनी की तरफ देखकर) कोई आ रहा है!

देवीसिंह : दो औरतें मालूम पड़ती हैं।

भूतनाथ : ठीक है, शायद लाडिली और कमलिनीजी हों क्योंकि सिवाय जानकार के और कोई तो इस सुरंग में आ नहीं सकता!

देवीसिंह : मुझे तो विश्वास नहीं होता कि ये कमलिनी और लाडिली होंगी।

भूतनाथ : शक तो मुझे भी होता है, खैर, चलकर देख ही क्यों न लें।

भूतनाथ और देवीसिंह फिर पीछे की तरफ लौटे अर्थात् उस रोशनी की तरफ बढ़े जो यकायक दिखायी दी थी। दो ही कदम बढ़े होंगे कि कोई चीज उनके सामने जमीन पर आकर गिरी और पटाके की-सी आवाज हुई, इसके साथ ही उसमें से बेहोशी पैदा करनेवाला जहरीला धुआँ निकला। यह तिलिस्मी गोली थी जो मायारानी ने तिलिस्मी तमंचे में भरकर भूतनाथ और देवीसिंह की तरफ चलायी थी। भूतनाथ और देवीसिंह इस गुमान में पीछे की तरफ हटे थे कि शायद यह रोशनी कमलिनी और लाडिली के साथ हो, मगर वास्तव में ये दोनों मायारानी और नागर थीं, जिन्होंने छिपकर भूतनाथ और देवीसिंह की बातें सुनी थीं। जब दोनों ऐयार शेरवाला दरवाजा खोलकर तहखाने में उतर गये थे, तो चर्खा घुमाकर दरवाजा बन्द करने के पहिले ही ये दोनों भी दरवाजे के अन्दर घुसकर तीन-

चार सीढ़ी नीचे उतर आयी थीं और इन्होंने वे बातें भी सुन ली थीं, जो नीचे उतर जाने बाद देवीसिंह और भूतनाथ में हुईं।

दसवाँ बयान

राजा गोपालसिंह तथा कमलिनी और लाडिली को हम देवमन्दिर में छोड़ आये हैं। वे तीनों भूतनाथ के आने की उम्मीद में देर तक देवमन्दिर में रहे, मगर जब भूतनाथ न आया तो लाचार होकर कमलिनी ने गोपालसिंह से कहा—

कमलिनी : मालूम होता है कि भूतनाथ किसी काम में फँस गया। खैर, अब हम लोगों को यहाँ व्यर्थ बैठे रहना उचित नहीं, क्योंकि अभी बहुतकुछ काम करना बाकी है।

गोपाल : ठीक है, मगर जहाँ तक मैं समझता हूँ तुम्हारे करने योग्य इस समय कोई काम नहीं है, क्योंकि दोनों कुमार तिलिस्म के अन्दर जा ही चुके हैं, और बिना तिलिस्म तोड़े अब उनका बाहर निकलना कठिन है, हाँ, कमबख्त मायारानी के विषय में बहुतकुछ करना है, सो उसके लिए मैं अकेला काफी हूँ, इसके अतिरिक्त और जोकुछ काम है, उसे ऐयार लोग बखूबी कर सकते हैं।

कमलिनी : आपकी बातों से पाया जाता है कि मेरे यहाँ रहने की अब कोई आवश्यकता नहीं।

गोपाल : बेशक, मेरे कहने का यही मतलब है।

कमलिनी : अच्छा तो मैं लाडिली को साथ लेकर अपने घर* जाती हूँ, उधर ही से रोहतासगढ़ पर ध्यान रखूँगी।

गोपाल : हाँ, तुम्हें वहाँ अवश्य जाना चाहिए क्योंकि किशोरी और कामिनी भी उसी मकान में पहुँचा दी गयी हैं, उनसे जब तक न मिलोगी, तब तक वे बेचैन रहेंगी, इसके अतिरिक्त कई, कैदियों को भी तुमने वहाँ भेजवाया है, उनकी भी खबर लेनी चाहिए।

कमलिनी : अच्छा थोड़ी देर तक भूतनाथ की राह और देख लीजिए।

आधी रात बीत जाने बाद तीनों आदमी वहाँ से रवाना हुए। पहिले उस गोल गम्भे के पास आये जो कमरे के बीचोबीच में था और जिस पर तरह-तरह की मूरतें बनी हुई थीं। राजा गोपालसिंह ने एक मूरत पर हाथ रखकर जोर से दबाया, साथ ही एक छोटी-सी खिड़की अन्दर जाने के लिए

---

* वही तिलिस्मी मकान जो तालाब के अन्दर है।

दिखायी दी। दोनों सालियों को साथ लिये हुए गोपालसिंह उस खिड़की के अन्दर घुस गये। जहाँ नीचे उतरने के लिए सीढ़ियाँ बनी हुई थीं। यद्यपि उसके अन्दर एकदम अँधेरा था, मगर तीनों आदमी अन्दाज से उतरते चले गये, जब नीचे एक कोठरी में पहुँचे तो गोपालसिंह ने मोमबत्ती जलायी। मोमबत्ती जलाने का सामान उसी कोठरी में एक आले पर रक्खा हुआ था, जिसे अँधेरे में ही गोपालसिंह ने खोज लिया था। वह कोठरी लगभग दस हाथ के चौड़ी और इतनी ही लम्बी होगी। चारों तरफ दीवार में चार दरवाजे बने हुए थे और छत में दो जंजीरें लटक रही थीं। गोपालसिंह ने एक जंजीर हाथ से पकड़कर खींची, जिससे गोल खम्बेवाला वह दरवाजा बन्द हो गया, जिस राह से तीनों नीचे उतरे थे। इसके बाद गोपालसिंह उत्तर तरफवाली दीवार के पास गये और दरवाजा खोलने का उद्योग करने लगे। उस दरवाजे में ताँबे की सैकड़ों कीलें गड़ी हुई थीं और हर कील के मुँह पर उभड़ा हुआ एक-एक अक्षर बना हुआ था। यह दरवाजा उसी सुरंग में जाने के लिए था, जो दारोगावाले बंगले के पीछेवाले टीले तक पहुँची हुई थी, या जिस सुरंग के अन्दर भूतनाथ और देवीसिंह का जाना ऊपर के बयान में हम लिख आये हैं। गोपालसिंह ने दरवाजे में लगी हुई कीलों को दबाना शुरू किया। पहिले उस कील को दबाया, जिसके सिरे पर 'हे' अक्षर बना हुआ था, इसके बाद 'र' अक्षर के कील को दबाया, फिर 'म' और 'ब' अक्षर के कील को दबाया ही था कि दरवाजा खुल गया और दोनों साथियों को साथ लिये हुए गोपालसिंह उसके अन्दर चले गये तथा भीतर जाकर हाथ के जोर से दरवाजा बन्द कर दिया। इस दरवाजे के पिछली तरफ भी वे ही बातें थीं, जो बाहर थीं अर्थात् भीतर से भी उसमें वैसी ही कीलें जड़ी हुई थीं। भीतर चार-पाँच कदम जाने बाद सुरंग की जमीन स्याह और सुफेद पत्थर से बनी हुई मिली और उसी जगह गोपालसिंह, कमलिनी और लाडिली ने स्याह पत्थरों को बचाना शुरू किया, अर्थात् सुफेद पत्थरों पर पैर रखते हुए रवाना हुए और दो घण्टे तक बराबर चले जाने बाद उस जगह पहुँचे, जहाँ भूतनाथ और देवीसिंह खड़े थे। ये लोग भी ठीक उसी समय वहाँ पहुँचे, जब मायारानी की चलायी हुई गोली में से जहरीला धुआँ निकलकर सुरंग में फैल चुका था और दोनों ऐयार बेहोशी के असर से झूम रहे थे। कमलिनी, लाडिली तथा राजा गोपालसिंह इस धुएँ से बिल्कुल बेखबर थे और उन्हें इस बात का गुमान भी न था कि मायारानी ने इस सुरंग में पहुँचकर तिलिस्मी गोली चलायी है, क्योंकि गोली चलाने बाद तुरन्त ही मायारानी ने अपने हाथ की मोमबत्ती बुझा दी थी!

राजा गोपालसिंह ने वहाँ पहुँचकर भूतनाथ और देवीसिंह को देखा।

कमलिनी ने भूतनाथ को पुकारा मगर बेहोशी का असर हो जाने के कारण उसने कमलिनी की बात का जवाब न दिया, बल्कि देखते-देखते भूतनाथ और देवीसिंह बेहोश होकर जमीन पर गिर पड़े। कमलिनी, लाडिली और गोपालसिंह के भी नाक और मुँह में वह धुआँ गया, मगर ये उसे पहिचान न सके और भूतनाथ तथा देवीसिंह के बेहोश हो जाने बाद ही, ये तीनों भी बेहोश होकर जमीन पर गिर पड़े।

आधी घड़ी तक राह देखने बाद मायारानी और नागर ने मोमबत्ती जलायी। खुशी-खुशी उन दोनों औरतों ने बेहोशी से बचानेवाली दवा अपने मुँह में रक्खी और स्याह पत्थरों से अपने को बचाती हुईं वहाँ पहुँचीं, जहाँ कमलिनी, लाडिली, गोपालसिंह, भूतनाथ और देवीसिंह बेहोश पड़े हुए थे।

अहा, इस समय मायारानी की खुशी का कोई ठिकाना है! इस समय उसकी किस्मत का सितारा फिर से चमक उठा। उसने हँसकर नागर की तरफ़ देखा और कहा—

माया : क्या अब भी मुझे किसी का डर है?

नागर : आज मालूम हुआ कि आपकी किस्मत बड़ी जबरदस्त है। अब दुनिया में कोई भी आपका मुकाबला नहीं कर सकता। (भूतनाथ की तरफ देखकर) देखिए, इस बेईमान की कमर में वही तिलिस्मी खंजर है जो कमलिनी ने इसे दिया था। अहा, इससे बढ़कर दुनिया में और क्या अनूठी चीज़ होगी!!

माया : इस कमबख्त ने मुझसे कहा था कि कमलिनी ने गोपालसिंह को भी एक तिलिस्मी खंजर दिया है। (गोपालसिंह को अच्छी तरह देखकर) हाँ हाँ, इसकी कमर में भी वही खंजर है! ताज्जुब नहीं कि कमलिनी और लाडिली की कमर में भी इसका जोड़ा हो। (कमलिनी, लाडिली और देवीसिंह की तरफ ध्यान देकर) नहीं नहीं, और किसी के पास नहीं है। खैर, दो खंजर तो मिले, एक मैं रक्खूँगी और एक तुझे दूँगी। इसमें जो जो गुण हैं, भूतनाथ की जुबानी सुन ही चुकी हूँ, अच्छा भूतनाथ का खंजर तू ले ले और इसका मैं लेती हूँ।

खुशी-खुशी मायारानी ने पहिले गोपालसिंह की उँगली से वह अँगूठी उतारी, जो तिलिस्मी खंजर के जोड़ की थी, और इसके बाद कमर से खंजर निकालकर अपने कब्जे में किया। नागर ने भी पहिले भूतनाथ के हाथ से अँगूठी उतारकर पहिन ली और तब खंजर पर कब्जा किया। मायारानी ने हँसकर नागर की तरफ देखा और कहा, "अब इसी खंजर से इन पाँचों को इस दुनिया से उठाकर हमेशा के लिए निश्चिन्त होती हूँ!"

ग्यारहवाँ बयान

मायारानी ने राजा गोपालसिंह को मारने के लिए जैसे ही खंजर उठाया, वैसे ही नागर ने फुर्ती से उसकी कलाई पकड़ ली और कहा—

नागर : ठहरो ठहरो, जल्दी न करो, आखिर ये लोग तुम्हारे कब्जे में तो आ ही चुके हैं और अब किसी तरह छूटकर जा नहीं सकते, फिर बिना अच्छी तरह विचार किये जल्दी करने की क्या आवश्यकता है, क्या जाने सोचने-विचारने से कुछ विशेष लाभ की सूरत ध्यान में आवे।

माया : (रुककर) तुम्हारा कहना ठीक है, परन्तु यदि दुश्मन कब्जे में आ जाय तो उसके मारने में विलम्ब करना कदापि उचित नहीं है। इसी (गोपालसिंह) को जब मैंने कैद किया था तो इसके मारने के विषय में सोच-विचार करते-करते वर्षों बिताये और अन्त में उस विलम्ब का क्या नतीजा निकला, सो देख ही रही हो, उस विलम्ब ही के कारण आज मैं फकीरनी होकर भी···(गला भर आने के कारण रुककर) आज ईश्वर ने मुझ पर कृपा की है और दुश्मनों को मेरे कब्जे में कर दिया है, फिर इनके मारने में देर तथा सोच-विचार करने का ताज्जुब नहीं कि वही नतीजा हो जो पहिले हो चुका है।

नागर : ठीक है, और मैं भी इसी में प्रसन्न हूँ कि जहाँ तक शीघ्र हो सके, ये लोग मार डाले जाँय। अहा, कमलिनी के सहित गोपालसिंह का फँस जाना क्या कम खुशी की बात है, और फिर साथ ही इन दोनों के बेईमान भूतनाथ का भी...

माया : (बात काटकर) आ फँसना, जिसने मेरे साथ सख्त दगा की थी, कम खुशी की बात नहीं है।

नागर : बेशक, परन्तु मैं इन कमबख्तों की जान ले लेने में विशेष विलम्ब करने के लिए नहीं कहती, हाँ, इतनी देर तक रुक जाने के लिए अवश्य कहती हूँ, जितनी देर में हम लोग इस बात को बखूबी सोच लें कि इन दुष्टों को मारने बाद इस सुरंग का भेद मालूम न होने पर भी, हम लोग यहाँ से निकल जा सकेंगे या नहीं ?

माया : क्यों, क्या हम लोगों को यहाँ से निकल जाने में किसी तरह की रुकावट हो सकती है ? क्या हम लोगों ने भूतनाथ और देवीसिंह की बातें उस समय अच्छी तरह नहीं सुनीं, जिस समय दोनों ऐयार सुरंग में उतर चुके थे ? क्या उसी रीति से सुरंग का दरवाजा न खुल सकेगा, जिस रीति से बन्द किया गया है ?

नागर : इन बातों का ठीक-ठीक जवाब मैं नहीं दे सकती, बल्कि इन्हीं

बातों पर विचार करने के लिए कुछ देर तक ठहरने को कहती हूँ।

माया : (खंजर म्यान में रखकर और कुछ सोचकर) अच्छा अच्छा, कुछ देर तक ठहर जाने में कोई हर्ज नहीं है, इन सभों की बेहोशी यकायक दूर नहीं हो सकती, चलो पहिले उस दरवाजे को खोलकर देखें कि खुलता है या नहीं।

इतना कहकर नागर को साथ लिये हुए मायारानी सुरंग के दरवाजे की तरफ बढ़ी। जब उस लोहे के खम्भे के पास पहुँची, जिस पर वह गड़ारी-दार पहिया था, जिसे घुमाकर भूतनाथ ने सुरंग का दरवाजा बन्द किया था तो रुकी और नागर की तरफ देखकर बोली, "इसी पहिए को घुमाकर भूतनाथ ने दरवाजा बन्द किया था।"

नागर : जी हाँ, अब इसी को उलटा घुमाकर देखना चाहिए कि दरवाजा खुलता है या नहीं।

माया : अच्छा तुम्हीं इस पहिए को घुमाओ।

नागर ने उस पहिए को कई दफे उलटा घुमाया और वह बखूबी घूम गया, इसके बाद दोनों औरतें यह देखने के लिए सीढ़ी पर चढ़ीं कि दरवाजा खुला या नहीं, मगर दरवाजा ज्यों-का-त्यों बन्द था। मायारानी को बहुत ताज्जुब हुआ और वह घबरानी-सी होकर नीचे उतर आयी और नागर की तरफ देखकर बोली, "तुम्हारा सोचना ठीक निकला।"

नागर : इसी से मैंने आपको रोका था, यदि आप जोश में आकर इन सभों को मार डालतीं तो फिर हम लोग भी इस सुरंग में मर-मिटते।

माया : बेशक-बेशक। (कुछ सोचकर) अच्छा एक बार उधर चलकर देखना चाहिए, जिधर से यह (गोपालसिंह) आया है, शायद उधर का दरवाजा खुला हो।

नागर : चलिए देखिए, शायद कुछ काम निकले, मगर ताज्जुब नहीं कि लौटने तक इन लोगों की बेहोशी जाती रहे।

माया : हाँ, ऐसा हो सकता है। अच्छा तो इन लोगों के हाथ-पैर कसके बाँध देना चाहिए जिससे यदि बेहोशी जाती भी रहे तो कुछ कर न सकें।

नागर ने उन सभों को अच्छी तरह गौर से देखा, जो उस जगह बेहोश पड़े थे। भूतनाथ और देवीसिंह के कमर में कमन्द मौजूद थे, उन्हें खोल लिया और दोनों ने मिलकर उन्हीं कमन्दों से भूतनाथ, देवीसिंह, कमलिनी, लाडिली और गोपालसिंह के हाथ-पैर बेरहमी के साथ खूब कसकर बाँध दिये और इसके बाद दोनों औरतें उसी तरफ चलीं, जिधर से कमलिनी और लाडिली को साथ लिये राजा गोपालसिंह आये थे।

मायारानी और नागर मोमबत्ती की रोशनी में स्याह पत्थर को बचाती

हुई उस दरवाजे के पास पहुँचीं, जिसे खोलकर राजा गोपालसिंह आये थे। यह वही दरवाजा था, जिसमें अक्षरोंवाले कील जड़े हुए थे, और किसी अनजान आदमी से इसका खुलना बिल्कुल ही असम्भव था। मायारानी ने इसको खोलने का बहुतकुछ उद्योग किया मगर कुछ काम न चला। लाचार होकर उसने तरद्दुद और घबराहट की निगाह नागर पर डाली।

नागर : मेरा सोचना बहुत ठीक निकला, यदि वे लोग मार डाले जाते तो निःसन्देह हम दोनों की मौत भी इसी सुरंग में हो जाती।

माया : सच है, मगर अब क्या करना चाहिए ? जहाँ तक मैं सोचती हूँ इसके जवाब में तुम यही कहोगी कि इनमें से किसी को होश में लाकर जिस तरह बन पड़े दरवाजा खोलने की तरकीब मालूम करनी चाहिए।

नागर : जी हाँ, क्योंकि सिवाय इसके कोई दूसरी बात ध्यान में नहीं आती।

माया : खैर, यदि ऐसा हो भी जाय अर्थात् इन पाँचों में से किसी को होश में लाने और डराने-धमकाने से दरवाजा खुलने का भेद मालूम हो जाय तो फिर क्या किया जायगा ? मैं समझती हूँ कि तुम यही कहोगी कि दरवाजे का भेद मालूम होने बाद इन पाँचों को कत्ल कर देना चाहिए।

नागर : नहीं मेरी यह राय नहीं है, बल्कि मैं इन लोगों को उस समय तक कैद में रखना मुनासिब समझती हूँ, जब तक कि रिक्तगन्थ और अजायबघर की ताली जो तुमने भूतनाथ को दे दी है, अपने कब्जे में न आ जाय।

माया : ओफ़ ! मैं वास्तव में सैकड़ों आफतों में घिरी हुई हूँ। (कुछ सोचकर) खैर, कोई चिन्ता नहीं है, देखो तो क्या होता है, मैं इन लोगों को जीता कदापि न छोड़ूंगी। (रुककर) हाँ, जरा ठहरो इन पाँचों में से किसी को होश में लाने के पहिले सभों की तलाशी अच्छी तरह ले लेना चाहिए, ताज्जुब नहीं कि रिक्तगन्थ और अजायबघर की ताली भी इन लोगों में से किसी के पास हो।

नागर : हाँ, मुमकिन है कि वे दोनों चीजें इन लोगों के पास हों, अच्छा चलो सबके पहिले यही काम किया जाय।

नागर को साथ लिये हुए मायारानी फिर उस जगह पहुँची, जहाँ गोपालसिंह और भूतनाथ वगैरह बेहोश पड़े थे। हम ऊपर लिख आये हैं कि राजा गोपालसिंह और भूतनाथ के पास जो तिलिस्मी खंजर था, वह मायारानी ले चुकी है। एक खंजर उसने अपने पास रक्खा और दूसरा नागर को दे दिया। अब उसने सबसे पहिले भूतनाथ के बटुए की तलाशी ली, मगर उसमें कोई ऐसी चीज़ न निकली जो मायारानी के काम की होती। यद्यपि

तरह-तरह की दवाओं और मसालों से भरी हुई कई खूबसूरत डिबियाएँ नजर आयी, मगर उनका गुण न मालूम होने के कारण मायारानी के लिए वे बिल्कुल ही बेकार थीं। जब बटुए में से अपने मतलब की कोई चीज न पायी, तो कमर और कपड़ों के जेब इत्यादि अच्छी तरह टटोले, मगर उससे भी कुछ काम न चला, अन्त में उदास होकर वह राजा गोपालसिंह की तरफ लौटी और उनकी तलाशी लेने लगी।

ऊपर का बयान पढ़ने से पाठकों को मालूम हो ही चुका होगा कि अजायबघर की ताली जो मायारानी ने भूतनाथ को दी थी, वह राजा गोपालसिंह ने भूतनाथ से ले ली थी। इस समय वही अजायबघर की ताली राजा गोपालसिंह के पास थी, जो तलाशी लेने के समय मायारानी के हाथ लगी। ताली पाकर वह बहुत खुश हुई और नागर की तरफ देख कर बोली —

"लीजिए अजायबघर की ताली तो मिल गयी। अब कोई परवाह नहीं, यद्यपि मुझे मालूम हो चुका है कि मेरी फौज मुझसे बिगड़ गयी, मेरा दीवान मुझसे दुश्मनी करने को तैयार है, तुम्हारे मकान का भेद बीरेन्द्रसिंह के ऐयारों को मालूम हो चुका है और इस सबब से मुझे रहने के लिए कोई ठिकाना नहीं है मगर अब अजायबघर की यह ताली मिल जाने से, मुझे बहुत कुछ भरोसा हो गया। मैं अब खुशी से दारोग़ावाले बँगले में रहकर अपने दुश्मनों से बदला ले सकती हूँ, फौजी सिपाहियों के दिल से शक दूर करके, अपना रोआब जमा सकती हूँ और उन्हें ठीक करके अपने ढर्रे पर ला सकती हूँ। कमबख्त दीवान को भी सज़ा देना कोई बड़ी बात नहीं है, इसके सिवाय तिलिस्मी खंजर की बदौलत मुश्किल-से-मुश्किल काम सहज ही में कर सकूँगी !"

नागर : ठीक है, अच्छा देखिए शायद रिक्तगन्थ भी इन लोगों में से किसी के पास हो।

मायारानी ने फिर तलाशी लेना शुरू किया। गोपालसिंह के बाद कमलिनी, लाडिली और देवीसिंह की भी तलाशी ली, मगर रिक्तगन्थ (खून से लिखी किताब) का पता न लगा और न कोई ऐसी चीज़ ही मिली जो मायारानी के मतलब की होती। आखिर लाचार होकर यह निश्चय किया कि भूतनाथ को होश में लाकर और डरा-धमकाकर दरवाजा खोलने की तरकीब जाननी चाहिए। मायारानी की आज्ञानुसार नागर ने अपने बटुए में से लखलखा निकाला और भूतनाथ को सुँघाने के लिए आगे बढ़ी ही थी कि सुरंग के सिरे पर (जिधर से भूतनाथ और देवीसिंह के पीछे-पीछे मायारानी और नागर आयी थीं) रोशनी दिखायी दी। नागर ने भूतनाथ

को लखलखा सुँघाने के लिए जो हाथ बढ़ाया था, रोक लिया, लखलखे की की डिबिया जमीन पर रख तिलिस्मी खंजर म्यान से निकाल लिया और अपने हाथ की मोमबत्ती बुझाकर मायारानी से बोली, "देखिए, मैंने मोमबत्ती बुझाकर अँधेरा कर दिया, अब इधर-उधर मत हटिए, कहीं ऐसा न हो कि स्याह पत्थर पर पैर पड़ जाय। और आप भी तिलिस्मी खंजर अपने हाथ में ले लीजिए, ताज्जुब नहीं कि यह आनेवाला हम लोगों का दुश्मन और बीरेन्द्रसिंह का कोई ऐयार हो।"

माया : (तिलिस्मी खंजर के कब्जे पर हाथ रखके) यद्यपि तुमने मोमबत्ती बुझा दी है, मगर उस आनेवाले की नजर पहिले ही इस रोशनी पड़ चुकी होगी। (गौर से देखकर) मगर मुझे तो मालूम होता है कि यह हमारे दारोगा साहब हैं, जिन्हें हम लोग बाबाजी भी कहते हैं।

नागर : शक तो मुझे भी होता है। (रुककर) हाँ, अब वे कई कदम आगे बढ़ आये हैं, इससे उनकी दाढ़ी और जटा साफ दिखायी दे रही है। ठीक है, निःसन्देह यह दारोगा साहब ही हैं! न मालूम राजा बीरेन्द्रसिंह की कैद से ये क्योंकर निकल आये। इनका छूट आना हम लोगों के लिए बहुत अच्छा हुआ!

माया : बेशक, इनके छूटकर चले आने से मुझे खुशी होती, अगर वे इस समय यहाँ न आते, क्योंकि गोपालसिंह के बारे में मैंने लोगों को जोकुछ धोखा दिया है, इसकी खबर इन्हें भी नहीं है, इसलिए ताज्जुब नहीं कि गोपालसिंह को यहाँ देखकर दारोगा साहब जोश में आ जायें और मुझसे थुक्काफजीहत करने के लिए तैयार हो जायँ, क्योंकि उनके दिल में राजा की बहुत मुहब्बत थी। ओह इस समय इनका यहाँ आना बहुत ही बुरा हुआ। खैर, तू होशियार रहियो। इस तिलिस्मी खंजर का गुण इन्हें मालूम न होने पाये और न गोपालसिंह के बारे में कुछ—

नागर : बहुत अच्छा, मैं कुछ भी न बोलूँगी। लीजिए, अब वे बहुत पास आ गये। बेशक, दारोगा साहब ही हैं, अब अगर हम भी मोमबत्ती जला लें तो कोई हर्ज नहीं।

माया : कोई हर्ज नहीं।

ऊपर लिखी बातें मायारानी और नागर में बहुत चुपके और जल्दी के साथ हुईं। नागर ने मोमबत्ती जलायी और इसके बाद दोनों औरतें आगे अर्थात् दारोगा की तरफ बढ़ीं। दारोगा ने भी इन दोनों को पहिचाना और जब वह मायारानी के पास पहुँचा तो हँसकर बोला, "ईश्वर को धन्यवाद देना चाहिए कि मैं राजा बीरेन्द्रसिंह के कब्जे से निकलकर चला आया और तुमको राजी-खुशी अपने सामने देख रहा हूँ।"

माया : (बनावटी हँसी के साथ) आपके छूट आने की मुझे हद्द से ज्यादे खुशी हुई। इधर थोड़े दिनों से मैं तरह-तरह की मुसीबतों में पड़ रही हूँ, जिसकी कुछ भी आशा न थी और यह सब आपके न रहने से ही हुआ।

दारोगा : हाँ, मुझे भी बहुत-सी बातों का पता लगा है। इस समय जब मैं अपने बंगले में पहुँचा तो वहाँ लीला और कई लौंडियों को पाया। बहुत-सा हाल तो वहाँ लीला की जुबानी मालूम हुआ और यह भी उससे सुना कि टीले पर दो आदमियों को आते देखकर मायारानी और नागर भी उसी तरफ गयी हैं। यही सुनकर मैं भी इस सुरंग में आया हूँ, नहीं तो मुझे यहाँ आने की कोई जरूरत न थी।

माया : जी हाँ, मैं वीरेन्द्रसिंह के ऐयार भूतनाथ और देवीसिंह के पीछे-पीछे यहाँ आयी। इस सुरंग का भेद मुझे कुछ भी मालूम न था और आपने भी इस विषय में आज तक कुछ नहीं कहा था, भूतनाथ ने सुरंग का दरवाजा खोला और उसके पीछे-पीछे छिपकर, मैं यहाँ तक चली तो आयी, मगर यहाँ से किसी तरह निकल नहीं सकती हूँ, क्योंकि भूतनाथ ने सुरंग के अन्दर आकर दरवाजा बन्द कर दिया था, और अब मुझसे वह दरवाजा किसी तरह नहीं खुल रहा है। ईश्वर ने बड़ी कृपा की, जो इस समय आपको यहाँ भेज दिया, चलिए पीछे हटिए, पहिले मुझे दरवाजा खोलने की तरकीब बता दीजिए तो और कुछ बातचीत होगी!

दारोगा : (हँसकर) अब तो मैं आ ही चुका हूँ, तुम क्यों घबड़ाती हो? पहिले यह तो बताओ कि वे दोनों ऐयार कहाँ हैं, जिनके पीछे-पीछे तुम यहाँ आयी थीं?

इस समय मायारानी की विचित्र अवस्था थी। वह मुँह से बातें तो कर रही थी, मगर दिल में यही सोच रही थी, किसी तरह राजा गोपालसिंह का भेद छिपाना चाहिए, जिसमें बाबाजी (दारोगा) को यह न मालूम हो कि मैंने वर्षों से गोपालसिंह को कैद कर रक्खा था, मगर इसके बचाव की कोई सूरत ध्यान में नहीं आती थी। वह अपने उछलते हुए कलेजे को दबाने की कोशिश कर रही थी, मगर वह किसी तरह दम नहीं लेता था। उसके चेहरे पर भी खौफ और तरद्दुद की निशानी पायी जाती थी, जो उस समय और भी ज्यादे हो गयी जब बाबाजी ने यह कहा—"वे दोनों ऐयार कहाँ हैं, जिनके पीछे-पीछे तुम यहाँ आयी थीं?" आखिर लाचार होकर मायारानी ने बातें बनाकर अपना काम निकालना चाहा और अपने को अच्छी तरह सँभालकर बातचीत करने लगी।

माया : (पीछे की तरफ इशारा करके) वे दोनों ऐयार उधर पड़े हुए हैं। मैंने अपनी हिकमत से उन्हें बेहोश करके छोड़ दिया है। केवल वे दोनों ही

नहीं, बल्कि कमलिनी और लाडिली भी मय एक ऐयार के मेरे फन्दे में आ पड़ी हैं, जिनसे यकायक इसी सुरंग में मुलाकात हो गयी थी।

बाबा : (चौंककर) कमलिनी और लाडिली !

माया : जी हाँ, शायद आपने अभी तक सुना नहीं कि लाडिली भी कमलिनी से मिल गयी।

बाबा : ओफ़ ! यह खबर मुझे क्योंकर मिल सकती थी, क्योंकि मैं ऐसे तहखाने में कैद था, जहाँ हवा का भी जाना मुश्किल से हो सकता था। खैर, चलो मैं जरा उन ऐयारों की सूरत तो देखूँ।

अब बाबाजी उस तरफ बढ़े, जहाँ राजा गोपालसिंह, कमलिनी, लाडिली और दोनों ऐयार बेहोश पड़े थे ? बाबाजी के पीछे-पीछे मायारानी और नागर भी स्याह पत्थरों को बचाती हुई उसी तरफ बढ़ीं। वहाँ की जमीन में बनिस्बत सुफेद पत्थरों के स्याह पत्थर की पटरियाँ (सिल्ली) बहुत कम चौड़ी थीं। यद्यपि बाबाजी से मायारानी डरती-दबती और साथ ही इसके उनकी इज्जत और कदर भी करती थी, परन्तु इस समय उसकी अवस्था में फर्क पड़ गया था। वह धड़कते हुए कलेजे के साथ चुपचाप बाबा-जी के पीछे जा रही थी, मगर अपना दाहिना हाथ तिलिस्मी खंजर के कब्जे पर, जो अब उसकी कमर में था, इस तरह रक्खे हुए थी, जैसे उसे म्यान से निकालकर काम में लाने के लिए तैयार है। शायद इसका सबब यह हो कि वह बाबाजी पर वार करने का इरादा रखती थी, क्योंकि उसे निश्चय था कि राजा गोपालसिंह को देखते ही बाबाजी बिगड़ खड़े होंगे और एक गुप्त भेद का, जिसकी उन्हें खबर तक न थी, पता लग जाने के कारण उसकी लानत और मलामत करेंगे। साथ ही इसके बाबाजी की चाल भी बेफिक्री की न थी, वह भी कनखियों से आगे-पीछे अगल-बगल देखते जाते थे, और हर तरह से चौकन्ने मालूम पड़ते थे।

जब बाबाजी उन लोगों के पास आ पहुँचे तो मोमबत्ती की रोशनी में एक-एक को अच्छी तरह देखने लगे। जब उनकी निगाह राजा गोपालसिंह पर पड़ी, तो वे चौंके और मायारानी की तरफ देखकर बोले, "है, यह क्या मामला है ! मैं अपनी आँखों के सामने किसे बेहोश पड़ा देख रहा हूँ !!"

माया : (लड़खड़ाई आवाज से) इसी के बारे में मैंने कहा था कि एक ऐयार भी आ फँसा है !

बाबा : ओफ ये तो राजा गोपालसिंह हैं, जिन्हें मरे कई वर्ष हो गये, नहीं नहीं, मरा हुआ आदमी कभी लौटकर नहीं आता। (कुछ रुककर) यद्यपि दुःख या रंज के सबब से इनकी सूरत में फर्क पड़ गया है, परन्तु मेरे पहिचानने में फर्क नहीं है। बेशक, यह हमारे मालिक राजा गोपालसिंह ही

हैं, जिनकी नेकियों ने लोगों को अपना तावेदार बना लिया था, जिनकी बुद्धिमानी और मिलनसारी प्रसिद्ध थी, और जिसके सबब से इनकी तावेदारी में रहना लोग अपनी इज्जत समझते थे ! ओफ, तुमने इनके बारे में हम लोगों को धोखा दिया ! यद्यपि तुम्हारी बुरी चाल-चलन को मैं खूब जानता था और जान-बूझकर कई कारणों से तरह दिये जाता था, मगर मुझे यह खबर न थी कि उस चाल-चलन की हद यहाँ तक पहुँच चुकी है ! (गोपालसिंह की नब्ज देखकर) शुक्र है, शुक्र है कि मैं अपने मालिक को जीता पाता हूँ ।

माया : बाबाजी आप जल्दी न कीजिए और बिना समझे-बूझे अपनी बातों से मुझे दुःख न दीजिए । जो मैं कहती हूँ, उसे मानिए और विश्वास कीजिए कि यह बीरेन्द्रसिंह का ऐयार है और राजा की सूरत बनकर कई दिनों से रिआया को भड़का रहा है । इसकी खबर मुझको बहुत पहिले लग चुकी थी और मैंने मुनादी भी करा दी थी कि एक ऐयार राजा की सूरत बनकर लोगों को भड़काने के लिए आया है, जो कोई उसका सिर काटकर मेरे पास लावेगा, उसे एक लाख रुपया इनाम दूँगी । आज इत्तिफाक ही से यह कमबख्त मेरे हाथ आ फँसा है ।

बाबा : (कुछ सोचकर) शायद ऐसा ही हो, मगर तुमने तो कहा था कि मैं भूतनाथ और देवीसिंह के पीछे-पीछे इस सुरंग में आयी हूँ, फिर ये लोग तुम्हें कैसे मिले ? क्या ये लोग पहिले ही से सुरंग में मौजूद थे ?

माया : हाँ, जब मैं सुरंग में आ चुकी और भूतनाथ तथा देवीसिंह को बेहोश कर चुकी, उसके बाद शायद ये लोग (हाथ का इशारा करके) इस तरफ से यहाँ आ पहुँचे । उस समय बेहोशीवाली बारूद से निकला हुआ धुआँ यहाँ भरा हुआ था, जिसके सबब से ये लोग भी बेहोश होकर लेट गये ।

बाबा : बेहोशीवाली बारूद से निकला हुआ धुआँ ! क्या तुमने इन लोगों को किसी नयी रीति से बेहोश किया है ?

माया : जब मैं दुःखी होकर अपने घर से भागी तो (तिलिस्मी तमंचा और गोली दिखाकर) यह तिलिस्मी तमंचा और गोली निकालकर लेती आयी थी, इसी के ज़रिए से चलायी हुई तिलिस्मी गोली ने अपना काम किया, आप तो इसका हाल जानते ही हैं ।

बाबा : ठीक है, (राजा गोपालसिंह की तरफ देखकर) मगर मैं कैसे कहूँ कि यह बीरेन्द्रसिंह का ऐयार है ! अच्छा देखो मैं अभी इसका पता लगाये लेता हूँ ।

बाबाजी ने अपने झोले में से एक शीशी निकाली, जिसमें किसी तरह

का अर्क था। उस अर्क से अपनी उँगली तर करके राजा गोपालसिंह के गाल में जहाँ एक तिल का दाग था, लगायी और कुछ ठहरकर कपड़े से पोंछ डाला तथा फिर गौर करने बाद बोले—

बाबा : नहीं नहीं, यह बीरेन्द्रसिंह के ऐयार नहीं हैं, इन्होंने अपने चेहरे को रँगा नहीं है और न नकली तिल का दाग ही बनाया है ! अगर ऐसा होता तो इस दवा के लगाने से छूट जाता। यह बेशक, राजा गोपालसिंह हैं और तुमने इनके बारे मे निःसन्देह हम लोगों को धोखा दिया !

माया : ऐसा न समझिए, बीरेन्द्रसिंह के ऐयार लोग अपने चेहरे पर कच्चा रंग नहीं लगाते। अभी हाल ही में तेजसिंह ने मेरे ऐयार बिहारीसिंह को धोखा दिया, उसने उसका चेहरा ऐसा रँग दिया था कि हजार उद्योग करने पर भी बिहारीसिंह उसे साफ न कर सका। इसका खुलासा हाल आप सुनेंगे तो ताज्जुब करेंगे। बीरेन्द्रसिंह के ऐयार लोग बड़े धूर्त और चालाक हैं !

बाबा : मगर नहीं, मेरी दवा बेकार जानेवाली नहीं है, हाँ, एक बात हो सकती है।

माया : वह क्या ?

बाबा : शायद तुमने राजा गोपालसिंह के बारे में हम लोगों को धोखा न दिया हो और खुद ये ही हम लोगों को धोखा देकर कहीं चले गये हों।

माया : नहीं, यह भी नहीं हो सकता।

बाबा : बेशक, नहीं हो सकता। अच्छा मैं इन्हें होश में लाता हूँ, जो-कुछ है, इनकी बातचीत से आपही मालूम हो जायगा।

माया : नहीं नहीं, ऐसा न कीजिए, पहिले इन सबों को इसी तरह बेहोश ले जाकर अपने बँगले में कैद कीजिए, फिर जो होगा, देखा जायगा।

बाबा : मैं यह बात नहीं मान सकता !

माया : (जोर देकर) जो मैं कहती हूँ, वही करना होगा !

बाबा : कदापि नहीं, मुझे इस विषय में बहुतकुछ शक है और राजा साहब के साथ-ही-साथ मैं कमलिनी और लाडिली को भी होश में लाऊँगा।

इतना सुनते ही मायारानी की हालत बदल गयी, क्रोध के मारे उसके होंठ काँपने लगे, उसकी आँखें लाल हो गयीं और वह तिलिस्मी खंजर म्यान से निकालकर क्रोध-भरी आवाज में बाबाजी से बोली, "क्या तुम्हें किसी तरह की शेखी हो गयी है ? क्या तुम मेरा हुक्म काट सकते हो ? क्या तुम अपने को मुझसे बढ़कर समझते हो ? क्या तुम नहीं जानते कि मैं तिलिस्म की रानी हूँ, जो चाहूँ सो कर सकती हूँ, और तुम मेरा कुछ भी नहीं बिगाड़ सकते ? लो मैं साफ-साफ कहे देती हूँ कि बेशक यह गोपालसिंह हैं। धनपत

के साथ सुख भोगने और इनको सताकर तिलिस्म का भेद जानने के लिए, मैंने इन्हें कैद कर रक्खा था, मगर कमबख्त कमलिनी ने इन्हें कैद से छुड़ा दिया। अब मैं तुम्हारे सामने इन सभों का सिर काटकर अपना गुस्सा मिटाऊँगी, और तुम मेरा कुछ भी नहीं कर सकते, अगर ज्यादे सिर उठाओगे तो (खंजर दिखाकर) इसी खंजर से पहिले तुम्हारा काम तमाम करूँगी !"

बाबा : (हँसकर) बस-बस, बहुत उछल-कूद न करो। यद्यपि मैं बुड्ढा हूँ, तथापि तुम दो औरतों से किसी तरह हार नहीं सकता। मैं वही करूँगा, जो मेरे जी में आवेगा। यदि तुम इस तिलिस्म की रानी हो तो मैं भी तिलिस्म का दारोगा हूँ, मेरे पास भी बहुत-सी अनूठी चीजें हैं, इसके अतिरिक्त तुम मुझसे बिगाड़ करके कुछ फायदा भी नहीं उठा सकतीं और अब तो तुमने साफ कबूल ही दिया कि···

माया : (बात काटकर) हाँ हाँ, कबूल दिया और फिर भी कहती हूँ कि तुम्हारे बिना मेरा कुछ हर्ज नहीं हो सकता। तुम्हें अपने दारोगापन की शेखी है तो देखो, मैं अपनी ताकत तुमको दिखाती हूँ !

इतना कहकर मायारानी ने तिलिस्मी खंजर का कब्जा दबाया। उसमें से बिजली की तरह चमक पैदा हुई और जब कब्जा ढीला किया तो चमक बन्द हो गयी, मगर बाबाजी पर इसका कुछ असर न हुआ, जिससे मायारानी को बड़ा ताज्जुब हुआ। आखिर उसने बेहोश करने की नीयत से तिलिस्मी खंजर बाबाजी के बदन से लगाया, मगर इससे भी कुछ नतीजा न निकला, बाबाजी ज्यों-के-त्यों खड़े रह गये। अब तो मायारानी के ताज्जुब का कोई ठिकाना न रहा और वह घबराकर बाबाजी का मुँह देखने लगी। अगर तिलिस्मी खंजर में से चमक न पैदा होती तो उसे शक होता कि यह तिलिस्मी खंजर शायद वह नहीं है, जिसकी तारीफ भूतनाथ ने की थी, मगर अब वह इस खंजर पर किसी तरह का शक भी नहीं कर सकती थी।

बाबा : (हँसकर) कहो मेरा घमण्ड वाजिब है या नहीं !

माया : (तिलिस्मी खंजर की तरफ देखकर) शायद इसमें कुछ···

बाबा : (बात काटकर) नहीं नहीं, इस खंजर के गुण में किसी तरह का फर्क नहीं पड़ा। मैं इस खंजर को खूब जानता हूँ। यद्यपि तुम्हारे लिए यह एक नयी चीज है, परन्तु मैं अपने (राजा गोपालसिंह की तरफ इशारा करके) इस मालिक की बदौलत इसी प्रकार और गुण के कई खंजर, कटार, तलवार और नेजे देख चुका हूँ, और उनसे काम भी ले चुका हूँ, मगर जब मैं तिलिस्मी कामों में सिद्ध के बराबर हो गया, तब मेरे दिल से ऐसी तुच्छ चीजों की कदर और इज्जत जाती रही। तुम देखती हो कि इस खंजर का

मुझ पर कुछ भी असर नहीं होता। असल तो यह है कि तुम मेरी ताकत को नहीं जानती हो, तुम्हें नहीं मालूम है कि खाली हाथ रहने पर भी मैं क्या कर सकता हूँ ! बस मैं अपनी ताकत का हाल खोलना उचित नहीं समझता, परन्तु अफसोस, तुम मुझी को मारने के लिए तैयार हो गयीं ! खैर, कोई चिन्ता नहीं, आज तक मैं तुम्हारी इज्जत करता रहा, और तुमने जोकुछ भला-बुरा किया, उसे देखकर भी तरह देता गया, मगर अब देखता हूँ तो तुम···

माया : (बात काटकर) सुनिए सुनिए, आप जोकुछ कहेंगे मैं समझ गयी। मेरी यह नीयत न थी और न है कि आपकी जान लूँ, क्योंकि केवल आपही के भरोसे पर मैं कूद रही हूँ, और आपही की मदद से बड़े-बड़े बहादुरों को मैं कुछ नहीं समझती। यह तो साफ जाहिर है कि थोड़े ही दिन आप मुझसे अलग रहे और इसी बीच में मेरी सब दुर्दशा हो गयी। मैं आपको पिता के समान मानती हूँ, इसलिए आशा है कि (हाथ जोड़कर) इस समय जोकुछ मुझसे भूल हो गयी, उसे आप बाल-बच्चों की भूल के समान मानकर क्षमा करेंगे, मगर इस कसूर से मेरा असल मतलब सिर्फ इतना ही था कि किसी तरह राजा गोपालसिंह के मारने पर आपको राजी करूँ।

बाबाजी पर तिलिस्मी खंजर का कुछ भी असर न होते देख मायारानी का कलेजा धड़कने लगा, वह बहुत डरी और उसे विश्वास हो गया कि तिलिस्मी कारखाने में जितना बाबाजी को दखल और जानकारी है, उसका सोलहवाँ हिस्सा भी उसको नहीं है, और उसी के साथ तिलिस्मी चीजों से बाबाजी ने बहुतकुछ फायदा भी उठाया है। यह भी उसी फायदे का असर है कि राजा वीरेन्द्रसिंह की कैद से सहज ही में छूट आये और ऐसे अद्भुत तिलिस्मी खंजर को तुच्छ समझते हैं, तथा इसका असर इन पर कुछ भी नहीं होता। अब वह इस बात को सोचने लगी कि उसे बाबाजी से बिगाड़ करना उचित नहीं, बल्कि जिस तरह हो सके उन्हें राजी करना चाहिए, फिर मौका मिलने पर जैसा होगा, देखा जायेगा।

ऐसी-ऐसी बहुत-सी बातें मायारानी तेजी के साथ सोच गयी और उसी सबब से वह अधीनता के साथ बाबाजी से बातें करने लगी। जब अपनी बात खतम करके चुप हो गयी तो बाबाजी ने मुस्कुरा दिया और कुछ सोचकर कहा, "खैर, मैं तुम्हारे इस कसूर को माफ करता हूँ, मगर यह नहीं चाहता कि राजा गोपालसिंह को किसी तरह की तकलीफ हो, जिन्हें मुद्दत के बाद आज मैं इस अवस्था में देख रहा हूँ।"

माया : तब आपने माफ ही क्या किया ? यद्यपि आपको इस बात का रंज है कि मैंने गोपालसिंह के साथ दगा किया और यह भेद आपसे छिपा

रक्खा, मगर आप भी तो जरा पुरानी बातों को याद कीजिए ! खास करके उस अँधेरी रात की बात, जिसमें मेरी शादी और पुतले की बदलौवल हुई थी ! वह सब कर्म तो आप ही का है ! आपही ने मुझे यहाँ पहुँचाया। अब अगर मेरी दुर्दशा होगी तो क्या आप बच जायेंगे ? फिर मान लिया जाय कि आप गोपालसिंह को बचा भी लें तो क्या 'लक्ष्मीदेवी' का बचके निकल जाना, आपके लिए दुःखदायी न होगा ? और जब इस बात की खबर गोपालसिंह को होगी तो क्या वे आपको छोड़ देंगे ? बेशक, जोकुछ आज तक मैंने किया है, सब आपही का कसूर समझा जायगा। मैंने इस बात का पता न लग जाय कि दारोगा की करतूत ने लक्ष्मीदेवी की जगह···

इतना कहकर मायारानी चुप हो गयी और बड़े गौर से बाबाजी की सूरत देखने लगी, मानो इस बात का पता लगाना चाहती है कि बाबाजी के दिल पर उसकी बातों का क्या असर हुआ। दारोगा साहब भी मायारानी की बातें सुनकर तरद्दुद में पड़ गये और न मालूम क्या सोचने लगे। थोड़ी देर बाद दारोगा ने सिर उठाया और मायारानी की तरफ देखकर कहा, "अच्छा अब विशेष बातों की कोई जरूरत नहीं है, मैं वादा करता हूँ कि गोपालसिंह के बारे में तुम पर किसी तरह का दबाव न डालूंगा और इससे ज्यादे कुछ न कहूँगा कि इनके मारने का विचार न करके, थोड़े दिनों तक इन्हें कैद ही में रखना आवश्यक है, बल्कि कमलिनी, लाडिली, भूतनाथ और देवीसिंह को भी कैद ही में रखना चाहिए। हाँ, जब मैं उन आफतों को दूर कर लूं, जिनके कारण तुम्हें अपना राज्य छोड़ना पड़ा और तुम्हें फिर उसी दर्जे पर पहुँचा दूं, तब जो तुम्हारे जी में आवे करना। बस बस, इसमें दखल मत दो और जो मैंने कहा है, उसे करो नहीं तो तुम्हें पूरा-पूरा सुख कदापि न मिलेगा !"

माया : खैर, ऐसा ही सही, मगर यह तो कहिए कि इन लोगों को कैद कहाँ कीजियेगा ?

बाबा : इसके लिए मेरा बंगला बहुत मुनासिब है।

माया : और मेरे रहने के लिए कौन-सा ठिकाना सोच रक्खा है ?

बाबा : वाह, क्या तुम समझती हो कि तुम्हें बहुत दिनों तक अपने राज्य से अलग रहना पड़ेगा ? नहीं, दो ही तीन दिन में मैं उन सभों का मुँह काला करूँगा, जो तुम्हारे नौकर होकर तुमसे खिलाफ हो रहे हैं, और तुम्हें फिर उसी दर्जे पर बिठाऊँगा, जिस पर मेरे सामने तुम थीं। हाँ, एक चीज के बिना हर्ज जरूर होगा।

माया : वह क्या ? शायद आपका मतलब अजायबघर की ताली से है !

बाबा : हाँ, मेरा मतलब अजायबघर की ताली ही से है, क्या तुम उसे अपने महल ही में छोड़ आयी हो ?

माया : जी नहीं, वह मेरे पास है, जब मैं लाचार होकर अपने घर से भागी तो एक वही चीज थी, जिसे मैं अपने साथ ला सकी।

बाबा : वाह, वाह, यह बड़ी खुशी की बात तुमने कही। अच्छा वह ताली मेरे हवाले करो तो और कुछ बातें होंगी।

माया : (अजायबघर की ताली बाबाजी को देकर) लीजिए तैयार है, अब जहाँ तक जल्द हो सके, यहाँ से निकल चलना चाहिए।

बाबा : हाँ हाँ, मैं भी यही चाहता हूँ, भला यह तो कहो कि यह तिलिस्मी खंजर तुमने कहाँ से पाया ?

माया : यह तिलिस्मी खंजर कमलिनी ने भूतनाथ और गोपालसिंह को दिया था, जो इस समय इन सभों के बेहोश हो जाने पर मुझे मिला। एक तो मैंने ले लिया और दूसरा नागर को दे दिया है। मैंने सुना है कि इसी तरह के और भी कई खंजर कमलिनी ने अपने साथियों को बाँटे हैं, मगर मालूम नहीं इस समय वे कहाँ हैं।

बाबा : ठीक है, खैर, यह काम तुमने बहुत ही अच्छा किया कि अजायबघर की ताली अपने साथ लेती आयी, नहीं तो बड़ा हर्ज होता।

माया : जी हाँ।

मायारानी अजायबघर की ताली के बारे में भी दारोगा से झूठ बोली। यद्यपि उसने यह ताली भूतनाथ को दे दी और इस समय गोपालसिंह के पास से पायी थी, परन्तु भूतनाथ का नाम लेना उसने उचित न जाना, क्योंकि उसने यह ताली भूतनाथ को राजा गोपालसिंह की जान लेने के बदले में दी थी और यह बात बाबाजी से कहना उसे मंजूर न था, इससे वह इस समय बहाना कर गयी।

मायारानी और नागर को साथ लिये हुए, बाबाजी वहाँ से रवाना हुए, और उस खम्भे के पास पहुँचे, जिस पर गड़ारीदार पहिया लगा हुआ था। अब मायारानी बड़ी उत्कण्ठा से देखने लगी कि बाबाजी किस तरह से दरवाजा खोलते हैं, और इसलिए जब बाबाजी ने गड़ारीदार पहिए को घुमाकर सुरंग का दरवाजा खोला तो मायारानी को बड़ा आश्चर्य हुआ, क्योंकि इसी पहिए को वह कई दफे उलट-फेरकर घुमा चुकी थी, मगर दरवाजा नहीं खुला था। मायारानी ने बड़े आग्रह से इसका सबब बाबाजी से पूछा और कहा कि 'इसी पहिए को मैं पहिले कई दफे घुमा चुकी थी, मगर दरवाजा न खुला, इस समय क्योंकर खुल गया'? इसके जवाब में बाबाजी हँसकर बोले, "इसका सबब किसी दूसरे वक्त तुमसे कहूँगा,

क्योंकि समझाने में बहुत देर लगेगी और पहिले उन कामों को बहुत जल्द कर लेना चाहिए, जिनका करना आवश्यक है !"

यह जवाब सुनकर मायारानी चुप हो गयी और यह सोच लिया कि खैर, किसी दूसरे समय इसका पता लग जायेगा, क्योंकि इस समय वह बाबाजी से बहुत ही दबी हुई थी और किसी बात में जिद्द करना उचित नहीं समझती थी। उधर बाबाजी ने भी दरवाजा खोलने का भेद जान-बूझकर मायारानी से छिपा रक्खा था, क्योंकि उसका भेद खोलना उन्हें मंजूर न था। यद्यपि मायारानी को उसका भेद मालूम न हुआ, मगर हम अपने पाठकों को दरवाजा खोलने का भेद बताये देते हैं। लोहे के खम्भे पर जो गराड़ीदार पहिया था, उसके घूमने से दरवाजा बन्द हो जाता था, परन्तु खोलने के समय उसे एक बँधे हुए अन्दाज से घुमाना पड़ता था। उस पहिए को इक्कीस दफे बायीं तरफ, इसके बाद बारह दफे दाहिनी तरफ, और नौ दफे बायीं तरफ घुमाने से दरवाजा खुलता था। अगर इससे कुछ भी कम या ज्यादे पहिया घूम जाय तो दरवाजा नहीं खुलता था। दरवाजा खोलते समय बाबाजी ने बड़ी तेजी के साथ गिनकर पहिया घुमाया और मायारानी का उसकी गिनती की तरफ कुछ भी ध्यान न था, इसीलिए वह इस बात को समझ न सकी।

मायारानी और नागर को साथ लिये हुए जब बाबाजी सुरंग के बाहर निकले तो सवेरा हो चुका था, मगर सूर्य अभी नहीं निकला था। टीले पर से देखा तो चारों तरफ मैदान में सन्नाटा था, इसलिए राय हुई कि इसी समय गोपालसिंह, भूतनाथ, देवीसिंह, कमलिनी और लाडिली को निकालकर बँगले में पहुँचा देना चाहिए। नागर दौड़ी हुई चली गयी और लीला तथा लौंडियों को बुला लायी और इसके बाद सभों ने मिलकर पाँचों कैदियों को सुरंग से निकालकर दारोगावाले बँगले में पहुँचाया।

अब यह विचार होने लगा कि पाँचों कैदियों को किस जगह कैद करना चाहिए, बाबाजी की राय हुई कि पाँचों कैदियों को अजायबघर की ड्योढ़ी* में बन्द करना चाहिए, मगर मायारानी ने कुछ सोच-विचारकर कहा कि 'नहीं इन लोगों को मेगजीन के बगलवाले तहखाने में कैद करना

---

* अजायबघर की ड्योढ़ी से उसी कोठरी से मुराद है, जिसमें धनपत और मायारानी को भूतनाथ उस समय ले गया था, जब राजा गोपालसिंह को मारने का वादा किया था। उसी कोठरी में राजा गोपालसिंह की नकली लाश दिखायी गयी थी। देखिए चन्द्रकान्ता सन्तति, आठवाँ भाग, ग्यारहवाँ बयान।

चाहिए। मायारानी की बात सुनकर बाबाजी के होठ फड़कने लगे और माथे पर दो-एक बल पड़ गये, जिससे मालूम होता था कि उनको क्रोध चढ़ आया है, मगर उन्होंने बहाने के साथ दूसरी तरफ देखकर बहुत जल्द अपने को सम्हाला, जिसमें सूरत देखकर मायारानी को उनके दिल का हाल कुछ मालूम न हो। बाबाजी को चुप देखकर मायारानी ने फिर टोका और कहा कि कैदियों को मेगजीन के बगलवाले तहखाने में बन्द करना उचित होगा, जिस पर बाबाजी ने हँसकर जवाब दिया, "बहुत अच्छा, जो तुम कहती हो वही होगा।"

हम ऊपर लिख आये हैं कि इस मकान के चारों कोनों में चार कोठरियाँ और चारों तरफ चार दालान हैं। बँगले में जाने के लिए, जो सदर दरवाजा है, उसके बाएँ तरफवाली कोठरी के नीचे दो तहखाने हैं। एक तो मेगजीन के नाम से पुकारा जाता है, और उसमें बारूद तथा छोटी-छोटी कई तोपें रक्खी हुई हैं; और उसी के साथ सटा हुआ जो दूसरा तहखाना है, उसमें बाबाजी का खजाना रहता है। उसी खजानेवाले तहखाने में कैदियों को कैद करने की राय मायारानी ने दी थी और बाबाजी ने यह बात मंजूर कर ली।

बाबाजी उस कोठरी के अन्दर गये। वहाँ दोनों तरफ की दीवारों में लोहे के दो दरवाजे थे जिन्हें दोनों तहखानों का दरवाजा कहना चाहिए। दाहिनी तरफ के दरवाजे को किसी गुप्त रीति से बाबाजी ने खोला और नागर, लीला तथा लौंडियों की मदद से पाँचों कैदियों को उनके ऐयारी के बटुए सहित तहखाने में पहुँचाकर बाहर निकल आये और दरवाजा बन्द कर दिया। बाहर निकलती समय तहखाने में ताँबे का एक घड़ा भी लेते आये और मायारानी की तरफ देखकर बोले, "अब कैदियों के लिए कुछ खाने-पीने का सामान भी कर देना चाहिए, इसी घड़े में भरकर जल और थोड़े से जंगली फल वहाँ रखवा देता हूँ जो तीन दिन के लिए काफी होगा, फिर देखा जायगा। (लौंडियों की तरफ देखकर) जाओ तुम लोग थोड़े-से फल बहुत जल्द तोड़ लाओ।" आज्ञानुसार लौंडियाँ चारों तरफ चली गयीं और बात-की-बात में बहुत-से फल तोड़कर ले आयीं। एक कपड़े में बाँधकर वही फल और जल से भरा हुआ घड़ा हाथ में लिये हुए बाबाजी फिर उसी तहखाने में उतरे, मगर अबकी दफे किसी को साथ न ले गये, बल्कि अन्दर जाती दफे दरवाजा भीतर से बन्द कर लिया और आधी घड़ी से ज्यादे देर के बाद तहखाने से बाहर निकले। मायारानी ने ताज्जुब में आकर पूछा कि 'आपको तहखाने में इतनी देर क्यों लगी'? इसके जवाब में बाबाजी ने कहा कि 'कैदियों के बटुओं की तलाशी ले रहा था, मगर कोई चीज

मेरे मतलब की न निकली'।

इस समय मायारानी का चेहरा फतहमन्दी की खुशी से दमक रहा था। उसे केवल इसी बात की खुशी न थी कि उसने राजा गोपालसिंह और अपनी दोनों बहिनों तथा ऐयारों को कैद कर लिया था, बल्कि उसकी खुशी का सबब कुछ और भी था। थोड़ी ही देर पहिले, उसे इस बात का रंज था कि कमबख्त दारोगा ने यकायक पहुँचकर हमारे काम में विघ्न डाल दिया नहीं तो गोपालसिंह तथा कमलिनी और लाडिली को मारकर मैं हमेशा के लिए निश्चिन्त हो जाती, मगर अब उसे इन बातों का रंज नहीं है और यह उसकी मुस्कुराहट से साफ जाहिर हो रहा है।

बारहवाँ बयान

शाम होने में कुछ भी विलम्ब नहीं है। सूर्य भगवान अस्त हो गये, केवल उनकी लालिमा आसमान में पश्चिम तरफ दिखायी दे रही है। दारोगावाले बँगले में रहनेवालों के लिए, यह अच्छा समय है। परन्तु आज उस बँगले में जितने आदमी दिखायी दे रहे हैं, वे सब इस योग्य नहीं हैं कि बेफिक्री के साथ इधर-उधर घूमें और इस अनूठे समय का आनन्द लें। यद्यपि राजा गोपालसिंह, कमलिनी और लाडिली की तरफ से मायारानी निश्चिन्त हो गयी, बल्कि उनके साथ-ही-साथ दो ऐयारों को भी उसने गिरफ्तार कर लिया है, मगर अभी तक उसका जी ठिकाने नहीं हुआ। वह नहर के किनारे बैठी हुई बाबाजी से बातें कर रही है और इस फिक्र में है कि कोई ऐसी तरकीब निकल आवे कि जमानिया की गद्दी पर बैठकर उसी शान के साथ हुकूमत करे, जैसाकि आज के कुछ दिन पहिले कर रही थी। उसके पास केवल नागर बैठी हुई दोनों की बातें सुन रही है।

माया : जिस दिन से आपको वीरेन्द्रसिंह ने गिरफ्तार कर लिया, उसी दिन से मेरी किस्मत ने ऐसा पलटा खाया कि जिसका कोई हद्दहिसाब नहीं, मानो मेरे लिए जमाना ही और हो गया। एक दिन भी सुख के साथ सोना नसीब न हुआ ! मुझ पर जो-जो मुसीबतें आयीं और तिलिस्मी बाग के अन्दर, जो जो अनहोनी बातें हुईं, उनका खुलासा हाल आज मैं आपसे कह चुकी हूँ। इस समय यद्यपि राजा गोपालसिंह, कमलिनी और लाडिली की तरफसे निश्चिन्त हूँ मगर फिर भी अपनी अमलदारी में या तिलिस्मी बाग के अन्दर जाकर रहने का हौसला नहीं पड़ता, क्योंकि तिलिस्मी बाग के अन्दर दोनों नकाबपोशों के आने और धनपत का भेद खुल जाने से हमारे सिपाहियों की हालत बिल्कुल ही बदल गयी है, और मुझे उनके हाथों से दुःख भोगने के

सिवाय और किसी तरह की उम्मीद नहीं है। यह भी सुनने में आया है कि दीवान साहब मुझे गिरफ्तार करने की फिक्र में पड़े हुए हैं।

बाबा : दीवान जोकुछ कर रहा है, उससे मालूम होता है कि या तो उसे राजा गोपालसिंह का असल-असल हाल मालूम हो गया है, और वह उन्हें फिर जमानिया की गद्दी पर बैठाना चाहता है, या वह स्वयं राजा साहब के बारे में धोखा खा रहा है और चाहता है कि तुम्हें गिरफ्तार कर राजा बीरेन्द्रसिंह के हवाले करे और उनकी मेहरबानी के भरोसे पर स्वयं जमानिया का राजा बन बैठे। तुम कह चुकी हो कि राजा बीरेन्द्रसिंह की बीस हजार फौज मुकाबले में आ चुकी है, जिसका अफसर नाहरसिंह है। अब सोचना चाहिए कि नाहरसिंह के मुकाबले में आ जाने पर भी चुपचाप बैठे रहना बेसबब नहीं है और···

माया : शायद इसका सबब यह हो कि दीवान ने मुझे गिरफ्तार करके बीरेन्द्रसिंह के हवाले कर देने की शर्त पर उनसे सुलह कर ली हो ?

बाबा : ताज्जुब नहीं कि ऐसा ही हो, मगर घबड़ाओ नहीं मैं दीवान के पास जाऊँगा और देखूँगा कि वह किस ढंग पर चलने का इरादा करता है। अगर बदमाशी करने पर उतारू है तो मैं उसे ठीक करूँगा। हाँ, यह तो बताओ कि दीवान को, तुम्हारी तिलिस्मी बातों या तिलिस्मी कारखाने का भेद तो किसी ने नहीं दिया ?

माया : जहाँ तक मैं समझती हूँ, उसे तिलिस्मी कारखाने में कुछ दखल नहीं है, मगर इस बात को मैं जोर देकर नहीं कह सकती, क्योंकि वे दोनों नकाबपोश हमारे तिलिस्मी बाग के भेदों से बखूबी वाकिफ हैं, जिनका हाल मैं आपसे कह चुकी हूँ, बल्कि ऐसा कहना चाहिए कि बनिस्बत मेरे वे ज्यादे जानकार हैं क्योंकि अगर ऐसा न होता तो वे मेरी उन तरकीबों को रद्द न कर सकते जो उनके फँसाने के लिए की गयी थीं, ताज्जुब नहीं कि उन दोनों ने दीवान से मिलकर तिलिस्म का कुछ हाल भी, उससे कहा हो।

बाबा : खैर, कोई हर्ज नहीं देखा जायगा, मैं कल जरूर वहाँ जाऊँगा और दीवान से मिलूँगा।

माया : नहीं, बल्कि आप आज ही जाइए और जहाँ तक जल्दी हो सके कुछ बन्दोबस्त कीजिए, क्योंकि अगर दीवान के भेजे हुए सौ-पचास आदमी मुझे ढूंढ़ते हुए, यहाँ आ जाँयगे तो सख्त मुश्किल होगी। यद्यपि यह तिलिस्मी खंजर मुझे मिल गया है और तिलिस्मी गोली से भी मैं सैकड़ों की जान ले सकती हूँ, मगर उस समय मेरे किये कुछ भी न होगा, जब किसी ऐसे से मुकाबिला हो जायगा, जिसके पास कमलिनी का दिया हुआ इसी प्रकार का खंजर मौजूद होगा।

बाबा : तथापि इस बँगले में आकर तुम्हें कोई सता नहीं सकता।

माया : ठीक है, मगर मैं कब तक इसके अन्दर छिपकर बैठी रहूँगी, आखिर भूख-प्यास भी तो कोई चीज है !

बाबा : मगर ऐसा होना बहुत मुश्किल है।

माया : तो हर्ज ही क्या है, अगर आप इसी समय दीवान के पास जाँय ? मैं खूब जानती हूँ कि वह आपकी सूरत देखते ही डर जायगा।

बाबा : क्या तुम्हारी यही मर्जी है कि इसी समय जाऊँ ?

माया : हाँ, जाइए और अवश्य जाइए।

बाबा : अच्छा यही सही, मैं जाता हूँ।

बाबाजी उसी समय उठ खड़े हुए और जमानिया की तरफ रवाना हो गये। मायारानी तब तक बराबर देखती रही, जब तक कि वे पेड़ों की आड़ में होकर नजरों से गायब न हो गये, इसके बाद हँसकर नागर की तरफ देखा और कहा—"तुम समझती हो कि बाबाजी को मैंने जिद्द करके इसी समय यहाँ से क्यों धता बताया* ?"

नागर : जाहिर में जोकुछ तुमने बाबाजी से कहा है और जिस काम के लिए उन्हें भेजा है, यदि उसके सिवाय और कोई मतलब है तो मैं कह सकती हूँ कि मेरी समझ में कुछ न आया।

माया : (हँसकर) अच्छा तो अब मैं समझा देती हूँ। बाबाजी के सामने मैंने अपने को जितना बताया, वास्तव में मेरे दिल में उतना दुःख और रंज नहीं है, क्योंकि जिसका डर था, जिसके निकल जाने से मैं परेशान थी, जिसका प्रकट होना मेरे लिये मौत का सबब था, और जो मुझसे बदला लिये बिना माननेवाला न था, अर्थात् गोपालसिंह, वह मेरे कब्जे में आ चुका। अब अगर दुःख है तो इतना ही कि कमबख्त दारोगा ने उसे मारने न दिया, मगर मैं बिना उसकी जान लिये कब माननेवाली हूँ, इसलिए मैंने कसी तरह बाबाजी को यहाँ से धता बताया।

नागर : तो क्या तुम्हारा मतलब था कि बाबाजी यहाँ से विदा हो जायँ तो अपने कैदियों को मार डालो ?

माया : बेशक, इसी मतलब से मैंने बाबाजी को यहाँ से निकाल बाहर किया, क्योंकि अगर वह रहता तो कैदियों को मारने न देता और उसमें जो-कुछ करामात है, सो तुम देख ही चुकी हो। अगर ऐसा न होता तो मैं सुरंग ही में उन सभों को मारकर निश्चिन्त हो जाती।

नागर : मगर बाबाजी ने उस कोठरी की ताली तो तुम्हें दी नहीं,

---

* अर्थात् विदा किया।

जिसमें कैदियों को रक्खा है।

माया : ठीक है, बाबाजी इस बात में चालाकी कर गये। कैदखाने की कोठरी क्योंकर खुलती है, सो मुझे नहीं बताया और न कोई ताली वहाँ की मुझे दी, मगर यह मैं पहिले ही समझे हुई थी, कि बाबाजी कैदियों को जरूर किसी जगह रक्खेंगे, जहाँ मैं जा नहीं सकती, इसीलिए तो बाबाजी से मैंने कहा कि कैदियों को मेगज़ीन के बगलवाली कोठरी में कैद करो। बाबाजी मेरा मतलब न समझ सके और धोखे में आ गये।

नागर : यह कहने से तो यही जाहिर होता है कि उस कोठरी में तुम जा सकती हो।

माया : नहीं, उस कोठरी में मैं नहीं जा सकती, मगर मेगज़ीन की कोठरी तक जा सकती हूँ।

नागर : (जोर से हँसकर) अहा हा, अब मैं समझी ! तुम्हारा मतलब यह है कि मेगज़ीन में जहाँ बारूद का खजाना रक्खा है, वहाँ जाओ और उसमें आग लगाकर इस ··

माया : बस बस, यही है, कैदी और कैदखाने की क्या बात इस बँगले का ही सत्यानाश कर दूँगी। कैदियों की हड्डी तक का तो पता लगेगा ही नहीं ! अच्छा अब इस काम में विलम्ब न करना चाहिए, उठो और मेरे साथ चलकर उस कोठरी में अर्थात् मेगज़ीन में कोई ऐसी चीज रक्खो जो उस वक्त बारूद में आग लगावे, जब हम लोग यहाँ से निकलकर कुछ दूर चली जाँय।

नागर : ऐसा ही होगा, यह कोई मुश्किल बात नहीं है।

तेरहवाँ बयान

कल शाम को बाबाजी जमानिया गये थे, और आज शाम होने के दो घण्टे पहिले ही लौट आये। दूर ही से अपने बँगले की हालत देख सिर हिलाकर बोले, "मैं उसी समय समझ गया था, जब मायारानी ने कहा था कि कैदियों को मेगज़ीन के बगलवाले तहखाने में कैद करना चाहिए।"

बाबाजी का बँगला, जो बहुत ही खूबसूरत और शौकीनों के रहने लायक था बिल्कुल बरबाद हो गया था, बल्कि यों कहना चाहिए कि उसकी एक-एक ईंट अलग हो गयी थी। बाबाजी धीरे-धीरे उसके पास पहुँचे और कुछ देर तक गौर से देखने बाद यह कहते हुए घूम पड़े कि 'जो हो मगर अजायबघर किसी तरह बरबाद नहीं हो सकता'।

बाबाजी के बँगले के बरबाद होने का सबब पाठक समझ ही गये होंगे,

क्योंकि ऊपर के बयान में मायारानी और नागर की बातचीत से वह भेद साफ-साफ खुल चुका है। अब बाबाजी इस विचार में पड़े कि मायारानी को ढूंढ़ना और उससे दो-दो बातें करनी चाहिए।

ऐसा करने में बाबाजी को विशेष तकलीफ उठानी न पड़ी, क्योंकि थोड़ी ही दूर पर उन्हें उन लौंडियों में से एक लौंडी मिली, जो उस समय मायारानी के साथ थी, जब बाबाजी कैदियों को तहखाने में बन्द करके दीवान से मिलने के लिए जमानिया की तरफ रवाना हुए थे। बाबाजी ने उस लौंडी से केवल इतना ही पूछा, "मायारानी कहाँ है ?"

लौंडी : जब आप जमानिया की तरफ चले गये तो मायारानी हम लोगों को साथ लेकर दिल बहलाने के लिए इस जंगल में टहलने लगीं, और धीरे-धीरे यहाँ से कुछ दूर चली गयीं। ईश्वर ने बड़ी कृपा की कि रानी साहबा के दिल में यह बात पैदा हुई, नहीं तो हम लोग भी टुकड़े-टुकड़े होकर उड़ गये होते, क्योंकि थोड़ी ही देर बाद एक भयानक आवाज सुनने में आयी और जब हम लोग बँगले के पास आये तो मिट्टी और गर्द के सबब से अन्धकार हो रहा था। हम लोग डरकर पीछे की तरफ हट गये और अन्त में इस बँगले की ऐसी अवस्था देखने में आयी जो आप देख रहे हैं। लाचार मायारानी ने यहाँ ठहरना उचित न समझा और नागर के साथ काशीजी की तरफ रवाना हो गयी।

बाबा : और तुझे इसलिए यहाँ छोड़ गयी कि जब मैं आऊँ तो बातें बनाकर मेरे क्रोध को बढ़ावे !

लौंडी : जी ई ई ई···

बाबा : जी ई ई ई क्या ? बेशक, यही बात है ! खैर, अब तू भी यहाँ से चली जा और कमबख्त मायारानी से जाकर कह दे कि जोकुछ तूने किया बहुत अच्छा किया, मगर इस बात को खूब याद रखियो कि नेकी का नतीजा नेक है और बद को कदापि सुख की नींद सोना नसीब नहीं होता। अच्छा ठहर मैं एक चीठी लिख देता हूँ, सो लेती जा और जहाँ तक जल्द हो सके, मिलकर मायारानी के हाथ में दे दे।

इतना कहकर बाबाजी बैठ गये और अपने बटुए से सामान निकालकर चीठी लिखने लगे, जब चीठी लिख चुके तो उस लौंडी के हाथ में दे दिया, और आप उत्तर तरफ रवाना हो गये।

इसमें कोई सन्देह नहीं कि यह लौंडी बाबाजी की चीठी लिये हुए काशीजी जायेगी और मायारानी से मिलकर चीठी उसके हाथ में देगी, मगर हम आपको अपने साथ लिये हुए पहले ही काशीजी पहुँचते हैं और देखते हैं कि मायारानी किस धुन में कहाँ बैठी है, या क्या कर रही है।

पहर रात से ज्यादे जा चुकी है। काशी में मनोरमावाले मकान के अन्दर एक सजे हुए कमरे में मायारानी नागर के साथ बैठी हुई कुछ बात कर रही है। इस समय कमरे में सिवाय नागर और मायारानी के और कोई नहीं है। कमरे में यद्यपि बहुत से बेशकीमत शीशे करीने के साथ लगे हुए हैं, मगर रोशनी दो दीवारगीरों में और एक सब्ज कंवलवाले शमादान में जो मायारानी के सामने गद्दी के नीचे रक्खा हुआ है, हो रही है। मायारानी सब्ज मखमल की गद्दी पर गाव तकिये के सहारे बैठी है। इस समय उसका खूबसूरत चेहरा जो आज के तीन-चार दिन पहिले उदासी और बदहवासी के कारण, बेरौनक हो रहा था, खुशी और फतहमन्दी की निशानियों के साथ दमक रहा है और वह किसी सवाल का इच्छानुसार जवाब पाने की आशा में मुस्कुराती हुई नागर की तरफ देख रही है।

नागर : इसमें तो कोई सन्देह नहीं कि बड़ी भारी बला आपके सिर से टली परन्तु यह न समझना चाहिए कि अब आपको किसी आफत का सामना न करना पड़ेगा।

माया : इस बात को मैं जानती हूँ कि जमानिया की गद्दी पर बैठने के लिए, अब भी बहुतकुछ उद्योग करना पड़ेगा, मगर मैं यह कह रही हूँ कि सबसे भारी बला जो थी, वह टल गयी। कमबख्त कमलिनी ने भी बड़ा ही ऊधम मचा रक्खा था, अगर वह बीरेन्द्रसिंह की पक्षपाती न होती तो मैं कभी की दोनों कुमारों को मौत की नींद सुला चुकी होती।

नागर : बेशक बेशक।

माया : और भूतनाथ का मारा जाना भी बहुत अच्छा हुआ, क्योंकि उसे इस मकान का बहुतकुछ भेद मालूम हो चुका था और इस सबब से इस मकान के रहनेवाले भी बेफिक्र नहीं रह सकते थे। मगर देखो तो सही, हरामजादे दीवान को क्या हो गया जो एकदम मुझसे फिर गया, बल्कि गिरफ्तार करने का उद्योग करने लगा।

नागर : जरूर यह बात भी उन्हीं नकाबपोशों की बदौलत हुई है।

माया : ठीक है, पहिले तो मैं बेशक ताज्जुब में थी कि न मालूम वे दोनों नकाबपोश कौन थे और कहाँ से आये थे और दीवान तथा सिपाहियों के बिगड़ने का सबब केवल यही ध्यान में आता था कि धनपत का भेद खुल जाने से उन लोगों ने मुझे बदकार समझ लिया, मगर अब मुझे निश्चय हो गया कि उन दोनों नकाबपोशों में से एक तो जरूर गोपालसिंह था।

नागर : मुझे भी यही निश्चय है, बल्कि अभी यही बात अपने मुँह से निकालनेवाली थी। उसके सिवाय और कोई ऐसा नहीं हो सकता कि केवल सूरत दिखाकर लोगों को अपने वश में कर ले। सिपाहियों को और

दीवान को जरूर इस बात का निश्चय हो गया कि गोपालसिंह को तुमने कैद कर रक्खा था। खैर, जो होना था, सो हो गया, अब तो राजा गोपालसिंह का नाम-निशान ही न रहा, जो फिर जाकर अपना मुँह उन लोगों को दिखावेंगे, अब थोड़े ही दिनों में उन लोगों को निश्चय करा दिया जायेगा कि वह राजा बीरेन्द्रसिंह का कोई ऐयार था।

माया : तुम्हारा कहना बहुत ठीक है और मेरे नजदीक अब यह कोई बड़ी बात नहीं है कि बेईमान दीवान को गिरफ्तार कर लूँ, या मार डालूँ, मगर एक बात का खुटका जरूर है।

नागर : वह क्या ?

माया : केवल इतना ही कि दीवान को मारने या गिरफ्तार करने के साथ-ही-साथ राजा बीरेन्द्रसिंह की उस फौज का भी मुकाबला करना पड़ेगा, जो सरहद पर आ चुकी है।

नागर : इसमें तो कुछ भी सन्देह नहीं है और इस बात का भी विश्वास नहीं हो सकता कि तुम्हारी फौज तुम्हारा पक्ष लेकर लड़ने के लिए तैयार हो जायेगी। फौजी सिपाहियों के दिल से गोपालसिंह का ध्यान दूर होना दो-एक दिन का काम नहीं है!

माया : (कुछ सोचकर) तो क्या मैं अकेली राजा बीरेन्द्रसिंह की फौज को नहीं हटा सकती।

नागर : सो तो तुम्हीं जानो।

माया : बेशक, मैं ऐसा कर सकती हूँ, मगर अफसोस, मेरा प्या[illegible] धनपत···

धनपत का नाम लेते ही मायारानी की आँखें डबडबा आयीं। ना[illegible] ने अपने आँचल से उसकी आँखें पोंछीं और बहुतकुछ धीरज दिया। इस[illegible] समय दरवाजे से चुटकी बजाने की आवाज आयी, जिसे सुन नागर समझ गयी कि कोई लौंडी यहाँ आया चाहती है। नागर ने पुकारकर कहा, "कौन है, चली आओ।"

वही लौंडी भीतर आती हुई दिखायी पड़ी जो बर्बाद हुए बँगले के पास बाबाजी से मिली थी, और जिसके हाथ बाबाजी ने मायारानी के पास चीठी भेजी थी। उसको देखते ही मायारानी चैतन्य हो बैठी और बोली, "कहो दारोगा से मुलाकात हुई थी ?"

लौंडी : जी हाँ।

माया : (मुस्कुराकर) वह तो बहुत ही बिगड़ा होगा।

लौंडी : हाँ, बहुत झुँझलाये और उछले-कूदे, आपकी शान में कड़ी-कड़ी बातें कहने लगे, मगर मैं चुपचाप खड़ी सुनती रही, अन्त में बोले, "अच्छा

मैं एक चीठी लिखकर देता हूँ, ले जाकर मायारानी को दे दीजियो।"

माया : तो क्या उसने चीठी लिखकर दी ?

लौंडी : जी हाँ, यह मौजूद है लीजिए।

लौंडी ने चीठी मायारानी के हाथ में दे दी और मायारानी ने यह कहकर चीठी ले ली कि 'देखना चाहिए इसमें दारोगा साहब क्या रंग लाये हैं' ! इसके बाद वह चीठी नागर के हाथ में देकर बोली, "लो इसे तुम ही पढ़ो।"

नागर चीठी खोलकर पढ़ने लगी। उस समय मायारानी की निगाह नागर के चेहरे पर थी। आधी चीठी पढ़ने बाद नागर के चेहरे पर हवाई उड़ने लगी और डर के मारे उसका हाथ काँपने लगा। मायारानी ने घबड़ाकर पूछा, "क्यों क्या हाल है, कुछ कहो तो ?"

इसके जवाब में नागर ने लम्बी साँस लेकर चीठी मायारानी के सामने रख दी और बोली, "ओह, मेरी सामर्थ्य नहीं कि इस चीठी को आखीर तक पढ़ सकूँ। हाय, निःसन्देह बीरेन्द्रसिंह के ऐयारों का मुकाबला करना पूरा-पूरा पागलपन है।"

मायारानी ने घबड़ाकर चीठी उठा ली और स्वयं पढ़ने लगी, पर वह भी उस चीठी को आधे से ज्यादा न पढ़ सकी। पसीना छूटने लगा, शरीर काँपने लगा, दिमाग में चक्कर आने लगे, यहाँ तक कि अपने को किसी तरह सम्हाल न सकी और बदहवास होकर जमीन पर गिर पड़ी।

दसवाँ भाग

पहिला बयान

अब हम थोड़ा-सा हाल तिलिस्म का लिखना उचित समझते हैं। पाठकों को याद होगा कि कुँअर इन्द्रजीतसिंह कमलिनी के हाथ से तिलिस्मी खंजर लेकर, उस गड़हे या कूएँ में कूद पड़े, जिसमें अपने छोटे भाई आनन्दसिंह को देखा चाहते थे। जिस समय कुमार ने तिलिस्मी खंजर कूएँ के अन्दर किया और उसका कब्ज़ा दबाया तो उसकी रोशनी से कूएँ के अन्दर की पूरी-पूरी क़ैफियत दिखायी देने लगी। उन्होंने देखा कि कूएँ की गहराई बहुत ज्यादे नहीं है, बनिस्बत ऊपर के नीचे की ज़मीन बहुत चौड़ी मालूम पड़ी, और किनारे की तरफ़ एक आदमी किसी को अपने नीचे दबाये हुए बैठा उसके गले पर खंजर फेरा ही चाहता है।

कुँअर इन्द्रजीतसिंह को यकायक खयाल गुजरा कि यह जुल्म कहीं कुँअर आनन्दसिंह पर ही न हो रहा हो! छोटे भाई की सच्ची मुहब्बत ने ऐसा जोश मारा कि वह अपने को एक पल के लिए भी रोक न सके क्योंकि साथ ही इस बात का भी गुमान था कि देर होने से कहीं, उसका काम तमाम न हो जाय, इसलिए बिना कुछ सोचे और बिना किसी से कहे-सुने इन्द्रजीतसिंह उस गड़हे में कूद पड़े। मालूम हुआ कि वह किसी धातु की चादर पर जो जमीन की तरह से मालूम होती थी गिरे हैं, क्योंकि उनके गिरने के साथ ही वह जमीन दो-तीन दफे लचकी और एक प्रकार की आवाज भी हुई। चमकता हुआ एक तिलिस्मी खंजर उनके हाथ में था, जिसकी रोशनी से और टटोलने से मालूम हुआ कि वे दोनों आदमी वास्तव में पत्थर के बने हुए हैं, जिन्हें देखकर वे गड़हे के अन्दर कूदे थे। इसके बाद कुमार ने इस विचार से ऊपर की तरफ देखा कि कमलिनी या राजा गोपालसिंह को पुकारकर यहाँ का कुछ हाल कहें, मगर गड़हे का मुँह बन्द पाकर

लाचार हो रहे। ऊँचाई पर ध्यान देने से मालूम हुआ कि इस गड़हे का ऊपर-वाला मुँह बन्द नहीं हुआ, बल्कि बीच में कोई चीज ऐसी आ गयी है, जिससे रास्ता बन्द हो गया है।

कुमार ने तिलिस्मी खंजर का कब्जा इसलिए ढीला किया कि वह रोशनी बन्द हो जाय जो उसमें से निकल रही है, और मालूम हो कि इस जगह बिल्कुल अँधेरा ही है, या कहीं से कुछ चमक या रोशनी भी आती है, पर वहाँ पूरा अन्धकार था, हाथको हाथ दिखायी नहीं देता था, अस्तु लाचार होकर कुमार ने फिर तिलिस्मी खंजर का कब्जा दबाया और उसमें से बिजली की तरह चमक पैदा हुई। उसी रोशनी में कुमार ने चारों तरफ इस आशा से देखना शुरू किया कि किसी तरफ आनन्दसिंह की सूरत दिखायी पड़े, मगर सिवाय एक चाँदी के सन्दूक के जो उसी जगह पड़ा हुआ था, और कुछ दिखायी न दिया। यहाँ तीन तरफ़ पक्की दीवार थी, जिसमें छोटे-छोटे दरवाजे और एक तरफ जाने का रास्ता इस ढंग का था, जिसे हर तौर पर सुरंग कह सकते हैं। कुमार उसी सुरंग की राह आगे की तरफ बढ़े, मगर ज्यों-ज्यों आगे जाते थे, सुरंग पतली होती जाती थी और मालूम होता था कि हम ऊँची जमीन पर चढ़े चले जा रहे हैं। लगभग सौ कदम जाने बाद सुरंग ख़तम हुई और अन्त में एक दरवाजा मिला जो जंजीर से बन्द था और कुण्डे में एक ताला लगा हुआ था। कुमार ने खंजर मारके जंजीर काट डाली और धक्का देकर दरवाजा खोला तो सामने उजाला नजर आया। अब तिलिस्मी खंजर की कोई आश्यकता न थी, इसलिए उसका कब्जा ढीला किया और दरवाजा लाँघकर दूसरी तरफ चले गये। कुमार ने अपने को एक हरे-भरे बाग में पाया और देखा कि वह बाग मामूली तौर का नहीं है, बल्कि उसकी बनावट विचित्र ढंग की है, फलों के पेड़ बिलकुल न थे, पर तरह-तरह के मेवों के पेड़ लगे हुए थे। हरएक पेड़ के चारों तरफ दो-दो हाथ ऊँची-दीवार घिरी हुई थी, और बीच में मिट्टी भरने के कारण खासा चबूतरा मालूम पड़ता था। इसके अतिरिक्त अर्थात् पेड़ों के चबूतरों को छोड़कर, बाकी जितनी जमीन उस बाग में थी, सब पर संगमरमर का फर्श था। पूरब तरफ से एक नहर बाग के अन्दर आयी हुई थी और पन्द्रह-बीस हाथ के बाद छोटी-छोटी शाखों में फैल गयी थी। जो नहर बाग के अन्दर आयी थी उसकी चौड़ाई ढाई हाथ से कम न थी, मगर बाग के अन्दर संग-मरमर की छोटी-छोटी सैकड़ों नालियों में उसका जल फैल गया था। उन नालियों के दोनों तरफ की दीवार तो संगमरमर की थी, मगर बीच की जमीन पक्की न थी और इसी सबब से यहाँ की जमीन बहुत तर थी और पेड़ सूखने नहीं पाते थे। बाग के चारों तरफ ऊँची दीवार तथा पूरब तरफ

एक दालान और कई कोठरियाँ थीं, पश्चिम तरफ की दीवार के पास एक संगीन कूआँ था और बाग के बीचोबीच में एक मन्दिर था।

कुमार ने पेड़ों से कई फल तोड़के खाये और चश्मे का पानी पीकर भूख-प्यास की शान्ति की और इसके बाद घूम-घूमकर देखने लगे। उन्हें कुँअर आनन्दसिंह के विषय में चिन्ता थी और चाहते थे कि किसी तरह शीघ्र उनसे मुलाकात हो।

चारों तरफ़ घूम-फिरकर देखने बाद, कुमार उस मन्दिर में पहुँचे जो बाग के बीचोबीच में था। वह मन्दिर बहुत छोटा था और उसके आगे का सभामण्डप भी चार-पाँच आदमियों से ज्यादे के बैठने के लायक न था। मन्दिर में प्रतिमा या शिवलिंग की जगह एक छोटा-सा चबूतरा था और इसके ऊपर एक भेड़िए की मूरत बैठायी हुई थी। कुमार उसे अच्छी तरह देख-भालकर बाहर निकल आये और सभामण्डप में बैठकर खून से लिखी हुई किताब पढ़ने लगे। अब उन्हें उस किताब का मतलब साफ-साफ समझ में आता था। जब तक बखूबी अँधेरा नहीं हुआ और निगाह ने काम दिया, तब तक ये उस किताब को पढ़ते रहे, इसके बाद किताब सम्हालकर उसी जगह लेट गये और सोचने लगे कि अब क्या करना चाहिए।

उस बाग में कुँअर इन्द्रजीतसिंह को दो दिन बीत गये। इस बीच में वे कोई ऐसा काम न कर सके, जिससे अपने भाई कुँअर आनन्दसिंह को खोज निकालते या बाग से बाहर निकल जाते या तिलिस्म तोड़ने में ही हाथ लगाते, हाँ, इस दो दिन के अन्दर वे खून से लिखी हुई तिलिस्मी किताब को अच्छी तरह पढ़ और समझ गये, बल्कि उसके मतलब को इस तरह दिल में बैठा लिया कि अब उस किताब की उन्हें कोई जरूरत न रही। ऐसा होने से तिलिस्म का पूरा-पूरा हाल उन्हें मालूम हो गया और वे अपने को तिलिस्म तोड़ने लायक समझने लगे। खाने-पीने के लिए उस बाग में मेवों और पानी की कुछ कमी न थी।

तीसरे दिन दोपहर दिन चढ़े बाद कुछ कार्रवाई करने के लिए कुमार फिर उस भेड़िए की मूरत के पास गये, जो मन्दिर में चबूतरे के ऊपर बैठायी हुई थी। वहाँ कुमार को अपनी कुछ ताकत खर्च करनी पड़ी। उन्होंने दोनों हाथ लगाकर भेड़िए को बायीं तरफ इस तरह घुमाया, जैसे कोई पेंच घुमाया जाता है। तीन चक्कर घूमने बाद वह भेड़िया चबूतरे से अलग हो गया और जमीन के अन्दर से घरघराहट की आवाज आने लगी। कुमार उस भेड़िए को एक किनारे रखकर बाहर निकल आये और राह देखने लगे कि अब क्या होता है। घण्टे-भर तक बराबर वह आवाज आती रही और फिर धीरे-धीरे कम होकर बन्द हो गयी। कुमार फिर उस मन्दिर के अन्दर गये

और देखा कि वह चबूतरा, जिस पर भेड़िया बैठा हुआ था, जमीन के अन्दर धँस गया है और नीचे उतरने के लिए सीढ़ियाँ दिखायी दे रही हैं। कुमार बेधड़क नीचे उतर गये। वहाँ पूरा अन्धकार था, इसलिए तिलिस्मी खंजर से चाँदना करके चारों तरफ देखने लगे। यह एक कोठरी थी, जिसकी चौड़ाई बीस हाथ और लम्बाई पच्चीस हाथ से ज्यादे न होगी। चारों तरफ की दीवारों में छोटे-छोटे कई दरवाजे थे, जो इस समय बन्द थे। कोठरी के चारों कोनों में पत्थर की चार मूरतें थीं। ये चारों मूरतें एक ही रंग-ढंग की और एक ही ठाठ से खड़ी थीं, सूरत-शक्ल में कुछ भी फर्क न था, या था भी तो केवल इतना ही कि एक मूरत के हाथ में खंजर और बाकी तीन मूरतों के हाथ में कुछ भी न था।

कुमार पहिले उसी मूरत के पास गये, जिसके हाथ में खंजर था, पहिले उसकी उँगलियों की तरफ ध्यान दिया। बायें हाथ की उँगली में अँगूठी थी, जिसे निकालकर पहिन लेने बाद खंजर ले लिया और कमर में लगाकर धीरे-से बोले, "इस तिलिस्म में ऐसे तिलिस्मी खंजर के बिना वास्तव में काम नहीं चल सकता, अत आनन्दसिंह मिल जाय तो यह खंजर उसे दे दिया जाय।"

पाठक समझ ही गये होंगे कि मूरत के हाथ से जो खंजर कुमार ने लिया, वह उसी प्रकार का तिलिस्मी खंजर था, जैसाकि पहिले से एक कमलिनी की बदौलत कुमार के पास था। इस समय कुँअर इन्द्रजीतसिंह जोकुछ कार्रवाई कर रहे हैं, वह बिना जाने-बूझे नहीं कर रहे हैं, बल्कि खून से लिखी हुई तिलिस्मी किताब के मतलब को समझ अपनी विमल बुद्धि से जाँच और ठीक करके करते हैं, तथा आगे के लिए भी पाठकों को ऐसा ही समझना चाहिए।

अब कुमार उन दरवाजों की तरफ गौर से देखने लगे, जो चारों तरफ की दीवारों में दिखायी दे रहे थे। उन दरवाजों में केवल चार दरवाजे चार तरफ असली थे और बाकी के दरवाजे नकली थे, अर्थात् चार दरवाजों को छोड़कर बाकी दरवाजों के केवल निशान दीवारों में थे, मगर ये निशान भी ऐसे थे कि जिन्हें देखने से आदमी पूरा-पूरा धोखा खा जाय।

कुमार पूरब तरफ की दीवार की तरफ गये और उस तरफ जो दरवाजा था उसे जोर से लात मारकर खोल डाला, इसके बाद बायें तरफ के कोने में जो मूरत थी, उसे बगल में दाब उठाना चाहा, मगर वह उठ न सकी क्योंकि उनके दाहिने हाथ में वह चमकता हुआ तिलिस्मी खंजर था। आखिर कुमार ने खंजर कमर में रख लिया। यद्यपि ऐसा करने से वहाँ पूर्ण रूप से अन्धकार हो गया, मगर कुमार ने इसका कुछ विचार न करके अँधेरे

ही में दोनों हाथ उस मूरत की कमर में फँसाकार जोर किया और उसे जमीन से उखाड़कर धीरे-धीरे उस दरवाजे के पास लाये, जिसे लात मार-कर खोला था। जब चौखट के पास पहुँचे तो उस मूरत को जहाँ तक जोर से बन पड़ा दरवाजे के अन्दर फेंक दिया, और फुर्ती से तिलिस्मी खंजर हाथ में ले रोशनी करके सीढ़ी की राह कोठरी के बाहर निकल आये अर्थात् फिर उसी बाग में चले आये और मन्दिर से कुछ दूर हटकर खड़े हो गये।

थोड़ी देर तो कुमार को ऐसा मालूम हुआ कि जमीन काँप रही है और उसके अन्दर बहुत-सी गाड़ियाँ दौड़ रही हैं। आखिर धीरे-धीरे कम होकर ये दोनों बातें जाती रहीं। इसके बाद कुमार फिर मन्दिर के अन्दर हो गये और सीढ़ियों की राह उस तहखाने में उतर गये, जहाँ पहिले गये थे। इस समय वहाँ तिलिस्मी खंजर की रोशनी की कोई आवश्यकता न थी, क्योंकि इस समय कई छोटे-छोटे सूराखों में से रोशनी बखूबी आ रही थी, जिसका पहिले नाम-निशान भी न था। कुमार चारों तरफ देखने लगे, मगर पहिले की बनिस्बत कोई नयी बात दिखायी न दी। आखिर पूरब तरफ की दीवार के पास गये और दरवाजे के अन्दर झाँक के देखा, जिसे लात मारकर खोला था या जिसके अन्दर मूरत को जोर से फेंका था। इस समय इस कोठरी के अन्दर भी चाँदना था। और वहाँ की हरएक चीज दिखायी दे रही थी। यह कोठरी बहुत लम्बी-चौड़ी न थी, मगर दीवारों में छोटे-छोटे कई खुले दरवाजे दिखायी दे रहे थे, जिससे मालूम होता था कि यहाँ से कई तरफ जाने के लिए सुरंग या रास्ता है। कुमार ने उस मूरत को गौर से देखा, जिसे उस कोठरी के अन्दर फेंका था। उस मूरत की अवस्था ठीक वैसी हो रही थी, जैसीकि चूने की कली की उस समय होती है, जब थोड़ा-सा पानी उस पर छोड़ा जाता है, अर्थात् टूट-फट के वह बिल्कुल ही बर्बाद हो चुकी थी। उसके पेट में एक चमकती हुई चीज दिखायी दे रही थी, जो पहिले तो उसके पेट के अन्दर रही होगी, मगर अब पेट फट जाने के कारण बाहर हो रही थी। कुमार ने यह चमकती हुई चीज उठा ली और तहखाने के बाहर निकल मन्दिर के मण्डप में बैठकर सोचने लगे कि अब क्या करना चाहिए।

थोड़ी ही देर बाद धमधमाहट की आवाज से मालूम हुआ कि मन्दिर के अन्दर तहखानेवाली सीढ़ियों पर कोई चढ़ रहा है। कुमार उसी तरफ देखने लगे। यकायक कुँअर आनन्दसिंह आते हुए दिखायी पड़े। बड़े कुमार खुशी के मारे उठ खड़े हुए और आँखों में प्रेमाश्रु की दो-तीन बूँदें दिखायी देने लगीं। आनन्दसिंह दौड़कर अपने बड़े भाई के पैरों पर गिर पड़े। इन्द्रजीतसिंह ने झट से उठाकर गले लगा लिया। जब दोनों भाई खुशी-

खुशी उस जगह बैठ गये, तब इन्द्रजीतसिंह ने पूछा, "कहो तुम किस आफत में फँस गये थे और क्योंकर छूटे ?" कुँअर आनन्दसिंह ने अपने फँस जाने और तकलीफ उठाने का हाल, अपने बड़े भाई के सामने कहना शुरू किया।

तिलिस्मी बाग के चौथे दर्जे में कुँअर आनन्दसिंह जिस तरह अपने बड़े भाई से बिदा होकर खूँटियोंवाले तिलिस्मी मकान के अन्दर गये थे और चाँदीवाले सन्दूक में हाथ डालने के कारण फँस गये थे, उसका इस जगह दोहराना पाठकों का समय नष्ट करना है। हाँ, वह हाल कहने बाद फिर जोकुछ हुआ और कुमार ने अपने बड़े भाई से बयान किया, उसका लिखना आवश्यक है।

छोटे कुमार ने कहा—"जब मेरा हाथ सन्दूक में फँस गया तो मैंने छुड़ाने के लिए बहुतकुछ उद्योग किया, मगर कुछ न हुआ और घण्टों तक फँसा रहा, इसके बाद एक आदमी चेहरे पर नकाब डाले हुए मेरे पास आया और बोला, "घबड़ाइए मत, थोड़ी देर और सब्र कीजिए, मैं आपको छुड़ाने का बन्दोबस्त करता हूँ।" इस बीच में वह जमीन हिलने लगी, जहाँ मैं था, बल्कि तमाम मकान तरह-तरह के शब्दों से गूँज उठा, ऐसा मालूम होता था, मानो जमीन के नीचे सैकड़ों गाड़ियाँ दौड़ रही हैं। वह आदमी जो मेरे पास आया था, यह कहता हुआ ऊपर की तरफ चला गया कि 'मालूम होता है कुमार और कमलिनी ने इस मकान के दरवाजे पर बखेड़ा मचाया है, मगर यह काम अच्छा नहीं किया'। थोड़ी ही देर बाद वह नकाबपोश नीचे उतरा और बराबर नीचे चला गया, मैं समझता हूँ कि दरवाजा खोलकर आपसे मिलने गया होगा, अगर वास्तव में आप ही दरवाजे पर होंगे।"

इन्द्रजीत : हाँ, दरवाजे पर उस समय मैं ही था, और मेरे साथ कमलिनी और लाडिली भी थीं, अच्छा तब क्या हुआ ?

आनन्द : तो क्या आपने कोई कार्रवाई की थी ?

इन्द्रजीत : की थी, उसका हाल पीछे कहूँगा, पहिले तुम अपना हाल कह जाओ।

आनन्दसिंह ने फिर कहना शुरू किया—

"उस आदमी को नीचे गये हुए चौथाई घड़ी भी न हुई होगी कि जमीन यकायक जोर से हिली और मुझे लिये हुए सन्दूक जमीन के अन्दर घुस गया, उसी समय मेरा हाथ छूट गया और सन्दूक से अलग होकर, इधर-उधर टटोलने लगा, क्योंकि वहाँ बिल्कुल ही अन्धकार था, यह भी न मालूम होता था कि किधर दीवार है और किधर जाने का रास्ता है। ऊपर की तरफ, जहाँ सन्दूक धँस जाने से गड़हा हो गया था, देखने से भी कुछ मालूम न होता था, लाचार मैंने एक तरफ का रास्ता लिया और बराबर चले ही

जाने का विचार किया, परन्तु सीधा रास्ता न मिला, कभी ठोकर खाता, कभी दीवार में अड़ता, कभी दीवार थामे घूमकर चलना पड़ता, जब दुःखी हो जाता तो पीछे की तरफ लौटना चाहता था, मगर लौट न सकता था, क्योंकि लौटते समय तबीयत और भी घबड़ाती और गर्मी मालूम होती थी, लाचार आगे की तरफ बढ़ना पड़ता। इस बात को खूब समझता था कि मैं आगे ही की तरफ बढ़ता हुआ बहुत दूर नहीं जा रहा हूँ, बल्कि चक्कर खा रहा हूँ, मगर क्या करूँ लाचार था, अक्ल कुछ काम न करती थी। इस बात का पता लगाना बिल्कुल ही असम्भव था कि दिन है कि रात, सुबह है या शाम, बल्कि वही दिन है, या दूसरा दिन, मगर जहाँ तक मैं सोच सकता हूँ कि इस खराबी में आठ-दस पहर बीत गये होंगे। कभी तो मैं जीवन से निराश हो जाता, कभी यह सोचकर कुछ ढाढ़स होती कि आप मेरे छुड़ाने का जरूर कुछ उद्योग करेंगे। इसी बीच में मुझे कई खुले हुए दरवाजों के अन्दर पैर रखने और फिर उसी या दूसरे दरवाजे की राह से बाहर निकलने की भी नौबत आयी, मगर छुटकारे की कोई सूरत नजर न आयी। अन्त में एक कोठरी के अन्दर पहुँचकर बदहवास हो जमीन पर गिर पड़ा, क्योंकि भूख-प्यास के मारे दम निकला जाता था। इस अवस्था में भी कई पहर बीत गये, आखिर इस समय से घण्टे-भर पहिले मेरे कान में एक आवाज आयी, जिससे मालूम हुआ कि इस कोठरी के बगलवाली कोठरी का दरवाजा किसी ने खोला है। मुझे यकायक आपका खयाल हुआ। थोड़ी ही देर बाद जमीन हिली और तरह-तरह के शब्द होने लगे। आखिर यकायक उजाला हो गया, तब मेरे जान में जान आयी। बड़ी मुश्किल से मैं उठा, सामने का दरवाजा खुला हुआ पाया, निकलके दूसरी कोठरी में पहुँचा, जहाँ दरवाजे के पास ही देखा कि पत्थर का एक आदमी पड़ा है, जिसका शरीर पानी पड़े हुए चूने की कली की तरह फूला-फटा हुआ है। इसके बाद मैं तीसरी कोठरी में गया और फिर सीढ़ियाँ चढ़कर आपके पास पहुँचा।"

कुँअर इन्द्रजीतसिंह ने अपने छोटे भाई के हाल पर बहुत अफसोस किया और कहा—"यहाँ मेवों की और पानी की कमी नहीं है, पहिले तुम कुछ खा पी लो तो मैं अपना हाल तुमसे कहूँगा।"

दोनों भाई वहाँ से उठे और खुशी-खुशी मेवेदार पेड़ों के पास जाकर पके हुए और स्वादिष्ट मेवे खाने लगे। छोटे कुमार बहुत भूखे और सुस्त हो रहे थे, मेवे खाने और पानी पीने से उनका जी ठिकाने हुआ, और फिर दोनों भाई उसी मन्दिर के सभामण्डप में आ बैठे, तथा बातचीत करने लगे। कुँअर इन्द्रजीतसिंह ने अपना पूरा-पूरा हाल अर्थात् जिस तरह यहाँ आये थे और जोकुछ किया था, आनन्दसिंह से कह सुनाया और इसके बाद कहा,

"खून से लिखी, इस किताब को अच्छी तरह पढ़ जाने से मुझे बहुत फायदा हुआ। यदि तुम भी इसे इस तरह पढ़ जाओ और याद कर जाओ कि फिर इसकी आवश्यकता न रहे तो दोनों भाई शीघ्र ही इस तिलिस्म को तोड़ के नाम और दौलत पैदा करें। साथ ही इसके इस बात को भी समझ रक्खो कि बाग में आकर तुम्हारा पता लगाने की नीयत से जोकुछ मैंने किया उससे इतना नुकसान अवश्य हुआ कि अब बिना तिलिस्म तोड़े हम लोग यहाँ से निकल नहीं सकते।"

आनन्द : (कुछ सोचकर) यदि ऐसा ही है और आपको निश्चय है कि इस रिक्तगन्थ के पढ़ जाने से हम लोग अवश्य तिलिस्म तोड़ सकेंगे तो मैं इसी समय इसका पढ़ना आरम्भ करता हूँ, परन्तु इसमें बहुत से लेख ऐसे हैं, जिसका मतलब समझ में नहीं आता···।

इन्द्रजीत : ठीक है, मगर मैं अभी कह चुका हूँ कि तुम्हें खोजता हुआ जब मैं खूँटियोंवाले मकान के पास पहुँचा तो राजा गोपालसिंह ने···

आनन्दसिंह : (बात काटकर) जी हाँ, मुझे बखूबी याद है, आपने कहा था कि राजा गोपालसिंह ने कोई ऐसी तरकीब आपको बतायी है कि जिससे केवल रिक्तगन्थ ही नहीं, बल्कि हरएक तिलिस्मी किताब को पढ़कर उसका मतलब आप बखूबी समझ सकेंगे, अस्तु, मेरे कहने का मतलब यह था कि जब तक आप वह मुझे न बतायेंगे तब तक···

इन्द्रजीत : (हँसकर) इतनी उलझन डालने की क्या जरूरत थी ! मैं तो स्वयं वह भेद तुमसे कहने को तैयार हूँ, अच्छा सुनो।

कुँअर इन्द्रजीतसिंह ने तिलिस्मी किताबों को पढ़कर समझने का भेद जो राजा गोपालसिंह से सुना था आनन्दसिंह को बताया। इतने ही में मन्दिर के पीछे की तरफ चिल्लाने की आवाज आयी, दोनों भाइयों का ध्यान एकदम उस तरफ चला गया और तब यह आवाज सुनायी पड़ी, "अच्छा अच्छा, तू मेरा सिर काट ले। मैं भी यही चाहती हूँ कि अपनी जिन्दगी में इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह को दुःखी न देखूँ। हाय इन्द्रजीतसिंह, अफसोस इस समय तुम्हें मेरी खबर कुछ भी न होगी !"

इस आवाज को सुनकर इन्द्रजीतसिंह बेचैन और बेताब हो गये और जल्दी से आनन्दसिंह से यह कहते हुए कि 'कमलिनी की आवाज मालूम पड़ती है' ! मन्दिर के पीछे की तरफ झपटे और आनन्दसिंह भी उनके पीछे-पीछे चले।

दूसरा बयान

अब हम फिर मायारानी की तरफ लौटते हैं और उसका हाल लिख कई गुप्त भेदों को खोलते हैं। मायारानी भी उस चीठी को पूरा-पूरा पढ़ न सकी और बदहवास होकर जमीन पर गिर पड़ी। नागर तुरन्त उठी और भण्डरिये में से एक सुराही निकाल लायी, जिसमें वेदमुश्क का अर्क था। वह अर्क मायारानी के मुँह पर छिड़का, जिससे थोड़ी देर बाद वह होश में आयी और नागर की तरफ देखकर बोली, "हाय अफसोस, क्या सोचा था और क्या हो गया!"

नागर : खैर, जो होना था सो हो गया, अब इस तरह बदहवास होने से काम नहीं चलेगा, उठो और अपने को सम्हालो, सोचो-विचारो और निश्चय करो कि अब क्या करना चाहिए।

माया : अफसोस, उस कमबख्त ऐयार ने बड़ा भारी धोखा दिया, और मुझसे भी बड़ी भारी भूल हुई कि लक्ष्मीदेवीवाला भेद उसके सामने जुबान से निकाल बैठी! यद्यपि उस इशारे से वह कुछ समझ न सकेगा, परन्तु जिस समय गोपालसिंह के सामने लक्ष्मीदेवी का नाम लेगा और वे बातें कहेगा जो मैंने उस दारोगा रूपधारी ऐयार से कही थीं तो वह बखूबी समझ जायगा और मेरे विषय में उसका क्रोध सौगुना हो जायगा। यदि मेरे बारे में वह किसी तरह की बदनामी समझता भी था तो अब न समझेगा। हाय, अब जिन्दगी की कोई आशा न रही।

नागर : लक्ष्मीदेवी का नाम ले के जोकुछ तुमने कहा, उससे मुझे भी शक हो गया। क्या असल में···

माया : ओफ, यह भेद सिवाय असली दारोगा के किसी को भी मालूम नहीं। आज—(कुछ रुककर) नहीं, अब भी मैं उस भेद को छिपाने का उद्योग करूँगी और तुझसे कुछ भी न कहूँगी, बस अब लक्ष्मीदेवी का नाम तुम मेरे सामने मत लो। (चीठी की तरफ इशारा करके) अच्छा इस चीठी को तुम एक दफे फिर से पढ़ जाओ।

नागर ने वह चीठी उठा ली जिसके पढ़ने से मायारानी की वह हालत हुई थी और पुनः उसे पढने लगी—

चीठी—

"बुरे कामों का करनेवाला कदापि सुख नहीं भोग सकता। तू समझती होगी कि मैं राजा गोपालसिंह, देवीसिंह, भूतनाथ, कमलिनी और लाडिली को मारके निश्चन्त हो गयी, अब मुझे सतानेवाला कोई भी न रहा। इस बात का तो तुझे गुमान भी न होगा कि मैं सुरंग में असली दारोगा से नहीं

मिली, बल्कि ऐयारों के गुरुघण्टाल तेजसिंह से मिली, जो दारोगा के वेष में था, और यह बात भी तुझे सूझी न होगी कि दारोगावाले मकान के उड़ जाने से कैदियों की कुछ भी हानि नहीं हुई, बल्कि वे लोग अजायबघर की ताली की बदौलत जो सुरंग में मैंने तुझसे ले ली थी और भोजन तथा जल पहुँचाने के समय कैदियों को होश में लाकर दे दी थी, निकल गये। अहा, परमात्मा, तू धन्य है ! तेरी अदालत बहुत सच्ची है। ऐ कमबख्त मायारानी, अब तू सबकुछ इसी से समझ जा कि मैं वास्तव में तेजसिंह हूँ।

तेरा

जोकुछ तू समझे—तेजसिंह।"

इस चीठी को सुनते ही मायारानी का सिर घूमने लगा और वह डर के मारे थर-थर काँपने लगी। थोड़ी देर चुप रहने बाद वह उठ बैठी और नागर की तरफ देखकर बोली—

"यह तेजसिंह भी बड़ा ही शैतान है, इसने दो दफे भारी धोखा दिया। अफसोस, अजायबघर की ताली हाथ आकर फिर निकल गयी, केवल ये दोनों तिलिस्मी खंजर मेरे हाथ में रह गये, मगर इनसे मेरी जान नहीं बच सकती। सबसे ज्यादे अफसोस तो इस बात का है कि लक्ष्मीदेवीवाला भेद अब खुल गया और यह बात मेरे लिए बहुत ही बुरी हुई। (कुछ सोचकर) हाय, अब मैं समझी कि इस तिलिस्मी खंजर का असर तेजसिंह पर इसलिए नहीं हुआ कि उसके पास भी जरूर इसी तरह का खंजर और ऐसी ही अँगूठी होगी।"

नागर : बेशक यही बात है। खैर, अब यह बहुत जल्द सोचना चाहिए कि हम लोगों की जान कैसे बच सकती है।

मायारानी इसका कुछ जवाब दिया ही चाहती थी कि सामने का दरवाजा खुला और मायारानी के दारोगा साहब अन्दर आते हुए दिखायी पड़े। उन्हें देखते ही मायारानी क्रोध के मारे लाल हो गयी और कड़ककर बोली, "तुझ कमबख्त को यहाँ किसने आने दिया ! खैर, अच्छा ही हुआ जो तू आ गया। मुझे मालूम हो गया कि तेरी मौत, तुझे यहाँ पर लायी है। हाँ, अगर तेरी चीठी मुझे न मिली रहती तो मैं फिर धोखे में आ जाती। कमबख्त, नालायक, तूने मुझे बड़ा भारी धोखा दिया ! अब तू मेरे हाथ से बचकर नही जा सकता।"

दारोगा : तू अपने होश में भी है या नहीं ? क्या अपने को बिल्कुल भूल गयी ! क्या तू नहीं जानती कि किससे क्या कह रही है ? मेरी मौत नहीं बल्कि तेरी मौत आयी है, जो तू जुबान सम्हालकर नहीं बोलती।

माया : (खड़ी होकर और तिलिस्मी खंजर हाथ में लेकर) हाँ, ठीक है, यदि मैं अपने होश में रहती तो तुझ कमबख्त के फेर में पड़ती ही क्यों? बेईमान कहीं का, तैंने मुझे बड़ा भारी धोखा दिया, देख अब मैं तेरी क्या दुर्गति करती हूँ।

नागर : ताज्जुब है कि इतनी बड़ी बदमाशी करने पर भी तू निडर होकर यहाँ कैसे चला आया! मालूम होता है अपनी जान से हाथ धो बैठा। कोई हर्ज नहीं, अगर तिलिस्मी खंजर का असर तुझ पर नहीं होता तो मैं दूसरी तरह से तेरी खबर लूँगी।

इस समय मायारानी की फुर्ती देखने ही योग्य थी। वह बाघिन की तरह झपटकर दारोगा के पास पहुँची। इस समय उसकी उँगली में एक जहरीली अँगूठी उसी तरह की थी, जैसी नागर के हाथ में उस समय थी, जब उसने सूनसान जंगल में भूतनाथ को अँगूठी गाल में रगड़कर बेहोश किया था। इस समय मायारानी ने भी वही काम किया, अर्थात् वह अँगूठी जिस पर जहरीला नोकदार नगीना जड़ा हुआ था, दारोगा के गाल में इस फुर्ती और चालाकी से रगड़ दी कि वह बेचारा कुछ भी न कर सका। उस नगीने की रगड़ से गाल जरा ही-सा छिला था, मगर जहर का असर पल-भर में अपना काम कर गया। दारोगा चक्कर खाकर जमीन पर गिर पड़ा और बेहोश हो गया। मायारानी ने नागर की तरफ देखा और कहा, "अब इसके हाथ-पैर जकड़ के बाँध दो और तब होश में लाकर पूछो कि 'कहिए तेजसिंह आपका मिजाज कैसा है'? इसके जवाब में नागर ने कहा—"केवल हाथ-पैर ही बाँधकर के नहीं छोड़ दो, बल्कि थोड़ी-सी नाक काट लो और नकली दाढ़ी उखाड़कर फेंक दो और तब होश में लाकर पूछो कि 'कहिए ऐयारों के गुरुघण्टाल तेजसिंह, आपका मिजाज कैसा है'?"

इस समय मायारानी यही समझ रही थी कि यह दारोगा वास्तव में वही तेजसिंह है, जिसने उसे अनूठी रीति से धोखा दिया था, बल्कि वह उसके शक पर बागीचे में घूमने के समय हरएक पत्ते से डरती फिरे तो ताज्जुब नहीं, परन्तु हमारे पाठक जरूर समझते होंगे कि तेजसिंह ऐसे बेवकूफ नहीं हैं, जो मायारानी को धोखा देकर, बल्कि अपने धोखे का परिचय देकर, फिर उसके सामने उसी सूरत में आवें, जिस सूरत में उन्होंने धोखा दिया था, और वास्तव में बात भी ऐसी ही है। यह तेजसिंह नहीं थे, बल्कि मायारानी के असली दारोगा साहब थे, मगर अफसोस इस समय उनकी दाढ़ी नोचने तथा नाक काटने के लिए वही तैयार हैं, जिनके वे पक्षपाती हैं।

नागर ने जोकुछ कहा मायारानी ने स्वीकार किया। नागर ने पहिले

तिलिस्मी खंजर से दारोगा साहब की नाक काट ली और फिर दाढ़ी नोचने के लिए तैयार हुई। मगर यह दाढ़ी नकली न थी, जो एक ही झटके में अलग हो जाती, इसलिए इसके नोचने में बेचारी नागर को विशेष तकलीफ उठानी पड़ी। नागर दाढ़ी नोचती जाती थी और यह कहती जाती थी—"तेजसिंह बड़े मजबूत मसाले से बाल जमाता है!"

आधी दाढ़ी नुचते-नुचते दारोगा का चेहरा खून से लालोलाल हो गया। उस समय मायारानी ने चौंककर नागर से कहा, "ठहर ठहर, बेशक धोखा हुआ, यह तेजसिंह नहीं, वास्तव में बेचारा दारोगा है।"

नागर : (रुककर) हाँ, ठीक तो जान पड़ता है। हाय, बहुत बुरी भूल हो गयी!

माया : भूल क्या गजब हो गया! इस बेचारे ने सिवाय नेकी के मेरे साथ बुराई कभी नहीं की, अब यह जहर के मारे मरा जा रहा है, पहिले जहर दूर करने की फिक्र करनी चाहिए।

नागर : जहर तो बात-की-बात में दूर हो जायगा, मगर अब हम लोग इसे अपना मुँह कैसे दिखायेंगे!

माया : मैंने तो केवल दाढ़ी नोचने की राय दी थी, तू ही ने नाक काटने के लिए कहा और अपने हाथ से बेचारे की नाक काट भी ली।

नागर : क्या खूब? इसे गालियाँ भी मैंने ही दी थीं! क्या तुम्हारी आज्ञा के बिना, मैंने इसकी नाक काट ली? अब कसूर मेरे सिर पर थोप आप अलग हुआ चाहती हो? सच ही तुम्हें लोग बदनाम करते हैं। तुम्हारी दोस्ती पर भरोसा करना बेशक मूर्खता है, जब मेरे सामने तुम्हारा यह हाल है तो पीछे न मालूम तुम क्या करतीं! खैर, क्या हर्ज है, जैसी खुद-गर्ज हो, मैं जान गयी।

इतना कहकर नागर वहाँ से चली गयी और जहर दूर करनेवाली दवा की शीशी ले आयी। थोड़ी-सी दवा उस जगह लगायी, जहाँ अँगूठी के सबब से छिल गया था। दवा लगाने के थोड़ी देर बाद उस जगह छाला पड़ गया और उस छाले को नागर ने फोड़ दिया। पानी निकल जाने के साथ ही दारोगा होश में आकर उठ बैठा और अपनी हालत देखकर अफसोस करने लगा। यद्यपि वह कुछ भी नहीं जानता था कि मायारानी ने उसके साथ ऐसा सलूक क्यों किया, तथापि उसे इतना क्रोध चढ़ा हुआ था कि मायारानी से कुछ भी न पूछकर वह चुपचाप उसका मुँह देखता रहा।

माया : (दारोगा से) माफ कीजियेगा, मैंने केवल यह जानने के लिए आपको बेहोश किया था कि यह बीरेन्द्रसिंह का कोई ऐयार तो नहीं है, इसके सिवाय और जोकुछ किया नागर ने किया।

नागर : ठीक है, बाबाजी इस बात को बखूबी समझते हैं। मैंने ही तो जहरीली अँगूठी से इनकी जान लेने का इरादा किया था ! (बाबाजी की तरफ देखकर) मायारानी की दोस्ती पर भरोसा करना बड़ी भारी भूल है। जब इसने अपने पति ही को कैद करके वर्षों तक दुःख दिया तो हमारी-आपकी क्या बात है ? इसने लक्ष्मीदेवीवाला भेद भी तेजसिंह से कह दिया और साथ ही इसके यह भी कह दिया कि सब काम दारोगा साहब ने किया है।

माया : (क्रोध से नागर की तरफ देखकर) क्यों रे, तू मुझे नाहक बद-नाम करती है !

नागर : जब तुम झूठमूठ मुझे बदनाम करती हो और बाबाजी की नाक काटने का कसूर मुझ पर थोपती हो, तो क्या मैं सच्ची बात कहने से भी गयी ! आँखें क्या दिखाती हो ? मैं तुमसे डरनेवाली नहीं हूँ, और तुम मेरा कुछ कर भी नहीं सकती हो ! पहिले तुम अपनी जान तो बचा लो !!

मायारानी, जिसने इसके पहिले कभी आधी बात भी किसी की नहीं सुनी थी, आज नागर की इतनी बड़ी बात कब बर्दाश्त कर सकती थी ? उसने दाँत पीसकर नागर की तरफ देखा। इस बीच में बाबाजी भी बोल उठे, "बेशक सब कसूर मायारानी का है, नागर की जुबान से लक्ष्मीदेवी का शब्द निकलना ही इसका पूरा-पूरा सबूत है।"

बाबाजी की बात सुनकर मायारानी का गुस्सा और भी भड़क उठा। वह तिलिस्मी खंजर हाथ में लेकर नागर पर झपटी। नागर ने बगल में होकर अपने को बचा लिया और आप भी तिलिस्मी खंजर हाथ में लेकर मायारानी पर वार किया। दोनों में लड़ाई होने लगी। ये दोनों कोई फेंकैत या ओस्ताद तो थीं ही नहीं कि गुँथ आतीं या हिकमत के साथ लड़तीं। हाँ, दाँव-घात बेशक होने लगे। कायदे की बात है कि तलवार या खंजर जो भी हाथ में हो लड़ते समय उसका कब्जा जोर से दबाना ही पड़ता है। दबाने के सबब दोनों खंजरों में से बिजली की-सी चमक पैदा हुई और इस सबब से बेचारे बाबाजी ने घबराकर अपनी आँखें बन्द कर लीं, बल्कि भागने का बन्दोबस्त करने लगे। वह लौंडी जो तेजसिंह की चिट्ठी लायी थी, चिल्लाती हुई बाहर चली गयी और उसने सब लौंडियों को इस लड़ाई की खबर कर दी। बात-की-बात में सब लौंडियाँ यहाँ पहुँचीं और लड़ाई बन्द कराने का उद्योग करने लगीं।

जब आदमी के पास दौलत होती है या जब आदमी अपने दर्जे या ओहदे पर कायम रहता है, तब सभी कोई उसकी इज्जत करते हैं, मगर रुपया निकल जाने या दर्जा टूट जाने पर फिर कोई भी नहीं पूछता, संगी

साथी सब दुम दबाकर भाग जाते हैं, भले आदमी उससे बात करना, अपनी बेइज्जती समझते हैं, चाचा कहनेवाले भतीजा कहके भी पुकारना पसन्द नहीं करते, दोस्त साहब सलाम तक छोड़ देते हैं, बल्कि दुश्मनी करने पर उतारू हो जाते हैं, और नौकर-चाकर केवल सामना ही नहीं करते, बल्कि खुद मालिक की तरफ आँखें दिखाते हैं।

ठीक यही हालत इस समय मायारानी की है। जब वह रानी थी, सौ ऐब होने पर भी लोग उसकी कदर करते थे, उससे डरते थे, और उसका हुक्म मानना (चाहे कैसे ही बुरे काम के लिए वह क्यों न कहे) अपना फर्ज समझते थे। आज वह रानी की पदवी पर नहीं है, स्वयं उसे अपना राज्य छोड़ना, बल्कि मुँह छिपाकर भागना पड़ा, धन-दौलत रहते भी कंगाल होना पड़ा, वह कल रानी थी, आज उसके पास एक पैसा नहीं है, कल उससे लाखों आदमी डरते थे, आज उससे एक लौंडी भी नहीं डरती, कल सैकड़ों आदमियों की जान उसके हुक्म से ले ली जा सकती थी, मगर आज खुद एक लौंडी का कुछ नहीं कर सकती। यह उसके बुरे कर्मों का फल था, इसके सिवाय और क्या कहा जाय ?

मनोरमा, मायारानी की सखी थी और यह नागर मनोरमा की मुँह लगी और मायारानी की लौंडी समझी जाती थी। मायारानी के हाथ से मनोरमा और नागर ने लाखों रुपये पाये। यह मकान, रोआब और दबदबा मनोरमा और नागर का मायारानी ही की बदौलत था। यही नागर, मायारानी की सैकड़ों गालियाँ बर्दाश्त करती थी, भला या बुरा जोकुछ मायारानी उसे कहती थी मानना पड़ता था, मगर आज जब मायारानी किसी योग्य न रही, जब मायारानी धन-दौलत से खाली हो गयी, जब मायारानी की ताकत जाती रही, तो वही नागर बकरी से बाघिन हो गयी, बल्कि नागर की लौंडियों की नजरों में भी मायारानी की इज्जत न रही। अब नागर को मायारानी से कुछ पाने की आशा तो रही ही नहीं, बल्कि यह मौका आ गया कि नागर खुद रुपये से मायारानी की मदद करे, इसलिए झट नागर की आँख बदल गयी और वह बात का बतंगड़ बनाकर जान लेने के लिए तैयार हो गयी। नागर की लौंडियाँ जो इस लड़ाई का हाल सुनकर आ पहुँची थीं, नागर का दिया खाती थीं, और इस समय मायारानी को भी अच्छी निगाह से नहीं देखती थी, इसलिए ये सब सिवाय नागर के और किसी की मदद करना नहीं चाहती थीं, मगर तिलिस्मी खंजरों के सबब से इस लड़ाई के बीच में पड़ने से लाचार थीं। हाँ, जब दोनों लड़ाकियाँ ठहर जातीं और खंजर का कब्जा ढीला पड़ने के कारण चमक बन्द हो जाती तो वे लौंडियाँ नागर की मदद करने को जरूर तैयार हो जातीं।

आखिर नागर ने मायारानी से ललकारके कहा, "देख मायारानी, तू इस समय मुझसे लड़कर नहीं जीत सकती। यदि मैं तेरे सामने से भाग भी जाऊँ और काशीराज के पास जाकर तेरा सब हाल कह दूँ तो तुझे इसी समय गिरफ्तार करके राजा बीरेन्द्रसिंह के पास भेज देंगे और तुझसे कुछ भी करते-धरते न बन पड़ेगा। तू इस समय यहाँ छिपकर बैठी हुई है, किसी को भी तेरे हाल की खबर होगी तो तेरे लिए अच्छा न होगा, मगर मैं पुरानी दोस्ती पर ध्यान देकर तुझे माफ करती हूँ. और साथ ही इसके आज्ञा देती हूँ कि इसी समय यहाँ से भाग जा और जिस तरह अपनी जान बचा सके, बचा!"

नागर की बातें सुनकर मायारानी रुक गयी और थोड़ी देर तक कुछ सोचती रही, अन्त में तिलिस्मी खंजर कमर में रख शीघ्रता से कमरे के बाहर हो, हाते से निकल गयी। और न मालूम कहाँ चली गयी नागर ने इधर-उधर देखा तो दारोगा को भी न पाया। आखिर मालूम हुआ कि वह भी मौका देखकर भाग निकला और न जाने कहाँ चला गया।

तीसरा बयान

अब जरा उन कैदियों की सुध लेनी चाहिए, जिन्हें नकली दारोगा ने दारोगा-वाले बंगले में मेगजीन की बगलवाली कोठरी में बन्द किया था। वास्तव में वह तेजसिंह ही थे, जो दारोगा की सूरत बनकर मायारानी से मिलने और उसके दिल का भेद लेने जा रहे थे, मगर जब दारोगावाले बंगले पर पहुँचे तो मायारानी की लौंडियों तथा लीला की जुबानी मालूम हुआ कि कुछ आदमियों के पीछे-पीछे मायारानी और नागर टीले पर गयी हैं। तेज-सिंह उस टीले का हाल बखूबी जानते थे और सुरंग की राह बाग के चौथे दरजे में आने-जाने का भेद भी उन्हें बता दिया गया था, इसलिए उन्हें शक हुआ और वे सोचने लगे कि मायारानी जिन दो आदमियों के पीछे-पीछे टीले पर गयी है, कहीं वे दोनों हमारी तरफ के ऐयार ही न हों जो बाग के चौथे दरजे में जाने का इरादा रखते हों; यदि वास्तव में ऐसा हो तो निःसन्देह मायारानी के हाथ से उन्हें कष्ट पहुँचेगा। यह सोचते ही तेजसिंह भी उसी टीले की तरफ रवाना हुए और यही सबब था कि सुरंग में दारोगा की शक्ल बने हुए तेजसिंह की मायारानी से मुलाकात हुई थी और उसके बाद जोकुछ हुआ, ऊपर लिखा ही जा चुका है।

मेगजीन की बगलवाली कोठरी में कैदियों को कैद करने बाद जब खाने-पीने का सामान लेकर तेजसिंह उस तहखाने में गये तो कैदियों को

होश में लाकर संक्षेप में सब हाल कह दिया था और अजायबघर की ताली जो मायारानी से वापस ली थी, राजा गोपालसिंह को देकर कहा कि इस ताली की मदद से जहाँ तक हो सके आप लोग यहाँ से निकल जाइए। राजा गोपालसिंह ने जवाब दिया था कि 'यदि यह ताली न मिलती तो भी हम लोग यहाँ से निकल जाते क्योंकि मुझे यहाँ का पूरा-पूरा हाल मालूम है, और अब आप हम लोगों की तरफ से निश्चिन्त रहिए, मगर चौबीस घण्टे के अन्दर मायारानी का साथ न छोड़िए और न उसे कोई काम इस बीच में करने दीजिए, इसके बाद हम लोग स्वयं आपको ढूँढ़ लेंगे'।

इस दारोगावाले बंगले का हाल केवल तेजसिंह ही को नहीं, बल्कि हमारे और भी कई ऐयारों को मालूम था, क्योंकि कमलिनी ने, जोकुछ भी वह जानती थी, सभों को बता दिया था।

अब, जब तेजसिंह दारोगावाले बँगले से चले तो राजा गोपालसिंह और कमलिनी इत्यादि को ढूँढ़ने के लिए उत्तर की तरफ रवाना हुए। वे जानते थे कि मेगजीन की बगलवाली कोठरी से निकलकर, वे लोग उत्तर की तरफ ही किसी ठिकाने बाहर होंगे।

तेजसिंह कोस-भर से ज़्यादे नहीं गये होंगे कि रात की पहली अँधेरी ने चारों तरफ अपना दखल जमा लिया, जिसके सबब से वे उन लोगों को बखूबी ढूँढ़ न सकते थे और न उन लोगों का ठीक पता ही था, तथापि उन्हें विशेष कष्ट उठाना न पड़ा, क्योंकि थोड़ी ही दूर जाने बाद देवीसिंह से मुलाकात हो गयी, जो इन्हीं को ढूँढ़ने के लिए जा रहे थे। देवीसिंह के साथ चलकर तेजसिंह थोड़ी ही देर में वहाँ जा पहुँचे, जहाँ गोपालसिंह इत्यादि घने जंगल में एक पेड़ के नीचे बैठे इनके आने की राह देख रहे थे। तेजसिंह को देखते ही सब लोग उठ खड़े हुए और खातिर की तौर पर दो-चार कदम आगे बढ़ आये।

देवी : देखिए इन्हें कितना जल्द ढूँढ़ लाया हूँ।

गोपाल : (तेजसिंह से) आइए आइए !

तेज : इतनी दूर आये तो क्या दो-चार कदम के लिए रुक रहेंगे ?

गोपाल : (हँसके और तेजसिंह का हाथ पकड़के) आज आपही की बदौलत हम लोग जीते-जागते यहाँ दिखायी दे रहे हैं।

तेज : यह सब तो भगवती की कृपा से हुआ और उन्हीं की कृपा से इस समय मैं इसके लिए अच्छी तरह तैयार भी हो रहा हूँ कि मेरी जितनी तारीफ आपके किये हो सके कीजिए और मैं फूला नहीं समाता हुआ, चुप-चाप बैठा सुनता रहूँ और घण्टों बीत जायँ, मगर तिस पर भी आपकी की हुई तारीफ को उस काम के बदले में न समझूं जिसकी वजह से आप लोग छूट

गये, बल्कि एक दूसरे ही काम के बदले में समझूँ, जिसका पता खुद आपही की जुबान से लगेगा और यह भी जाना जायेगा कि मैं कौन-सा अनूठा काम करके आया हूँ, जिसे खुद नहीं जानता, मगर जिसके बदले में तारीफों की बौछार सहने को चुप्पी का छाता लगाये, पहिले ही से तैयार था। साथ ही इसके यह भी कह देना अनुचित न होगा कि मैं केवल आपही को तारीफ करने के लिए मजबूर न करूँगा, बल्कि आपसे ज्यादा कमलिनी और लाडिली को मेरी तारीफ करनी पड़ेगी।

गोपाल : (कुछ सोचकर और हँसी के ढंग से) अगर गुस्ताखी और बेअदबी में न गिनिए तो मैं पूछ लूँ कि आज आपने भंग के बदले में ताड़ी तो नहीं छानी है।

यद्यपि यह जंगल बहुत ही घना और अन्धकारमय हो रहा था, मगर तेजसिंह को साथ लिये देवीसिंह के आने की आहट पाते ही भूतनाथ ने बटुए में से एक छोटी-सी अबरख की लालटेन जो मोड़माड़ के बहुत छोटी और चिपटी कर ली जाती थी, निकाल ली थी और रोशनी के लिए तैयार बैठा था। देवीसिंह की आवाज पाते ही उसने बत्ती बालकर उजाला कर दिया था, जिससे सभों की सूरत साफ-साफ दिखायी दे रही थी। तेजसिंह की इज्जत के लिए सबकोई उठकर दो-चार कदम आगे बढ़ गये थे और इसके बाद मायारानी का समाचार जानने की नीयत से सभों ने उन्हें घेर लिया था। तेजसिंह के चेहरे पर खुशी की निशानियाँ मामूली से ज्यादा दिखायीं दे रही थीं इसलिए गोपालसिंह इत्यादि किसी भारी खुशखबरी के सुनने की लालसा मिटाने का उद्योग किया चाहते थे, मगर तेजसिंह की रेशम की गुत्थी की तरह उलझी हुई बातों को सुनकर गोपालसिंह भौंचक-से हो गये और सोचने लगे कि वह कैसी खुशखबरी है कि जिसे तेजसिंह स्वयं नहीं जानते, बल्कि मुझसे ही सुनकर मुझीको सुनाने और खुश करके तारीफों की बौछार सहने के लिए तैयार हैं, और यही सबब था कि राजा गोपालसिंह ने दिल्लगी के साथ तेजसिंह पर भंग के बदले में ताड़ी पीने की आवाज कसी।

तेज : (हँसकर) ताड़ी और शराब पीना तो आप लोगों का काम है, जिन्हें अपने-बेगाने की कुछ खबर ही नहीं रहती! मैं यह बात दिल्लगी में नही कहता, बल्कि साबित कर दूँगा कि आप भी उन्हीं में अपनी गिनती करा चुके हैं। सच तो यों है कि इस समय आपके पेट में चूहे कूदते होंगे और यह जानने के लिए आप बहुत बेताब होंगे कि मैं आपसे क्या पूछूँगा और क्या कहूँगा। अच्छा यह बताइए कि 'लक्ष्मीदेवी' किसका नाम है?

गोपाल : क्या आप नहीं जानते? यह तो उसी कमबख्त मायारानी का

नाम है !

तेज : बस बस ! अब आपकी जुबानी उस बात का पता लग गया, जिसे मैं एक भारी खुशखबरी समझता हूँ। अब आप सुनिए (कुछ रुककर) मगर नहीं पहिले आपसे इनाम पाने का इकरार तो करा ही लेना चाहिए, क्यों कि खाली तारीफों की बौछार से काम न चलेगा।

गोपाल : मैं आपको कुछ इनाम देने योग्य तो हूँ नहीं, पर यदि आप मुझे इस योग्य समझते ही हैं, तो इनाम का निश्चय भी आपही कर लीजिए, मुझे जी-जान से उसे पूरा करने के लिए तैयार पाइयेगा।

तेज : (हाथ फैलाकर) अच्छा तो आप हाथ पर हाथ मारिए, मैं अपना इनाम जब चाहूंगा, माँग लूँगा और आप उस समय उसे देने योग्य होंगे।

गोपाल : (तेजसिंह के हाथ पर हाथ मारके) लीजिए अब तो कहिए, आप तो हम लोगों की बेचैनी बढ़ाते ही जा रहे हैं।

तेज : हाँ हाँ, सुनिए, (कमलिनी और लाडिली से) तुम दोनों भी जरा पास आ जाओ और ध्यान देकर सुनो कि मैं क्या कहता हूँ। (हँसकर) आप लोग बड़े खुश होंगे, हाँ, अब सबकोई बैठ जाइए।

गोपाल : (बैठकर) तो आप कहते क्यों नहीं, इतना नखरा-तिल्ला क्यों कर रहे हैं ?

तेज : इसलिए कि खुशी के बाद आप लोगों को रंज भी होगा और आप लोग एक तरद्दुद में फँस जायेंगे।

गोपाल : आप तो उलझन-पर-उलझन डाले जाते हैं और कुछ कहते भी नहीं।

तेज : कहता तो हूँ, सुनिए—यह जो मायारानी है, वह असल में आपकी स्त्री लक्ष्मीदेवी नहीं है।

इतना सुनते ही राजा गोपालसिंह, कमलिनी और लाडिली को हद से ज्यादे खुशी हुई, यहाँ तक कि दम रुकने लगा और थोड़ी देर तक कुछ कहने की सामर्थ्य न रह गयी, इसके बाद अपनी अवस्था ठीक करके कमलिनी ने कहा।

कमलिनी : ओफ, आज मेरे सिर से बड़े भारी कलंक का टीका मिटा। मैं इस ताने के सोच में मरी जाती थी कि तुम्हारी बहिन जब इतनी दुष्ट है, तो तुम न जाने कैसी होवोगी !

गोपाल : मैं जिस खयाल से लोगों को मुँह दिखाने से हिचकिचाता था, आज वह जाता रहा। अब मैं खुशी से जमानिया के राजकर्मचारियों के सामने मायारानी का इजहार लूँगा ! मगर यह तो कहिए कि इस बात का निश्चय आपको क्योंकर हुआ ?

तेज : मैं संक्षेप में आपसे कह चुका हूँ कि जब मैं दारोगा की सूरत में सुरंग के अन्दर पहुँचा और मायारानी से मुलाकात हुई तो आपको होश में लाने के लिए मायारानी से खूब हुज्जत हुई !

गोपाल : हाँ, आप कह चुके हैं।

तेज : उस समय जो जो, बातें मायारानी से हुईं, वह तो पीछे कहूँगा, मगर मायारानी की थोड़ी-सी बात, जिसे मैंने इस तरह अक्षर-अक्षर याद कर रक्खा है जैसे पाठशाला के लड़के अपना पाठ याद कर रखते हैं, आप लोगों से कहता हूँ, उसी से आप लोग उस भेद का मतलब निकाल लेंगे। मायारानी ने मुझे समझाने की रीति से कहा था कि—

"यद्यपि आपको इस बात का रंज है कि मैंने गोपालसिंह के साथ दगा की और यह भेद आपसे छिपा रक्खा, मगर आप भी तो जरा पुरानी बातों को याद कीजिए ! खास करके उस अँधेरी रात की बात, जिसमें मेरी शादी और पुतले की बदलौवल हुई थी ! आपही ने तो मुझे यहाँ तक पहुँचाया, अब अगर मेरी दुर्दशा होगी तो क्या आप बच जायँगे ! मान लिया जाय कि अगर गोपालसिंह को बचा लें तो लक्ष्मीदेवी का बचके निकल जाना आपके लिए दुःखदायी न होगा ? और जब इस बात की खबर गोपालसिंह को लगेगी तो क्या वह आपको छोड़ देगा ? बेशक, जोकुछ आज तक मैंने किया है, सब आपही का कसूर समझा जायेगा। मैंने इसे इसीलिए कैद किया था कि लक्ष्मीदेवीवाला भेद इसे मालूम न होने पावे, या इसे इस बात का पता न लग जाय कि दारोगा की करतूत ने लक्ष्मीदेवी की जगह···"

बस इतना कहकर वह चुप हो गयी और मैंने भी इस भेद को सोचते हुए यह समझकर इन बातों का कुछ जवाब देना उचित न जाना और चुप हो रहा कि कहीं बात-ही-बात में मेरा अनजानपन झलक न जावे और मायारानी को यह न मालूम हो जाय कि मैं वास्तव में दारोगा नहीं हूँ।

गोपाल : बस बस ! मायारानी के मुँह से निकली हुई इतनी ही बातें सबूत के लिए काफी हैं और बेशक वह कमबख्त मेरी स्त्री नहीं है, अब मुझे ब्याह के दिन की कुछ बातें धीरे-धीरे याद आ रही हैं, जो इस बात को और भी मजबूत कर रही हैं, और इसमें भी कोई शक नहीं कि हरामखोर दारोगा ही सब फसाद की जड़ है।

कमलिनी : मगर उस हरामजादी की बातों से जैसाकि आपने अभी कहा यह भी साबित होता है कि दारोगा की मदद से अपना काम पूरा करने के बाद, वह मेरी बहिन लक्ष्मीदेवी की जान लिया चाहती थी, मगर वह किसी तरह बचके निकल गयी।

तेज : बेशक, ऐसा ही है और मेरा दिल गवाही देता है कि लक्ष्मीदेवी

अभी तक जीती है, यदि उसकी खोज की जाय तो वह अवश्य मिलेगी।

गोपाल : मेरा भी दिल यही गवाही देता है, मगर अफसोस की बात है कि उसने मुझ तक पहुँचने या इस भेद को खोलने के लिए कुछ उद्योग न किया।

कमलिनी : यह आप कैसे कह सकते हैं कि उसने कोई उद्योग न किया होगा ? कदाचित उसका उद्योग सफल न हुआ हो ? इसके अतिरिक्त माया-रानी और दारोगा की चालाकी कुछ इतनी कच्ची न थी कि किसी की कलई चल सकती, फिर उस बेचारी का क्या कसूर ? जब मैं उसकी सगी बहिन होकर धोखे में फँस गयी और इतने दिनों तक उसके साथ रही तो दूसरे की क्या बात है ? उसके ब्याह के चार वर्ष बाद जब मैं माता-पिता के मर जाने के कारण लाडिली को साथ ले आपके घर आयी, तो मायारानी की सूरत देखते ही मुझे शक पड़ा, परन्तु इस खयाल ने उस शक को जमने न दिया कि कदाचित चार-वर्ष के अन्तर ने उसकी सूरत-शक्ल में इतना फर्क डाल दिया हो और यह आश्चर्य की बात है भी नहीं बहुतेरी कुँआरी लड़कियों की सूरत-शक्ल ब्याह होने के तीन ही चार-वर्ष बाद ऐसी बदल जाती है कि पहिचानना कठिन होता है।

तेज : प्रायः ऐसा होता है, यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है।

कमलिनी : और कमबख्त ने हम दोनों बहिनों की उतनी ही खातिर की, जितनी बहिन, बहिन की खातिर कर सकती है, मगर यह बात तभी तक रही, जब तक उसने (गोपालसिंह की तरफ इशारा करके) इनको कैद न कर लिया था।

गोपाल : मेरे साथ तो रस्म और रिवाज ने दगा की ! ब्याह के पहिले मैंने उसे देखा ही न था, फिर पहिचानता क्योंकर ?

कमलिनी : बेशक, बड़ी चालाकी खेली गयी। हाय, अब मैं बहिन लक्ष्मीदेवी को कहाँ ढूँढूँ और क्योंकर पाऊँ ?

तेज : जिस ढंग से मायारानी ने मुझे समझाया था, उससे तो मालूम होता है कि यह चालाकी करने के साथ ही दरोगा ने लक्ष्मीदेवी को कैद करके किसी गुप्त स्थान में रख दिया था, मगर कुछ दिनों के बाद वह किसी ढंग से छूटके निकल गयी। शायद इसी सबब से वह कमलिनी या लाडिली से मिल न सकी हो !

गोपाल : बिना दारोगा को सताये इसका पूरा हाल न मालूम होगा।

तेज : दारोगा तो रोहतासगढ़ में ही कैद है।

इतने ही में एक तरफ से आवाज आयी, "दारोगा अब रोहतासगढ़ में कैद नहीं है, निकल भागा !" तेजसिंह ने घूमकर देखा तो भैरोसिंह पर

निगाह पड़ी। भैरोसिंह ने बाप का चरण छुआ और राजा गोपालसिंह को भी प्रणाम किया, इसके बाद आज्ञा पाकर बैठ गया।

तेज : (भैरो से) क्या तुम बड़ी देर से खड़े-खड़े हम लोगों की बातें सुन रहे थे ! हम लोग बातों में इतना डूबे हुए थे कि तुम्हारा आना ज़रा भी मालूम न हुआ !

भैरो : जी नहीं, मैं अभी चला आ रहा हूँ और सिवाय इस आखिरी बात के जिसका जवाब दिया है, आप लोगों की और कोई बात मैंने नहीं सुनी।

तेज : तुम्हें यह कैसे मालूम हुआ कि हम लोग यहाँ हैं ?

भैरो : मैं तिलिस्मी बाग के चौथे दर्जे में जा रहा था, मगर जब दारोगावाले बँगले के पास पहुँचा तो उसकी बिगड़ी हुई अवस्था देखकर जी व्याकुल हो गया, क्योंकि इस बात का विश्वास करने में किसी तरह का शक नहीं हो सकता था कि उस बँगले की बरबादी का सबब बारूद और सुरंग हैं, और यह कार्रवाई बेशक हमारे दुश्मनों की है। अस्तु, तिलिस्मी बाग के चौथे दर्जे में जाने के पहिले इस मामले का असल हाल जानने की इच्छा हुई और किसी से मिलने की आशा में मैं इस जंगल में घूमने लगा, मगर इस लालटेन की रोशनी ने जो यहाँ बल रही है, मुझे ज्यादे देर तक भटकने न दिया। अब सबके पहिले मैं उस बँगले की बरबादी का सबब जानना चाहता हूँ, यदि आपको मालूम हो तो कहिए।

तेज : मैं भी यही चाहता हूँ कि राजा बीरेन्द्रसिंह का कुशल-क्षेम पूछने बाद जोकुछ कहना है, सो तुमसे कहूँ और उस बँगले की कायापलट का सबब तुमसे बयान करूँ, क्योंकि इस समय एक बड़ा ही कठिन काम, तुम्हारे सुपुर्द किया जायेगा, जो कितना जरूरी है, सो उस बँगले का हाल सुनते ही तुम्हें मालूम हो जायेगा।

भैरो : राजा बीरेन्द्रसिंह बहुत अच्छी तरह हैं, इधर का हाल सुनकर उन्हें बहुत क्रोध आता है और चुपचाप बैठे रहने की इच्छा नहीं होती, परन्तु आपकी वह बात उन्हें बराबर याद रहती है, जो उनसे विदा होने के समय अपनी कसम का बोझ देकर आप कह आये थे। निःसन्देह वे आपको सच्चे दिल से चाहते हैं और यही सबब है कि बहुतकुछ कर सकने की शक्ति रखकर भी कुछ नहीं कर रहे हैं !

तेज : हाँ, मैं उन्हें ताकीद कर आया था कि चुपचाप चुनार जाकर बैठिए और देखिए कि हम लोग क्या करते हैं। तो क्या राजा बीरेन्द्रसिंह चुनार गये !

भैरो : जी हाँ, वे चुनार गये और मैं अबकी दफे चुनार ही से चला आ

रहा हूँ। रोहतासगढ़ में केवल ज्योतिषीजी हैं और उन्हें राज्य-सम्बन्धी कार्यों से बहुत कम फ़ुरसत मिलती है, इसी सबब से दारोगा धोखा देकर न मालूम किस तरह कैद से निकल भागा। जब यह खबर चुनार पहुँची तो यह सोचकर कि भविष्य में कोई गड़बड़ न होने पाये, चुन्नीलाल ऐयार रोहतासगढ़ भेजे गये और जब तक कोई दूसरा हुक्म न पहुँचे, उन्हें बराबर रोहतासगढ़ ही में रहने की आज्ञा हुई और मैं इधर का हालचाल लेने के लिए भेजा गया।

तेज : अच्छा तो मैं दारोगावाले बँगले की बरबादी का सबब बयान करता हूँ।

इसके बाद तेजसिंह ने सब हाल अर्थात् अपना सुरंग में जाना, मायारानी से मुलाकात और बातचीत, राजा गोपालसिंह और कमलिनी इत्यादि का गिरफ़्तार होना और फिर उन्हें छुड़ाना, तथा दारोग़ावाले बँगले के उड़ने का सबब और इसके बाद का पूरा-पूरा हाल कह सुनाया, जिसे भैरोसिंह बड़े ग़ौर से सुनता रहा और जब बातें पूरी हो गयीं, तब बोला—

"यह एक विचित्र बात मालूम हुई कि मायारानी वास्तव में कमलिनी की बहिन नहीं है। (कुछ सोचकर) मगर मैं समझता हूँ कि असल बातों का पूरा-पूरा पता लगाने के लिए उसे बहुत जल्द गिरफ्तार करना चाहिए, केवल उसी को नहीं, बल्कि कमबख्त दारोगा को भी ढूँढ़ निकालना चाहिए।"

गोपाल : बेशक, ऐसा ही होना चाहिए, और अब मैं भी अपने को गुप्त रखना नहीं चाहता जैसा कि आज के पहिले सोचे हुए था।

तेज : सबसे पहिले यह तै कर लेना चाहिए कि अब हम लोगों को करना क्या है! (गोपालसिंह से) आप अपनी राय दीजिए।

गोपाल : राय और बहस में तो घण्टों बीत जायँगे, इसलिए यह काम भी आपही की मरजी पर छोड़ा, जो कहिए वही किया जाय।

तेज : (कुछ सोचकर) अच्छा तो फिर आप कमलिनी और लाडिली को लेकर जमानिया जाइए और तिलिस्मी बाग में पहुँचकर अपने को प्रकट कीजिए, मैं समझता हूँ कि वहाँ आपका विपक्षी (खिलाफ) कोई भी न होगा।

गोपाल : आप खिलाफ कह रहे हैं! मेरे नौकरों को मुझसे मिलने की खुशी है, अपने नौकरों में मैं अपने को प्रकट भी कर चुका हूँ!

तेज : (ताज्जुब से) यह कब? मैं तो इसका हाल कुछ भी नहीं जानता!

गोपाल : इधर आपसे मुलाकात ही कब हुई जो आप जानते? हाँ,

कमलिनी, लाडिली, भूतनाथ और देवीसिंह को मालूम है।

तेज : खैर, कह तो जाइए कि क्या हुआ ?

गोपाल : बड़ा ही मजा हुआ। मैं आपसे खुलासा कह दूँ, सुनिए। एक दिन रात के समय मैं भूतनाथ को साथ लिये हुए गुप्त राह से तिलिस्मी बाग के उस दर्जे में पहुँचा, जिसमें मायारानी सो रही थी। हम दोनों नकाब डाले हुए थे। उस समय इसके सिवाय और कोई काम न कर सके कि कुछ रुपये देकर एक मालिन को इस बात पर राजी करें कि कल रात के समय तू चुपके से चोर दरवाजा खोल दीजियो, क्योंकि कमलिनी इस बाग में आना चाहती है। यह काम इस मतलब से नहीं किया गया कि वास्तव में कमलिनी वहाँ जानेवाली थी, बल्कि इस मतलब से था कि किसी तरह से कमलिनी के जाने की झूठी खबर मायारानी को मालूम हो जाय और वह कमलिनी को गिरफ्तार करने के लिए पहिले से तैयार रहे, जिसके बदले में हम और भूतनाथ जानेवाले थे, क्योंकि आगे जोकुछ मैं कहूँगा, उससे मालूम होगा कि वह मालिन तो इस भेद को छिपाया चाहती थी, और हम लोग हर तरह से प्रकट करके अपने को गिरफ्तार कराया चाहते थे। इसी सबब से दूसरे दिन आधी रात के समय हम दोनों फिर उस बाग में उसी राह से पहुँचे, जिसका हाल मेरे सिवाय और कोई भी नहीं जानता—बाग ही में नहीं, बल्कि उस कमरे में पहुँचे, जिसमें मायारानी अकेली सो रही थी। उस समय वहाँ केवल एक हाँडी जल रही थी, जिसे जाते ही मैंने बुझा दिया और इसके बाद दरवाजे में ताला लगा दिया, जो अपने साथ ले गया था। यद्यपि दरवाजे पर पहरा पड़ रहा था, मगर मैं दरवाजे की राह से नहीं गया था, बल्कि एक सुरंग की राह से गया था, जिसका सिरा उसी कोठरी में निकला था। उस कोठरी की दीवार आबनूस की लकड़ी की थी और इस बात का गुमान भी नहीं हो सकता था कि दीवार में कोई दरवाजा है। यह दरवाजा केवल एक तख्ते के हट जाने से खुलता है, और तख्ता एक कमानी के सहारे पर है। खैर, ताला बन्द कर देने बाद मैंने जान-बूझकर एक शीशा जमीन पर गिरा दिया, जिसकी आवाज से मायारानी चौंक उठी। अँधेरे के कारण सूरत तो दिखायी नहीं देती थी, इसलिए मैं नहीं कह सकता कि उसने क्या-क्या किया, मगर इसमें कोई सन्देह नहीं कि वह बहुत ही घबरायी होगी और वह घबराहट, उसकी उस समय और भी बढ़ गयी होगी जब दरवाजे के पास पहुँचकर उसने देखा होगा कि वहाँ ताला बन्द है। मैं पैर पटक-पटककर कमरे में घूमने लगा। थोड़ी देर में टटोलता हुआ माया-रानी के पास पहुँचकर, मैंने उसकी कलाई पकड़ ली और जब वह चिल्लायी तो एक तमाचा जड़के अलग हो गया। तब मैंने एक चोर लालटेन जलायी

जो मेरे पास थी। उस समय मायारानी डर और मार खाने के कारण बेहोश हो चुकी थी। मैंने दरवाजे का ताला खोल दिया और उसे उठाकर चारपाई पर लिटा देने के बाद वहाँ से चलता बना। यह कार्रवाई इसलिए की गयी थी कि मायारानी घबड़ाकर बाहर निकले और उसकी लौंडियाँ इस घटना का पता लगाने के लिए चारों तरफ घूमें, जिससे आगे हम लोग जोकुछ करेंगे, उसकी खबर मायारानी को लग जाय। इसके बाद मैं और भूतनाथ एक नियत स्थान पर उस मालिन से जाकर मिले और उससे बोले कि आज तो कमलिनी न आ सकी, मगर कल आधी रात को जरूर आवेगी, चोर दरवाजा खुला रखियो! बेशक, इस बात की खबर मायारानी को लग गयी, जैसा कि हम लोग चाहते थे, क्योंकि दूसरे दिन जब हम लोग चोर दरवाजे की राह बाग में पहुँचे तो हम लोगों को गिरफ्तार करने के लिए कई आदमी मुस्तैद थे।

ऊपर लिखे हुए बयान से पाठक इतना तो जरूर समझ गये होंगे कि मायारानी के बाग में पहुँचनेवाले दोनों नकाबपोश, जिनका हाल सन्तति के नौवें भाग के चौथे और सातवें बयानों में लिखा गया है, ये ही राजा गोपालसिंह और भूतनाथ थे, इसलिए उन दोनों ने और जोकुछ काम किया, उसे इस जगह दोहराकर लिखना हम इसलिए उचित नहीं समझते कि वह हाल पाठकगण पढ़ ही चुके हैं, और उन्हें याद होगा। अस्तु, यहाँ केवल इतना ही कह देना काफी है कि ये दोनों गोपालसिंह और भूतनाथ थे और राजा गोपालसिंह ही ने कोठरी के अन्दर बारी-बारी से पाँच-पाँच आदमियों को बुलाकर अपनी सूरत दिखायी, और कुछ थोड़ा-सा हाल भी कहा था।

राजा गोपालसिंह ने यह सब पूरा-पूरा हाल तेजसिंह और भैरोसिंह से कहा और देर तक वे सुन-सुनकर हँसते रहे। इसके बाद देवीसिंह और भूतनाथ ने भी अपनी कार्रवाई का हाल कहा और फिर इस विषय में बात-चीत होने लगी कि अब क्या करना चाहिए।

तेज : (गोपालसिंह से) अब आप खुले दिल से अपने महल में जाकर राज्य का काम कर सकते हैं, इसलिए अब जो कुछ आपको करना है, हुकूमत के साथ कीजिए। ईश्वर की कृपा से अब आपको किसी तरह की चिन्ता न रही, इसलिए इधर-उधर···

गोपाल : यह आप नहीं कह सकते कि अब मुझे किसी तरह की चिन्ता नहीं, मगर हाँ, बहुत-सी बातें जिनके सबब से मैं अपने महल में जाने से हिचकता था, जाती रहीं इसलिए मेरी भी राय है कि कमलिनी और लाडिली को साथ लेकर मैं अपने घर जाऊँ और वहाँ से दोनों कुमारों को मदद पहुँचाने का उद्योग करूँ, जो इस समय तिलिस्म के अन्दर जा पहुँचे

हैं, क्योंकि यद्यपि तिलिस्म का फैसला उन दोनों के हाथों होना ब्रह्मा की लकीर-सा हो रहा है, तथापि मेरी मदद पहुँचने से उन्हें विशेष कष्ट न उठाना पड़ेगा। इसके साथ मैं यह भी चाहता हूँ कि किशोरी और कामिनी को भी अपने तिलस्मी बाग ही में बुलाकर रक्खूँ···

कमलिनी : जी नहीं, मैं तिलिस्मी बाग में तब तक नहीं जाऊँगी, जब तक कमबख्त मायारानी से अपना बदला न ले लूँगी और अपनी बहन को, यदि वह अभी तक इस दुनिया में है, न ढूँढ़ निकालूँगी। किशोरी और कामिनी का भी आपके यहाँ रहना उचित नहीं है, इसे आप अच्छी तरह गौर करके सोच लें। उनकी तरफ से आप निश्चिन्त रहें, तालाबवाले मकान में जो आजकल मेरे दखल में है, उन्हें किसी तरह की तकलीफ नहीं होगी। मैं हाथ जोड़कर प्रार्थना करती हूँ कि आप मेरी प्रार्थना स्वीकार करें और मुझे अपनी राय पर छोड़ दें।

गोपाल : (कुछ सोचकर) तुम्हारी बातों का बहुत-सा हिस्सा सही और वाजिब है, मगर बेइज्जती के साथ तुम्हारा इधर-उधर मारे-मारे फिरना मुझे पसन्द नहीं। यद्यपि तुम्हें ऐयारी का शौक है और तुम इस फन को अच्छी तरह जानती हो, मगर मेरी और इसी के साथ किसी और की इज्जत पर भी ध्यान देना उचित है। यह बात मैं तुम्हारी गुप्त इच्छा को अच्छी तरह समझकर कहता हूँ। मैं तुम्हारी अभिलाषा में बाधक नहीं होता, बल्कि उसे उत्तम और योग्य समझता हूँ···

कमलिनी : (कुछ शर्माकर) उस दिन आप जो चाहें मुझे सजा दें, जिस दिन किसी की जुबानी, जो ऐयार या उन लोगों में से न हों, जिनके सामने मैं हो सकती हूँ, आप यह सुन पावें कि कमलिनी या लाडिली की सूरत किसी ने देख ली या दोनों ने ऐसा कोई काम किया, जो बेइज्जती या बदनामी से सम्बन्ध रखता है।

गोपाल : (तेजसिंह से) आपकी क्या राय है ?

तेज : मैं इस विषय में कुछ भी न बोलूँगा। हाँ, इतना अवश्य कहूँगा कि यदि आप कमलिनी की प्रार्थना स्वीकार कर लेंगे तो मैं अपने दो ऐयारों को इनकी हिफाजत के लिए छोड़ दूँगा।

गोपाल : जब आप ऐसा कहते हैं तो मुझे कमलिनी की बात माननी पड़ी। खैर, थोड़े-से सिपाही इनकी मदद के लिए मैं भी मुकर्रर कर दूँगा।

कमलिनी : मुझे उससे ज्यादे आदमियों की जरूरत नहीं है, जितने मेरे पास थे। हाँ, आप उन लोगों को एक चीठी मेरे जाने के बाद अवश्य लिख दें कि 'हम इस बात से खुश हैं कि तुम इतने दिनों से कमलिनी के साथ रहे और रहोगे'। हाँ, इसके साथ एक काम और भी चाहती हूँ !

गोपाल : वह क्या ?

कमलिनी : जब मैंने अपना किस्सा आपसे बयान किया था तो यह भी कहा था कि मायारानी ने तिलिस्मी मकान के जरिए से कुमार और उनके ऐयारों के साथ-ही-साथ, मेरे कई बहादुर सिपाहियों को गिरफ्तार कर लिया था।

गोपाल : हाँ, मुझे याद है, जिस मकान में बारी-बारी हँसकर वे लोग कूद गये थे !

कमलिनी : जी हाँ, सो कुमार और उनके ऐयार तो छूट गये, मगर मेरे सिपाहियों का अभी तक पता नही है, बेशक वे भी तिलिस्मी बाग में किसी ठिकाने कैद होंगे जिसका पता आप लगा सकते हैं। मुझे आज तक यह न मालूम हुआ कि उनके हँसने और कूद पड़ने का क्या कारण था। इस विषय में कुमार से भी कुछ पूछने का मौका न मिला।

गोपाल : मैं वादा करता हूँ कि उन आदमियों को यदि वे मारे नहीं गये हैं तो अवश्य ढूंढ़ निकालूंगा, और इसका कारण कि वे लोग हँसते-हँसते उस मकान के अन्दर क्यों कूद पड़े सो तुम इसी समय देवीसिंह से भी पूछ सकती हो, जो यहाँ मौजूद हैं और उन हँसते-हँसते कूद पड़नेवालों में शरीक थे।

देवीसिंह : माफ कीजिए, मैं उस विषय में तब तक कुछ भी न कहूँगा, जब तक इन्द्रजीतसिंह मेरे सामने मौजूद न होंगे, क्योंकि उन्होंने उस बात को छिपाने के लिए मुझे सख्त ताकीद की है, बल्कि कसम दे रक्खी है।

कमलिनी : यह और भी आश्चर्य की बात है, खैर, जाने दीजिए फिर देखा जायगा। हाँ, आपने मेरी प्रार्थना स्वीकार की ? लाडिली मेरे साथ रहेगी ?

गोपाल : हाँ, स्वीकार की, मगर देखो जोकुछ करना होशियारी से करना और मुझे बराबर खबर देती रहना।

तेज : मैं प्रतिज्ञानुसार अपने दो ऐयार तुम्हारे सुपुर्द करता हूँ, जिन्हें तुम चाहो अपनी मदद के लिए ले लो।

कमलिनी : अच्छा तो आप कृपाकर भूतनाथ और देवीसिंह को दे दीजिए।

तेजसिंह : भूतनाथ तो तुम्हारा ही ऐयार है, उस पर अभी मेरा कोई अख्तियार नहीं है, वह अवश्य तुम्हारे साथ रहेगा, उसके अतिरिक्त दो ऐयार तुम और ले लो।

कमलिनी : निःसन्देह आपका बड़ा अनुग्रह मुझ पर है मगर मुझे विशेष ऐयारों की आवश्यकता नहीं है।

तेजसिंह : खैर, यही सही फिर देखा जायगा। (देवीसिंह से) अच्छा तो तुम कमलिनी का काम करो और इनके साथ रहो।

देवीसिंह : बहुत अच्छा।

तेजसिंह : खैर, तो अब सभा विसर्जित होनी चाहिए, देखिए आसमान का रंग बदल गया। कमलिनी और लाडिली के लिए सवारी का क्या इन्तजाम होगा?

कमलिनी : थोड़ी दूर जाकर मैं रास्ते में इसका इन्तजाम कर लूंगी, आप बेफिक्र रहिए।

थोड़ी-सी और बातचीत के बाद सबकोई उठ खड़े हुए। कमलिनी, लाडिली, भूतनाथ तथा देवीसिंह ने दक्खिन का रास्ता पकड़ा और कुछ दूर जाने बाद, सूर्य भगवान की लालिमा दिखायी देने के पहिले ही, एक जंगल में गायब हो गये।

चौथा बयान

रात पहर-भर से ज्यादे जा चुकी है। आज की रात मामूली से ज्यादे अँधेरी मालूम होती है, क्योंकि आबोताब से चमककर पाँचों सवारों में गिनती करानेवाले तारों की थोड़ी रोशनी को दिन-भर तेजी के साथ चले हुए हवा के झपेटों की सहायता से, ऊपर की तरफ उठे हुए गर्द-गुबार ने अपना गँदला शामियाना खैंचकर, जमीन तक आने से रोक रक्खा है। दिन-भर के काम-काज से थके और आँधी के झोंकों तथा गर्द-गुब्बार से दुःखी आदमी, इस समय सड़कों पर घूमना पसन्द न करके, अपने-अपने झोपड़ों, मकानों और महलों में आराम कर रहे हैं, इसलिए काशीपुरी के बाहरी प्रान्त की सड़कों पर कुछ विचित्र-सा सन्नाटा छाया हुआ है। केवल एक आदमी शहर की हद पर बहनेवाली बरना नदी पार करके त्रिलोचन महादेव की तरफ तेजी के साथ बढ़ा चला जाता है और उसे टोकने या देखनेवाला कोई भी नहीं। यह आदमी आधी रात के पहिले ही मनोरमा के मकान के पास जा पहुँचा, जिसमें इस समय केवल नागर रहती थी। यहाँ पहुँच, वह सीधे फाटक की तरफ चला गया। देखा कि फाटक बन्द है, मगर उसकी छोटी खिड़की अभी तक खुली हुई है, और उस राह से झाँककर देखने से मालूम होता है कि भीतर की तरफ दो आदमी टहल-टहलकर पहरा दे रहे हैं।

वह आदमी बेधड़क छोटी खिड़की की राह से भीतर घुस गया, और दोनों पहरा देनेवालों से बिना साहब-सलामत किये या बिना कुछ कहे, अपने जेब टटोलने लगा। एक पहरेवाले ने ताज्जुब में आकर उससे पूछा,

"तुम कौन हो और क्या चाहते हो ?" इसके जवाब में आगन्तुक ने एक चीठी उसके हाथ पर रखकर कहा, "यह चीठी बहुत जल्द उसके हाथ में दो जो इस मकान में सबका सरदार मौजूद हो।"

सिपाही : पहिले तुम अपना नाम बताओ, और यह कहो कि तुम किसके भेजे हुए आये हो, और इस चीठी का मतलब क्या है ?

आगन्तुक : तुम अपनी बातों का जवाब मुझसे नहीं पा सकते, और न इस चीठी के पहुँचाने में विलम्ब कर सकते हो, ताज्जुब नहीं कि तुम सफाई के साथ यह कहो कि मकान मालिक इस समय आराम के साथ खर्राटे ले रहा है, और हम उसे जगा नहीं सकते, मगर याद रक्खो कि यह समय बड़ा ही नाजुक बीत रहा है, और एक पल भी व्यर्थ जाने देने लायक नहीं है, अगर तुम मुझसे कुछ पूछताछ करोगे तो मैं बिना कुछ जवाब दिये यहाँ से चला जाऊँगा, और इसका नतीजा बहुत बुरा होगा, क्योंकि सवेरा होने से पहिले इस मकान में रहनेवाले जितने हैं, सब-के-सब यमलोक को सिधार जायँगे, और सब कसूर तुम्हारा ही समझा जायगा। खैर, मुझे इन बातों से क्या मतलब, लो मैं जाता हूँ।

सिपाही : सुनो सुनो, लौटे क्यों जाते हो, मैं यह चीठी अभी अपने मालिक के पास पहुँचाये देता हूँ, मगर यह बताओ कि ऐसी कौन-सी आफत आनेवाली है, और उसका क्या सबब है ?

आगन्तुक : मैं पहिले ही कह चुका हूँ कि तुम्हारी बातों का कुछ जवाब नहीं दिया जायेगा, तुमने पुनः पूछने में जितना समय नष्ट किया, समझ रक्खो कि उतने समय में दो आदमियों का बेड़ा पार हो गया। बस मैं फिर कहता हूँ कि अभी चले जाओ, मैं जोकुछ कहता हूँ, तुम लोगों के भले ही के लिए कहता हूँ।

इस आये हुए आदमी की धमकी लिये हुए, जल्दबाजी से उस पहरेवाले को, बल्कि और सिपाहियों को भी जो उस समय वहाँ मौजूद थे, और उसकी बातें सुन रहे थे, बदहवास कर दिया—फिर उससे कुछ पूछने की हिम्मत किसी की न पड़ी। वह सिपाही, जिसके हाथ में चीठी दी गयी थी, कुछ सोचता-विचारता बाग के अन्दरवाले मकान की तरफ रवाना हुआ, और नजरों से गायब होकर आधे घण्टे तक न आया। तब तक वह आदमी जो चीठी देने आया था, फाटक ही में एक किनारे चुपचाप खड़ा रहा। सिपाहियों ने कुछ पूछना चाहा, मगर उसने किसी की बात का जवाब न दिया, और सिर नीचा किये इस ढंग से जमीन की तरफ देखता रहा, जैसे बड़े गौर और फिक्र में कुछ विचार कर रहा हो।

आधे घण्टे बाद, जब वह सिपाही लौटकर आया तो उसने आगन्तुक से

कहा, "चलिए आपको नागरजी बुला रही हैं।"

आगन्तुक : (ताज्जुब से) नागरजी ! क्या इस समय इस मकान में वही मालिक की तौर पर है ? मैं तो मायारानी से मिलने की आशा रखता था !

सिपाही : इस समय नागरजी के सिवाय यहाँ मालिक लोग नहीं हैं। क्या तुम्हारी चीठी इस लायक न थी कि नागरजी के हाथ में दी जाती ? क्योंकि मैंने देखा कि चीठी पढ़ने के साथ ही फिक्र और तरद्दुद ने उनकी सूरत बदल दी।

आगन्तुक : नहीं, कोई विशेष हानि नहीं है, खैर, चलो मैं चलता हूँ।

वह आगन्तुक सिपाही के पीछे-पीछे उस मकान की तरफ रवाना हुआ, जो इस बाग के बीचोबीच में था, और क्यारियों के बीच बनी हुई बारीक सड़कों पर घूमता हुआ मकान के पिछली तरफ जा पहुँचा। इस जगह मकान के दोनों तरफ दो कोठरियाँ थीं, दाहिनी तरफवाली कोठरी तो बन्द थी, मगर बायीं तरफवाली कोठरी का दरवाजा खुला हुआ था, और भीतर चिराग जल रहा था। दोनों आदमी उस कोठरी के भीतर गये। वहाँ ऊपर की छत पर जाने के लिए सीढ़ियाँ बनी थीं, उसी राह से दोनों ऊपर की छत पर चले गये, और एक कमरे में पहुँचे, जहाँ सिवाय सफेद फर्श के और कोई सामान जमीन पर न था। सामने की दीवार में दो जोड़ी दीवारगीरों की थीं, जिनमें मोटी-मोटी मोमबत्तियाँ जल रही थीं, और उनकी रोशनी से इस कमरे में अच्छी तरह उजाला हो रहा था। इस कमरे में बायीं तरफ एक कोठरी थी, जिसके दरवाजे पर लाल साटन का परदा पड़ा हुआ था। वह आदमी उसी पर्दे की तरफ मुँह करके खड़ा हो गया, क्योंकि इस कमरे में सिवाय इन दो आदमियों के और कोई भी न था।

इन दोनों आदमियों को बहुत थोड़ी देर तक वहाँ खड़े रहना पड़ा, और इसी बीच में उस आदमी को जो चीठी लाया था, मालूम हो गया कि पर्दे के अन्दर से किसी ने उसे अच्छी तरह देखा है। थोड़ी देर में पर्दे के अन्दर से दो लौंडियाँ चुस्त और साफ पोशाक पहिने हाथ में नंगी तलवार लिये बाहर निकलीं, और इसके बाद उसी तरह की मगर बेशकीमत पोशाक पहिरे नागर भी पर्दे के बाहर आयी। उसकी कमर में वही तिलिस्मी खंजर था, और उँगली में उसके जोड़ की अँगूठी मौजूद थी। नागर ने उस आये हुए आदमी की तरफ देखके कहा—"तुम किसके भेजे हुए आये हो और तुम्हारा क्या नाम है ? मुझे खयाल आता है कि मैंने तुम्हें कहीं देखा है, मगर याद नहीं पड़ता कि कब और कहाँ !"

इस आदमी की उम्र लगभग चालीस या पैंतालिस वर्ष के होगी। इसका कद लम्बा और शरीर दुबला, मगर गँठीला, रंग गोरा, चेहरा खूबसूरत

और रोबीला था। बड़ी-बड़ी मूंछें दोनों किनारों से ऐंठी और घूमी हुई थीं। आँखें बड़ी और इस समय कुछ लाल थीं। पोशाक यद्यपि बेशकीमत न थी, मगर साफ और अच्छे ढंग की थी। चुस्त पायजामा घुटने के चार अंगुल नीचे तक का चपकन, और उस परसे एक ढीला चोगा पहिरे और सिर पर भारी मुँड़ाँसा बाँधे हुए था। सरसरी निगाह से देखने पर वह कोई छोटा या बदरोब आदमी नहीं कहा जा सकता था!

नागर की बात सुनकर वह आदमी कुछ मुस्कुराया और बोला, "केवल इतना ही नहीं, आप अभी बहुतकुछ मुझसे पूछेंगी, मगर मैं किसी के सामने आपकी बातों का जवाब नहीं दिया चाहता, क्योंकि मैं एक नाजुक काम के के लिए आया हूँ। यदि किसी तरह का खौफ न हो तो (सिपाही और लौंडियों की तरफ इशारा करके) इनको हट जाने के लिए कहिए, और फिर जोकुछ चाहे पूछिए, मैं साफ जवाब दूँगा।"

उस आदमी की बात सुनकर नागर ने अपने तिलिस्मी खंजर की तरफ देखा, जो कमर से लटक रहा था, मानो उसे उस खंजर पर बहुत भरोसा है, और इसके बाद सिपाही तथा लौंडियों को वहाँ से हट जाने का इशारा करके बोली, "नहीं नहीं, मुझे तुमसे खौफ खाने का कोई सबब मालूम नहीं होता।"

आदमी : (सिपाही और लौंडियों के हट जाने के बाद) हाँ, अब जो कुछ आपको पूछना हो पूछिए, मैं जवाब दूँगा।

नागर : मैं फिर पूछती हूँ कि तुम किसके भेजे हुए आये हो, और तुम्हारा नाम क्या है? मैंने तुम्हें कहीं-न-कहीं अवश्य देखा है।

आदमी : मेरा नाम श्यामलाल है और तुमने मुझे उस समय देखा होगा, जब तुम्हारा नाम 'मोतीजान' था, और तुम बाजार में कोठे के ऊपर बैठकर अपने कटाक्षों से सैकड़ों को घायल किया करती थीं। रण्डियों के लिए यह मामूली बात है कि जब विशेष दौलत हो जाती है, तब उन दोस्तों को भूल जाती हैं, जिनसे किसी जमाने में थोड़ी रकम पायी हो, चाहे वह उस समय कितना ही गाढ़ा मुलाकाती क्यों न रह चुका हो! मैं यह ताने के ढंग पर नहीं कहता, बल्कि इस उम्मीद पर कहता हूँ कि पुरानी मुलाकात की याद कर मुझे साफ करोगी, क्योंकि इस समय तुम एक ऊँचे दर्जे पर हो।

नागर : (नाक-भौं सिकोड़कर, जिससे मालूम होता था कि श्यामलाल की बातों से वह कुछ चिढ़ गयी है) हाँ, खैर, मैंने तुम्हें पहिचाना, अच्छा बताओ कि तुम क्या चाहते हो?

श्यामलाल : (मुस्कुराकर) बस यही चाहता हूँ कि मुझे बिदा करो और चुपचाप यहाँ से चले जाने दो।

नागर : नहीं नहीं, मेरा यह मतलब नहीं है, मैं उस चीठी का भेद जानना चाहती हूँ, जो मेरे सिपाही के हाथ तुमने भेजी है,और जिसमें केवल इतना ही लिखा है कि 'लक्ष्मीदेवी के प्रकट हो जाने से अनर्थ हो गया, अब मायारानी और उसके पक्षपातियों को एकदम भागकर अपनी जान बचाना उचित है'। (चीठी दिखाकर) देखो यही है न !

श्यामलाल : हाँ, यही है, मगर इसमें यह भी लिखा है कि 'नहीं तो बारह घण्टे के बाद फिर कुछ करते-धरते न बन पड़ेगा।

नागर : हाँ, ठीक है, यह भी लिखा है, मगर यह बताओ कि लक्ष्मीदेवी कौन है और उसके प्रकट हो जाने से हमारा क्या नुकसान है ?

श्यामलाल : (ताज्जुब से नागर का मुँह देखकर) क्या तुम लक्ष्मीदेवी-वाला भेद नहीं जानती हो ? क्या यह भेद मायारानी ने तुमसे छिपा रक्खा है ? खैर, अगर यह बात है, तो मैं भी इस भेद को खोलना उचित नहीं समझता। अच्छा यह तो बताओ मायारानी कहाँ है, मैं उससे कुछ कहा चाहता हूँ !

नागर : क्या मायारानी तुम्हारे सामने हो सकती हैं ? क्या तुम नहीं जानते कि उनका दर्जा कितना बड़ा है, और उन्हें कोई गैर मर्द नहीं देख सकता !

श्यामलाल : मैं सबकुछ जानता हूँ, और यह भी जानता हूँ कि वह मुझसे पर्दा न करेगी।

नागर : शायद ऐसा ही हो, लेकिन इस समय वह किसी काम से गयी हैं, यहाँ नहीं हैं।

श्यामलाल : अगर ऐसा ही है तो मैं भी जाता हूँ और तुमसे कहे जाता हूँ कि जहाँ तक जल्द हो सके भागकर अपनी जान बचाओ।

यह कहकर श्यामलाल पीछे की तरफ लौटा, मगर नागर ने उसे रोक-कर कहा, "सुनो तुम अभी कह चुके हो कि हमारे पुराने दोस्त हो, तो क्या तुम मुझ पर कृपा करके और पुरानी दोस्ती को याद करके लक्ष्मीदेवीवाला भेद मुझे नहीं बता सकते ? क्या तुम साफ-साफ नहीं कह सकते कि हम लोगों पर क्या आफत आनेवाली है ?"

श्यामलाल : (बेशक मैं तुम्हारी दोस्ती का इकरार कर चुका हूँ, और अब भी यह कहता हूँ कि अभी तक तुम्हारी मोहब्बत ने मेरा साथ नहीं छोड़ा है, मगर (कुछ सोचके) अच्छा लो, मैं एक चीठी देता हूँ, इसके पढ़ने से तुम्हें सब हाल मालूम हो जायगा, मगर (कोठरी के दरवाजे पर पड़े हुए परदे की तरफ देखके)मुझे शक है कि इस परदे के अन्दर से कोई लौंडी छिप-कर देखती न हो'

नागर : नहीं नहीं, ऐसा कभी नहीं हो सकता, लो मैं तुम्हारा शक दूर किये देती हूँ।

यह कहकर नागर ने बढ़कर वह परदा किनारे कर दिया और कोठरी का दरवाजा बन्द कर लिया। श्यामलाल ने नागर की तरफ चीठी बढ़ाकर कहा, "देखो, मैं निश्चय करके आया था कि यह चीठी सिवाय मायारानी के और किसी के हाथ में न दूँगा, क्योंकि उसे मैं दिल से चाहता हूँ, और उसी की खातिर इतना कष्ट उठाकर आया भी हूँ, सच तो यह है कि वह भी मुझे जी-जान से मानती और प्यार करती है।"

नागर : अफसोस और ताज्जुब की बात यह है कि तुम मायारानी की शान में ऐसी बात कह रहे हो ! निःसन्देह तुम झूठे और दगाबाज हो, मायारानी को क्या पड़ी है कि वह तुमसे मुहब्बत करें ! क्या वह भी मेरी तरह से गन्धर्व-कुल को रौनक देनेवाली हैं !

श्यामलाल : (हँसकर और चीठीवाला हाथ अपनी तरफ खींचकर) हः हः हः, जब तुम असल बातों को जानती ही नहीं हो तो मेरी बातें क्योंकर समझ सकती हो ? तुम मायारानी की सखी कहलाने का दावा रखती हो, मगर मैं देखता हूँ कि मायारानी तुम्हें एक लौंडी के बराबर भी नहीं समझती, यही सबब है कि उसने अपना असली हाल तुमसे कुछ भी नहीं कहा। अफसोस, तुम्हें इतनी खबर भी नहीं है कि मायारानी मेरी सगी साली है।

नागर : (चौंककर) मायारानी तुम्हारी साली हैं ! और लक्ष्मीदेवी ?

श्यामलाल : लक्ष्मीदेवी वह है, जिसकी जगह मायारानी मेरी और दारोगा की मदद···मगर नहीं, ओफ मैं भूलता हूँ, जब मायारानी ने खुद अपना हाल तुमसे छिपाया तो मैं क्यों कहूँ ? अच्छा मायारानी आवे तो कह देना कि श्यामलाल आया था, और कह गया है कि मैंने लक्ष्मीदेवी और गोपालसिंह का बन्दोबस्त कर लिया है, अब तू बेफिक्र होके बैठ और जहाँ तक जल्द हो सके, मुझसे मिल। लेकिन अफसोस तो यह है कि इस मकान में रहनेवाले आज गिरफ्तार कर लिये जायेंगे, और मायारानी को यहाँ आने का मौका ही न मिलेगा। तब मैं यह सब बातें तुमसे क्यों कह रहा हूँ ! अच्छा, खैर, जाने दो, जहाँ तक जल्द हो भागकर तुम अपनी जान बचाओ और जोकुछ दौलत यहाँ से निकालकर ले जा सको, लेती जाओ, लो अब मैं जाता हूँ।

नागर : सुनो सुनो, वह चीठी जो तुम मुझे दिखाया चाहते थे, सो तो दिखा दो, और इसके बाद मेरी एक बात का जवाब दे के तब जाओ।

श्यामलाल : (कुछ सोचकर और नागर की तरफ चीठी बढ़ाकर) खैर,

लो, तुम ही पढ़ लो, देखो तो सही अपनी साली की खातिर से कैसे खुशबू-दार अतरों से बसी हुई चीठी तैयार करके मैं लाया था, अच्छा कोई हर्ज नहीं, किसी जमाने में तुम भी मुझे खुश कर चुकी हो। इसके पढ़ने से आने-वाली आफत का पूरा-पूरा हाल मिल जायगा। मैं यह चीठी इसलिए लिख लाया था कि शायद किसी सबब से मैं स्वयं मायारानी से मिल न सकूँगा तो यह चीठी भेजकर उसे आनेवाली आफत से होशियार कर दूँगा, और फिर वह स्वयं मुझसे मिल लेगी, मगर अफसोस उससे तो मुलाकात ही न हुई। खैर, इस चीठी को पढ़ो, मगर बैठ जाओ और मुझे भी बैठने के लिए कहो, क्योंकि मैं खड़ा-खड़ा थक गया हूँ।

नागर ने अपने हाथ में चीठी लेकर श्यामलाल को बैठने के लिए कहा, और तब खुद भी उसी जगह बैठकर लिफाफा खोला। लिफाफे और चीठी का कागज खुशबूदार चीजों से ऐसा बसा हुआ था कि लिफाफा हाथ में लेने और खोलने के साथ ही नागर का जी खुश हो गया। ऐसी मीठी और भली खुशबू उसके दिमाग में शायद आज तक न पहुँची होगी। चीठी पढ़ने के पहिले ही उसने कई दफे उसे सूँघा और आँखें बन्द करके 'वाह वाह' कहने लगी। मगर उस खुशबू का काम केवल इतना ही न था कि दिल और दिमाग को खुश करे, बल्कि उसमें मजेदार और आनन्द देनेवाली बेहोशी पैदा करने का भी गुण था, इसलिए चीठी पढ़ने के पहिले ही नागर के दिमाग की ताकत जिसका चैतन्यता और विचार-शक्ति से सम्बन्ध है, बिल्कुल जाती रही और वह बेहोश होकर दीवार के साथ उठंग गयी। उसकी हालत देखकर श्यामलाल आगे बढ़ा, और पास जाकर बिना कुछ सोचे-विचारे उसकी उँगली से वह अँगूठी निकाल ली, जो तिलिस्मी खंजर के जोड़ की और मामूली तौर की बिल्कुल सादी थी। अँगूठी लेकर श्याम-लाल ने मुँह में रख ली और उसी रंग की दूसरी अँगूठी अपने जेब से निकाल-कर, नागर की उँगली में पहिरा दी। इसके बाद अपनी कमर से एक खंजर निकाला, जो चपकन और अबा के अन्दर छिपा हुआ था। यह खंजर नागर की कमर में खोंसा और उसकी कमर से तिलिस्मी खंजर लेकर अपनी कमर में चपकन के अन्दर छिपा लिया। श्यामलाल, ये दोनों चीजें निःसन्देह इसी काम के लिए तैयार करके ले आया था क्योंकि वह खंजर और अँगूठी ठीक तिलिस्मी खंजर और अँगूठी के रंग-ढंग के ही थे, बहुत गौर करने पर भी किसी तरह का शक नहीं हो सकता था।

खंजर और अँगूठी बदल लेने के बाद श्यामलाल ने वह खुशबूदार चीठी भी नागर के हाथ से ले ली, और उसके बदले में उसी तरह की दूसरी चीठी उसके हाथ में रख दी। इस चीठी में से भी उसी तरह की खुशबू आ रही

थी, फर्क सिर्फ इतना ही था कि उसकी खुशबू बेहोशी पैदा करनेवाली थी, और इसकी खुशबू बेहोशी दूर करने की ताकत रखती थी अर्थात् लखलखे का काम देती थी।

इस काम से छुट्टी पाकर श्यामलाल पीछे हटा और अपने ठिकाने बैठकर नागर के चैतन्य होने की राह देखने लगा। थोड़ी ही देर में नागर चैतन्य हो गयी और आँख खोलकर श्यामलाल की तरफ देख और उस चीठी को पुन: सूँघकर बोली, "बेशक खुशबू बहुत ही अच्छी और प्रिय मालूम होती है, मगर मुझे क्या हो गया था ! क्या मैं बेहोश हो गयी थी ?"

श्यामलाल : (हँसकर) वाह क्या खूब ! केवल एक दफे आँख बन्द करके खोल देने का ही अर्थ अगर बेहोशी है, तो बस हो चुका, क्योंकि मेरी समझ में तुमने चार पल से ज्यादे देर तक आँख बन्द नहीं की, सो भी इस खुशबू से पैदा हुई मस्ती के सबब था।

नागर : (मुस्कुराकर) अगर तुम मायारानी के बहनोई न होते तो मैं कुछ कह बैठती, क्योंकि ऐसे समय में जबकि जान बचाने की फिक्र पड़ रही है, जैसाकि तुम स्वयं कह रहे हो तो इस तरह की दिल्लगी अच्छी नहीं मालूम पड़ती। अच्छा अब मैं इस चीठी को पढ़कर देखती हूँ कि तुमने क्या लिखा है। (चीठी को पढ़कर) वाह वाह, इसका मतलब तो मेरी समझ में कुछ भी नहीं आता, मालूम होता है कि बहुत-सी पहेलियाँ लिखकर रक्खी हुई हैं !

श्यामलाल : बस बस, अब मुझे और भी निश्चय हो गया कि मायारानी तुम लोगों से केवल मुँहदेखी मुहब्बत रखती है, क्योंकि अगर वह तुम लोगों की कदर करती तो अपना भेद जरूर कहती, और अपना भेद कहती तो इस चीठी का मतलब भी तुम जरूर समझ जातीं—मगर उसने अदना-से-अदना भेद भी छिपा रक्खा, जिसके बताने में कोई हानि न थी।

नागर : ठीक है, मुझे भी यही विश्वास होता है। मगर जब मुझ पर दया करके यह कह रहे हो कि जल्दी यहाँ से भागकर अपनी जान बचाओ तो कृपा कर इसका सबब भी बता दो, क्योंकि मुझे कुछ भी नहीं सूझता कि मैं भागकर कहाँ जाऊँ, और इस जायदाद के बचाने का क्या उद्योग करूँ ?

श्यामलाल : इसका जवाब मैं कुछ भी नहीं दे सकता, क्योंकि मैं अगर तुम्हें कोई तरकीब बताऊँगा, या अपने साथ चलने के लिए कहूँगा, तो तुम्हें मुझ पर अविश्वास होगा, क्योंकि तुम बहुत दिनों के बाद मुझे आज देख रही हो, सो भी ऐसे समय में जब तुम्हारा दिल राजकीय विषयों की उलझन में हद से ज्यादे उलझा हुआ है, परन्तु इतना कह देने में मेरी कोई भी हानि नहीं है कि राजा गोपालसिंह के लिखे बमूजिब काशिराज इस मकान को

अपने कब्जे में कर लेने के बाद यहाँ के रहनेवालों को कैद कर लेंगे। गोपालसिंह ने सुना था कि मायारानी इस मकान में टिकी हुई है, इसलिए यह कार्रवाई और भी जोर के साथ की गयी, मगर इतनी खैरियत है कि अभी तक वह आदमी इस शहर में नहीं पहुँचा, जिसे राजा गोपालसिंह ने चीठी देकर काशिराज के पास भेजा है। हाँ, आशा है कि सवेरा होते-होते वह शहर में आ पहुँचेगा। (कुछ सोचकर) क्या करें, आज तुम्हें देखकर तुम्हारी मुहब्बत फिर से नयी हो गयी। खैर, अगर तुम चाहोगी तो मैं तुम्हारी कुछ मदद इस समय भी कर सकूँगा।

नागर : अगर इस समय तुम मेरी सहायता करोगे तो मैं जन्म-भर तुम्हारा अहसान न भूलूँगी। मैं कसम खाकर कहती हूँ कि मैं तुम्हारी हो जाऊँगी और जोकुछ तुम कहोगे करूँगी।

श्यामलाल : अच्छा तो अब मैं बयान करता हूँ कि इस समय तुम्हारी क्या मदद कर सकता हूँ, सुनो और अच्छी तरह ध्यान देकर सुनो। मै उस आदमी को अच्छी तरह पहिचानता हूँ, जो गोपालसिंह की चीठी लेकर काशिराज के पास आ रहा है, मुझसे उसकी बहुत दिनों की जान-पहिचान है। मैं उम्मीद करता हूँ कि सवेरा होते ही वह आदमी बरना के किनारे आ पहुँचेगा। यदि वह किसी तरह गिरफ्तार कर लिया जाय तो बेशक कई दिनों तक तुम्हें सोचने-विचारने का मौका मिलेगा, क्योंकि राजा गोपालसिंह कई दिनों तक बैठे राह देखेंगे कि हमारा आदमी पत्र का जवाब लेकर, अब आता होगा।

नागर : बात तो बहुत अच्छी है। क्या तुम उसे गिरफ्तार नहीं कर सकते ?

श्यामलाल : (हँसकर) वाह वाह वाह, कहते शर्म तो नहीं आती ! हाँ, इतना कर सकता हूँ कि तुम थोड़े से सिपाही अपने साथ लेकर इस समय मेरे साथ चलो, और शहर के बाहर होकर रास्ता रोकके बैठो, जब वह आदमी आवेगा तो मैं इशारे से बता दूँगा कि यही है, फिर जो तुम्हारे जी में आवे करना, मगर मैं उसका सामना न करूँगा, क्योंकि अभी कह चुका हूँ कि मेरी उसकी जान-पहिचान बहुत पुरानी है।

नागर : जब तुम मुझ पर कृपा करके इतना काम कर सकते हो तो मेरे जाने की क्या जरूरत है? मैं थोड़े से सिपाही तुम्हारे साथ कर देती हूँ, समय पड़ने पर तुम···

श्यामलाल : बस बस बस, अब मत बोलो, मैं समझ गया कि तुम्हारी नीयत साफ नहीं है। मैं खुदगर्जों का साथ देना उचित नहीं समझता, केवल तुम्हारे ही बारे में नहीं, बल्कि मायारानी के बारे में भी जो मेरी साली

होती है मेरा यही खयाल है कि वह परले सिरे की खुदगर्ज है, दूसरे को फँसा-अपना काम निकालना, और आप अलग रहना खूब जानती है, मगर मैं क्या करूँ अपनी स्त्री से लाचार हूँ, जो मुझसे भी ज्यादे मायारानी के साथ मुहब्बत रखती है, और मैं उसे जान से ज्यादे चाहता हूँ।

श्यामलाल की बातचीत कुछ अजब ढंग की थी, जिसमें हर जगह से सचाई की बू पायी जाती थी। बात करने के समय वह अपने चेहरे के उतार-चढ़ाव को ऐसा दुरुस्त करता था कि होशियार-से-होशियार आदमी को भी उस पर किसी तरह का शक नहीं हो सकता था। नागर को उसकी बातों पर पूरा विश्वास हो गया, वह इस उम्मीद पर कि राजा गोपालसिंह के भेजे हुए आदमी को अवश्य गिरफ्तार कर लेगी, अपने साथ केवल थोड़े सिपाहियों को लेकर जाने के लिए तैयार हो गयी। इसके बाद उसने अपनी कमर से लटकते हुए तिलिस्मी खंजर पर पुनः गम्भीर निगाह डाली, मानो अपने सिपाहियों से ज्यादे उस खंजर पर भरोसा रखती है, मगर उसे इस बात का गुमान भी न था कि वह खंजर बड़ी खूबी के साथ बदल दिया गया है।

नागर ने अपनी समझ में श्यामलाल को बहुत कुछ कह-सुनकर मदद के लिए राजी किया और आप उसके साथ जाने के लिए तैयार हो गयी। उसने श्यामलाल से आधी घड़ी की छुट्टी ली और उस कोठरी के अन्दर चली गयी, जिसके दरवाजे पर पर्दा पड़ा हुआ था। आधी घड़ी के बाद वह बाहर आयी और श्यामलाल से बोली, "अब मैं हर तरह से तैयार हो गयी, आप चलिए।" इस समय भी नागर उसी पोशाक में थी, जिसमें घड़ी-भर पहिले देखी गयी थी, फर्क इतना ही था कि एक चादर उसके हाथ में थी, जिसे फाटक के बाहर होते ही अपने को सिर से पैर तक ढाँक लेने की नीयत से वह अपने साथ लायी थी।

श्यामलाल को साथ लिये हुए नागर नीचे उतरी और चक्कर खाती हुई सदर फाटक के पास पहुँची। यहाँ उसने स्याह चादर में अपने को छिपा लिया, और फाटक के बाहर रवाना हुई। श्यामलाल ने इस समय मामूली पहरा देनेवाले सिपाहियों के अतिरिक्त आठ सिपाही हर्बों से दुरुस्त वहाँ मौजूद पाये, जो फाटक के बाहर होते ही नागर और श्यामलाल के पीछे-पीछे रवाना हुए, नागर को इसके लिए कुछ कहने की जरूरत न पड़ी, जिससे श्यामलाल समझ गया कि आधी घड़ी की छुट्टी में नागर ने यह इन्तजाम किया है।

ये दसों आदमी गंगा के किनारे उतरे और वहाँ से तेजी के साथ काशी के छोर पर बहनेवाली बरना नदी की तरफ रवाना होकर, आधे घण्टे से कुछ ज्यादा देर में वहाँ जा पहुँचे। इस समय आधी रात से ज्यादे जा चुकी

और चन्द्रदेव उदय हो रहे थे। बरना नदी पार करने के लिए नदी से बीस गज ऊँचा एक मजबूत पुल बना हुआ था। इस पुल के दोनों बगल मुसाफिरों के आराम के लिए बारह दालान बने हुए थे, और उसी जगह से पुल के नीचे उतरने के लिए छोटी-छोटी सीढ़ियाँ भी बनी हुई थीं। ये दसों आदमी जब उस पुल पर पहुँचे तो नागर ने श्यामलाल से पूछा, "कहिए इसी पार ठहरने का इरादा है, या उस पार चलकर?" जिसके जवाब में श्यामलाल ने कहा, "बिना उस पार गये ठीक न होगा।"

अब ये लोग पुल के उस पार रवाना हुए, मगर आधी दूर से ज्यादे न गये होंगे कि सामने से आते हुए दो घोड़ों की आहट मिलने लगी, जिसे सुनते ही श्यामलाल ने कहा, "लीजिए हम लोगों को ज्यादे ठहरना न पड़ा। निःसन्देह ये वे ही सवार हैं, जिन्हें हम लोग गिरफ्तार किया चाहते हैं। बस अब जल्दी करना चाहिए, कहीं ऐसा न हो कि वे लोग तेजी के साथ निकल जायँ, क्योंकि वे घोड़ों पर सवार हैं, और हम लोग पैदल।"

नागर ने अपनी कमर से खंजर निकाल लिया, जिसे वह तिलिस्मी समझे हुए थी, और इसके बाद अपने आदमियों की तरफ देखके बोली, "देखो ये सवार जाने न पावें, इन्हीं को गिरफ्तार करने के लिए हम लोग आये हैं!"

बात-की-बात में वे दोनों सवार पास आ गये। नागर के सिपाही म्यान से तलवार निकालकर खड़े हो गये और ललकारकर बोले, "खबरदार, आगे मत बढ़ना!" मगर इतने में ही मालूम हुआ कि पीछे की तरफ से भी कई आदमी दौड़े आ रहे हैं। उस समय नागर घबड़ा गयी और उसे निश्चय हो गया कि अब यहाँ से बचकर निकल जाना मुश्किल है, क्योंकि हम लोग दोनों तरफ से घिर गये, हाँ, तिलिस्मी खंजर की बदौलत अलबत्ते बच सकते हैं। नागर ने तिलिस्मी खंजर का (जो वास्तव में असली न था) कब्जा दबाया, मगर किसी तरह की चमक पैदा न हुई। उसने फिरकर श्यामलाल की तरफ देखा, मगर उसे कहीं न पाया। अब उसके ताज्जुब की हद्द न रही और घबराहट के मारे वह ऐसा बौखला गयी कि थोड़ी देर तक तनोबदन की भी सुध जाती रही। इस बीच में वे आदमी भी जो पीछे से आ रहे थे, आ पहुँचे, और नागर के सिपाहियों पर टूट पड़े। वे लोग भी गिनती में उतने ही थे, जितने नागर के सिपाही थे, मगर नागर के सिपाही इतने दिलावर और मजबूत न थे कि उन आठों के मुकाबले में ठहर सकते। नागर डर के मारे चिल्लाकर एक किनारे हट गयी और भागना चाहती थी, मगर मौका न मिला। वे दोनों सवार नागर की आवाज सुनकर पहिचान गये कि वह औरत है। एक ने घोड़े से उतरकर उसे गोद में उठा लिया और

उसके हाथ से खंजर छीनकर, उसे दूसरे सवार के आगे बैठा दिया। इसके बाद खुद भी अपने घोड़े पर सवार होकर उसने ऊँची आवाज में न मालूम किससे पूछा—"यहाँ केवल एक नागर ही औरत है या और भी कोई औरत है?" इसके जवाब में किसी ने कुछ दूर से पुकारकर कहा, "अगर कोई औरत हाथ आ गयी तो ले भागो और समझो कि यही नागर है।" इस जवाब को नागर ने भी सुना और पहिचान गयी कि यह श्यामलाल की आवाज है। अपने सवाल का जवाब पाते ही वे सवार उत्तर की तरफ रवाना हो गये।

इस समय चन्द्रदेव पूरी तरह से निकलकर अपनी सुफेद चाँदनी चारों तरफ फैला रहे थे। नागर के सिपाहियों को जब मालूम हुआ कि नागर गिरफ्तार कर ली गयी तो उनकी ताकत और भी जाती रही। दो सिपाही तो जख्मी होकर जमीन पर गिर पड़े और बाकी छः अपनी जान लेकर भागे! उस समय श्यामलाल भी आकर उन आठों बहादुरों के पास खड़ा हो गया और उन लोगों की तरफ देखके बोला, "शाबाश, तुम लोगों ने अपना काम बड़ी खूबी के साथ पूरा किया, मैं बहुत खुश हूँ, अब बताओ मेरे लिए घोड़ा कहाँ है?"

श्यामलाल को देखते ही उन लोगों ने हाथ जोड़कर सिर झुकाया और एक यह कहकर उत्तर की तरफ बढ़ा कि 'ठहरिए, मैं घोड़ा लेकर अभी आता हूँ। थोड़ी देर तक सन्नाटा रहा और जब वह आदमी घोड़ा लेकर आ गया तो श्यामलाल घोड़े पर सवार हो गया तथा उन आठों से बोला, "अच्छा अब तुम लोग रामपुर जाओ, मैं अपना काम करके तुमसे मिलूँगा।"

श्यामलाल भी उत्तर की तरफ रवाना हुआ और पुल के पार होकर, उसने अपने घोड़े को तेज किया। जब लगभग एक कोस के चला गया तो देखा कि वे दोनों सवार जो नागर को उठा लाये थे, सड़क पर खड़े हैं। उन लोगों को देखकर श्यामलाल ने कहा, "शाबाश मेरे दोस्तो, तुम लोगों की जितनी तारीफ की जाय थोड़ी है, अच्छा अब यहाँ ठहरने का मौका नही है, चले चलो।"

पाँचवाँ बयान

अब हम अपने पाठकों को उस तिलिस्मी मकान की तरफ ले चलते हैं, जो कमलिनी के अधिकार में है, अर्थात् वह तालाब के बीचोबीचवाला मकान, जिसमें कुछ दिन तक कुँअर इन्द्रजीतसिंह को कमलिनी के वश में पड़ा रहना

पड़ा था।

आजकल इस मकान में कमलिनी की प्यारी सखी तारा रहती है। नौकर, मजदूर, प्यादे, सिपाही सब उसी के आधीन हैं, क्योंकि वे लोग इस बात को बखूबी जानते हैं कि कमलिनी तारा को अपनी सगी बहिन से बढ़कर मानती है, और तारा के कहे को टालना कदापि पसन्द नहीं करती। कमलिनी के कहे अनुसार तारा कुछ दिनों तक कमलिनी ही की सूरत बनकर उस मकान में रही, और इस बीच में वहाँ के नौकर-चाकरों को इसका गुमान भी न हुआ कि कमलिनी कहीं बाहर गयी है, और यह तारा है, बल्कि उन लोगों को यही विश्वास था कि तारा को कमलिनी ने किसी काम के लिए भेजा है, मगर उस दिन से जब से कमलिनी ने मनोरमा को गिरफ्तार किया था, और अपने तिलिस्मी मकान में भेजवा दिया था, तारा अपनी असली सूरत में ही रहती है, और समय-समय पर कमलिनी के हाल-चाल की खबर भी उसे मिला करती है।

देवीसिंह और भूतनाथ को साथ लिये हुए, राजा गोपालसिंह ने जब किशोरी और कामिनी को कैद से छुड़ाया था, तो उन दोनों को भी कमलिनी की इच्छानुसार इसी तिलिस्मी मकान में पहुँचा दिया था। पहुंचाने के समय देवीसिंह और भूतनाथ को साथ लिये हुए स्वयं राजा गोपालसिंह, किशोरी तथा कामिनी के संग आये थे। उस समय का थोड़ा-सा हाल यहाँ लिखना उचित जान पड़ता है।

किशोरी और कामिनी को लिये हुए जब राजा गोपालसिंह उस मकान के पास पहुँचे तो खबर करने के लिए भूतनाथ को तारा के पास भेजा। उस समय तारा किसी काम के लिए तालाब के बाहर आयी हुई थी, जब उसकी भूतनाथ से मुलाकात हुई। भूतनाथ को देखकर तारा खुश हुई, और उससे कमलिनी का समाचार पूछा, जिसके जवाब में भूतनाथ ने उस दिन से, जिस दिन से कमलिनी तारा से आखिरी मर्तबे जुदा हुई थी, आज तक का हाल कह सुनाया, जिसमें राजा गोपालसिंह का भी हाल था, और अन्त में यह भी कहा कि 'किशोरी और कामिनी को कैद से छुड़ाकर कमलिनी की इच्छानुसार उन दोनों को यहाँ पहुँचा देने के लिए स्वयं राजा गोपालसिंह आये हैं, थोड़ी ही दूर पर हैं, और तुमसे मिलना चाहते हैं'।

तारा को इसका गुमान भी न था कि राजा गोपालसिंह अभी तक जीते हैं, या मायारानी के कैदखाने में हैं। आज भूतनाथ की जुबानी यह हाल सुनकर खुशी के मारे तारा की अजब हालत हो गयी। भूतनाथ ने उसके चेहरे की तरफ देखकर गौर किया तो मालूम हुआ कि राजा गोपालसिंह के छूटने की खुशी बनिस्बत कमलिनी के तारा को बहुत ज्यादा हुई, बल्कि वह

सोचने लगा कि ताज्जुब नहीं कि खुशी के मारे तारा की जान निकल जाय, और वास्तव में यही बात थी भी। तारा के खूबसूरत भोले चेहरे पर हँसी तो साफ दिखायी दे रही थी, मगर साथ ही हँसी से गला फँस जाने के कारण उसकी आवाज रुक-सी गयी थी, वह भूतनाथ से कुछ कहना चाहती थी, मगर कह नहीं सकती थी, आँखों से आँसुओं की बूंदें गिर रही थीं, और बदन में पल-पल-भर में हलकी कँपकँपी हो रही थी।

जब भूतनाथ ने तारा की यह हालत देखी तो उसे बड़ा ही ताज्जुब हुआ, मगर यह सोचकर उसने अपने ताज्जुब को दूर किया कि अक्सर ऐसा भी हुआ करता है कि अगर घर के स्वामी पर आयी हुई कोई बला टल जाती है, तो बनिस्बत सगे रिश्तेदारों के तावेदारों को विशेष खुशी होती है। मगर इतना सोचने पर भी भूतनाथ की यह इच्छा हुई कि तारा की इस बढ़ी हुई खुशी को किसी तरह कम कर देना चाहिए, नहीं तो ताज्जुब नहीं कि इसे किसी तरह का शारीरिक कष्ट उठाना पड़े। इसी विचार से भूतनाथ ने तारा की तरफ देखके कहा—

भूतनाथ : राजा गोपालसिंह छूट गये सही, मगर अभी उनकी जिन्दगी का भरोसा न करना चाहिए।

तारा : (चौंककर) सो क्या, सो क्यों?

भूतनाथ : यह बात मैं इस विचार से कहता हूँ कि मायारानी कुछ-न-कुछ बखेड़ा जरूर मचावेगी और इसके अतिरिक्त तमाम रिआया को राजा गोपालसिंह के मरने का विश्वास हो चुका है, जिसे कई वर्ष बीत चुके है, अब देखना चाहिए उन लोगों के दिल में क्या बात पैदा होती है। खैर, जो होगा देखा जायेगा, अब तुम विलम्ब न करो, वे राह देख रहे होंगे।

भूतनाथ की बातों का जवाब देने का तारा को मौका न मिला और वह बिना कुछ कहे भूतनाथ के साथ रवाना हुई। राजा गोपालसिंह बहुत दूर न थे, इसलिए आधी घड़ी से कम ही देर में तारा वहाँ पहुँच गयी, और उसने अपनी आँखों से गोपालसिंह, किशोरी, कामिनी और देवीसिंह को देखा। तारा के दिल में खुशी का दरिया जोश के साथ लहारें ले रहा था। निःसन्देह उसके दिल में इतनी ज्यादे खुशी थी कि उसके समाने की जगह अन्दर न थी और बहुतायत के कारण रोमांच द्वारा तारा के एक-एक रोंगटे से खुशी बाहर हो रही थी। तारा के दिल में तरह-तरह के खयाल पैदा हो रहे थे, और वह अपने को बहुत सम्हाल रही थी। तिस पर भी राजा गोपालसिंह के पास पहुँचते ही, वह उनके कदमों पर गिर पड़ी।

गोपाल : (तारा को जल्दी से उठाकर) तारा, मैं जानता हूँ कि तुम्हें मेरे छूटने की हद से ज्यादे खुशी हुई है, मैं तुमसे बहुत प्रसन्न हूँ, खासकर

इस सबब से कि तुमने कमलिनी का साथ बड़ी नेकनीयती और मुहब्बत के साथ दिया और कमलिनी के ही सबब से मेरी जान बची नहीं तो मैं मर ही चुका था, बल्कि यों कहना चाहिए कि मुझे मरे हुए पाँच वर्ष बीत चुके थे। (लम्बी साँस लेकर) ईश्वर की भी विचित्र माया है। अच्छा अब जो मैं कहता हूँ उसे सुनो, क्योंकि मैं यहाँ ज्यादे देर तक नहीं ठहर सकता।

तारा : (ताज्जुब के साथ) तो क्या आप अभी यहाँ से चले जायेंगे? मकान में न चलेंगे?

गोपाल : नहीं, मुझे इतना समय नहीं, मैं बहुत जल्द कुँअर इन्द्रजीतसिंह, आनन्दसिंह और कमलिनी के पास पहुँचा चाहता हूँ।

तारा : क्या वे लोग अभी निश्चिन्त नहीं हुए?

गोपाल : हुए, मगर वैसे नहीं जैसे होने चाहिए।

गोपालसिंह की बात सुनकर तारा गौर में पड़ गयी, और देर तक कुछ सोचती रही। इसके बाद उसने सिर उठाया और कहा, "अच्छा कहिए क्या आज्ञा होती है? (किशोरी और कामिनी की तरफ इशारा करके) इनके छूटने की मुझे बहुत खुशी हुई, इनके लिए मुद्दत तक मुझे रोहतासगढ़ में छिपकर रहना पड़ा था, अब तो कुछ दिन तक यहाँ रहेंगी न!"

गोपाल : हाँ, बेशक रहेंगी, इन्हीं दोनों को पहुँचाने के लिए मैं आया हूँ। इन दोनों को मैं तुम्हारे हवाले करता हूँ, और ताकीद के साथ कहता हूँ कि कमलिनी के लौट आने तक इन्हें बड़ी खातिर के साथ रखना, देखो किसी तरह की तकलीफ न होने पावे, आशा है कि कुँअर इन्द्रजीतसिंह, आनन्दसिंह और कमलिनी को साथ लिये हुए मैं बहुत जल्दी यहाँ आऊँगा।

तारा : मैं इन दोनों को अपनी जान से ज्यादे मानूँगी, क्या मजाल कि मेरी जान रहते इन्हें किसी तरह की तकलीफ हो।

गोपाल : बस यही चाहिए, हाँ, एक बात और कहना है।

तारा : वह क्या?

गोपाल : मेरा हाल अभी तुम किसी से न कहना, क्योंकि अभी मैं गुप्त रहकर कई काम किया चाहता हूँ, इसी सबब से मैं तुम्हारे मकान में न आया तुम्हें यहाँ बुलाकर जोकुछ कहना था, कहा।

तारा : बहुत अच्छा, जैसा आपने कहा है, वैसा ही होगा।

गोपाल : अच्छा तो हम लोग जाते हैं।

किशोरी और कामिनी को तारा उस तिलिस्मी मकान में लिवा लायी, भूतनाथ और देवीसिंह पहुँचाने के लिए साथ आये, और फिर चले गये।

तारा ने किशोरी और कामिनी को बड़ी इज्जत और खातिरदारी के

साथ रक्खा। उन बेचारियों को अपनी जिन्दगी में तरह-तरह की तकलीफें उठानी पड़ी, इसलिए बहुत दुबली, दुःखी और कमजोर हो रही थीं। तरह-तरह की चिन्ताओं ने इन्हें अधमुआ कर डाला था। अब मुद्दत के बाद यह दिन नसीब हुआ कि वे दोनों बेफिक्री के साथ अपनी हालत पर गौर करें, और तारा को उसके मोहब्बताने बर्ताव पर धन्यवाद दें।

किशोरी पर कामिनी का और कामिनी पर किशोरी का बड़ा ही स्नेह था, इस समय दोनों एक साथ हैं, और यह भी सुन चुकी हैं कि कुँअर इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह मायारानी की कैद से छूट गये, और अब कुशलपूर्वक हैं, इसलिए एक प्रकार की प्रसन्नता ने उनकी जिन्दगी की मुर्झायी हुई लता पर आशारूपी पानी के दो-चार छींटे डाल दिये थे, और अब उन्हें ईश्वर की कृपा पर बहुतकुछ भरोसा हो चला था, परन्तु यह जानने के लिए दोनों ही का जी बेचैन हो रहा था कि मायारानी को हम लोगों से इतनी दुश्मनी क्यों है और वह स्वयं कौन है, क्योंकि कैद के बाद देवीसिंह से यह बात पूछ न सकी थीं, और न इसका मौका ही मिला था।

उस तिलिस्मी मकान में दो दिन और रात आराम से रहने बाद, तीसरे दिन सन्ध्या जब किशोरी और कामिनी को मकान की छत पर ले जाकर तारा दिलासा और तसल्ली देने के साथ-ही-साथ चारों तरफ की छटा दिखा रही थी, किशोरी को मायारानी का हाल पूछने का मौका मिला, और इस बात की भी उम्मीद हुई कि तारा सब बात अवश्य सच-सच कह देगी, अस्तु, किशोरी ने तारा की तरफ देखा और कहा—

किशोरी : बहिन तारा, निःसन्देह तुमने हमारी बड़ी खातिर और इज्जत की, तुम्हारी बदौलत हम लोग यहाँ बड़े चैन और आराम से हैं, जिसकी अपनी भूँडी किस्मत से कदापि आशा न थी, और ईश्वर की कृपा से कुछ-कुछ यह भी आशा हो गयी है कि हम लोगों के दिन अब शीघ्र ही फिरेंगे। इस समय मेरे दिल में बहुत-सी बातें ऐसी हैं, जिनका असल भेद मालूम न होने के कारण, जी बेचैन हो रहा है, अगर तुम बताओ तो···

तारा : वे कौन-सी बातें हैं कहिए, जोकुछ मैं जानती हूँ, अवश्य बताऊँगी।

किशोरी : पहिले यह बताओ कि मायारानी कौन है, और हम लोगों के साथ दुश्मनी क्यों करती है ?

तारा : मायारानी जमानिया की रानी है, जमानिया में एक भारी तिलिस्म है, जिसके विषय में जाना गया है कि वह कुँअर इन्द्रजीतसिंह और आनन्दसिंह के हाथ से टूटेगा, मगर मायारानी चाहती है कि वह तिलिस्म

टूटने न पावे, इसी सबब से वह इतना बखेड़ा मचा रही है।

किशोरी : और कमलिनी कौन हैं ? मैं उनका नाम कई दफे सुन चुकी हूँ और यह भी जानती हूँ कि वह हम लोगों को मदद कर रही हैं।

तारा : मायारानी की दो बहिनें और हैं। (ऊँची साँस लेकर) एक तो ये कमलिनी हैं, जिनके मकान में आप इस समय बैठी हैं, मायारानी की चाल-चलन से रंज होकर उससे अलग हो गयी हैं, और दोनों कुमारों की मदद कर रही हैं, और दूसरी सबसे छोटी बहिन लाडिली है, जो मायारानी के साथ रहती है, मगर अब सुनने में आया है कि वह भी मायारानी से अलग होकर कमलिनी का साथ दे रही है।

किशोरी : और ये राजा गोपालसिंह और भूतनाथ कौन हैं ?

तारा : भूतनाथ कमलिनी का ऐयार है और राजा गोपालसिंह जमानिया के राजा हैं, मायारानी इन्हीं की स्त्री है। पाँच वर्ष हुए जब यह बात मशहूर हुई थी कि राजा गोपालसिंह का देहान्त हो गया, यहाँ तक कि कमलिनी को भी इस बात में शक न रहा, क्योंकि उसके देखते-ही-देखते राजा गोपालसिंह की दाह-क्रिया की गयी थी। हाँ, हम लोगों को अगर किसी तरह का कुछ शक था तो केवल इतना कि राजा गोपालसिंह को मायारानी ने जहर दे दिया। खैर, जमाने से राजा गोपालसिंह की जगह मायारानी जमानिया का राज्य कर रही है। इधर जब मायारानी ने दोनों कुमारों को कैद कर लिया तो कमलिनी उन्हें छुड़ाने के लिए जमानिया गयी। उस समय कमलिनी को किसी तरह मालूम हुआ कि राजा गोपालसिंह के विषय में मायारानी ने लोगों को धोखा दिया था और वे मरे नहीं, बल्कि मायारानी ने उन्हें कैद कर रक्खा है। तब कमलिनी ने बड़े उद्योग से गोपालसिंहजी को कैद से छुड़ाया, मगर राजा साहब की यह राय हुई कि हमारे छूटने का हाल अभी किसी को मालूम न होना चाहिए, किसी मौके पर हम अपने को जाहिर करेंगे। मैंने यह जोकुछ आपसे कहा बहुत ही मुख्तसर में कहा, नहीं तो इस बीच में ऐसे-ऐसे काम हुए हैं कि सुनने से आश्चर्य होता है। मैंने जब भूतनाथ की जबानी सब हाल सुना तो आश्चर्य और हँसी से मेरी अजब हालत थी।

किशोरी : तो तुम खुलासा क्यों नहीं कहती ! क्या कहीं जाना है या कोई जरूरी काम है ?

तारा : (हँसकर) जाना कहाँ है, और काम ही क्या है ? अच्छा मैं कहती हूँ, सुनिए।

तारा ने भूतनाथ का खुलासा हाल कह सुनाया। वह जिस तरह नागर और मायारानी को धोखा देकर उनसे मिल गया, और जिस खूबसूरती से

किशोरी और कामिनी को नागर की कैद से छुड़ा लाया, उसे कहने बाद यह भी कहा कि भूतनाथ मायारानी को और भी धोखा देगा। वह मायारानी से वादा कर आया है कि राजा गोपालसिंह को जो तुम्हारे कैद से छूट गये हैं, बहुत जल्द गिरफ्तार करके तुम्हारे पास ले आऊँगा, तुम उन्हें अपने हाथ से मारकर निश्चिन्त हो जाना। निःसन्देह बड़ी ही दिल्लगी होगी, जब मायारानी को विश्वास हो जायगा कि कैद से छूट जाने पर भी राजा गोपालसिंह जीते न बचे।

तारा की जुबानी भूतनाथ का हाल सुनकर किशोरी और कामिनी को बड़ा ताज्जुब हुआ, और उसके विषय मे देर तक तीनों में बातचीत होती रही। अन्त में किशोरी ने तारा से पूछा, "जब तुम राजा गोपालसिंह के पास गयी थीं और उन्होंने मुझे तुम्हारे सुपुर्द किया था, उस समय तुमने मेरी तरफ देखकर कहा था कि 'इनके लिए मुझे मुद्दत तक छिपकर रोहतासगढ़ के किले में रहना पड़ा था' तो क्या वास्तव में तुम रोहतासगढ़ के किले में उस समय थी, जब मैं वहाँ बदकिस्मती के दिन काट रही थी? अगर तुम वहाँ थीं तो लाली और कुन्दन का हाल भी तुम्हें जरूर मालूम होगा।"

किशोरी की बातों का तारा कुछ जवाब दिया ही चाहती थी कि एक प्रकार की आवाज सुनकर चौंक पड़ी और घबड़ाकर उस पुतली की तरफ देखने लगी जो वहाँ छत पर एक छोटे-से चबूतरे के ऊपर सिर नीचे और पैर ऊपर किये खड़ी थी।

पाठक इस मकान की अवस्था को भूल न गये होंगे, क्योंकि इस मकान और पुतलियों का हाल हम सन्तति के तीसरे भाग में लिख चुके हैं। इस समय जब तारा ने इस पुतली को तेजी के साथ नाचते हुए पाया तो घबड़ा गयी, बदहवास होकर उठ खड़ी हुई और कहने लगी—"हाय बड़ा अनर्थ हुआ, अब हम लोगों की जान बचती नजर नहीं आती! हाय हाय, बहिन कमलिनी, न जाने इस समय तू कहाँ है! हाय अब मैं क्या करूँ!!"

छठवाँ बयान

हम ऊपर के किसी बयान में लिख आये हैं कि तिलिस्मी दारोगा की बदौलत जब नागर और मायारानी में लड़ाई हो गयी तो उसी समय मौका पाकर कमबख्त दारोगा वहाँ से निकल भागा और उसके थोड़ी ही देर बाद मायारानी भी नागर के धमकाने से डरकर वहाँ से चली गयी।

यद्यपि दारोगा और मायारानी मे लड़ाई हो गयी थी, मगर मेल होने

में भी कुछ देर न लगी। कायदे की बात है कि चोर, बदमाश, बेईमान आदि जितने बुरे कर्म करनेवाले हैं, प्रकृत्यानुसार कभी-कभी आपुस में लड़ भी जाते हैं और लड़ाई यहाँ तक बढ़ जाती है कि एक के खून का दूसरा प्यासा हो जाता है, बल्कि जान का नुकसान भी हो जाता है, मगर थोड़े ही अरसे के बाद फिर आपुस में मेल-मिलाप हो जाता है। इसका असल सबब यही है कि बुरे मनुष्यों के हृदय में लज्जा, शान, मान और आन की जगह नहीं होती। उन्हें इस बात का ध्यान नहीं होता है कि फलाने ने मुझे ताना मारा था। फलाने ने मेरी किसी प्रकार बेइज्जती की, अतएव कदापि उसके सामने न जाना चाहिए या किसी तरह उसे अवश्य नीचा दिखाना चाहिए, क्योंकि बुरे मनुष्य तो नीच होते ही हैं, उन्हें अपने नीच कर्मों या अपने साथियों के ताने या लड़ाई से शर्म ही क्यों आने लगी? और यही सबब है कि उनकी लड़ाई बहुत दिनों के लिए मजबूत नहीं होती। अगर ऐसा होता तो फूट और तकरार के कारण स्वयं बदमाशों का नाश हो जाता और भले आदमियों को बुरे मनुष्यों से दुःख पाने का दिन नसीब न होता। परमेश्वर की इस विचित्र माया ही ने मायारानी और दारोगा में फिर से मेल करा दिया और राजा वीरेन्द्रसिंह तथा उनके खानदान की बदनसीबी के वृक्ष में पुनः फल लगने लगे, जिसका हाल आगे चलकर मायारानी और दारोगा की बातचीत से मालूम होगा।

जिस समय नागर की धमकी से डरकर कुछ सोचती-विचारती मायारानी सदर फाटक के बाहर निकली और गंगा के किनारे की तरफ चली तो थोड़ी ही दूर जाने बाद तिलिस्मी दारोगा से जो नाक कटाकर अपनी बदकिस्मती पर रोता-कलपता धीरे-धीरे गंगाजी की तरफ जा रहा था, उसकी मुलाकात हुई। जब अपने पीछे किसी के आने की आहट पा दारोगा ने फिरकर देखा तो मायारानी पर निगाह पड़ी। यद्यपि उस समय वहाँ पर अँधेरा था, परन्तु बहुत दिनों तक साथ रहने के कारण दोनों ने एक दूसरे को बखूबी पहिचान लिया। मायारानी तुरन्त दारोगा के पैरों पर गिर पड़ी और आँसुओं से उसके नापाक पैरों को भिगोती हुई बोली---

"दारोगा साहब, निःसन्देह इस समय आपकी बड़ी बेइज्जती हुई और आप मुझसे रंज हो गये, परन्तु मैं कसम खाकर कहती हूँ कि इसमें मेरा कसूर नहीं है। थोड़ी-सी बात जो मैं आपसे कहा चाहती हूँ, आप कृपा कर सुन लीजिए, इसके बाद यदि आपका दिल गवाही दे कि बेशक मायारानी का दोष है तो आप बेखटके अपने हाथ से मेरा सर काट डालिए, मुझे कोई उज्र न होगा, बल्कि मैं प्रतिज्ञापूर्वक कहती हूँ कि मैं उस समय अपने हाथ से कलेजे में खंजर मारकर मर जाऊँगी, जब मेरी बात सुनने के बाद आप अपने

मुँह से कह देंगे कि बेशक कसूर तेरा है, क्योंकि आपको रंज करके मैं इस दुनिया में रहना नहीं चाहती। आप खूब जानते हैं कि इस दुनिया में मेरा सहायक सिवाय आपके दूसरा नहीं, अतएव जब आप ही मुझसे अलग हो जायेंगे तो दुश्मनों के हाथों सिसक-सिसककर मरने की अपेक्षा अपने हाथ से आप ही जान दे देना मैं उत्तम समझती हूँ।"

दारोगा : यद्यपि अभी तक मेरा दिल यही गवाही देता है कि आज तू ही ने मेरी बेइज्जती की और तू ही ने मेरी नाक काटी, परन्तु जब तू मेरे पैरों पर गिरकर साबित किया चाहती है कि इसमें तेरा कोई कसूर नहीं है, तो मुझे भी उचित है कि तेरी बातें सुन लूँ और इसके बाद जिसका कसूर हो उसे दण्ड दूँ।

माया : (खड़ी होकर और हाथ जोड़कर) बस बस बस, मैं इतना ही चाहती हूँ।

दारोगा : अच्छा तो इस जगह खड़े होकर बातें करना उचित नहीं। किसी तरह शहर के बाहर निकल चलना चाहिए, बल्कि उत्तम तो यह होगा कि गंगा के पार हो जाना चाहिए, फिर एकान्त में जोकुछ कहोगी मैं सुनूंगा।

दोनों वहाँ से रवाना होकर बात-की-बात में गंगा के किनारे जा पहुँचे। वहाँ दारोगा ने खूब अच्छी तरह अपनी नाक धोकर मरहम की पट्टी बाँधी जो उसके बटुए में मौजूद थी, और इसके बाद मल्लाह को कुछ देकर माया-रानी को साथ लिये दारोगा साहब गंगा पार हो गये। दारोगा ने वहाँ भी दम न लिया और लगभग आध कोस के सीधे जाकर एक गाँव में पहुँचे, जहाँ घोड़ों के सौदागर लोग रहा करते थे और उनके पास हर प्रकार के कम-कीमत और बेशकीमत घोड़े मौजूद रहा करते थे। वहाँ पहुँचकर दारोगा ने मायारानी से पूछा कि 'तेरे पास कुछ रुपया अशर्फी है या नहीं'? इसके जवाब में मायारानी ने कहा कि 'रुपये तो नहीं हैं मगर अशर्फियाँ हैं और जवाहिरात का एक डिब्बा भी जो तिलिस्मी बाग से भागती समय साथ लायी थी, मौजूद है'।

आसमान पर सुबह की सुफेदी अच्छी तरह फैली न थी। गाँव में बहुत कम आदमी जागे थे। मायारानी से पचास अशर्फी लेकर और उसे एक पेड़ के नीचे बैठाकर दारोगा साहब सराय में गये और थोड़ी ही देर में दो घोड़े मय साज के खरीद लाये। मायारानी और दारोगा दोनों घोड़ों पर सवार होकर दक्खिन की तरफ इस तेजी के साथ रवाना हुए कि जिससे जाना जाता था कि इन दोनों को अपने घोड़ों के मरने की कोई परवाह नहीं है, इसके बाद जब एक जंगल में पहुँचे, तो दोनों ने अपने-अपने घोड़ों की चाल

कम की, और बातचीत करते हुए जाने लगे।

दारोगा : अब हम लोग ऐसी जगह आ पहुँचे हैं, जहाँ किसी तरह का डर नहीं है, अब तुम्हें जो कुछ कहना हो कहो।

माया : इसके पहिले कि आपके छूटने का हाल आपसे पूछूँ, जिस दिन से आप मुझसे अलग हुए हैं, उस दिन से लेकर आज तक का अपना किस्सा मैं आपसे कहा चाहती हूँ, जिसके सुनने से आपको पूरा-पूरा हाल मालूम हो जायगा और आप स्वयं कहेंगे कि मैं हर तरह से बेकसूर हूँ।

दारोगा : ठीक है, जितने विस्तार के साथ तुम कहना चाहो कहो, मैं सुनने के लिए तैयार हूँ।

मायारानी ने ब्योरेवार अपना हाल दारोगा से कहना शुरू किया, जिसमें तेजसिंह का पागल बनके तिलिस्मी बाग में आना, चण्डूल का पहुँचना, राजा गोपालसिंह का कैद से छूटना, लाडिली का मायारानी से अलग होना, धनपत की गिरफ्तारी, अपना भागना, तिलिस्म का हाल, सुरंग में राजा गोपालसिंह, कमलिनी, लाडिली, भूतनाथ और देवीसिंह का आना, नकली दारोगा का पहुँचना और उससे बातचीत करके धोखा खाना इत्यादि जो-कुछ हुआ था, सच-सच दारोगा से कह सुनाया, इसके बाद दारोगा की चीठी पढ़ना और फिर असली दारोगा के विषय में धोखा खाना भी कुछ बनावट के साथ बयान किया, जिसे बड़े गौर से दारोगा साहब सुनते रहे और जब मायारानी अपनी बात खतम कर चुकी तो बोले—

दारोगा : अब मुझे मालूम हुआ कि जोकुछ किया हरामजादी नागर ने किया और तू बेकसूर है, या अगर तुझसे किसी तरह का कसूर हुआ भी तो धोखे में हुआ, मगर तेरी जुबानी सब हाल सुनकर मुझे इस बात का बहुत रंज हुआ कि तूने राजा गोपालसिंह के बारे में मुझे पूरा धोखा दिया।

माया : बेशक, यह मेरा कसूर है, मगर वह कसूर पुराना हो गया और धोखे में लक्ष्मीदेवी का भेद खुल जाने पर तो अब वह क्षमा के योग्य भी हो गया। अगर आप उस कसूर को भूलकर बचने का उद्योग न करेंगे तो बेशक मेरी और आपकी दोनों ही की जान दुर्गति के साथ जायगी, क्योंकि मैं फिर भी ढिठाई के साथ कहती हूँ कि उस विषय में मेरा और आपका कसूर बराबर है।

दारोगा : बेशक ऐसा ही है, खैर, मैं तेरा कसूर माफ करता हूँ, क्योंकि तूने इस समय उसे साफ-साफ कह दिया और यह भी निश्चय हो गया कि आज केवल नागर की हरामजदगी ने···

माया : (अपने घोड़े को पास ले जाकर और दारोगा का पैर छूकर)

केवल माफ ही नहीं बल्कि उद्योग करना चाहिए, जिसमें राजा गोपालसिंह, बीरेन्द्रसिंह उनके दोनों लड़के और ऐयार गिरफ्तार हो जायँ या दुनिया से उठा लिये जायँ।

दारोगा : ऐसा ही होगा और शीघ्र ही उसके लिए मैं उत्तम उद्योग करूँगा। (कुछ सोचकर) मगर मैं देखता हूँ कि इस काम के लिए रुपये की बहुत जरूरत पड़ती है।

माया : रुपये-पैसे की किसी तरह कमी नहीं हो सकती, मेरे पास लाखों रुपये के जवाहिरात हैं, बल्कि देवगढ़ी का खजाना ऐसा गुप्त है कि सिवा मेरे कोई दूसरा पा ही नहीं सकता, क्योंकि गोपालसिंह को उसकी कुछ भी खबर नहीं है।

दारोगा : (ताज्जुब से) देवगढ़ी का खजाना कैसा ? मैं भी उस विषय में कुछ नहीं जानता।

माया : वाह, आप क्यों नहीं जानते ! वह मकान आप ही ने तो धनपत को दिया था।

दारोगा : ओह देवगढ़ी क्यों कहती हो, शिवगढ़ी कहो !

माया : हाँ हाँ, शिवगढ़ी, शिवगढ़ी, मैं भूल गयी थी, नाम में गलती हुई। उसमें बड़ी दौलत है। जोकुछ मैंने धनपत को दिया, सब उसी में मौजूद है, धनपत बेचारा कैद ही हो गया, फिर निकालता कौन ?

दारोगा : बेशक, वहाँ बड़ी दौलत होगी। इसके सिवाय मुझे भी तुम दौलत से खाली न समझना, अस्तु, कोई चिन्ता नहीं देखा जायगा।

माया : मगर अभी तक यह न मालूम हुआ कि आप कहाँ जा रहे हैं ? घोड़े बहुत थक गये हैं, अब ये ज्यादे नहीं चल सकते।

दारोगा : हमें भी अब बहुत दूर नहीं जाना है, (उँगली के इशारे से बताकर) वह देखो सामने जो पहाड़ी है, उसी पर मेरा गुरुभाई इन्द्रदेव रहता है, इस समय हम लोग उसी के मेहमान होंगे।

माया : ओहो, अब याद आया, इन्हीं का जिक्र आप अक्सर किया करते थे, और कहते थे कि बड़े चालाक और प्रतापी हैं ! आपने एक दफे यह भी कहा था कि इन्द्रदेव भी किसी तिलिस्म के दारोगा हैं।

दारोगा : बेशक, ऐसा ही है और मैं उसका बहुत भरोसा रखता हूँ। उसकी बदौलत मैं अपने को राजा से भी बढ़के अमीर समझता हूँ, और बीरेन्द्रसिंह की कैद से छूटकर आजादी के साथ घूमने का दिन भी उसीके उद्योग से मिला, जिसका हाल मैं फिर कभी तुमसे कहूँगा। वह बड़ा ही धूर्त एवं बुद्धिमान और साथ ही इसके ऐयाश भी है।

माया : उम्र में आपसे बड़े हैं या छोटे ?

दारोगा : ओह मुझसे बहुत छोटा है, बल्कि यों कहना चाहिए कि अभी नौजवान है, बदन में ताकत भी खूब है, रहने का स्थान भी बहुत ही उत्तम और रमणीक है, मेरी तरह फकीरी भेष में नहीं रहता, बल्कि अमीराना ठाठ के साथ रहता है।

दारोगा की बात सुनकर मायारानी के दिल में एक प्रकार की उम्मीद और खुशी पैदा हुई, आँखों में विचित्र चमक और गालों पर सुर्खी दिखायी देने लगी, जो क्षण-भर के लिए थी, इसके बाद फिर मायारानी ने कहा—

माया : यह आपकी कृपा है कि ऐसी बुरी अवस्था तक पहुँचने पर भी मैं किसी तरह निराश नहीं हो सकती।

दारोगा : जब तक मैं जीता और तुझसे खुश हूँ तब तक तो तू किसी तरह निराश कभी भी नहीं हो सकती, मगर अफसोस अभी तीन-ही-चार दिन हुए हैं कि इसके पास से तेरी खोज में गया था, आज मेरी नाक कटी देखेगा तो क्या कहेगा ?

माया : बेशक, उन्हें बड़ा क्रोध आवेगा, जब आपकी जुबानी यह सुनेंगे कि नागर ने आपकी यह दशा की।

दारोगा : क्रोध ! अरे तू देखेगी कि नागर को पकड़वा मँगवावेगा और बड़ी दुर्दशा से उसकी जान लेगा। उसके आगे यह कोई बड़ी बात नहीं है ! लो अब हम लोग ठिकाने आ पहुँचे, अब घोड़े से उतरना चाहिए।

इस जगह पर एक छोटी-सी पहाड़ी थी, जिसके पीछे की तरफ और दाहिने-बाएँ कुछ चक्कर खाता हुआ पहाड़ियों का सिलसिला दूर तक दिखायी दे रहा था। जब ये दोनों आदमी उस पहाड़ी के नीचे पहुँचे तो घोड़े से उतर पड़े, क्योंकि पहाड़ी के ऊपर घोड़ा ले जाने का मौका न था, और इन दोनों को पहाड़ी के ऊपर जाना था। दोनों घोड़े लम्बी-लम्बी बागडोरों के सहारे एक पेड़ के साथ बाँध दिये गये और इसके बाद मायारानी को साथ लिये हुए दारोगा ने उस पहाड़ी के ऊपर चढ़ना शुरू किया। उस पहाड़ी पर चढ़ने के लिए केवल एक पगडण्डी का रास्ता था और वह भी बहुत पथरीला और ऐसा ऊबड़-खाबड़ था कि जानेवाले को बहुत सम्हलकर चढ़ना पड़ता था। यद्यपि पहाड़ी बहुत ऊँची न थी, मगर रास्ते की कठिनाई के कारण इन दोनों को ऊपर पहुँचने तक पूरा एक घण्टा लग गया।

जब दोनों पहाड़ी के ऊपर पहुँचे तो मायारानी ने एक पेड़ के नीचे खड़े होकर देखा कि सामने की तरफ जहाँ तक निगाह काम करती है, पहाड़-ही-पहाड़ दिखायी दे रहे हैं, जिनकी अवस्था आसाढ़ के उठते हुए बादलों-सी जान पड़ती है। टीले-पर-टीला, पहाड़-पर-पहाड़, क्रमशः बराबर ऊँचा ही होता गया है। यह वही विन्ध्य की पहाड़ी है, जिसका फैलाव सैकड़ों कोस

तक चला गया है। इस जगह से जहाँ इस समय मायारानी खड़ी होकर पहाड़ी के दिलचस्प सिलसिले को बड़े गौर से देख रही है, राजा बीरेन्द्रसिंह की राजधानी नौगढ़ बहुत दूर नहीं है, परन्तु यह जगह नौगढ़ की हद से बिल्कुल बाहर है।

धूप बहुत तेज थी और भूख-प्यास ने भी सता रक्खा था, इसलिए दारोगा ने मायारानी से कहा, "मैं समझता हूँ कि इस पहाड़ पर चढ़ने की थकावट अब मिट गयी होगी, यहाँ देर तक खड़े रहने से काम न चलेगा, क्योंकि अभी हम लोगों को कुछ दूर और चलना है, और भूख-प्यास से जी बेचैन हो रहा है।"

माया : क्या अभी हम लोगों को और आगे जाना पड़ेगा ? आपने तो इसी पहाड़ी पर इन्द्रदेव का घर बताया था ?

दारोगा : ठीक है, मगर उसका मतलब यह न था कि पहाड़ पर चढ़ने के साथ ही कोई मकान मिल जायगा।

माया : खैर, चलिए, अब कितनी देर में ठिकाने पहुँचने की आशा कर सकती हूँ ?

दारोगा : अगर तेजी के साथ चलें तो घण्टे-भर में।

माया : ओफ !

आगे-आगे दारोगा और पीछे-पीछे मायारानी दोनों आगे की तरफ बढ़े। ज्यों-ज्यों आगे बढ़ते जाते थे, जमीन ऊँची मिलती जाती थी, और चढ़ाव चढ़ने के कारण मायारानी का दम फूल रहा था। वह थोड़ी-थोड़ी दूर पर खड़ी होकर दम लेती थी और फिर दारोगा के पीछे-पीछे चल पड़ती थी, यहाँ तक कि दोनों एक गुफा के मुँह पर जा पहुँचे, जिसके अन्दर खड़े होकर, बराबर दो आदमी बखूबी जा सकते थे। बाबाजी ने माया-रानी से कहा कि 'अब हम लोगों को इसके अन्दर चलना पड़ेगा' जिसके जवाब में मायारानी ने कहा कि 'क्या हर्ज है, मैं चलने को तैयार हूँ, मगर जरा दम ले लूँ'।

गुफा के दोनों तरफ चौड़े-चौड़े दो पत्थर थे, जिनमें से एक पर दारोगा और दूसरे पर मायारानी बैठ गयी। इन दोनों को बैठे अभी ज्यादा देर नहीं हुई थी कि गुफा के अन्दर से एक आदमी निकला, जिसने पहिली निगाह में मायारानी को और दूसरी निगाह में दारोगा को देखा। मायारानी को देखकर उसे ताज्जुब हुआ, मगर जब दारोगा को देखा तो झपटकर उसके पैरों पर गिर पड़ा और बोला, "आश्चर्य है कि आज माथारानी को लेकर आप यहाँ आये हैं !"

दारोगा : हाँ, एक भारी आवश्यकता पड़ जाने के कारण ऐसा करना

पड़ा। कहो तुम अच्छे तो हो ? बहुत दिन पर दिखायी दिए।

आदमी : जी, आपकी कृपा से बहुत अच्छा हूँ, हाल ही में जब आप यहाँ आये थे तो मैं एक जरूरी काम के लिए भेजा गया था, इसी से आपके दर्शन न कर सका, कल जब मैं लौटकर आया तो मालूम हुआ कि बाबाजी आये थे, पर एक ही दिन रहकर चले गये (आश्चर्य के ढग से) मगर यह नाक में पट्टी कैसे बँधी है !

दारोगा : कल लड़ाई में एक आदमी ने बेकसूर मुझे जख्मी किया, इसी से पट्टी बाँधने की आवश्यकता हुई।

आदमी : (क्रोध में आकर) किसकी मौत आयी है, जिसने हम लोगों के होते आपके साथ ऐसा किया ! जरा नाम तो बताइए !

दारोगा : अब आया हूँ तो अवश्य सबकुछ कहूँगा, पहिले यह बताओ कि इस समय तुम जाते कहाँ हो ?

आदमी : एक काम के लिए महाराज ने भेजा है, सन्ध्या होने के पहिले ही लौट आऊँगा, यदि आज्ञा हो तो महाराज के पास जाकर आपके आने का संवाद दूँ ?

दारोगा : नहीं नहीं, इसकी आवश्यकता नहीं है, मैं चला जाऊँगा तुम जाओ, जब लौटोगे तो रात को बातचीत होगी।

आदमी : जो आज्ञा।

दारोगा का पैर छूकर वह आदमी वहाँ से तेजी के साथ चला गया, और इसके बाद मायारानी ने दारोगा से कहा, "अफसोस, यहाँ तक नौबत आ पहुँची कि अब हरएक आदमी बारह परदे के अन्दर रहनेवाली मायारानी को खुल्लम-खुल्ला देख सकता है, जैसाकि अभी इस गैर आदमी ने देखा।"

दारोगा : तुझे इस बात का अफसोस न करना चाहिए। समय ने जब तुझे अपने घर से बाहर कर दिया, रिआया से बदतर बना दिया, हुकूमत छीनकर बेकार कर दिया बल्कि यों कहना चाहिए कि वास्तव में छिपकर जान बचाने लायक कर दिया, तो परदे और इज्जत का खयाल कैसा ! किस जात-बिरादरी के वास्ते ? क्या तुझे आशा है कि राजा गोपालसिंह अब तुझे अपनी बनाकर रक्खेगा ? कभी नहीं। फिर लज्जा का ढकोसला क्यों ? हाँ, समय ने अगर तेरा नसीब चमकाया और तू हम लोगों की मदद से गोपालसिंह, बीरेन्द्रसिंह तथा उसके लड़कों पर फतह पाकर पुनः तिलिस्म की रानी हो गयी तो तुझे उस समय आज की निर्लज्जता की परवाह न रहेगी, क्योंकि रुपयेवालों का ऐब जमाना नहीं देखता, रुपयेवाले की खातिर में कमी नहीं होती, रुपयेवालों को कोई दोष नहीं लगता, और रुपयेवालों की पहिली अवस्था पर कोई ध्यान नहीं देता, फिर इसके लिए सोचने-विचारने से क्या

फायदा ? तू आज से अपने को मर्द समझ ले और मर्दों की ही तरह जोकुछ मैं सलाह दूं, कर।

मायारानी : बात तो आपने ठीक कही, वास्तव में ऐसा ही है ! अब आज से मैं ऐसी तुच्छ बातों पर ध्यान न दूंगी। अच्छा जहाँ चलना हो चलिए मैं बखूबी आराम कर चुकी। हाँ, यह तो बताइए कि वह आदमी कौन था, और उसने मुझे पहिचाना कैसे ?

दारोगा : वह इन्द्रदेव का ऐयार है, मुझसे मिलने के लिए बराबर आया करता था, यही सबब है कि तुझे पहिचानता है, और फिर ऐयारों से यह बात कुछ दूर नहीं है कि तुझ-सी मशहूर को पहिचान लिया !

इसके बाद दारोगा उठ खड़ा हुआ, और मायारानी को अपने पीछे-पीछे आने के लिए कहकर गुफा के अन्दर रवाना हुआ।

सातवाँ बयान

मायारानी इस गुफा को साधारण और मामूली समझे हुए थी, मगर ऐसा न था। थोड़ी दूर जाने बाद पूरा अन्धकार मिला, जिससे वह घबड़ा गयी, मगर दारोगा के ढाढ़स देने से उसका कपड़ा पकड़े हुए धीरे-धीरे रवाना हुई। लगभग सौ कदम जाने बाद दारोगा रुका और बायीं तरफ घूमकर चलने लगा। अब मायारानी पड़िले के बनिस्बत ज्यादे डरी और उसने घबड़ाकर दारोगा से पूछा, "क्या हम लोग चाँदने में न पहुँचेंगे ? कही ऐसा न हो कि कोई दरिन्दा जानवर मिल जाय, और हम लोगों को फाड़ खाये।"

दारोगा : (जोर से हँसकर) क्या इतने ही में तेरी हिम्मत न जवाब दे दिया ? तिलिस्म की रानी होकर इतना छोटा दिल, आश्चर्य है !

माया : (अपने डरे हुए दिल को सम्हालकर) नहीं नहीं, मैं डरी और घबरायी नहीं हूँ, हाँ, भूख-प्यास और थकावट के कारण बेहाल हो रही हूँ, इसी से मैंने पूछा कि यह गुफा, जिसे सुरंग कहना चाहिए किसी तरह समाप्त भी होगी या नहीं ?

दारोगा : घबड़ा मत अब हम लोग बहुत जल्द इस अँधेरे से निकलकर ऐसे दिलचस्प मैदान में पहुँचेंगे, जिसे देखकर तू बहुत ही खुश होगी।

माया : इन्द्रदेव के मकान में जाने के लिए यही एक राह है या और भी कोई ?

दारोगा : बस इस रास्ते के सिवाय और रास्ता नहीं है।

माया : अगर ऐसा है तो मालूम होता है कि आपके इन्द्रदेव बहुत मे

दुश्मन रखते हैं, जिनके डर से उन्हें इस तरह छिपकर रहना पड़ता है।

दारोगा : (हँसकर) नहीं नहीं, ऐसा नहीं है, इन्द्रदेव इस योग्य है कि अपने दुश्मनों को बात-की-बात में बरबाद कर दे। वह इस स्थान में जानकर नहीं रहता, बल्कि मजबूर होकर उसे यहाँ रहना पड़ता है, क्योंकि जिस तिलिस्म का वह दारोगा है, वह तिलिस्म भी इसी स्थान में है।

माया : ठीक है, तो क्या इस तिलिस्म का कोई राजा नहीं है ?

दारोगा : नहीं, जिस समय यह तिलिस्म तैयार हुआ था, उस समय इसके मालिक ने इस बात का प्रबन्ध किया था कि उसके खानदान में जो-कोई हो, वह तिलिस्म का राजा नहीं बने, बल्कि दारोगा की तरह रहे। उसी के खानदान में यह इन्द्रदेव है। इसे तिलिस्म की हिफाजत करने के सिवाय और किसी तरह का अधिकार तिलिस्म पर नहीं, मगर दौलत की इसे किसी तरह की कमी नहीं है।

माया : अगर पुराने प्रबन्ध को तोड़कर वह तिलिस्मी चीजों पर अपना दखल जमावे तो उसे कौन रोक सकता है ?

दारोगा : रोकनेवाला तो कोई नहीं है, मगर वह तिलिस्म का भेद कुछ भी नहीं जानता, न मालूम यह तिलिस्म इतना गुप्त किसलिए रक्खा गया है।

माया : मैं तो अपने तिलिस्म से बहुत फायदा उठाती थी।

दारोगा : बेशक, ऐसा ही है, मगर उस तिलिस्म में भी जो खास-खास अलभ्य वस्तुएँ हैं, उनका मालिक तिलिस्म तोड़नेवाले के सिवाय और कोई नहीं हो सकता। अच्छा अब ठहर जा, हम लोग ठिकाने पहुँच गये हैं, यहाँ एक दरवाजा है, जिसे खोलकर आगे चलना होगा।

दारोगा की बात सुनकर मायारानी रुक गयी। मगर अँधेरे में उसे यह न मालूम हुआ कि बाबाजी क्या कर रहे हैं। दस-बारह पल से ज्यादे देर न लगी होगी कि एक आवाज ठीक उसी प्रकार की आयी, जैसी लोहे का हल्का दरवाजा खुलने के समय आती है। बाबाजी ने मायारानी का हाथ पकड़के उसे दो-तीन कदम आगे कर दिया, तथा स्वयं पीछे रह गये और फिर उस दरवाजे के बन्द होने की आवाज आयी। इसके बाद बाबाजी ने मोमबत्ती जलायी, जिसका सामान दरवाजे के पास ही किसी ठिकाने पर था।

बहुत देर तक अँधेरे में रहने के कारण मायारानी बहुत घबड़ा गयी थी। अब रोशनी हो जाने से वह चैतन्य हो गयी और आँखें फाड़कर चारों तरफ देखने लगी। केवल उधर की तरफ जिधर से वह आयी थी, लोहे का एक तख्ता दिखलायी दिया, जिसमें दरवाजे का कोई आकार न था, इसके अतिरिक्त सब तरफ पत्थर ही दिखायी पड़ता था, और साफ मालूम होता

था कि मानवीय उद्योग से पहाड़ काटकर यह रास्ता या सुरंग तैयार की गयी है, मगर वह सुरंग इसी जगह पर नहीं समाप्त हुई थी, बल्कि बायीं तरफ तीन-चार सीढ़ियाँ नीचे उतरके और भी कुछ दूर तक गयी हुई थी। मायारानी ने आश्चर्य से चारों तरफ देखने बाद बाबाजी से कहा, "यह लोहे की दीवार जो सामने दिखायी पड़ती है, निःसन्देह दरवाजा है, परन्तु इसमें दरवाजे का कोई आकार मालूम नहीं पड़ता, आपने इसे किस तरकीब से खोला या बन्द किया था?" इसके जवाब में दारोगा ने कहा, "इस दरवाजे को खोलने और बन्द करने की तरकीब नियमानुसार इन्द्रदेव की आज्ञा बिना मैं नहीं बता सकता, और यह मोमबत्ती भी मैंने इसलिए जलायी है कि (सीढ़ियों की तरफ इशारा करके) इन सीढ़ियों को तू अच्छी तरह देख ले, जिसमें उतरने के समय ठोकर न लगे।" इतना कहते ही दारोगा ने मोमबत्ती बुझाकर उसे उसी ठिकाने रख दिया, और मायारानी का हाथ पकड़के सीढ़ियों के नीचे उतरा। मायारानी को अपनी बातों का जवाब न पाने से रंज हुआ, मगर वह कर ही क्या सकती थी, क्योंकि इस समय वह हर तरह से दारोगा के आधीन थी।

सीढ़ियाँ उतरने के साथ ही सामने की तरफ थोड़ी दूर पर उजाला दिखायी दिया और मालूम हुआ कि उस ठिकाने सुरंग समाप्त हुई है। आश्चर्य, डर, चिन्ता और आशा के साथ मायारानी ने यह रास्ता भी तै किया और सुरंग के आखिरी दरवाजे के बाहर कदम रखने के साथ ही एक रमणीक स्थान की छटा देखने लगी।

इस समय मायारानी की आँखों के सामने पहाड़ी गुलबूटों से हरा-भरा एक चौखूटा मैदान था, जिसकी लम्बाई चार-सौ गज और चौड़ाई साढ़े-तीन सौ गज से ज्यादे न होगी। यह मैदान चारों तरफ से ढालवीं और सर-सब्ज पहाड़ी से घिरा हुआ था, जिस पर के पेड़ों और सुन्दर-सुन्दर लताओं के बीच से निकलकर नीरोग हवा के नर्म-नर्म झपटे आ रहे थे। सामने की तरफ पहाड़ी की आधी ऊँचाई से झरना गिर रहा था, जिसका बिल्लौर की तरह साफ जल नीचे आकर बारीक और पेंचीली नालियों का-सा आनन्द दिखलाता हुआ रमने के खुशनुमा कोमल और सुन्दर फूल-पत्तोंवाले पौधों को तरी पहुँचा रहा था। खुशनुमा और मीठी बोलियों से दिल लुभा लेने-वाली छोटी-छोटी चिड़ियों की सुरीली आवाजों में दबी हुई रसीले फूलों पर घूम-घूमकर बलाएँ लेते हुए मस्त भौरों के परों की आवाज कमजोर उदास और मुरझाये दिल को ताकत और खुशी देने के साथ चैतन्य कर रही थी। इस स्थान के आधे हिस्से पर इस समय अपना दखल जमाये हुए सूर्य भगवान की कृपा ने धूप-छाँह की हुबाबी चादर इस ढंग से बिछा रक्खी थी कि तरह-

तरह की चिन्ताओं और खुटकों से विकल मायारानी को लाचार होकर, मस्ती और मदहोशी के कारण थोड़ी देर के लिए अपने को भुला देना पड़ा और जब वह कुछ होश में आयी तो सोचने लगी कि ऐसे अनूठे स्थान का अपूर्व आनन्द लेनेवाला भी कोई यहाँ है, या नहीं। इस विचार के साथ ही दाहिनी तरफ की पहाड़ीवाले, एक खुशनुमा बँगले पर उसकी निगाह जा पड़ी, मगर उसे अच्छी तरह देखने भी न पायी थी कि दारोगा साहब हँसकर बोल उठे, "अब यहाँ कब तक खड़ी रहोगी, चलो आगे बढ़ो !"

जिस जगह मायारानी खड़ी थी, उसकी ऊँचाई जमीन से लगभग बास-पचीस गज के होगी। नीचे उतरने के लिए छोटी-छोटी सीढ़ियाँ बनी हुई थीं, जिन पर पहिले दारोगा ने अपना मनहूस (अमंगल) कदम रक्खा और उसके पीछे-पीछे मायारानी रवाना हुई।

ये दोनों उस खुशनुमा जमीन की कुदरती क्यारियों पर घूमते हुए उस पहाड़ी के नीचे पहुँचे, जिस पर वह खूबसूरत बँगला बना हुआ था, और उसी समय दो आदमियों को पहाड़ी से नीचे उतरते हुए देखा। बात-की-बात में ये दोनों आदमी दारोगा के पास आ पहुँचे, और दण्ड प्रणाम के बाद बोले, "इन्द्रदेवजी ने आपको दूर ही से देखके पहिचान लिया, मगर माया-रानी को न पहिचान सके, जो इस समय आपके साथ हैं।"

यह जानकर मायारानी को आश्चर्य हुआ कि यहाँ का हरएक आदमी उसे अच्छी तरह जानता और पहिचानता है, मगर इस विषय में कुछ पूछने का मौका न समझकर वह चुप हो रही। बाबाजी ने दोनों ऐयारों से पूछा, "कहो कुशल तो है ? इन्द्रदेव अच्छे हैं ?"

एक : जी हाँ, बहुत अच्छे हैं। मगर यह तो कहिए आपने नाक पर पट्टी क्यों बाँधी हुई है ?

दारोगा : इसका हाल इन्द्रदेव के सामने कहूँगा, उसी समय तुम भी सुन लेना। चलो जल्दी चलें, भूख-प्यास और थकावट से जी बेचैन हो रहा है।

ये चारों आदमी पहाड़ी के ऊपर चढ़ने लगे। यद्यपि इन सभों को बहुत ऊँचे नहीं चढ़ना था, परन्तु मायारानी बहुत थकी और सुस्त हो रही थी, इसलिए बड़ी कठिनाई के साथ चढ़ी और ऊपर पहुँचने तक मामूली से बहुत ज्यादे देर लगी। ऊपर पहुँचकर मायारानी ने देखा कि वह बँगला छोटा और साधारण नहीं है, बल्कि बहुत बड़ा और अच्छे ढंग का बना हुआ है, मगर यहाँ पर इस मकान की बनावट तथा उसके सुन्दर-सुन्दर कमरों की सजावट का हाल न लिखकर मतलब की बातें लिखना ही उचित जान पड़ता है।

उस समय इन्द्रदेव अगवानी के लिए स्वयं बाहर निकल आया, जब ये

दोनों आदमी उस कमरे के पास पहुँचे, जिसमें वह रहता था। वह इन दोनों से बड़े तपाक से मिला और खातिर के साथ अन्दर ले जाकर बैठाया।

इन्द्रदेव : (दारोगा से) आपके और मायारानी के कष्ट करने का सबब पूछने के पहिले मैं जानना चाहता हूँ कि आपने नाक पर पट्टी क्यों बाँध रक्खी है ?

दारोगा : तुमसे विदा होकर मैंने जोकुछ तकलीफें उठायी हैं, यह उसी का नमूना है। जब मैं जरा दम लेने के बाद अपना किस्सा तुमसे कहूँगा, तब सब हाल मालूम हो जायगा, इस समय भूख-प्यास और थकावट से जी बेचैन हो रहा है।

दारोगा का जवाब सुनकर इन्द्रदेव चुप हो रहा और फिर कुछ बात-चीत न हुई। दारोगा और मायारानी के खाने-पीने का उत्तम प्रबन्ध कर दिया गया, और उन दोनों ने कई घण्टे तक आराम करके अपनी थकावट दूर की। जब सन्ध्या होने में थोड़ी देर बाकी थी तब इन्द्रदेव स्वयं उस कमरे में आया, जिसमें दारोगा का डेरा पड़ा हुआ था। वह कमरा इन्द्रदेव के कमरे के बगल ही में था और उसमें जाने के लिए केवल एक मामूली दरवाजा था। उस समय मायारानी दारोगा के पास बैठी अपना दुखड़ा रो रही थी। इन्द्रदेव के आते ही वह चुप हो गयी और बाबाजी ने खातिर के साथ इन्द्रदेव को अपने बगल में बैठाया।

इन्द्रदेव : मैं समझता हूँ कि इस समय आप अपना हाल बखूबी कह सकेंगे, जिसके सुनने के लिए मेरा जी बेचैन हो रहा है।

दारोगा : वह कहने के लिए इस समय मैं स्वयं ही तुम्हारे पास आने-वाला था, अच्छा हुआ कि तुम आ गये।

दारोगा ने अपना और मायारानी का हाल जोकुछ हम ऊपर लिख आये हैं, इन्द्रदेव से पूरा-पूरा बयान किया। इन्द्रदेव चुपचाप सुनता गया पर अन्त में जब नागर द्वारा बाबाजी की नाक काटने का हाल सुना तो उसे यकायक क्रोध चढ़ आया। उसका चेहरा लाल हो गया, होंठ हिलने लगे, और वह बिना कुछ कहे बाबाजी के पास से उठकर चला गया। यह हाल देखकर मायारानी को ताज्जुब मालूम हुआ और उसने दारोगा से पूछा, "क्या आप कह सकते हैं कि इन्द्रदेव आपकी बातों का कोई जवाब दिये बिना ही क्यों चला गया ?"

दारोगा : मालूम होता है कि मेरा हाल सुनकर उसे हद्द से ज्यादे क्रोध चढ़ आया और वह कोई कार्रवाई करने के लिए चला गया है।

माया : इन्द्रदेव नागर को जानता है ?

दारोगा : बहुत अच्छी तरह, बल्कि नागर का जितना भेद इन्द्रदेव को

मालूम है, उतना तुमको भी मालूम न होगा

माया : सो कैसे ?

दारोगा : जिस जमाने में नागर रण्डियों की तरह बाजार में बैठती थी और मोतीजान के नाम से मशहूर थी, उस जमाने में इन्द्रदेव भी कभी-कभी उसके पास भेष बदलकर गाना सुनने की नीयत से जाया करता था, और उसकी हरएक बातों की इसे खबर थी, मगर इन्द्रदेव का ठीक-ठीक हाल बहुत दिनों तक सोहबत करने पर भी नागर को मालूम न हुआ, वह इन्द्रदेव को केवल एक सरदार और रुपयेवाला ही जानती थी।

आधे घण्टे तक इसी किस्म की बातें होती रहीं, और इसके बाद इन्द्रदेव के ऐयार सर्यूसिंह ने कमरे के अन्दर आकर कहा, "इन्द्रदेवजी आपको बुलाते हैं, आप अकेले जाइए और नजरबाग में मिलिए, जहाँ वह अकेले टहल रहे हैं।"

इस सन्देश को सुनकर दारोगा उठ खड़ा हुआ और मायारानी को अपने कमरे में जाने के लिए कह इन्द्रदेव के पास चला गया।

इस मकान के पीछे की तरफ एक छोटा-सा नजरबाग था, जो अपनी खुशनुमा क्यारियों और गुलबूटों की बदौलत बहुत ही भला मालूम पड़ता था। जब दारोगा वहाँ पहुँचा तो उसने इन्द्रदेव को उसी जगह टहलते हुए पाया।

इन्द्रदेव : भाई साहब, आज आपकी जुबान से मैंने वह बात सुनी है, जिसके सुनने की कदापि आशा न थी।

दारोगा : बेशक, नागर की बदमाशी का हाल सुनकर आपको बहुत ही रंज हुआ होगा।

इन्द्रदेव : नहीं मेरा इशारा नागर की तरफ नहीं है। इसमें तो कोई सन्देह नहीं कि नागर ने आपके साथ जोकुछ किया, बहुत बुरा किया और मैं उसे गिरफ्तार कर लेने के लिए एक ऐयार और कई सिपाही रवाना भी कर चुका हूँ, मगर मैं उन बातों की तरफ इशारा कर रहा हूँ, जो राजा गोपालसिंह से सम्बन्ध रखती हैं। मुझे इस बात का गुमान भी न था कि राजा गोपालसिंह अभी तक जीते हैं ! मुझे स्वप्न में भी इस बात का ध्यान नहीं आ सकता था कि मायारानी वास्तव में गोपालसिंह की स्त्री नहीं है, और आपकी कृपा से लक्ष्मीदेवी की गद्दी पर जा बैठी है ! ओफ ओह, दुनिया भी अजब चीज है, और उसमें विहार करनेवाले दुनियादार भी कैसे मनसूबे गाँठते हैं ?

इन्द्रदेव की बातें सुनकर दारोगा चौंक पड़ा और उसे विश्वास हो गया कि हमारी आशालता में अब कोई नये ढंग का फूल खिला चाहता है।

उसने घबड़ाकर इन्द्रदेव की तरफ देखा, जिसका जमीन की तरफ झुका हुआ चेहरा इस समय बहुत ही उदास हो रहा था।

दारोगा : बेशक मायारानी को लक्ष्मीदेवी बनाने में मेरा कसूर था, मगर राजा गोपालसिंह के बारे में मैं बिल्कुल निर्दोष हूँ। मुझे इस बात का गुमान भी न था कि राजा साहब को मायारानी ने कैद कर रक्खा है, मैं वास्तव में उन्हें मरा हुआ समझता था।

इन्द्रदेव : (इस ढंग से जैसे दारोगा की बात उसने सुनी ही नहीं) क्या आप कह सकते हैं कि राजा गोपालसिंह ने आपके साथ कोई बुराई की थी?

दारोगा : नहीं नहीं, उस बेचारे ने मेरे साथ कोई बुराई नहीं की!

इन्द्रदेव : क्या आप कह सकते हैं कि गोपालसिंह के बाद आप विशेष धनी हो गये हैं?

दारोगा : नहीं।

इन्द्रदेव : क्या आप इतना भी कह सकते हैं कि राजा साहब के समय की बनिस्बत आज ज्यादे प्रसन्न हैं?

दारोगा : (ऊँची साँस लेकर) हाय, प्रसन्नता तो मानो मेरे लिए सिरजी ही नहीं गयी।

इन्द्रदेव : नहीं नहीं, आप ऐसा कदापि नहीं कह सकते, बल्कि ऐसा कहिए कि ईश्वर की दी हुई प्रसन्नता को आपने लात मारकर घर से निकाल दिया।

दारोगा : बेशक, ऐसा ही है।

इन्द्रदेव : (जोर देकर) और आज नाक कटाकर भी दुनिया में मुंह दिखाने के लिए आप तैयार हैं; और पिछली बातों पर जरा भी अफसोस नहीं करते! जिस कमबख्त मायारानी ने अपना धर्म नष्ट कर दिया, जो मायारानी लोकलाज को एकदम तिलांजली दे बैठी, जिस दुष्टा ने अपने सिरताज राजा गोपालसिंह के साथ घात किया, जिस पिशाचिनी ने अपने माता-पिता की जान ली, जिसकी बदौलत आपको कारागार (कैदखाने) का मजा चखना पड़ा और जिसके सतसंग से आप अपनी नाक कटा बैठे, आज पुनः उसी की सहायता करने के लिए आप तैयार हुए हैं, और इस पाप में मुझसे सहायता लेकर, मुझे भी नष्ट किया चाहते हैं! वाह भाई साहब वाह, आपने गुरु का अच्छा नाम रोशन किया, और मुझे भी अच्छा उपदेश कर रहे हैं! बड़े अफसोस की बात है कि आप-सा एक अदना आदमी जो एक रण्डी के हाथ से अपनी नाक नहीं बचा सका, राजा बीरेन्द्रसिंह ऐसे प्रतापी राजा का नामोनिशान मिटाने के लिए तैयार हो जाय! मैंने तो राजा बीरेन्द्रसिंह का केवल इतना ही कसूर किया कि आपको उनके कैदखाने से निकाल

लाया, और अब इसी अपराध को क्षमा कराने के उद्योग में लगा हूँ, मगर आप, जिसकी बदौलत मैं अपराधी हुआ हूँ, अब फिर·····

इतना कहते-कहते इन्द्रदेव रुक गया, क्योंकि पल-पल भर में बढ़ते जानेवाले क्रोध ने उसका कण्ठ बन्द कर दिया। उसका चेहरा लाल हो रहा था, और होंठ काँप रहे थे।

दारोगा का चेहरा जर्द पड़ गया, पिछले पापों ने उसके सामने आकर, अपनी भयानक मूर्ति दिखाके डराना शुरू किया, और वह दोनों हाथों से अपना मुँह ढाँक रोने लगा।

थोड़ी देर तक सन्नाटा रहा इसके बाद इन्द्रदेव ने फिर कहना शुरू किया—

"हाय, मुझे रह-रहकर वह जमाना याद आता है, जिस जमाने में दयावान और धर्मात्मा राजा गोपालसिंह की बदौलत आपकी कदर और इज्जत होती थी। जब कोई सौगात उनके पास आती थी, तब वह 'लीजिए बड़े भाई' कहकर आपके सामने रखते थे। जब कोई नया काम करना होता था, तो 'कहिए बड़े भाई आप क्या आज्ञा देते हैं'? कहकर आपसे राय लेते थे, और जब उन्हें क्रोध चढ़ता था और उनके सामने जाने की किसी की हिम्मत नहीं पड़ती थी, तब आपकी सूरत देखते ही सिर झुका लेते थे, और बड़े उद्योग से अपने क्रोध को दबाकर हँस देते थे। क्या कोई कह सकता है कि आपसे डरकर या दबकर वे ऐसा करते थे? नहीं कदापि नहीं, इसका सबब केवल प्रेम था। वे आपको चाहते थे और आप पर विश्वास रखते थे कि स्वामीजी ने (जिनके आप शिष्य हैं) आपको अच्छी दीक्षा और शिक्षा दी होगी। उन्हें यह मालूम न था कि आप इतने बड़े विश्वासघाती हैं! हाय, उनके साथ आपका ऐसा बरताव! छिःछिः धिक्कार है, ऐसी जिन्दगी पर! किसके लिए? किस दुनिया में मुँह दिखाने के लिए? क्या आप नहीं जानते कि ईश्वर भी कोई वस्तु है! खैर, जाइए, इस समय मैं विशेष बात नहीं कर सकता। आप यह न समझिए कि मैं अपने घर में से चले जाने के लिए आपसे कहता हूँ, बल्कि यह कहता हूँ कि अपने कमरे में जाकर आराम कीजिए। आपको चार दिन की मोहलत दी जाती है, इस बीच में अच्छी तरह सोच लीजिए कि किस तरह से आपकी भलाई हो सकती है, और आपको किस रास्ते पर चलना उचित है। मगर खबरदार, इस समय जो-कुछ बातें हुई हैं, उनका जिक्र मायारानी से न कीजियेगा और इन चार दिनों के अन्दर मुझसे मिलने की भी आशा न रखियेगा।

आठवाँ बयान

दारोगा जिस समय इन्द्रदेव के सामने से उठा तो बिना इधर-उधर देखे अपने कमरे में चला गया, और चादर से मुँह ढाँपकर पलँग पर सो रहा। घण्टे-भर रात गयी होगी, जब मायारानी यह पूछने के लिए कि इन्द्रदेव ने आपको क्यों बुलाया था, बाबाजी के कमरे में आयी, मगर जब बाबाजी को चादर से मुँह छिपाए हुए देखा तो उसे आश्चर्य हुआ। वह उनके पास गयी और चादर हटाकर देखा तो बाबाजी को जागते पाया। इस समय बाबाजी का चेहरा जर्द हो रहा था और ऐसा मालूम पड़ता था कि उनके शरीर में खून का नाम भी नहीं है, या महीनों से बीमार हैं।

बाबाजी की अवस्था देखकर मायारानी सन्न हो गयी और बाबाजी का मुँह देखने लगी।

दारोगा : इस समय जाओ सो रहो, मेरी तबीयत ठीक नहीं है।

माया : मैं केवल इतना ही पूछने आयी थी कि इन्द्रदेव ने आपको क्यों बुलाया था, और क्या कहा !

दारोगा : कुछ नहीं, उसने केवल धीरज दिया और कहा कि चार-पाँच दिन ठहरो, मैं तुम लोगों का बन्दोबस्त कर देता हूँ, तब तक नागर भी गिरफ्तार होकर आ जाती है, लोग उसे पकड़ने के लिए गये हैं।

माया : मगर आपकी अवस्था तो कुछ और कह रही है !

दारोगा : बस इस समय और कुछ न पूछो, मैं अभी कह चुका हूँ कि मेरी तबीयत ठीक नहीं है, मैं इस समय बात भी मुश्किल से कर सकता हूँ।

मायारानी और कुछ भी न पूछ सकी, उलटे पैर लौटकर अपने कमरे में चली गयी और पलँग पर लेटके सोचने-विचारने लगी, मगर थकावट, माँदगी और चिन्ता ने उसे विशेष देर तक चैतन्य न रहने दिया, और शीघ्र ही वह नींद की गोद में जाकर खर्राटे लेने लगी।

रात बीत गयी। सवेरा होने पर दारोगा ने दरियाफ्त किया तो मालूम हुआ कि इन्द्रदेव यहाँ नहीं हैं। एक आदमी ने कहा कि तीन-चार दिन के बाद आने का वादा करके कहीं चले गये हैं, और यह कह गये हैं कि आप और मायारानी तब तक यहाँ से जाने का इरादा न करें। अब बाबाजी को मालूम हुआ कि दुनिया में उनका साथी कोई भी नहीं है, और उनके बुरे कर्मों पर ध्यान देकर कोई भी उनकी मदद नहीं कर सकता। उन्हें अपने कर्मों का फल अवश्य भोगना ही होगा।

नौवाँ बयान

दारोगा साहब को मकान में बैठकर झक मारते हुए चार दिन बड़ी मुश्किल से बीते और आज पाँचवाँ दिन है। जैसे ही बाबाजी अपनी चारपाई पर से उठकर बाहर निकले, वैसे ही एक आदमी ने आकर सन्देश दिया कि 'इन्द्रदेवजी आपको बुलाते हैं, मायारानी को साथ लेकर नजरबाग में जाइए'। यह सुनते ही बाबाजी लौटकर मायारानी के कमरे में गये और मायारानी को साथ लिये हुए उसी नजरबाग में पहुँचे जहाँ पहिले दिन उनकी नसीहत की गयी थी। बाबाजी और मायारानी ने देखा कि इन्द्रदेव एक कुर्सी पर बैठा हुआ है, और उसके बगल में दो कुर्सियाँ खाली पड़ी हैं, उसके सामने दो आदमी नागर के दोनों बाजू पकड़े खड़े हैं। नागर का हाथ पीठ पीछे मजबूती के साथ बँधा हुआ है। इन्द्रदेव ने दारोगा और मायारानी को बैठने का इशारा किया, और वे दोनों उन कुर्सियों पर बैठ गये, जो इन्द्रदेव के बगल में खाली पड़ी हुई थीं।

बाबाजी की अवस्था देखकर मायारानी को निश्चय हो गया था कि इन्द्रदेव ने मदद से साफ-साफ इनकार कर दिया है, और इसी से बाबाजी उदास और बेचैन हैं, मगर इस समय नागर को अपने सामने बेबस खड़ी देखकर मायारानी को कुछ ढाढ़स हुई, और उसने सोचा कि बाबाजी की उदासी का कोई दूसरा ही कारण होगा, इन्द्रदेव हम लोगों की मदद अवश्य करेगा।

पाठक महाशय समझ ही गये होंगे कि नागर को गिरफ्तार करानेवाला इन्द्रदेव ही है, जिसका हाल ऊपर के एक बयान में लिख चुके हैं, और जिस श्यामलाल ने नागर को गिरफ्तार किया था, वह इन्द्रदेव ही का कोई ऐयार होगा या स्वयं इन्द्रदेव ही होगा।

इन्द्रदेव के बगल में जब मायारानी और दारोगा बैठ गये तो इन्द्रदेव ने नागर से पूछा, "क्या बाबाजी की नाक तूने ही काटी ?"

नागर : जी हाँ, मैंने मायारानी की आज्ञा पाकर इनकी नाक काटी है।

इन्द्रदेव : (अपने आदमी से) अच्छा तुम इस कमबख्त नागर की नाक और उसके साथ कान भी काट लो और यदि कुछ बोले तो जुबान भी काट लो !

हुक्म की देर थी, नौकर मानो पहिले ही से नाक-कान काटने के लिए तैयार था। अस्तु, इस समय जो कुछ होना था हो गया, और इसके बाद नागर कैदखाने में भेज दी गयी। मायारानी भी इन्द्रदेव की आज्ञानुसार

अपने कमरे में चली गयी और इन्द्रदेव तथा दारोगा अकेले ही रह गये।

इन्द्रदेव : आप देखते हैं कि जिसने आपके साथ बिना कारण के बुराई की थी, उसे उस बुराई का बदला ईश्वर ने कुछ विशेषता के साथ दे दिया। आपको भी इसी तरह विचारना चाहिए कि क्या राजा बीरेन्द्रसिंह और राजा गोपालसिंह के साथ, जो बड़े नेक और बिल्कुल बेकसूर हैं, बुराई करनेवाला अपनी सजा को न पहुँचेगा ?

दारोगा : निःसन्देह आपका कहना ठीक है, परन्तु···

दारोगा 'परन्तु' से आगे कहने भी न पाया था कि इन्द्रदेव फिर जोश में आ गया और कड़ी निगाह से बाबाजी की तरफ देखके बोला—

"मैं इतना बक गया, मगर अभी तक 'परन्तु' का डेरा आपके दिल से न निकला। बीरेन्द्रसिंह के ऐयारों से उलझने की इच्छा आपकी अभी तक बनी ही है। खैर, जो आपके जी में आवे कीजिए, मगर मुझसे इस बारे में किसी तरह की आशा न रखिए। आप चाहे मुझे कोई भारी वस्तु समझे बैठे हों, परन्तु मैं अपने को उन लोगों के मुकाबले में एक भुनगे के बराबर भी नहीं समझता। मुझे अच्छी तरह विश्वास है कि जहाँ हवा भी नहीं घुस सकती, वहाँ बीरेन्द्रसिंह के ऐयार पहुँचते हैं। (बगल से एक चीठी निकालकर और दारोगा की तरफ बढ़ाकर) लीजिए पढ़िए और सुनकर चौंक जाइए कि प्रातःकाल जब मैं सोकर उठा तो इस पत्र को अपने गले के साथ ताबीज की तरह बँधा हुआ देखा। ओफ, जिनके ऐसे-ऐसे ऐयार तावेदार हैं, उनके साथ उलझने की नीयत रखनेवाला पागल या यमराज का मेहमान नहीं, तो और क्या समझा जायगा !"

बाबाजी ने डरते-डरते वह पत्र इन्द्रदेव के हाथ से ले लिया और पढ़ा, लिखा हुआ था—

"इन्द्रदेव,

तुम यह मत समझो कि ऐसे गुप्त स्थान में रहकर हम लोगों की नजरों से भी छिपे हुए हो ! नहीं नहीं, ऐसा नहीं है। हम लोग तुम्हें अच्छी तरह जानते हैं, और हमें भी मालूम है कि तुम अच्छे ऐयार, बुद्धिमान और वीर पुरुष हो, परन्तु बुराई करना तो दूर रहा, हम लोग बिना कारण या बिना बुलाये किसी के सामने भी कभी नहीं जाते, इसी से हमारा-तुम्हारा सामना अभी तक नहीं हुआ। तुम यह मत समझो कि तुम बिल्कुल बेकसूर हो, कमबख्त दारोगा को रोहतासगढ़ के कैदखाने से निकाल लाने का कसूर तुम्हारी गर्दन पर है, मगर तुमने यह बड़ी बुद्धिमानी की कि हमारे किसी आदमी को दुःख नहीं दिया और इसी से तुम अभी तक बचे हुए हो। हम तुम्हें मुबारकबाद देते हैं कि श्री तेजसिंहजी ने तुम्हारा कसूर जो हरामखोर

और विश्वाघाती दारोगा को कैद से छुड़ाने के विषय में था, माफ किया। इसका कारण यही था कि वह तुम्हारा गुरुभाई है, अतएव उसकी कुछ-न-कुछ मदद करना तुम्हें उचित ही था, चाहे वह निमकहराम तुम्हारा गुरु-भाई कहलाने योग्य नहीं है। खैर, तुमने जोकुछ किया, अच्छा किया, मगर इस समय तुम्हें चेताया जाता है कि आज से मायारानी, दारोगा या और किसी भी हमारे दुश्मन का यदि तुम साथ दोगे, पक्ष करोगे, हमारी कैद से निकाल ले जाने का उद्योग करोगे या केवल राय देकर भी सहायता करोगे, तो तुम्हारे लिए अच्छा न होगा। तुम चुनारगढ़ के तहखाने में अपने को हथकड़ी-बेड़ी से जकड़े हुए पाओगे, बल्कि आश्चर्य नहीं कि इससे भी बढ़-कर तुम्हारी दुर्दशा की जाय। हाँ, यदि तुम दुनिया में नेकी ईमानदारी और योग्यता के साथ रहोगे तो ईश्वर भी तुम्हारा भला करेगा। हम लोग, ईमानदार, नेक और योग्य पुरुष का साथ देने के लिए हरदम कमर कसे तैयार रहते हैं। इसके सिवाय एक बात और कहना है, सो भी सुन लो। दो अदद तिलिस्मी खंजर जो हम लोगों की मिलकियत हैं, मायारानी और नागर के कब्जे में चला गया है, इस समय दारोगा को साथ लेकर माया-रानी तुम्हारे यहाँ मदद माँगने के लिए आयी है, सो खैर, उससे तो कुछ मत कहो, उसके पास जो हमारा खंजर है, हम ले लेंगे कोई चिन्ता नहीं, मगर नागर के पास जो तिलिस्मी खंजर था, वह तुम्हारे एक ऐयार के पास है, जो श्यामलाल बनकर नागर को गिरफ्तार करने गया था और उसे गिरफ्तार कर लाया है। बेशक वह खंजर तुम्हारे पास दाखिल किया जायगा, मगर तुम्हें मुनासिब है कि उसको हमारे हवाले करो। कल ठीक दोपहर के समय हम खोह के मुहाने पर मिलने के लिए तैयार रहेंगे, जो तुम्हारे इस मकान में आने के पहिले दरवाजे के समान है। यदि उस समय तिलिस्मी खंजर लिये तुम हमसे न मिलोगे तो हम समझेंगे कि तुम मायारानी और दारोगा का साथ देने के लिए तैयार हो गये, फिर जोकुछ होगा देखा जायगा।

मिती 13 प्रथम ऋतु। तुमको होशियार करनेवाला
संवत् 412 कु०। एक बालक—
भैरोसिंह ऐयार"

पत्र पढ़कर दारोगा ने इन्द्रदेव के हाथ में दे दिया। उस समय दारोगा का चेहरा डर, चिन्ता और निराशा के कारण पीला पड़ गया था, और भविष्य पर ध्यान देने ही से वह अधमुआ हो गया था। भैरोसिंह के पत्र में तिलिस्मी खंजर का जिक्र था, इसलिए दारोगा ने इन्द्रदेव की उँगलियों पर निगाह दौड़ाकर, उसी समय देख लिया था कि तिलिस्मी खंजर के जोड़ की

अँगूठी, उसकी उँगली में मौजूद है, अतएव उसे निश्चय हो गया कि भैरोसिंह से कोई बात छिपी नहीं है, इन्द्रदेव सहायता करते दिखायी नहीं देते, और अपना भविष्य बुरा नजर आता है। दारोगा इसी विचार में सिर झुकाये हुए कुछ देर तक खड़ा रहा, और इन्द्रदेव उसके चेहरे के उतार-चढ़ाव को गौर से देखता रहा। आखिर इन्द्रदेव ने कहा—"मैं समझता हूँ कि इस चीठी के प्रत्येक शब्द पर आपने गौर किया होगा और मतलब पूरा-पूरा समझ गये होंगे!"

दारोगा : जी हाँ।

इन्द्रदेव : खैर, तो अब मुझे इतना ही कहना है कि यदि इस समय आपके बदले में कोई दूसरा आदमी मेरे सामने होता तो मैं उसे तुरन्त ही निकलवा देता, परन्तु आप मेरे गुरुभाई हैं, इसलिए तीन दिन की मोहलत देता हूँ, इस बीच में आप यहाँ रहकर अपने भले-बुरे को अच्छी तरह सोच लें और फिर जोकुछ करने का इरादा हो, मुझसे कहें, साथ ही इसके इस बात पर भी ध्यान रहे कि यदि आपकी नीयत अच्छी रही तो आपका कसूर क्षमा कराने के लिए मैं उद्योग करूँगा, नहीं तो राजा बीरेन्द्रसिंह के विषय में मुझसे मदद पाने की आशा आप कदापि न रखें।

दारोगा : क्या आप भैरोसिंह से मिलकर तिलिस्मी खंजर उसके हवाले करेंगे?

इन्द्रदेव : क्या आपको इसमें शक है? अफसोस!

दारोगा ने फिर कुछ न पूछा और चुपचाप वहाँ से उठ अपने कमरे में चला गया। मायारानी यह जानने के लिए कि इन्द्रदेव में और दारोगा में क्या बातें हुईं, पहिले ही से दारोगा के कमरे में बैठी हुई थी। जब दारोगा लम्बी साँस लेकर बैठ गया तो उसने पूछा—

माया : कहिए क्या हुआ? कमबख्त नागर से तो खूब बदला लिया गया?

दारोगा : ठीक है, मगर इससे यह न समझना चाहिए कि इन्द्रदेव हमारी मदद करेगा।

माया : (चौंककर) तो क्या उसने इशारे में कुछ इनकार किया?

दारोगा : इशारे में क्या बल्कि साफ-साफ जवाब दे दिया।

माया : तब तो वह बड़ा ही डरपोक निकला? अच्छा कहिए तो क्या-क्या बातें हुईं?

इन्द्रदेव और दारोगा में जोकुछ बातें हुई थीं, इस समय उसने मायारानी से साफ-साफ कह दीं और भैरोसिंह की चीठी का हाल भी सुना दिया।

माया : (ऊँची साँस लेकर और यह सोचकर कि इन्द्रदेव की बातों में पड़कर दारोगा कहीं मेरा साथ छोड़ न दे) अफसोस, इन्द्रदेव कुछ भी न निकला ! वह निरा डरपोक और कमहिम्मत है, घर में बैठे-बैठे खाना-पीना और सो रहना जानता है, उद्योग की कदर कुछ भी नहीं जानता। ऐसा मनुष्य दुनिया में क्या खाक नाम और इज्जत पैदा कर सकता है ! मगर हम लोग ऐसे सुस्त और भूँडी किस्मत पर भरोसा करके चुप बैठे रहनेवाले नहीं हैं। हम लोग उनमें से हैं, जो गरीब और लाचार होकर भी और चक्रवर्ती होने के लिए कृतकार्य न होने पर भी उद्योग किये ही जाते हैं, और अन्त में सफल मनोरथ होकर ही पीछा छोड़ते हैं। जरा गौर तो कीजिए और सोचिए तो सही कि मैं कौन थी, और उद्योग ने मुझे कहाँ पहुँचा दिया ? तो क्या ऐसे समय में जब किसी कारण से दुश्मन हम पर बलवान हो गया, उद्योग को तिलांजली दे बैठना उचित होगा ? नहीं, कदापि नहीं ! क्या हुआ यदि इन्द्रदेव डरपोक और कमहिम्मत निकला, मैं तो हिम्मत हारनेवाली नहीं हूँ और न आप ऐसे हैं। देखिए तो सही मैं क्या हिम्मत करती हूँ, और दुश्मनों को कैसा नाच नचाती हूँ ! आप मेरी और अपनी हिम्मत पर भरोसा करें, और इन्द्रदेव की आशा छोड़ मौका देखकर चुपचाप यहाँ से निकल चलें।

अफसोस ! दुनिया में अच्छी नसीहत का असर बहुत कम होता है, और बुरे सोहबत की बुरी शिक्षा शीघ्र अपना असर करके मनुष्य को बुराई के चेहरे में फँसाकर सत्यानाश कर डालती है। मगर यह बात उन लोगों के लिए नहीं है जिनके दिमाग में सोचने-समझने और गौर करने की ताकत है। सन्तति के इस बयान में दोनों रंग के पात्र मौजूद हैं, अतएव पाठकों को आश्चर्य न करना चाहिए।

दूसरे दिन इन्द्रदेव ने अपने दोनों मेहमानों दारोगा और मायारानी को अपने घर में न पाया और पता लगाने से मालूम हुआ कि वे दोनों रात ही को किसी समय मौका पाकर वहाँ से निकल भागे।

दसवाँ बयान

दोपहर की कड़ाके की धूप से व्याकुल होकर कुछ आराम पाने की इच्छा से दो आदमी एक नहर के किनारे, जिसके दोनों तरफ घने और गुंजान जंगली पेड़ों ने छाया कर रक्खी है, बैठकर आपस में धीरे-धीरे कुछ बातें कर रहे हैं। इनमें से एक तो बुड्ढा नकटा दारोगा है और दूसरी किस्मत से मुकाबिला करनेवाली कमबख्त मायारानी जो इस अवस्था को पहुँचकर भी

हिम्मत हारने की इच्छा नहीं करती। ये दोनों इन्द्रदेव के मकान से चुपचाप भाग निकले हैं, और बड़े-बड़े मनसूबे गाँठ रहे हैं। इसके साथ ही वे इन्द्रदेव को भी बिगाड़ने की तरकीब सोच रहे हैं, यह भी कोई आश्चर्य की बात नहीं है। बुरे मनुष्य जब किसी भले आदमी से मदद माँगने जाते हैं, और बेचारा बुरे कामों का नतीजा सोचकर बुराई में उनका साथ देने से इन्कार करता है, तो वे दुष्ट उसके भी दुश्मन हो जाते हैं।

माया : क्या हर्ज है ? जरा मुझे बन्दोबस्त कर लेने दीजिए, फिर मैं इन्द्रदेव से समझे बिना रहूँगी।

दारोगा : बेशक, मुझे भी इन्द्रदेव पर बड़ा ही क्रोध है, नालायक ने ऐसे नाजुक समय में साथ देने से इनकार किया ! खैर, देखा जायगा, इस समय तो इस बात पर विचार करना चाहिए कि बीरेन्द्रसिंह के दुश्मन कौन-कौन हैं, और उन लोगों को किस तरह अपना साथी बनाना चाहिए, क्योंकि हम लोगों का पहिला काम यही है कि अपनी मण्डली को बढ़ावें।

माया : बेशक, ऐसा ही है, अच्छा आप उन लोगों का नाम तो जरा ले जायँ, जो हम लोगों का साथ दे सकते हैं, और यह भी कह जायँ कि इस समय वे लोग कहाँ हैं।

दारोगा : (सोचता हुआ) महाराज शिवदत्त, भीमसेन और उनके साथी एक, माधवी दो, दिग्विजयसिंह का लड़का कल्याणसिंह तीन, शेरअलीखाँ, जिसकी लड़की को बीरेन्द्रसिंह ने कैद कर रक्खा है, चार और उनके पक्षपाती लोग जिनका कुछ हिसाब नहीं।

माया : बेशक, इन लोगों का साथ हो जाने से हम लोग बीरेन्द्रसिंह और उनके पक्षपातियों को तहस-नहस कर सकते हैं और ये लोग खुशी से हमारा साथ देंगे भी, मगर अफसोस यह है कि शेरअलीखाँ को छोड़कर बाकी के सभी लोग कैद में हैं। हाँ, यह तो कहिए कि महाराज शिवदत्त को किसने गिरफ्तार किया था, और अब वह कहाँ हैं ?

दारोगा : मुझे ठीक-ठीक पता लग चुका है कि भूतनाथ ने 'रूहा' बनकर शिवदत्त को धोखा दिया और अब शिवदत्त कमलिनी के तालाबवाले मकान में कैद है, माधवी और मनोरमा भी उसी मकान में कैद हैं।

माया : उस मकान में से उन लोगों को छुड़ाना जरा मुश्किल है, वह भी ऐसे समय में जबकि हमारे पास कोई ऐयार नहीं।

दारोगा : (यकायक कोई बात याद आने से चौंककर) हाँ, मैं यह पूछना तो भूल ही गया कि तुम्हारे दोनों ऐयार बिहारीसिंह और हरनामसिंह कहाँ हैं ? मालूम होता है कि तुम्हारी इस अवस्था का हाल उन लोगों को मालूम नहीं है। मगर नहीं ऐसा नहीं हो सकता, जमानिया में इतना फसाद मच

जाना और तुम्हारा निकल भागना कोई साधारण बात नहीं है, जिसकी खबर तुम्हारे ऐयारों को न होती, शायद इसका कोई और सबब हो !

अब मायारानी इस सोच में पड़ गयी कि दारोगा की बातों का क्या जवाब दिया जाय। उसने और सब हाल तो दारोगा से कह दिया था, मगर उन दोनों ऐयारों की जान लेने का हाल अब तक नहीं कहा था। उसने सोचा कि यदि दारोगा को यह मालूम हो जायगा कि मैंने दोनों ऐयारों को मार डाला, तो उसे बड़ा ही रंज होगा, क्योंकि ऐयारों का मारना बहुत बुरा होता है, तिस पर खास अपने ऐयारों की जान लेना और सो भी बिना कसूर ! लेकिन फिर क्या कहा जाय ? क्या उनके मारने का हाल ठीक-ठीक न कहकर कुछ बहाना कर देना उचित होगा ? नहीं, बहाना करने और छिपा जाने से काम न चलेगा, अन्त में यह बात प्रकट हो ही जायगी, क्योंकि लीला को यह बात मालूम हो चुकी है, और कमबख्त लीला भी इस समय मेरा साथ छोड़कर अलग हो गयी है, इसलिए आश्चर्य नहीं कि वह भण्डा फोड़ दे और सभों के साथ बाबाजी को भी उन बातों का पता लग जाय। मगर नहीं, उस समय जो होगा, देखा जायगा, अभी तो छिपाना ही उचित है।

मायारानी सिर झुकाये हुए इन बातों को सोच रही थी और दारोगा इस आश्चर्य में था कि मायारानी ने मेरी बात का जवाब क्यों नहीं दिया या, क्या सोच रही है ! आखिर दारोगा चुपचाप रह न सका और उसने पुनः मायारानी से कहा—

दारोगा : तुम क्या सोच रही हो, मेरी बात का जवाब क्यों नहीं देतीं ?

माया : मैं यही सोच रही हूँ कि आपकी बात का क्या जवाब दूँ जबकि मैं स्वयं नहीं जानती कि मेरे ऐयारों ने ऐसे समय में मेरा साथ क्यों छोड़ दिया और कहाँ चले गये !

दारोगा : अस्तु, मालूम हुआ कि उन दोनों ने स्वयं तुम्हारा साथ छोड़ दिया।

माया : बेशक ऐसा ही कहना चाहिए। अच्छा अब विशेष समय नष्ट न करना चाहिए। अब आप जल्दी यह सोचिए कि हम कहाँ जाकर ठहरें और क्या करें !

दारोगा : अब जहाँ तक मैं समझता हूँ, यही उचित जान पड़ता है कि शेरअलीखाँ के पास चलें और मदद लें। यह तो सबकोई जानते हैं कि शेर-अलीखाँ बड़ा जबर्दस्त और लड़ाका है, मगर उसके पास दौलत नहीं है।

माया : ठीक है, मगर जब मैं दौलत से उसका घर भर दूंगी तो वह

बहुत ही खुश होगा और एक जबर्दस्त फौज तैयार करके हमारा साथ देगा। मैं आपसे कह चुकी हूँ कि इस अवस्था में भी दौलत की मुझे कमी नहीं है।

दारोगा : हाँ, मुझे याद है, तुमने शिवगढ़ी के बारे में कहा था, अच्छा तो अब विलम्ब करने की आवश्यता ही क्या है ? (चौंककर) हैं, यह क्या ! (हाथ का इशारा करके) वह कौन है, जो सामने की झाड़ी में से निकलकर इसी तरफ आ रहा है ? शिवदत्त की तरह मालूम पड़ता है ! (कुछ रुककर) बेशक, शिवदत्त ही तो है ! हाँ, देखो तो, वह अकेला नहीं है, उसके पीछे उसी झाड़ी में से और भी कई आदमी निकल रहे हैं।

मायारानी ने भी चौंककर उस तरफ देखा और हँसती हुई उठ खड़ी हुई।

ग्यारहवाँ भाग

पहिला बयान

अब हम अपने पाठकों को पुनः कमलिनी के तिलिस्मी मकान की तरफ ले चलते हैं, जहाँ बेचारी तारा को बदहवास और घबरायी हुई छोड़ आये हैं।

हम उस बयान में लिख चुके हैं कि छत के ऊपर जो पुतली थी, उसे तेजी के साथ नाचते हुए देखकर तारा घबरा गयी, और बदहवास होकर कमलिनी को याद करने लगी। इसका सबब यह था कि यद्यपि बेचारी तारा उस तिलिस्मी मकान का पूरा-पूरा हाल नहीं जानती थी, मगर फिर भी बहुत-से भेद उसे मालूम थे और कमलिनी से सुन चुकी थी कि जब इस मकान पर कोई आफत आनेवाली होगी, तब वह पुतली (जिसके नाचने का हाल लिखा जा चुका है) तेज़ी के साथ घूमने लगेगी, उस समय समझना चाहिए कि इस मकान में रहनेवालों की कुशल नहीं है। यही सबब था कि तारा बदहवास होकर इधर-उधर देखने लगी, और उसकी अवस्था देखकर किशोरी और कामिनी को भी निश्चय हो गया कि बदकिस्मती ने अभी तक हम लोगों का पीछा नहीं छोड़ा, और अब यहाँ भी कोई नया गुल खिला चाहता है।

जिस समय तारा घबराकर इधर-उधर देख रही थी, उसकी निगाह यकायक पूरब की तरफ़ जा पड़ी, जिधर दूर तक साफ़ मैदान था। तारा ने देखा कि लगभग आध कोस की दूरी पर सैकड़ों आदमी दिखायी दे रहे हैं, और वे लोग तेजी के साथ तारा के इसी मकान की ओर बढ़े चले आ रहे हैं। इसी के साथ ही साथ तारा की तेज निगाह ने यह भी बता दिया कि वे लोग जिनकी गिनती चार सौ से कम न होगी, या तो फौजी सिपाही हैं या लड़ाई के फन में होशियार लुटेरों का कोई गिरोह है, जो दुश्मनी के साथ थोड़ी ही देर में इस मकान को घेरकर उपद्रव मचाना चाहता है। इसके

बाद तारा की निगाह तालाब पर पड़ी, जिस पर उसे पूरा-पूरा भरोसा था और जानती थी कि इस जल को तैरकर कोई भी इस मकान में घुस आने का दावा नहीं कर सकता, मगर अफ़सोस, इस समय तालाब की अवस्था भी बदली हुई थी, अर्थात् उसमें का जल तेजी के साथ कम हो रहा था और लोहे की जालियाँ जाल या फन्दे जो जल के अन्दर छिपे हुए थे, अब जल कम होते जाने के कारण धीरे-धीरे उसके ऊपर निकलते चले आ रहे थे। इन्हीं जालियों और फन्दों के कारण कोई आदमी उस तालाब में घुसकर अपनी जान नहीं बचा सकता था और इनका खुलासा हाल हम पहिले लिख चुके हैं।

तारा ने जब तालाब का जल घटते और जालों को जल के बाहर निकलते देखा तो उसकी बची-बचायी आशा भी जाती रही, मगर उसने अपने दिल को सम्हालकर इस आनेवाली आफत से किशोरी और कामिनी को होशियार कर देना उचित जाना। उसने किशोरी और कामिनी की तरफ देखकर कहा—"बहिन, अब मुझे एक आफ़त का हाल तो मालूम हो गया, जो हम लोगों पर आना चाहती है। (उन फौजी आदमियों की तरफ इशारा करके जो दूर से इसी तरफ आते हुए दिखायी दे रहे थे) वे लोग हमारे दुश्मन जान पड़ते हैं, जो शीघ्र ही यहाँ आकर हम लोगों को गिरफ्तार कर लेंगे। मुझे पूरा-पूरा भरोसा था कि इस तालाब में तैरकर या घरनाई अथवा डोंगी के सहारे कोई इस मकान तक नहीं आ सकता, क्योंकि जल के अन्दर लोहे के जाल इस ढंग से बिछे हुए हैं कि इसमें तैरनेवाली चीज बिना फँसे और उलझे नहीं रह सकती, मगर वह बात भी जाती रही। देखो तालाब का जल कितनी तेज़ी के साथ घट रहा है, और जब सब जल निकल जायगा तो इस बीचवाले जाल को तोड़ या बिगाड़कर यहाँ तक चले आने में कुछ भी कठिनता न रहेगी। मालूम होता है कि दुश्मनों ने इसका बन्दोबस्त पहिले ही से कर रक्खा था, अर्थात् सुरंग खोदकर जल निकालने और तालाब सुखाने का बन्दोबस्त किया गया है, और निःसन्देह वे अपने काम में कृतकार्य हुए। (कुछ सोचकर) बड़ी कठिनाई हुई। (आसमान की तरफ देखके) माँ जगदम्बे, सिवाय तेरे हम अबलाओं की रक्षा करनेवाला कोई भी नहीं, और तेरी शरण आये हुए को दुःख देनेवाला भी जगत में कोई नहीं। इतना दुःख भोगकर आज तक केवल तेरे ही भरोसे जी रही हूँ और जब इस बात की प्रसन्नता हुई कि आज तक तेरा ध्यान धरके जान बचाये रहना वृथा न हुआ तो अब यह बात? यह क्या? क्यों? किसके साथ? क्या उसके साथ जो तुम पर भरोसा रक्खे! नहीं नहीं, इसमें भी अवश्य तेरी कुछ माया है?"

भगवती की प्रार्थना करते-करते तारा की आँखें बन्द हो गयीं मगर इसके बाद तुरन्त ही वह चौंकी तथा किशोरी और कामिनी की तरफ़ देखके बोली, "निःसन्देह महामाया हम अबलाओं की रक्षा करेंगी। हमें हताश न होना चाहिए, उन्हीं की कृपा से इस समय जोकुछ करना चाहिए वह भी सूझ गया। शुक्र है कि इस समय दो-एक को छोड़कर बाकी सब आदमी मेरे घर के अन्दर ही हैं। अच्छा देखो तो सही कि मैं क्या करती हूँ।" यह कहती हुई तारा छत के नीचे उतर गयी।

हमारे पाठकों को याद होगा कि यह मकान किस ढंग का बना हुआ था। वे भूले न होंगे कि इस मकान के चारों तरफ जो छोटा-सा सहन है इसके चारों कोनों में चार पुतलियाँ हाथों में तीर-कमान लिये इस ढंग से खड़ी हैं मानो अभी तीर छोड़ा ही चाहती हैं। इस समय बेचारी तारा छत पर से उतरकर उन्हीं पुतलियों में से एक पुतली के पास आयी। उसने इस पुतली का सिर पकड़कर पीठ की तरफ़ झुकाया और पुतली बिना परिश्रम झुकती चली गयी यहाँ तक कि ज़मीन के साथ लग गयी। इस समय तालाब का जल करीब चौथाई के सूख चुका था। पुतली झुकने के साथ ही जल में खलबली पैदा हुई। उस समय तारा ने प्रसन्न हो पीछे की तरफ फिरकर देखा तो किशोरी और कामिनी पर निगाह पड़ी जो तारा के साथ-ही-साथ नीचे उतर आयी थीं और उसके पीछे खड़ी यह कार्रवाई देख रही थीं। कई लौंडियाँ भी पीछे की तरफ़ नजर पड़ीं जो इत्तिफाक से इस समय मकान के अन्दर ही थीं। तारा ने कहा, "कोई हर्ज़ नहीं दुश्मन हमारे पास नहीं आ सकते।"

किशोरी : मेरी समझ में कुछ भी नहीं आया कि तुम क्या कर रही हो और इस पुतली के झुकने से जल में खलबली क्यों पैदा हुई ?

तारा : ये पुतलियाँ इसी काम के लिए बनी हैं कि जब दुश्मन किसी तरकीब से इस तालाब को सुखा डाले और इस मकान में आने का इरादा करे तो इन चारों पुतलियों से काम लिया जाय। इस मकान की कुरसी गोल है और इसमें चार चक्र लगे हुए हैं, जिनकी धार तलवार की तरह और चौड़ाई सात-हाथ से कुछ ज्यादे होगी. हाथ-भर की चौड़ाई तो मकान की दीवार में चारों तरफ़ घुसी हुई है, जिसका सम्बन्ध किसी कल-पुर्ज़े से है, और छः हाथ की चौड़ाई मकान की दीवार से बाहर की तरफ़ निकली हुई है। ये चारों चक्र जल के अन्दर छिपे हुए हैं, और इस मकान को इस तरह घेरे हुए हैं, जैसे छल्ला या सादी अँगूठी उँगली को। जब इन चारों पुतलियों में से एक पुतली झुकाकर ज़मीन के साथ सटा दी जायगी, तो एक चक्र तेजी के साथ घूमने लगेगा, इसी तरह दूसरी पुतली झुकने से दूसरा, तीसरी

पुतली झुकने से तीसरा और चौथी पुतली झुकने से चौथा चक्र भी घूमने लगेगा। उस समय किसी की मजाल नहीं कि इस मकान के पास फटक जाय, जो आवेगा उसके चार टुकड़े हो जायेंगे। मैंने जो इस पुतली को झुका दिया है, इस सबब से एक चक्र घूमने लगा है, और उसी की तेजी से जल में खलबली पैदा हो गयी है। पहिले मुझे यह हाल मालूम न था, कमलिनी के बताने से मालूम हुआ है। विशेष कहने की कोई आवश्यकता नहीं है, तुम स्वयं देखती हो कि जल किस तेजी के साथ कम हो रहा है। हाथ-भर जल कम होने दो फिर स्वयं देख लेना कि कैसा चक्र है और किस तेजी के साथ घूम रहा है।

किशोरी : (आश्चर्य से) मकान की हिफाजत के लिए अच्छी तरकीब निकाली है।

तारा : इन चक्रों के अतिरिक्त इस मकान की हिफाजत के लिए और भी कई चीजें हैं, मगर उनका हाल-मुझे मालूम नहीं है।

किशोरी ने गौर से जल की तरफ देखा जो चक्र के घूमने की तेजी से मकान के पास की तरफ खलबला रहा था और उसमें पैदा भई हुई लहरें, किनारे तक जा-जाकर टक्कर खा रही थी। जल बहुत ही साफ था, इसलिए शीघ्र ही कोई चमकती हुई चीज भी दिखायी देने लगी। जैसे-जैसे जल कम होता जाता था, वह चक्र साफ-साफ दिखायी देता था। थोड़े ही देर बाद जल विशेष घट जाने के कारण चक्र साफ निकल आया, जो बहुत ही तेजी के साथ घूम रहा था। किशोरी ने ताज्जुब में आकर कहा, "बेशक, अगर इसके पास लोहे का आदमी भी आवेगा तो कटकर दो टुकड़े हो जायगा!" वह बड़े गौर से उस चक्र को देख रही थी कि आदमियों के शोर-गुल की आवाज आने लगी। तारा समझ गयी कि दुश्मन पास आ गये। उसने किशोरी और कामिनी की तरफ देखके कहा, "बहिन, अब तीन पुतलियाँ और रह गयी हैं, उन्हें भी झटपट झुका देना चाहिए क्योंकि दुश्मन आ पहुँचे। एक पुतली को तो मैं झुकाती हूँ और दो पुतलियों को तुम दोनों झुका दो, फिर छत पर चलकर देखो तो सही ईश्वर क्या करता है और इन दुश्मनों की क्या अवस्था होती है।"

तीनों पुतलियों का झुकाना थोड़ी देर का काम था जो किशोरी, कामिनी और तारा ने कर दिया, और इसके बाद तीनों छत के ऊपर चढ़ गयी। तारा ने एक और काम किया, अर्थात् कमान और बहुत-से तीर भी अपने साथ छत के ऊपर लेती गयी।

चारों पुतलियों के झुक जाने से जल में बहुत ज्यादे खलबली पैदा हुई, मालूम होता था कि जल तेजी के साथ मथा जा रहा है, जिसमें झाग और

फेन पैदा हो रहा था।

अपने यहाँ की लौंडियों और नौकरों को कुछ समझाकर कामिनी तथा किशोरी को साथ लिये हुए तारा छत के ऊपर चढ़ गयी और वहाँ से जब दुश्मनों की तरफ देखा, तो मालूम हुआ कि वे लोग जो गिनती में चार सौ से किसी तरह कम न होंगे, तालाब के पास पहुँच गये हैं, और तालाब के खौलते हुए जल तथा उस एक चक्र को जो इस समय जल के बाहर निकला हुआ तेजी के साथ घूम रहा था, हैरत की निगाह से देख रहे हैं।

तारा : किशोरी बहिन देखो अगर इस समय उन चारों पुतलियों का हाल मालूम न होता तो हम लोगों की तबाही में कुछ बाकी न था !

किशोरी : बेशक, इस समय तो उन चारों चक्रों ही ने हम लोगों की जान बचा ली। दुश्मन लोग इस समय उन चक्रों को आश्चर्य से ही देख रहे हैं, और इस तरफ कदम बढ़ाने की हिम्मत नहीं करते।

कामिनी : मगर हम लोग कब तक इस अवस्था में रह सकते हैं ? क्या वे चारों चक्र, इसी तरह बहुत दिनों तक घूमते रह सकते हैं।

तारा : हाँ, अगर हम लोग स्वयं न रोक दें तो एक महीने तक बराबर घूमते रहेंगे, इसके बाद इन चक्रों के घुमाने के लिए कोई दूसरी तरकीब करनी होगी जो मुझे मालूम नहीं।

किशोरी : अगर ऐसा है तो महीने-भर तक हम लोग बेखौफ रह सकते हैं, और क्या इस बीच में हमारी मदद करनेवाला कोई भी नहीं पहुँचेगा ?

तारा : क्यों नहीं पहुँचेगा ! मान लिया जाय कि हमारा साथी इस बीच में कोई न आवे तो भी रोहतासगढ़ से मदद जरूर आवेगी, क्योंकि यह जमीन रोहतासगढ़ की अमलदारी में है, और रोहतासगढ़ यहाँ से बहुत दूर भी नहीं है, अस्तु, ऐसा नहीं हो सकता कि राजा की अमलदारी में इतने आदमी मिलकर उपद्रव मचावें, और राजा को कुछ खबर न हो।

कामिनी : ठीक है, मगर यह तो कहो कि बहुत दिनों तक काम चलाने के लिए गल्ला इस मकान में है ?

तारा : ओह, गल्ले की क्या कमी है, साल-भर से ज्यादे दिन तक काम चलाने के लिए गल्ला मौजूद है !

कामिनी : और जल के लिए क्या बन्दोबस्त होगा ! क्योंकि जितनी तेजी के साथ इस तालाब का जल निकल रहा है, उससे तो मालूम होता है कि पहरभर के अन्दर तालाब सूख जायगा।

कामिनी की इस बात ने तारा को चौंका दिया। उसके चेहरे से बेफिक्री की निशानियाँ, जो चारों पुतलियों की करामात से पैदा हो गयी थीं, जाती रहीं और उसके बदले में घबराहट और परेशानी ने अपना दखल जमा

लिया। तारा की यह अवस्था देखकर किशोरी और कामिनी को विश्वास हो गया कि इस तालाब का जल सूख जाने पर बेशक हम लोगों को प्यासे रहकर जान देनी पड़ेगी, क्योंकि अगर ऐसा न होता तो तारा घबड़ाकर चुप न हो जाती, जरूर कुछ जवाब देती। आखिर तारा को चिन्ता में डूबे हुए देखकर कामिनी ने पुनः कुछ कहना चाहा, मगर मौका न मिला, क्योंकि तारा यकायक कुछ सोचकर उठ खड़ी हुई और कामिनी तथा किशोरी को अपने पीछे-पीछे आने का इशारा करके छत के नीचे उतर कमरों में घूमती-फिरती उस कोठरी में पहुँची, जिसमें नहाने के लिए छोटा-सा हौज बना हुआ था, जिसमें एक तरफ से तालाब का जल आता, और दूसरी तरफ से निकल जाता था। इस समय तालाब में पानी कम हो जाने के कारण हौज का जल भी कुछ कम हो गया था। तारा ने वहाँ पहुँचने के साथ ही फुर्ती से उन दोनों रास्तों को बन्द कर दिया, जिनसे हौज में जल आता और निकल जाता था, इसके बाद एक ऊँची साँस लेकर उसने कामिनी की तरफ देखा और कहा—

तारा : ओफ, इस समय बड़ा ही गजब हो चला था ! अगर तुम पानी के विषय में याद न दिलाती तो इस हौज की तरफ से मैं बिल्कुल बेफिक्र थी, इसका ध्यान भी न था कि तालाब का जल कम हो जाने पर यह हौज भी सूख जायगा, और तब हम लोगों को प्यासे रहकर जान देनी पड़ेगी।

किशोरी : तो इससे जाना जाता है कि तालाब सूख जाने पर सिवाय इस छोटे से हौज के और कोई चीज ऐसी नहीं है, जो हम लोगों की प्यास बुझा सके।

कामिनी : और यह हौज तीन-चार दिन से ज्यादे काम नहीं चला सकता, ऐसी अवस्था में उन चक्रों का महीने-भर तक घूमना ही वृथा है क्योंकि हम लोग प्यास के मारे मौत के मेहमान हो जायँगे। अफसोस, जिस कारीगर ने इस मकान की हिफाजत के लिए ऐसी-ऐसी चीजें बनायीं और जिसने यह सोचकर कि तालाब का जल सूख जाने पर भी इस मकान में रहनेवालों पर मुसीबत न आवे, ये घूमनेवाले चक्र बनाये, उसने इतना न सोचा कि तालाब सूखने पर यहाँ के रहनेवाले जल कहाँ से पीयेंगे ? उसे इस मकान में एक कूआँ भी बना देना था।

तारा : ठीक है, मगर जहाँ तक मैं खयाल करती हूँ, इस मकान के बनानेवाले कारीगर ने इतनी बड़ी भूल न की होगी। उसने कोई कूआँ अवश्य बनाया होगा, लेकिन मुझे उसका पता मालूम नहीं। खैर, देखा जायगा, मैं उसका पता अवश्य लगाऊँगी।

कामिनी : मुझे एक बात का खतरा और भी है।

तारा : वह क्या ?

कामिनी : वह यह है कि तालाब सूख जाने पर ताज्जुब नहीं कि यहाँ तक पहुँचने के लिए इस मकान के नीचे सुरंग खोदने और दीवार तोड़ने की कोशिश दुश्मन लोग करें ।

तारा : ऐसा तो हो ही नहीं सकता, इस मकान की दीवार किसी जगह से किसी तरह टूट नहीं सकती ।

इसी बीच में तालाब के बाहर से विशेष कोलाहल की आवाज आने लगी, जिसे सुन तारा, किशोरी और कामिनी मकान के ऊपर चली गयीं, और छिपकर दुश्मनों का हाल देखने लगीं । वे लोग इस मकान में पहुँचना कठिन जानकर शोरगुल मचा रहे थे, और कई आदमी हाथ में तीर-कमान लिये इस वास्ते भी तैयार दिखायी दे रहे थे कि कोई आदमी इस मकान के बाहर निकले, तो उस पर तीर चलावें । किशोरी ने बड़े गौर से दुश्मनों की तरफ देखकर तारा से कहा, "बहिन तारा, इन दुश्मनों में बहुत-से लोग ऐसे हैं—जिनको मैं बखूबी पहिचानती हूँ, क्योंकि जब मैं अपने बाप के घर थी, तो ये लोग मेरे बाप के नौकर थे ।"

तारा : ठीक है, मैं भी इन लोगों को पहिचानती हूँ, बेशक ये लोग तुम्हारे बाप के नौकर हैं, और उन्हीं को छुड़ाने के लिए यहाँ आये हैं ।

किशोरी : (चौंककर) तो क्या मेरे पिता इसी मकान में कैद हैं ?

तारा : हाँ, वे भी इसी मकान में कैद हैं ।

किशोरी को जब यह मालूम हुआ कि उसका बाप इस मकान में कैद है, तो उसके दिल पर एक प्रकार की चोट-सी बैठी । यद्यपि उसने अपने बाप की बदौलत बहुत तकलीफ़ें उठायी थीं, बल्कि यों कहना चाहिए कि अभी तक अपने बाप की बदौलत दुःख भोग रही है, और दर-दर मारी-मारी फिरती है, मगर फिर भी किशोरी का दिल पाक-साफ और शीघ्र ही पसीज जानेवाला था । वह अपने बाप का हाल सुनते ही कुछ देर के लिए वे सब बातें भूल गयी, जिनकी बदौलत आज तक दुर्दशा की छतरी उसके सर पर से नहीं हटी थी । इसके साथ ही पल-भर के लिए, उसकी आँखों के सामने वह खँडहरवाला दृश्य भी घूम गया, जहाँ उसके सगे भाई ने खंजर से उसकी जान लेने के लिए वीरता प्रकट की थी* मगर रामशिलावाले साधु के पहुँच जाने से कुछ न कर सका था । वह यह भी जानती थी कि उसका भाई भीमसेन, पिता की आज्ञा पाकर मेरी जान लेने के लिए आया था, और

---

* चन्द्रकान्ता-सन्तति दूसरे भाग के आखिरी बयान में इसका हाल लिखा गया है ।

अब भी अगर पिता का बस चले तो मेरी जान लेने में विलम्ब न करें, मगर फिर भी कोमल हृदया किशोरी के दिल में बाप के देखने की इच्छा प्रकट हुई, और उसने डबडबायी हुई आँखों से तारा की तरफ देखकर गद्‌गद् स्वर से कहा—

"बहिन, तुम्हें आश्चर्य होगा यदि मैं पिता का देखने की इच्छा प्रकट करूँ, मगर लाचार हूँ, जी नहीं मानता।"

तारा : हाँ, यदि कोई दूसरी बेकसूर लड़की ऐसे पिता से मिलने की इच्छा प्रकट करती तो अवश्य आश्चर्य की जगह थी, मगर तेरे लिए कोई आश्चर्य की बात नहीं है, क्योंकि मैं तेरे स्वभाव को अच्छी तरह जानती हूँ, परन्तु बहिन किशोरी, मुझे निश्चय है कि तू अपने पिता को देखकर प्रसन्न न होगी, बल्कि तुझे दुःख होगा, वह तुझे देखते ही बेबस रहने पर भी हजारों गालियाँ देगा और कच्चा ही खा जाने के लिए तैयार हो जायगा।

किशोरी : तुम्हारा कहना ठीक है, परन्तु मैं माता-पिता की गाली को आशीर्वाद समझती हूँ, यदि वे कुछ कहेंगे तो कोई हर्ज नहीं, और मैं ज्यादे देर तक उनके पास ठहरूँगी भी नहीं, केवल एक नजर देखकर पिछले पैर लौट आऊँगी। मुझे विश्वास है कि दुश्मन लोग जो तालाब के बाहर खड़े हैं, इस समय मेरा कुछ बिगाड़ नहीं सकते और यदि तुम्हारी कृपा होगी तो मैं ऐसे समय में भी बेफिक्री के साथ अपने पिता को एक नजर देख सकूँगी।

तारा : खैर, जब ऐसा कहती हो तो लाचार मैं तुम्हें कैदखाने में ले चलने के लिए तैयार हूँ, चलकर अपने पिता को देख लो।

कामिनी : क्या मैं भी तुम लोगों के साथ चल सकती हूँ।

तारा : हाँ हाँ, कोई हर्ज नहीं, तू भी चलकर अपनी रानी माधवी को एक नजर देख ले।

लौंडियों को बुलाकर हौज के विषय में तथा और भी किसी विषय में समझा-बुझाकर किशोरी और कामिनी को साथ लिये हुए तारा वहाँ से रवाना हुई और एक कोठरी में से लालटेन तथा खंजर ले, दूसरी कोठरी में गयी, जिसमें किसी तरह का सामान न था। इस कोठरी में मजबूत ताला लगा हुआ था, जो खोला गया और तीनों कोठरी के अन्दर गयीं। कोठरी बहुत छोटी थी, और इस योग्य न थी कि वहाँ का कुछ हाल लिखा जाय। इस कोठरी के नीचे एक तहखाना था, जिसमें जाने के लिए छोटा-सा मगर लोहे का और मजबूत दरवाजा जमीन में दिखायी दे रहा था। तारा ने लालटेन जमीन पर रखकर कमर में से ताली निकाली और तहखाने का दरवाजा खोला। नीचे बिल्कुल अन्धकार था, इसलिए तारा ने जब लालटेन उठाकर दिखाया तो छोटी-छोटी सीढ़ियाँ नजर पड़ीं। किशोरी, कामिनी को

पीछे-पीछे आने का इशारा करके तारा तहखाने में उतर गयी, मगर जब नीचे पहुँची तो यकायक चौंककर ताज्जुब-भरी निगाहों के साथ इस तरह चारों तरफ देखने लगी, जैसे किसी की कोई अनमोल, अलभ्य और अनूठी चीज यकायक सामने से गुम हो जाय, और वह आश्चर्य से चारों तरफ देखने लगे।

यह तहखाना दस हाथ चौड़ा और पन्द्रह हाथ लम्बा था। इसकी अवस्था कहे देती थी कि यह जगह केवल हथकड़ी-बेड़ी से सुशोभित कैदियों की खातिरदारी के लिए ही बनायी गयी है। बिना चौकठ दरवाजे की छोटी-छोटी दस कोठरियाँ, जो एक के साथ दूसरी लगी हुई थीं, एक तरफ और उसी ढंग की उतनी ही कोठरियाँ, उसके सामने दूसरी तरफ बनी हुई थीं। इतनी कम जमीन में बीस कोठरियों के ध्यान ही से आप समझ सकते हैं कि कैदियों का गुजारा किस तकलीफ से होता होगा।

दोनों तरफ तो कोठरियों की पंक्ति थी, और बीच में थोड़ी-सी जगह इस योग्य बची हुई थी कि यदि कैदियों को रोटी-पानी पहुँचाने या देखने के लिए कोई जाय तो अपना काम बखूबी कर सके। इसी बची हुई जमीन के एक सिरे पर तहखाने में आने के लिए सीढ़ियाँ बनी हुई थीं। जिस राह से इस समय तारा, किशोरी और कामिनी आयी थीं, उसी के सामने अर्थात् दूसरे सिरे पर लोहे का एक छोटा, मजबूत दरवाजा था, जो इस समय खुला था, और एक बड़ा-सा खुला हुआ ताला उसके पास ही जमीन पर पड़ा हुआ था, जो बेशक उसी दरवाजे में उस समय लगा होगा, जब वह दरवाजा बन्द होगा। इसी दरवाजे को खुला हुआ और अपने कैदियों को न देखकर तारा चौंकी, और घबराकर चारों तरफ देखने लगी थी।

तारा : बड़े आश्चर्य की बात है कि हथकड़ी-बेड़ी से जकड़े हुए कैदी क्योंकर निकल गये, और इस दरवाजे का ताला किसने खोला ? निःसन्देह या तो हमारे नौकरों में से किसी ने कैदियों की मदद की या कैदियों का कोई मित्र इस जगह आ पहुँचा। मगर नहीं, इस दरवाजे को दूसरी तरफ से कोई खोल नहीं सकता, परन्तु···

किशोरी : क्या यह किसी सुरंग का दरवाजा है।

तारा : समय पड़ने पर आने-जाने के लिए यह एक सुरंग है, जो यहाँ से बहुत दूर जाकर निकली है। वर्षों हो गये कि इस सुरंग से कोई काम नहीं लिया गया, केवल उस दिन यह सुरंग खोली गयी थी, जिस दिन तुम्हारे पिता गिरफ्तार हुए थे, क्योंकि वे इसी सुरंग की राह से यहाँ लाये गये थे।

कामिनी : मैं समझती हूँ कि इस सुरंग के दरवाजे को बन्द करने में

जल्दी करना चाहिए। कहीं ऐसा न हो कि इस राह से दुश्मन लोग आ पहुँचें और हमारा बना-बनाया खेल बिगड़ जाय।

किशोरी : मेरी तो यह राय है कि इस सुरंग के अन्दर चलकर देखना चाहिए, शायद कैदियों का कुछ···

तारा : मेरी भी यही राय है, मगर इस तरह खाली हाथ सुरंग के अन्दर जाना उचित न होगा, शायद दुश्मनों का सामना हो जाय, अच्छा ठहरो मैं तिलिस्मी नेजा लेकर आती हूँ।

इतना कहकर तारा तिलिस्मी नेजा लेने के लिए चली, मगर अफसोस उसने बड़ी भारी भूल की कि सुरंग के दरवाजे को बिना बन्द किये ही चली आयी और इसके लिए उसे बहुत रंज उठाना पड़ा, अर्थात् जब वह तिलिस्मी नेजा लेकर लौटी और तहखाने में पहुँची तो वहाँ किशोरी और कामिनी को न पाया, निश्चय हो गया कि उसी सुरंग की राह से, जिसका दरवाजा खुला हुआ था, दुश्मन आये और किशोरी तथा कामिनी को पकड़के ले गये।

दूसरा बयान

किशोरी और कामिनी के गायब हो जाने का तारा को बड़ा रंज हुआ, यहाँ तक कि उसने अपनी जान की कुछ भी परवाह न की और तिलिस्मी नेजा हाथ में लिये हुए बेधड़क उस सुरंग में घुस गयी। यह वही तिलिस्मी नेजा था, जो कमलिनी ने उसे दिया था, और जिस पर तारा को बहुत भरोसा था।

आज के पहिले तारा को इस सुरंग के अन्दर जाने का अवसर नहीं पड़ा था, इसलिए वह नही जानती कि वह सुरंग कैसी है ? अस्तु, उसने तिलिस्मी नेजे का कब्जा दबाया, उसमें से बिजली की तरह चमक पैदा हुई और उसी रोशनी में तारा ने दरवाजे के अन्दर कदम रक्खा। दो ही कदम जाने बाद नीचे उतरने के लिए कई सीढ़ियाँ दिखायी दीं और जब तारा नीचे उतर गयी तो सीधी सुरंग मिली।

तारा तेजी के साथ बल्कि यों कहना चाहिए कि दौड़ती हुई उस सुरंग में रवाना हुई और जब वह थोड़ी दूर चली गयी तो उसे कई आदमी दिखायी पड़े, जो आगे की तरफ जा रहे थे, मगर अपने पीछे तिलिस्मी नेजे की अद्भुत चमक देखकर रुक गये थे और ताज्जुब-भरी निगाहों से उस चमक को देख रहे थे, जो पल-भर में पास होकर उनकी आँखों में चकाचौंध पैदा कर रही थी।

ये लोग वे ही थे, जो किशोरी और कामिनी को जबर्दस्ती पकड़के ले गये थे। वे लोग बहुत दूर जाने न पाये थे, जब तिलिस्मी नेजा लिये हुए तारा लौट आयी थी, उसके अतिरिक्त किशोरी और कामिनी को जबर्दस्ती घसीटते लिये जा रहे थे, इसलिए तेज भी नहीं चल सकते थे, यही सबब था कि तारा ने बहुत जल्द उन्हें जा पकड़ा। उन लोगों के साथ एक लालटेन थी, मगर नेजे की चमक ने उसे बेकार कर दिया था। जब उन लोगों ने दूर से तारा को देखा तो एक दफे उनकी यह इच्छा हुई कि तारा को भी पकड़ लेना चाहिए, परन्तु नेजे की अद्भुत करामात ने उनका दिल तोड़ दिया, और चमक से उनकी आँखें ऐसी बेकार हुईं कि भागने का भी उद्योग न कर सके।

बात-की-बात में तारा उन लोगों के पास जा पहुँची, जो गिनती में चार थे। यदि तारा के हाथ में तिलिस्मी नेजा न होता तो वे लोग उसे भी अवश्य पकड़ लेते, मगर यहाँ तो मामला ही और था। नेजे की चमक से लाचार होकर वे स्वयं दोनों हाथों से अपनी-अपनी आँखें बन्द करके बैठ गये थे, तथा किशोरी और कामिनी की भी यही अवस्था थी।

तारा ने फुर्ती से तिलिस्मी नेजा चारों आदमियों के बदन से लगा दिया, जिससे वे लोग काँपकर बात-की-बात में बेहोश हो गये। अब तारा ने नेजे का मुट्ठा ढीला किया, उसकी चमक बन्द हो गयी और उस समय किशोरी और कामिनी ने आँखें खोलकर तारा को देखा।

किशोरी और कामिनी का हाथ रस्सी से बँधा हुआ था, जिसे तारा ने तुरन्त खोल दिया। किशोरी और कामिनी बड़ी मुहब्बत के साथ तारा से लिपट गयीं, और तीनों की आँखों से गर्म आँसू गिरने लगे। तारा ने किशोरी और कामिनी से कहा, "बहिन तुम जरा यहाँ ठहरो, मैं थोड़ी दूर तक आगे बढ़कर देखती हूँ कि क्या हाल है, अगर कोई दुश्मन न मिला तो भी सुरंग के दूसरे किनारे पर पहुँचकर दरवाजा बन्द कर लेना आवश्यक है। मुझे निश्चय है कि बाहरी दुश्मन इस दरवाजे को नहीं खोल सकते, मगर ताज्जुब है कि कैदियों ने क्योंकर ये दरवाजे खोले।"

किशोरी : ठीक है, मगर मेरी राय नहीं है कि तुम आगे बढ़ो, कहीं ऐसा न हो कि दुश्मनों का सामना हो जाय, इससे यही उचित होगा कि यहाँ से लौट चलो और सुरंग तथा तहखाने का मजबूत दरवाजा बन्द करके चुप-चाप बैठो फिर जो ईश्वर करेगा देखा जायगा।

तारा : (कुछ सोचकर) बेहतर होगा कि तुम दोनों चली जाओ, और सुरंग तथा तहखाने का दरवाजा बन्द करके चुपचाप बैठो, और मुझे इस सुरंग की राह से इसी समय निकल जाने दो, क्योंकि कैदियों का भाग जाना

मामूली बात नहीं है, निःसन्देह वे लोग भारी उपद्रव मचावेंगे, और मुझे कमलिनी के आगे शर्मिन्दगी उठानी पड़ेगी। यह तो कहो ईश्वर ने बड़ी कृपा की कि बहिन तुम दोनों शीघ्र ही मिल गयीं नहीं तो अनर्थ हो ही चुका था, और मैं कमलिनी को मुँह दिखाने लायक नहीं रही थी, अब जब तक कैदियों का पता न लगा लूंगी मेरा जी ठिकाने न होगा।

कामिनी : बहिन, तुम कह क्या रही हो ! जरा सोचो तो सही कि इतने दुश्मनों में तुम्हारा अकेले जाना उचित होगा, और क्या इस बात को हम लोग मान लेंगे।

तारा : (तिलिस्मी नेजे की तरफ इशारा करके) यह एक ऐसी चीज मेरे पास है कि मैं हजार दुश्मनों के बीच में भी अकेली जाकर फतह के साथ लौट आ सकती हूँ। यद्यपि तुम दोनों ने इस समय इस नेजे की करामात देख ली, मगर फिर भी मैं कहती हूँ कि इस नेजे का असल हाल तुम्हें मालूम नहीं है, इसी से मुझे रोकती हो।

किशोरी : बेशक, इस नेजे की करामात मैं देख चुकी हूँ और यह निःसन्देह एक अनूठी चीज है, मगर फिर भी मैं तुमको अकेले न जाने दूँगी, अगर जिद्द करोगी तो हम दोनों भी तुम्हारे साथ चलेंगी।

तारा ने बहुतकुछ समझाया और जोर मारा, मगर किशोरी और कामिनी ने एक न मानी और तारा को मजबूर होकर उन दोनों की बात माननी पड़ी। अन्त में यह निश्चय हुआ कि सुरंग के किनारे पर चलकर, उसका दरवाजा बन्द कर देना चाहिए, और इन बदमाशों को भी घसीटकर ले चलना और सुरंग के बाहर कर देना चाहिए, अदने आदमियों को कैद करने की आवश्यकता नहीं है—आखिर ऐसा ही किया गया।

किशोरी, कामिनी और तारा कैदियों को घसीटती हुई गयीं और आधे घण्टे में सुरंग के दूसरे मुहाने पर पहुँचीं। यह मुहाना पहाड़ी के एक खोह से सम्बन्ध रखता था, और वहाँ लोहे का छोटा-सा दरवाजा लगा हुआ था, जो इस समय खुला था। तारा ने कैदियों को बाहर फेंककर दरवाजा बन्द कर दिया, और इसके बाद तीनों वहाँ से लौट पड़ीं। रास्ते में तारा ने तिलिस्मी नेजे और खंजर का पूरा-पूरा हाल किशोरी और कामिनी को समझाया।

तहखाने में पहुँचकर सुरंग का दूसरा दरवाजा बन्द किया गया और फिर ऊपर पहुँचकर तारा ने तहखाने का दरवाजा भी बन्द करके ताला लगा दिया।

इधर तालाब का जल तेजी के साथ सूख रहा था, क्योंकि तालाब के ऊपरी हिस्से में लम्बान-चौड़ान ज्यादे होने के कारण जल भी ज्यादे अँटता

है, इसी तरह निचले हिस्से में लम्बान-चौड़ान कम होने के कारण, जल कम रहता है, इसीलिए बनिस्बत ऊपरी हिस्से के तालाब के निचले हिस्से का जल क्रमशः तेजी के साथ कम होता गया, यहाँ तक कि जब तारा सुरंग और तहखाने से निकलकर मकान की छत पर पहुँची, तो उसने तालाब को सूखा हुआ पाया। मकान के चारों तरफ घूमनेवाले लोहे के चक्र तेजी के साथ घूम रहे थे, और दुश्मन लोग यह सोचकर कि इन चक्रों की बदौलत मकान तक पहुँचना बहुत कठिन, बल्कि असम्भव है, उन चक्रों को ताज्जुब के साथ देख और उनको रोकने की तरकीब सोच रहे थे। इधर किशोरी, कामिनी और तारा भी उनकी इस अवस्था को मकान की छत पर से दीवार के उन छेदों की राह देख रही थीं, जो दुश्मनों पर तोप बरसाने के लिए बने हुए थे।

इस समय रात दो घण्टे से ज्यादे जा चुकी थी, मगर पहर ही भर तक दर्शन देकर अस्त हो जानेवाले चन्द्रमा की रोशनी दुश्मनों की किसी कार्रवाई को अँधेरे के पर्दे में छिपी रहने नहीं देती थी।

दुश्मनों ने जब देखा कि चक्रों के सबब से मकान तक पहुँचना असम्भव है, तो उन्होंने उद्योग का एक मजेदार ढंग निकाला, जिसे देख तारा, किशोरी और कामिनी के दिल में खौफ पैदा हुआ, अर्थात् दुश्मनों ने तालाब को मिट्टी से पाटना शुरू किया। बेशक यह तरकीब बहुत ही अच्छी थी, क्योंकि तालाब पट जाने पर उन चक्रों का घूमना-न-घूमना बराबर था, और आश्चर्य नहीं कि मिट्टी के अन्दर दब जाने के कारण वे रुक भी जाते, मगर इस काम के लिए दुश्मनों को मामूली से बहुत ज्यादे समय नष्ट करना पड़ा, क्योंकि उन लोगों के पास जमीन खोदने के लिए फर्सा या कुदाली के किस्म की कोई चीज न थी, खंजर, तलवार और नेजों ही से वे लोग जोकुछ कर सकते थे, करने लगे।

दुश्मनों के इस उद्योग को देखकर तारा का कलेजा दहल गया और उसने अफसोस के साथ किशोरी की तरफ देखके कहा—

तारा : कहो अब इस उद्योग का क्या जवाब दिया जाय ?

किशोरी : यद्यपि वे लोग एक दिन में तालाब नहीं पाट सकते, मगर हम लोगों को बचाव के लिए अब कोई तरकीब सोचना चाहिए, क्योंकि तालाब पट जाने पर ये चारों चक्र, जमीन के अन्दर हो जायेंगे, और उस समय इस मकान में दुश्मनों का घुस आना कुछ कठिन न होगा।

कामिनी : उस सुरंग की राह भाग जाने के सिवाय हम लोग और कुछ भी नहीं कर सकेंगे।

तारा : क्या दुश्मन लोग सुरंग के उस मुहाने को सूना छोड़ देंगे, जिसका

पूरा-पूरा हाल उन लोगों को मालूम हो चुका है ?

कामिनी : इसकी आशा भी नहीं हो सकती, बेशक भागना मुश्किल हो जायगा। खैर, जोकुछ होगा देखा जायगा, इस समय तो मैं यही मुनासिब समझती हूँ कि तीर मारकर दुश्मनों की गिनती कम करनी चाहिए। वे लोग हम लोगों पर कोई हर्बा नहीं चला सकते।

तारा : हाँ, इस समय तो यही करना मुनासिब होगा, इसके बाद जो राय होगी किया जायगा, मगर बहिन, मैं फिर भी कहती हूँ कि तुम मुझे तिलिस्मी नेजा हाथ में लेकर सुरंग की राह से निकल जाने दो, फिर देखो तो सही कि मैं अकेली इतने दुश्मनों को क्योंकर बात-की-बात में मार गिराती हूँ, तुम्हें इस नेजे का हाल पूरा-पूरा मालूम हो ही चुका है, अतएव उस पर भरोसा करके तुम्हें उचित है कि मुझे न रोको, मैं नहीं चाहती कि यह तालाब पट जाय, और फिर सफाई कराने के लिए तकलीफ उठानी पड़े।

कामिनी : तुम्हारा कहना ठीक है, इस नेजे की जहाँ तक तारीफ की जाय कम है, और तुम उन सभी को जहन्नुम में पहुँचा सकोगी, जो दुश्मनी की नीयत से तुम्हारे पास आवेंगे, मगर उनका तुम क्या बिगाड़ सकोगी, जो दूर ही से तुम्हें तीर का निशाना बनावेंगे।

तारा : (कुछ सोचकर) बेशक यह एक ऐसी बात तुमने कही, जिस पर विचार करना चाहिए···अच्छा, खूब याद आया। इस मकान में फौलाद का एक कवच ऐसा है, जो बदन पर ठीक आ सकता है, मैं उसे पहिरकर जाऊँगी और तीर की चोट से बेफिक्र रहूँगी। यद्यपि इस पर भी तुम कह सकती हो कि आँख, नाक, कान, मुँह इत्यादि किस-किस जगह की तुम हिफाजत कर सकती हो, मगर इसके साथ ही इस बात को भी सोचना चाहिए कि अगर तालाब पाटकर दुश्मन यहाँ घुस आवेंगे, और हम लोगों को पकड़ लेंगे तो क्या होगा ? अपनी बेइज्जती कराना और बेहुर्मती के साथ जान देना अच्छा होगा या बहादुरी के साथ सौ-पचास को मारकर लड़ाई के मैदान में मिट जाना उचित होगा।

किशोरी : जब ऐसा ही है और तुम प्राण देने के लिए मुस्तैद होकर जाती ही हो, तो हम दोनों को क्यों छोड़े जाती हो ? क्या इसलिए कि तुम्हारे बाद हम लोगों की दुर्दशा और बेइज्जती हो !

इस विषय में किशोरी कामिनी और तारा में देर तक हुज्जत और बहस होती रही, अन्त में यही निश्चय हुआ कि सूरत बदलने और कवच पहिरने के बाद हाथ में तिलिस्मी नेजा लेकर तारा सुरंग की राह से जाय, और दुश्मनों का मुकाबला करे, किशोरी और कामिनी दोनों में से एक या दोनों

तारा के साथ सुरंग में जाँय, और जब तारा सुरंग के बाहर जाय तो हरएक दरवाजे को बन्द करती हुई लौट आवें। इसके बाद दुश्मनों के भाग जाने पर मकान में तारा का लौट आना, कोई मुश्किल न होगा।

यह बात तै पायी गयी और तीनों नौजवान औरतें, जिन्हें आपस में बहिनों से भी बढ़कर मुहब्बत हो गयी थी, छत के नीचे उतर आयीं, और एक कोठरी में चली गयीं। तारा ने ऐयारी के मसाले से अपने को रँगा और अपनी ऐसी भयानक सूरत बनायी कि देखनेवाला कैसे ही जीवट का क्यों न हो, मगर एक दफे तो अवश्य ही डर जाय। इसके बाद कवच पहिरा और तिलिस्मी नेजा हाथ में लेकर सुरंग में रवाना हुई, हाथ में एक लालटेन लिये किशोरी और कामिनी भी साथ हुईं।

पहिले तहखानेवाली कोठरी का दरवाजा खोला गया, फिर सुरंग का दरवाजा खोलकर तीनों मुँहबोली बहिनें सुरंग में दाखिल हो गयीं।

ये तीनों बीस-पचीस कदम से ज्यादा न गयी होंगी कि पीछे की तरफ से यकायक दरवाजा बन्द कर लेने की आवाज आयी, जिसे सुनते ही तीनों चौंक पड़ीं और खड़ी हो गयीं। तारा ने किशोरी और कामिनी की तरफ देखकर कहा—"हैं यह क्या बात है ? मालूम होता है कि हमारा दुश्मन हमारे घर ही में है !" यह कहती हुई किशोरी और कामिनी के साथ तारा पीछे की तरफ लौटी और जब सुरंग के दरवाजे के पास आयी तो दरवाजा बन्द पाया। खटखटाया, धक्का दिया, जोर किया, मगर दरवाजा न खुला। इस समय उन तीनों अबलाओं के दिल की क्या हालत हुई होगी, सो हमारे बुद्धिमान पाठक स्वयं सोच सकते हैं। कामिनी ने घबराकर तारा से कहा, "तुम्हारा कहना ठीक है, बेशक हमारा दुश्मन हमारे घर ही में है।"

किशोरी : चाहे कोई हमारा नौकर, हमारा दुश्मन हो या दुश्मन का कोई ऐयार हमारे नौकर की सूरत में यहाँ आकर टिका हो।

तारा : अब शक दूर हो गया और निश्चय हो गया कि कैदियों को इसी कमबख्त ने निकाल दिया है। मैं ताज्जुब में थी कि यह दरवाजा, जो दूसरी तरफ से किसी तरह नहीं खुल सकता, क्योंकर खुला, और कैदी लोग क्योंकर निकल गये, मगर अब जोकुछ असल बात थी, जाहिर हो गयी। अब उस शैतान ने (चाहे वह कोई भी हो) इसलिए यह दरवाजा बन्द कर दिया कि हम लोग पुनः लौटकर घर में न आ पावें। अफसोस, बड़ा ही धोखा हुआ कि इतने पर भी हम लोग उससे बेफिक्र रहे, और इस समय भी वह छिपकर हम लोगों के साथ-ही-साथ कैदखाने में उतरा, मगर कुछ मालूम न हुआ। (कुछ रुककर) हमारे नौकरों और लौंडियों को क्या मालूम हो सकता है कि इस समय हम लोगों के साथ किस दुष्ट ने कैसा बरताव

किया !

कामिनी : क्या इस तरफ से इस दरवाजे को खोलने की कोई तरकीब नहीं है ?

तारा : कोई नहीं ।

कामिनी : और अगर दुश्मनों ने सुरंग के मुहाने का दरवाजा बाहर से बन्द कर दिया हो तो क्या होगा ?

तारा : उस दरवाजे के दूसरी तरफ कोई ऐसी चीज नहीं है, जो दरवाजा बन्द करने के काम में आवे, मगर फिर भी दुश्मन होशियार हो तो हर तरह से वह मुहाना बन्द कर सकता है। उस दरवाजे के ऊपर मिट्टी, पत्थर या चूने का ढेर लगा सकता है, ईंट-पत्थर की जुड़ाई कर सकता है, या उस खोह-भर को ईंट-पत्थर से बन्द कर सकता है ।

किशोरी : हाय, अब हम लोग बेमौत मारे गये ! ताज्जुब नहीं कि इस बात का बन्दोबस्त पहिले ही से कर लिया गया हो ।

कामिनी : बस अब हम लोगों को यहाँ ज़रा भी न अटककर सुरंग के बाहर निकल चलना चाहिए, शायद उधर का रास्ता अभी बन्द न हुआ हो ।

तारा, किशोरी और कामिनी तेजी के साथ सुरंग के दूसरे मुहाने की तरफ रवाना हुईं और थोड़ी ही देर में वहाँ जा पहुँचीं । इस सुरंग में मकान की तरफ जिस तरह की सीढ़ियाँ बनी हुई थीं, उसी तरह की सीढ़ियाँ सुरंग के दूसरी तरफ भी थीं। जब तारा ने दरवाजे की कुण्डी खोली, और उसे धक्का देकर खोलना चाहा तो दरवाजा न खुला, उस समय तारा हाय करके बैठ गयी और बोली—"बहिन, बस जोकुछ हम लोगों को शक था, वही हुआ । इस समय दुश्मनों की बन पड़ी, और हम लोग बेमौत मारे गये । यह दरवाजा अगर भीतर की तरफ हटता होता तो खुल जाता और हमें मालूम हो जाता कि आगे रास्ता किस चीज से बन्द किया गया है, ईंट, पत्थर और चूने से या खाली मिट्टी से, और हम लोग इस तिलिस्मी नेजे से उसमें रास्ता बनाकर निकल जाने का उद्योग करते, क्योंकि यह नेजा हरएक चीज में घुस जाने की ताकत रखता है, मगर अफसोस तो यह है कि यह लोहे का मजबूत दरवाजा खुलने के समय बाहर की तरफ खुलता है। यह भी कारीगर की भूल है। भूलों का मजा समय पड़ने पर ही मालूम होता है, अब मुझे मालूम हुआ कि मकान बनानेवाले को दरवाजे की अवस्था पर विशेष ध्यान देना चाहिए, कोई दरवाजा ऐसा न बनाना चाहिए, जो खुलते समय बाहर की तरफ खुलता हो, जिसे बाहरवाला मामूली तौर पर मिट्टी का ढेर लगाकर भी बन्द कर सकता है। हाय, अब मैं क्या करूँ ? मुझे अपने

मरने का तो कुछ भी रंज नहीं है, अगर रंज है तो केवल इतना ही कि तुम दोनों को कमलिनी ने हिफाजत से रखने के लिए मेरे पास भेजा, और मेरी बदौलत तुम्हें यह दिन देखना नसीब हुआ !"

मामूली तौर पर जैसाकि अक्सर मौका पड़ने पर लोग कह दिया करते हैं, इस समय किशोरी और कामिनी यह बात तारा को कह सकती थीं कि 'बहिन, हम लोग तो तुम्हें मना करते थे कि सुरंग की राह से बाहर मत जाओ, मगर तुमने न माना, अगर मान जाती तो यह दुख भोगना क्यों नसीब होता' ?

मगर नहीं, बेचारी किशोरी और कामिनी बड़ी ही नेकदिल थीं, वे जानती थीं कि जो होना था, सो तो हो चुका, अब ऐसी बातें कहकर तारा का दिल दुखाना नादानी है, और इससे कोई फायदा नहीं, तारा ने जोकुछ किया, उसे भला ही समझके किया, मगर जब ईश्वर ही की ऐसी मर्जी हो तो क्या किया जाय।

इस सुरंग के दोनों तरफ की दीवार बहुत ही मजबूत थी, और उस पर फौलादी मोटी चादर चढ़ी हुई थी। यद्यपि तिलिस्मी नेजा उस फौलादी मोटी चादर में भी घुस सकता था, मगर इसमें कोई फायदा न था, तिलिस्मी नेजा ऐसे स्थान से सुरंग खोदकर रास्ता बनाने का काम नहीं दे सकता था, तिस पर भी तारा ने उद्योग में कोई बात उठा न रक्खी, मगर नतीजा कुछ भी न निकला।

तीसरा बयान

इस तालाब के बीचवाले तिलिस्मी मकान में कमलिनी दस लौंडियों के साथ रहती थी। नौकर और सिपाही भी उसके साथ बहुत थे, मगर उनके रहने के लिए स्थान इस मकान में नहीं था, वे लोग काम-काज किया करते थे और समय पड़ने पर जान देने के लिए इकट्ठे हो जाते थे, मगर कमलिनी और तारा को छोड़के कोई यह भी नहीं जानता था कि वे लोग कहाँ रहते हैं और क्या करते हैं। उन सिपाहियों में से कई तो मायारानी के कैदी हो गये थे और जो दस-बारह बचे हुए थे सो इधर-उधर घूम-फिरकर कमलिनी का काम कर रहे थे। उन्हीं बचे हुए सिपाहियों में से चार-पाँच सिपाही इस समय मकान में मौजूद थे जो किसी काम के सम्बन्ध में तारा के पास आये थे और दुश्मनों का हंगामा देखकर बाहर जा न सके थे। कमलिनी की लौंडियाँ जितनी थीं वे सब जमानिया से कमलिनी के साथ उस समय आयीं थीं, जब मायारानी से लड़कर कमलिनी अलग हो गयी थी। इन लौंडियों

में से एक लौंडी, जिसका नाम भगवती था बड़ी ही शैतान और दिल की खोटी थी। यद्यपि वह जाहिर में अपने को बहुत ही बनाये हुए रहती थी और बात-बात में खैरखाही जताती थी मगर वास्तव में वह ऐसी काली नागिन थी, जिसके काटे का कोई मन्त्र ही न था। उसे रुपये की लालच हद से ज्यादे थी मगर इतने दोष रहने पर भी, वह अपनी चालाकी से अपने मालिक तथा तारा को खुश रखती थी, और उन दोनों के आगे अपने अवगुण जाहिर नहीं होने देती थी। यही लौंडी प्राय: कैदियों को खाना-पानी भी पहुँचाया करती थी।

कमलिनी के कैदखाने को पहिले माधवी और शिवदत्त ने आबाद किया था और उसके बाद मनोरमा इस कैदखाने में आयी थी। मायारानी की सखी होने के कारण मनोरमा भगवानी को बखूबी जानती थी और इसी तरह भगवानी भी उसे अच्छी तरह पहिचानती थी। खाना-पानी पहुँचाने के लिए जब भगवानी कैदखाने में जाती तो मनोरमा उस अपनी लच्छेदार बातों में घड़ियों उलझाकर भविष्य के लिए सब्जबाग दिखाती, और तरह-तरह की उम्मीदो से ललचाया करती, यहाँ तक कि उसे तीन लाख रुपये की लालच दिखाकर, उसने अपनी, माधवी और शिवदत्त की मदद पर राजी कर लिया। माधवी, दवा-इलाज की बदौलत वहाँ आकर तन्दुरुस्त हो गयी थी।

भगवानी इस बात पर राजी हो गयी कि मौका मिलने पर कैदियों की मदद करे, और जिस तरह हो कैदियों को तहखाने के बाहर निकाल दे। भगवानी ने माधवी, शिवदत्त और मनोरमा से कहा कि तुम लोगों को छुड़ाने के लिए मुझे बहुत कुछ उद्योग करना पड़ेगा और तुम्हारे नौकरों तथा सिपाहियों से मिलने और उनसे कुछ काम लेने की आवश्यकता पड़ेगी, इसलिए उचित होगा कि तुम लोग मुझे एक परवाना लिख दो, जिसमें तुम लोगों के आदमी मुझे तुम्हारा मददगार समझें और जोकुछ मैं कहूँ, करें, और खर्च के लिए आवश्यकतानुसार मुझे दिया भी करें। आखिर तीनों कैदियों ने भगवानी की बात मंजूर कर ली। भगवानी मौका पाकर कलम, दावात और कागज छिपाकर तहखाने में ले गयी और तीनों कैदियों से अपने मतलब की बातें लिखवा लीं।

कमलिनी के जाने बाद केवल तारा की मौजूदगी में भगवानी को अपना काम करने का बहुत अच्छा मौका मिला। उसने गुप्त रीति से कई नौकर रक्खे और उनके जरिये से माधवी, मनोरमा और शिवदत्त के आदमियों को जो छितिर-बितिर हो गये थे, इकट्ठा कराया तथा इस बात से होशियार कर दिया कि तुम्हारे मालिक लोग यहाँ कैद हैं।

धीरे-धीरे बन्दोबस्त करके भगवानी ने सामान दुरुस्त कर लिया और

एक दिन सुरंग की राह से तीनों कैदियों को निकाल बाहर किया। आज जो इतने दुश्मन इस मकान को घेरे हुए हैं, या जोकुछ वे लोग कर रहे हैं, सब भगवानी ही की करामात है। इस समय भगवानी ही ने किशोरी, कामिनी और तारा को सुरंग में बन्द कर दिया है। वह चाहती है कि दुश्मन लोग इस मकान में घुस आवें और मनमानी चीजें लूट ले जायँ, मगर कीमती चीजें जवाहिर इत्यादि मैं पहिले ही से बटोरकर अलग रख दूं और जब दुश्मन लोग यहाँ घुस आवें तो उन्हें लेकर चल दूं। शिवदत्त, माधवी और मनोरमा के हाथ का लिखा हुआ परवाना मौजूद ही है। अस्तु, कमलिनी के दुश्मनों में मुझे कोई भी नहीं रोक सकता। यह भगवानी का थोड़ा-सा हाल इस जगह हमने इसलिए लिख दिया कि बीती बहुत-सी बातें समझने में हमारे पाठकों को कठिनाई न पड़े।

किशोरी, कामिनी और तारा को सुरंग में बन्द करके जब भगवानी कैदखाने के बाहर निकली तो कोठरी में ताला लगा दिया, और ताली अपने कब्जे में रखी, इसके बाद हाथ में लालटेन लेकर मकान की छत पर चढ़ गयी, और लालटेन को घुमा-फिराकर दुश्मनों को इशारे-ही-इशारे में कुछ कहा। मालूम होता है कि पहिले ही से इस इशारे की बातीचत पक्की हो चुकी थी, क्योंकि लालटेन का इशारा पाते ही दुश्मनों ने खुश होकर, अपना काम तेजी से करना शुरू किया, अर्थात् तालाब पाटने में बहुत फुर्ती दिखाने लगे। एक दफे तो भगवानी के दिल में यह बात पैदा हुई कि चारों पुतलियों को खड़ी करके घूमते हुए चारों चक्रों को रोक दे, जिसमें दुश्मन लोग यहाँ शीघ्र ही आ जाँय मगर तुरन्त ही उसने अपना इरादा बदल दिया। उसे यह बात सूझ गयी कि यदि मैं घूमते हुए चारों चक्रों को रोक दूंगी तो कमलिनी के नौकरों को मुझ पर शक हो जायगा, और फिर बना-बनाया मामला बिगड़ जायगा।

अब कमबख्त भगवनिया (भगवानी) इस फिक्र में लगी कि दुश्मनों के घर में आने के पहिले ही यहाँ से अच्छी-अच्छी कीमती चीजें बटोर ली जाँय और जब दुश्मन इस मकान में घुस आवें, तो ले-लपेटके चलती बनूं, क्योंकि शिवदत्त, माधवी और मनोरमा की चीठियों की बदौलत जो मेरे पास हैं, मुझे कोई भी न रोकेगा।

कमलिनी की लौंडियों और नौकरों को इस बात का गुमान भी न था कि नमकहराम भगवानी यहाँवालों को चौपट कर रही है, या उसने किशोरी, कामिनी और तारा को सुरंग में बन्द कर दिया है। वे लोग यही जानते थे कि किशोरी और कामिनी को किसी खास काम के लिए तारा अपने साथ लेती गयी है।

रात बीत गयी, दूसरा दिन समाप्त हो गया, बल्कि दूसरे दिन की रात भी गुजर गयी और, तीसरा दिन आ पहुँचा। आज दुश्मनों का मनोरथ पूरा हुआ, अर्थात् उन्होंने तालाब को दो तरफ से बखूबी भर दिया, और उस मकान में आ पहुँचे।

लौंडियों और नौकरों की इतनी हिम्मत कहाँ कि सैकड़ों दुश्मनों का मुकाबला करते। वे लोग चुपचाप अलग हो गये और अपनी तथा अपने मालिक की बदकिस्मती पर विचार करते रहे, जिस पर भी कई बेचारे दुश्मनों के हाथों से मारे गये। दुश्मनों ने मनमानी लूट मचायी और जो जिसने पाया, अपने बाप-दादे का माल समझ हथिया लिया। कमकीमत चीज या ऐसी चीजें जो वे लोग अपने साथ ले जाना पसन्द नहीं करते थे, तोड़-फोड़, बिगाड़ या जलाकर, सत्यानाश कर दी गयीं और घण्टे-ही-भर में ऐसी सफाई कर दी गयी, मानो उन मकान में कोई बसता ही न था, या कोई चीज वहाँ थी ही नहीं। इस काम के बाद किशोरी, कामिनी और तारा की खोज शुरू हुई, क्योंकि दुष्टों ने जब उन तीनों को वहाँ न पाया, तो उन्हें आश्चर्य हुआ और वे इस फिक्र में हुए कि भगवानी से उन तीनों का हाल पूछना चाहिए, मगर भगवानी वहाँ कहाँ, वह तो अपना काम करके निकल भागी और ऐसा गायब हुई कि किसी को कुछ गुमान तक न हुआ। हाय, बेचारी किशोरी, कामिनी और तारा का हाल किसी को भी मालूम नहीं, कोई भी नहीं जानता कि वे बेचारियाँ कहाँ और किस आफत में पड़ी हैं या कई दिनों तक दाना-पानी न मिलने के कारण जीती भी हैं, या मर गयीं। उनकी लौंडियों और नौकरों को भी इसका पता नहीं, इसी से वे लोग अपनी जान लेकर जिस तरफ भाग सके, भाग गये और इस तिलिस्मी मकान पर दुश्मनों को पूरा-पूरा कब्जा करने दिया, क्योंकि इतने आदमियों का का मुकाबला करके जाने देना, दूसरे उद्योग का भी रास्ता रोकना था।

चौथा बयान

पाठक महाशय, अब आप यह जानना चाहते होंगे कि हरामजादी भगवनिया के मेल से जो दुश्मन लोग इस मकान पर चढ़ आये, वे लोग शिवदत्त, माधवी और मनोरमा को छुड़ाने की नीयत से आये थे या इन तीनों के छूट-कर निकल जाने का हाल उन्हें मालूम हो चुका था, और वे लोग इस समय केवल किशोरी, कामिनी और तारा को गिरफ्तार करने आये थे?

नहीं, इस समय दुश्मन यह नहीं जानते थे कि इस मकान में कोई सुरंग है और भगवानी की मदद से उसी सुरंग की राह राजा शिवदत्त वगैरह

बाहर हो गये। भगवानी ने जब उन लोगों को खबर पहुँचायी थी, तो यही कहा था कि तुम्हारा मालिक इस मकान में कैद है, तुम जिस तरह बने, उसे छुड़ा लो और इसके बाद जोकुछ उन लोगों ने किया, वह बहुत बुद्धिमानी से किया। तालाब सुखाने के लिए सुरंग खोदने में उन्हें बहुत दिन मेहनत करनी पड़ी, इस बीच में भगवानी भी उन लोगों से मिलती रही मगर उसने यह नहीं कहा कि शिवदत्त को छुड़ाने के लिए मैं भी उद्योग कर रही हूँ, यदि मौका मिला तो सुरंग की राह निकाल दूँगी, क्योंकि भगवानी को यह आशा न थी कि मैं स्वयं उद्योग करके कैदियों को बाहर कर सकूँगी, उसे कैदियों को छुड़ाने का मौका उस दिन दोपहर के लगभग मिला था, जिस दिन सन्ध्या के समय बलवाइयों ने आकर तालाब को घेर लिया था, और उनके बनाये हुए सुरंग की राह से तालाब का जल निकला जा रहा था।

रुपये की लालच ने कमबख्त भगवानी को ऐसा अन्धा बना दिया था कि उसे भलाई का रास्ता कुछ भी न सूझा। वह इस बात को न सोच सकी कि अगर तारा कैदियों को न देखेगी तो बेशक मुझ पर शक करेगी, क्योंकि कैदखाने और सुरंग की ताली सिवाय मेरे और किसी के हाथ में तारा नहीं देती थी। उसने बेधड़क कैदियों को बाहर कर दिया, मगर इसके दो ही घण्टे बाद, उसके दिल में हौल पैदा हो गया और वह सोचने लगी कि यदि तारा मुझसे पूछेगी कि कैदखाने की ताली तो सिवाय तेरे मैं और किसी के हाथ में नहीं देती, फिर कैदी क्योंकर निकल गये तो मैं क्या जवाब दूँगी? इस विषय में उसने बहुतकुछ सोच-विचार किया, मगर सिवाय भाग जाने के और कोई बात न सूझी। उसने भाग जाने के लिए भी उद्योग किया, मगर न हो सका क्योंकि तालाब के बाहर से किसी को इस मकान में लाने या इस मकान से किसी को बाहर करने के लिए रास्ता खोलना या बन्द करना केवल तारा के आधीन था। जब इस बात को दो पहर बीत गये और दुश्मनों ने तालाब को घेर लिया, तब उसे यह सूझा कि दुश्मनों को इस बात की खबर न देना चाहिए कि शिवदत्त को मैंने छुड़ा दिया। ऐसा करने से दुश्मन उद्योग करके इस मकान में जरूर आवेंगे और उस समय मुझे यहाँ से निकल भागने का अच्छा मौका मिलेगा। इस बीच में भगवानी को इस बात का भी मौका मिल गया कि उसने तारा, किशोरी और कामिनी को सुरंग में बन्द कर दिया, और तब उनके दिल में अपने भाग जाने की पूरी-पूरी आशा हुई। यही कारण हुआ कि दुश्मनों को शिवदत्त के निकल जाने का हाल मालूम न हुआ, और उन्होंने उद्योग करके मकान को अपने दखल में कर लिया, जिससे भगवानी को भागने का अच्छा मौका मिला।

अब यह प्रश्न हो सकता है कि क्या तारा इतनी बेवकूफ थी कि

कैदखाने में कैदियों को न देखकर और सुरंग का दरवाजा खुला हुआ पाकर भी उसे किसी पर कुछ शक न हुआ, सो भी ऐसी अवस्था में जबकि कैदखाने की ताली सिवाय भगवानी के और किसी के हाथ में देती ही न थी ? इस सवाल का जवाब भी इसी जगह दे देना, उचित जान पड़ता है।

तारा ने जब कैदियों को कैदखाने में न देखा तो सबके पहिले उसके दिल में यही शक पैदा हुआ कि यह काम हमारे ही किसी आदमी का है। थोड़े ही सोच-विचार में उसने भगवानी को दोषी ठहरा लिया, क्योंकि सिवाय उसके वह कैदखाने की ताली किसी दूसरे के हाथ में देती न थी। यह सबकुछ था परन्तु भगवानी की जाँच करने और उसे सजा देने के विषय में जल्दी करना तारा ने उचित न जाना और इस हो-हल्ले के समय इसका मौका भी न था, तथापि तारा ने इस शक को श्यामसुन्दरसिंह नामी अपने एक विश्वासी खैरख्वाह बहादुर से इसी दौड़धूप के समय ही जाहिर कर दिया और यह भी कह दिया कि मुझे इस मकान के बचाव की तरकीब के सिवाय और कोई काम करने की फुरसत नहीं है, मगर तुम इस विषय में जोकुछ उचित जान पड़े, अवश्य करो।

श्यामसुन्दरसिंह बहुत ही होशियार, चालाक, बुद्धिमान और बहादुर आदमी था। यह कमलिनी के कुल सिपाहियों का सरदार था और इसकी अच्छी चाल-चलन तथा बहादुरी की कदर कमलिनी दिल से करती थी, तथा यह भी कमलिनी की भलाई के लिए जान तक दे देने को हरदम तैयार रहता था। यद्यपि काम-काज के सबब से श्यामसुन्दरसिंह यहाँ बराबर नहीं रहता था, परन्तु जिस समय दुश्मनों ने इस मकान को घेरा था, उस समय वह मौजूद था। जब उसने तारा की जुबानी कैदियों के निकल जाने का हाल सुना, तो उसने भी अपनी राय वही कायम की, जो तारा ने की थी।

श्यामसुन्दरसिंह भगवानी की तरफ से होशियार हो गया, और उसके कार्यों को विशेष ध्यान से देखने लगा, मगर इस बात का तो उसको गुमान भी न हुआ कि भगवानी ने किशोरी, कामिनी और तारा को भी सुरंग में बन्द कर दिया है।

श्यामसुन्दरसिंह इस बात को तो समझ ही गया था कि अब यह मकान दुश्मनों के हमले से किसी तरह बच नहीं सकता, तथापि उसे कुछ-कुछ आशा इस बात की थी कि जिस समय तिलिस्मी नेजा हाथ में लेकर तारा इस झुण्ड में पहुँचगी, तो ताज्जुब नहीं कि दुश्मनों का जी टूट जाय, परन्तु बहुत समय निकल जाने पर भी जब तारा वहाँ तक न पहुँची तो श्यामसुन्दरसिंह को आश्चर्य हुआ और वह तरह-तरह की बातें सोचने लगा।

पाँचवाँ बयान

कीमती जवाहिरात के चीजों की गठरी लादे हुए मालिक को चौपट करने-वाली हरामजादी भगवानी जब भागी तो उसने फिरके देखा भी नहीं कि पीछे क्या हो रहा है, या कौन आ रहा है।

रात पहर-भर से कुछ ज्यादे जा चुकी थी, और चाँदनी खूब निखरी हुई थी, जब हाँफती और काँपती हुई भगवानी एक घने जंगल के अन्दर, जिसमें चारों तरफ परले सिरे का सन्नाटा छाया हुआ था, पहुँचकर एक पत्थर की चट्टान पर बैठ, और तब इस तरह लेट गयी, जैसे कोई हताश होकर गिर पड़ता है। वह अपना बिसात से ज्यादे चल और दौड़ चुकी थी, और इसीलिए बहुत सुस्त हो गयी थी। इस पत्थर की चट्टान पर पहुँचकर उसने सोचा था कि अब बहुत दूर निकल आये हैं, कोई धरने-पकड़नेवाला है नहीं, अतएव थोड़ी देर तक बैठकर आराम कर लेना चाहिए; मगर बैठने के साथ ही पहिले जिस पर उसकी निगाह पड़ी, वह श्यामसुन्दरसिंह था, जिसे देखते ही उसका कलेजा धक से हो गया और चेहरे पर मुर्दनी छा गयी। उसकी तेजी के साथ चलती साँस दो-चार पल के लिए रुक गयी, और वह घबड़ाकर उसका मुँह देखने लगी।

श्यामसुन्दर : क्यों? तूने तो समझा होगा कि बस अब मैं बचकर निकल आयी और जवाहिरात की गठरी नरम चारे की तरह हजम हो गयी

भगवानी : (कुछ सोचकर) नहीं नहीं, मैं इसमें से तुम्हें आधा बाँट देने के लिए तैयार हूँ। आखिर दुश्मन लोग इसे भी लूटकर ले ही जाते, अगर मैं बचाकर ले आयी तो क्या बुरा हुआ सो भी बाँट देने के लिए तैयार हूँ!

श्यामसुन्दर : ठीक है, मगर मैं आधा बाँटकर नहीं लिया चाहता, बल्कि सब लिया चाहता हूँ।

भगवानी : सो कैसे होगा? ज़रा सोचो तो सही कि मैं दुश्मनों के हाथ से कितनी मेहनत करके इसे बचा लायी हूँ, और सब तुम्हीं ले लोगे तो मुझे क्या फायदा होगा?

श्यामसुन्दर : तो क्या तू कुछ फायदा उठाना चाहती है? अगर ऐसा ही है तो मालिक के साथ निमकहरामी या दगा करने और दुश्मनों को बचाकर कैदखाने के बाहर कर देने में जो उचित लाभ होना चाहिए, वह तुझे होगा!

भगवानी : (चौंककर) आपने क्या कहा सो मैं न समझी! क्या आपको मुझ पर किसी तरह का शक है?

श्यामसुन्दर : नहीं शक तो कुछ भी नहीं है, या अगर है भी तो केवल दो बातों का—एक तो कैदियों को बचाकर निकाल देने का, और दूसरे मालिक के साथ दगा करने का।

भगवानी : नहीं नहीं, कैदी लोग किसी और ढंग से निकल गये होंगे, मुझे तो उनकी कुछ खबर नहीं, और तारा के साथ दगा करने के विषय में जोकुछ आप कहते हैं, सो वह काम मेरा न था, बल्कि एक दूसरी लौंडी का था, जिसके सबब से बेचारी तारा मौत···

इतना कहकर भगवानी रुक गयी। उसके रंग-ढंग से मालूम होता था कि जल्दी में आकर वह कोई ऐसी बात मुँह से निकाल बैठी है, जिसे वह बहुत छिपाती थी। श्यामसुन्दरसिंह को भी उसकी आखिरी बात पर निश्चय हो गया कि हरामजादी भगवानी ने दुश्मनों से मिलकर बेचारी तारा को मौत के पंजे में फँसा दिया। अस्तु, बिना असल भेद का पता लगाये इसे कदापि न छोड़ना चाहिए।

श्यामसुन्दर : हाँ हाँ, कहती चल, रुकी क्यों?

भगवानी : यही कि मैंने ऐसा कोई काम नहीं किया, जिससे मालिक का नुकसान हो।

श्यामसुन्दर : अच्छा यह बता कि कैदियों को निकालनेवाला और तारा को फँसानेवाला कौन है?

भगवानी : यह काम निमकहराम लालन लौंडी का है।

श्यामसुन्दर : यदि मैं इस समय के लिए तेरा ही नाम लालन रख दूँ तो क्या हर्ज है, क्योंकि मेरी समझ में बेचारी लालन निर्दोष है, जोकुछ किया, तू ही ने किया, कैदियों ने तुझी को अपना विश्वासपात्र समझा, तुझी से काम लिया और तेरी ही मदद से निकल भागे, इतने दुश्मनों को भी तू ही बटोरकर लायी है और इतने पर भी सन्तोष न पाकर बेचारी तारा को भी तू ही ने···

भगवानी : (हाथ जोड़कर) नहीं नहीं, आप मुझे व्यर्थ दोषी न ठहरायें भला ऐसे मालिक के साथ मैं विश्वासघात करूँगी जो मुझे दिल से चाहे?

श्यामसुन्दर : (कमर से एक चीठी निकालकर और भगवानी को दिखाकर) और यह क्या है? क्या इसमें भी लालन का नाम लिखा है? कोई हर्ज नहीं, अपने हाथ में लेकर अच्छी तरह देख ले, क्योंकि यद्यपि यह रात का समय है, फिर भी चन्द्रदेव ने अपनी किरणों से दिन की तरह बना रक्खा है।

यह चीठी उन्हीं तीनों चीठियों में से थी, जो शिवदत्त, माधवी और मनोरमा ने लिखकर भगवानी को दी थीं। न मालूम श्यामसुन्दरसिंह के

हाथ यह चीठी क्योंकर लगी। भगवनिया इस चीठी को देखते ही जर्द पड़ गयी, कलेजा धकधक करने लगा, मौत की भयानक सूरत सामने दिखायी देने लगी, गला रुक गया और वह कुछ भी जवाब न दे सकी। अब श्यामसुन्दरसिंह बर्दाश्त न कर सका, उसने एक तमाचा भगवानी के मुँह पर जमाया और कहा--"कमबख्त ! अब बोलती क्यों नहीं !"

जब भगवानी ने इस बात का भी जवाब न दिया, तब श्यामसुन्दरसिंह ने म्यान से तलवार निकाल ली और हाथ ऊँचा करके कहा, "अब भी अगर साफ भेद न बतावेगी तो मैं एक ही हाथ में दो टुकड़े कर दूँगा।"

भगवानी को निश्चय हो गया कि अब जान किसी तरह नहीं बच सकती, इसके अतिरिक्त डर के मारे उसकी अजब हालत हो गयी, और कुछ तो न कर सकी। हाँ, एकदम जोर से चिल्ला उठी और इसके साथ ही एक तरफ से आवाज आयी—"कौन है जो मर्द होकर एक स्त्री की जान लिया चाहता है ?"

श्यामसुन्दरसिंह ने फिरकर देखा तो दाहिनी तरफ थोड़ी ही दूर पर एक नौजवान को हाथ में खंजर लिये मौजूद पाया। उस नौजवान ने श्यामसुन्दरसिंह से पुनः कहा, "यह काम मर्दों का नहीं है, जो तुम किया चाहते हो !" जिसके जवाब में श्यामसुन्दरसिंह ने कहा, "बेशक यह काम मर्दों का नहीं है, मगर लाचार हूँ कि यह निमकहराम मेरी बातों का जवाब नहीं देती, और मैं बिना जवाब पाये इसे किसी तरह नहीं छोड़ सकता।"

यह आदमी जो श्यामसुन्दरसिंह के पास यकायक आ पहुँचा था, हमारा नामी ऐयार भैरोसिंह था, जो कमलिनी के मकान के दुश्मनों से घिर जाने की खबर पाकर उसी तरफ जा रहा था, और इत्तिफाक से यहाँ आ पहुँचा था, मगर वह श्यामसुन्दरसिंह और भगवनिया को नहीं पहिचानता था, और वे दोनों भी इसे सूरत बदले हुए और रात का समय होने के कारण न पहिचान सके। भैरोसिंह ने पुनः कहा—

भैरो : यदि हर्ज न हो तो मुझे बताओ कि यह तुम्हारी किन बातों का जवाब नहीं देती ?

श्यामसुन्दर : बता देने में हर्ज तो कोई नहीं, अगर आप उन लोगों में से नहीं हैं, जिन्हें हम लोग अपना दुश्मन समझते हैं, क्योंकि यह भेद की बात है और अपना भेद दुश्मनों के सामने प्रकट करना नीति के विरुद्ध है। उत्तम तो यह होगा कि हमारा भेद जानने के पहिले आप अपना परिचय दें।

भैरो : तो तुम्हीं अपना परिचय क्यों नहीं देते ?

श्यामसुन्दर : इसलिए कि ऐयार लोग भेद जानने के लिए समय पड़ने पर उसी पक्षवाले बन जाते हैं, जिससे अपना काम निकालना होता है।

भैरो : ठीक है, मगर बहादुर राजा बीरेन्द्रसिंह के ऐयारों में से कोई भी ऐसा कमहिम्मत नहीं है, जो खुले मैदान में एक औरत और एक मर्द से अपने को छिपाने का उद्योग करे।

श्यामसुन्दर : (खुश होकर) अहा, अब मालूम हो गया कि आप राजा बीरेन्द्रसिंह के ऐयारों में से कोई हैं। ऐसी अवस्था में मैं भी यह कहने में विलम्ब न लगाऊँगा कि मैं श्यामसुन्दरसिंह नामी कमलिनीजी का सिपाही हूँ, और यह भगवानी नाम की उन्हीं की बेईमान लौंडी है, जिसकी निमकहरामी और बेईमानी का यह नतीजा निकला कि दुश्मनों ने तालाबवाले तिलिस्मी मकान पर कब्जा कर लिया और किशोरी, कामिनी तथा तारा का कुछ पता नहीं लगता। अब तक जो मालूम हुआ है, उससे जाना जाता है, कि इसी कमबख्त ने उन तीनों को भी किसी आफत में फँसा दिया है, जिसका खुलासा भेद मैं इससे पूछ रहा था कि आपकी आवाज आयी, और आपसे बातचीत करने की प्रतिष्ठा प्राप्त हुई।

भैरो : (जोश के साथ) आह, यह तो एक ऐसा भेद है, जिसके जानने का सबसे पहिला हकदार मैं हूँ। मैं उन्हीं तीनों से मिलने के लिए जा रहा था, जब रास्ते में मुझे यह मालूम हुआ कि उस तिलिस्मी मकान को दुश्मनों ने घेर लिया है, इसलिए जल्द पहुँचने की इच्छा से जंगल-ही-जंगल दौड़ा जा रहा था कि यहाँ तुम लोगों से भेंट हो गयी।

श्यामसुन्दर : यदि ऐसा है तो अब कृपाकर आप अपनी असली सूरत शीघ्र दिखाइए, जिससे मैं आपको पहिचानकर अपने दिल के बचे-बचाये खुटके को निकाल डालूँ, क्योंकि राजा बीरेन्द्रसिंह के कुल ऐयारों को मैं पहिचानता हूँ।

श्यामसुन्दरसिंह की बात सुनकर भैरोसिंह ने बटुए में से सामान निकालकर बत्ती जलायी और बनावटी बालों को अलग करके अपना चेहरा साफ दिखा दिया। श्यामसुन्दरसिंह यह कहकर कि 'अहा, मैंने बखूबी पहिचान लिया कि आप भैरोसिंहजी हैं' भैरोसिंह के पैरों पर गिर पड़ा और भैरोसिंह ने उसे उठाकर गले से लगा लिया। इसके बाद श्यामसुन्दरसिंह ने अपनी तरफ का पूरा-पूरा हाल इस समय तक का कह सुनाया।

भैरोसिंह : अफसोस, बात-ही-बात में यहाँ तक नौबत जा पहुँची। लोग सच कहते हैं कि घर का एक गुलाम बैरी बाहर के बादशाह बैरी से भी जबर्दस्त होता है, जिसकी ताबेदारी में हजारों दिलावर पहलवान और ऐयार लोग रहा करते हैं। खैर, जो होना था सो तो हो गया, अब इस (भगवनिया की तरफ इशारा करके) कमबख्त से किशोरी, कामिनी और तारा का सच्चा-सच्चा हाल मैं बात-की-बात में पूछ लेता हूँ। यह औरत है

इसलिए मैं खंजर को तो म्यान में कर लेता हूँ, और हाथ में उस दुष्टदमन को लेता हूँ, जिसके भरोसे ऐसे जंगल में काँटों से निर्भय रहकर चलता रहा, चलता हूँ, और यदि इसकी खातिरदारी से यह बच गया तो चलूँगा ! हाँ, एक बात तो मैंने कहा ही नहीं ।

श्यामसुन्दर : वह क्या ?

भैरो : वह यह कि मैं यहाँ अकेला नहीं हूँ, बल्कि दो ऐयारों को साथ लिये हुए कमलिनी रानी भी इसी जंगल में मौजूद हैं ।

श्यामसुन्दर : आहा, यह तो आपने भारी खुशखबरी सुनायी, बताइए वे कहाँ हैं, मैं उनसे मिलना चाहता हूँ ।

कमबख्त भगवनिया अब अपनी मौत अपनी आँखों के सामने देख रही थी । भैरोसिंह के पहुँचने से उसकी आधी जान तो जा ही चुकी थी, अब यह खबर सुनके कि कमलिनी भी यहाँ मौजूद है, वह एकदम मुर्दा-सी हो गयी उसे निश्चय हो गया कि अब उसकी जान किसी तरह नहीं बच सकती । भैरोसिंह ने जोर से जफील बजायी और इसके साथ ही थोड़ी दूर से सूखे पत्तों की खड़खड़ाहट के साथ ही घोड़ों के टापों की आवाज आने लगी, और उस आवाज ने क्रमशः नजदीक होकर, भूतनाथ तथा देवीसिंह और घोड़ों पर सवार कमलिनी रानी तथा लाडिली की सूरत पैदा कर दी ।

छठवाँ बयान

दुश्मन जब तालाबवाले तिलिस्मी मकान पर कब्जा कर चुके, और लूटपाट से निश्चिन्त हुए, तो शिवदत्त, माधवी और मनोरमा को छुड़ाने की फिक्र करने लगे । तमाम मकान छान डाला मगर उनका पता न लगा, तब थोड़े सिपाही जो अपने को होशियार और बुद्धिमान लगाते थे, एक जगह जमा होकर सोच-विचार करने लगे । वे लोग इस बात का तो गुमान भी नहीं कर सकते थे कि मालिक लोग यहाँ कैद नहीं हैं, या भगवनिया ने हम लोगों को धोखा दिया, क्योंकि भगवनिया द्वारा वे लोग शिवदत्त, माधवी और मनोरमा के हाथ की लिखी हुई चीठी देख चुके थे । अब अगर तरद्दुद था तो यही कि कैदी लोग कहाँ हैं, और भगवनिया हम लोगों से बिना कुछ कहे चुपचाप भाग क्यों गयी । केवल इतना ही नहीं कि किशोरी, कामिनी और तारा यकायक कहाँ गायब हो गयीं, जिनके इस मकान में होने का हम लोगों को पूरा विश्वास था, बल्कि दौड़-धूप करते, जिन्हें अपनी आँखों से देख चुके हैं ।

जब तमाम मकान ढूंढ़ डाला, और अपने मालिकों को तथा किशोरी,

कामिनी या तारा को न पाया, तो उन लोगों को निश्चय हो गया कि इस मकान में कोई तहखाना अवश्य है, जहाँ हमारे मालिक लोग कैद हैं, और जहाँ अपनी जान बचाने के लिए किशोरी, लाडिली और तारा भी छिपकर बैठ गयी हैं।

इस लिखावट से हमारे पाठक अवश्य इस सोच में पड़ जायेंगे कि यदि इन दुश्मनों को इस मकान में तहखाना और सुरंग होने का हाल मालूम न था, तो क्या वे लोग किसी दूसरे गिरोह के आदमी थे, जिन्होंने तहखाने के अन्दर से किशोरी और कामिनी को गिरफ्तार कर लिया था, या जिन्होंने सुरंग का दूसरा मुहाना बन्द कर दिया था, जिसके सबब से बेचारी किशोरी, कामिनी और तारा को सुरंग के अन्दर बेबसी के साथ पड़ी रहकर अपनी ग्रहदशा का फल भोगना पड़ा ?

बेशक, ऐसा ही है। जिस समय भगवानी की कृपा से माधवी, मनोरमा और शिवदत्त ने कैदखाने से छुट्टी पायी, और सुरंग की राह से बाहर निकले तो माधवी के कई आदमी वहाँ मौजूद मिले, और वे लोग आज्ञानुसार माधवी के साथ वहाँ से चले गये, उनमें से किसी से भी उन लोगों की मुलाकात नहीं हुई, जिन्होंने तालाबवाले मकान पर हमला किया था। ये ही लोग थे, जिन्होंने तहखाने में से किशोरी और कामिनी को भी निकाल ले जाने का इरादा किया था, परन्तु कृतकार्य न हुए थे और इन्हीं लोगों ने भागते-भागते सुरंग का दूसरा मुहाना ईंट-पत्थरों से बन्द कर दिया था।

उन दुश्मनों में, जिन्होंने इस मकान को फतह किया था, तीन सिपाही ऐसे थे, जो उनमें सरदार गिने जाते थे, और सब काम उन्हीं की राय पर होता था, वही तीनों खोज-ढूँढ़कर तहखाने का पता लगाने लगे।

बचा हुआ दिन और रात का बहुत बड़ा हिस्सा खोज-ढूँढ़ में बीत गया, और सुबह हुआ ही चाहती थी, जब हाथ में लालटेन लिये हुए तीनों सिपाही उस कोठरी के दरवाजे पर जा पहुँचे, जिसमें से कैदखानेवाले तहखाने के अन्दर जाने का रास्ता था। ताला तोड़ा गया और वे तीनों उस कोठरी के अन्दर पहुँचे। तहखाने के अन्दर जानेवाला रास्ता दिखायी पड़ा, जिसका दरवाजा जमीन के साथ सटा हुआ और ताला भी लगा हुआ था। उस जगह खड़े होकर तीनों सिपाही आपुस में बातचीत करने लगे।

एक : बेशक, इसी तहखाने में महाराज शिवदत्त कैद होंगे, बड़ी मुश्किल से इसका पता लगा।

दूसरा : मगर हम लोग जो यह सोचे हुए थे कि किशोरी, कामिनी और तारा भी उसी तहखाने में छिपकर बैठी होंगी, यह बात अब दिल से जाती रही, क्योंकि वे भी अगर इसी तहखाने में होतीं तो हम लोगों को

ताला तोड़ना न पड़ता।

तीसरा : ठीक है, मैं भी यही सोचता हूँ कि वे लोग दूसरे गुप्त स्थान में छिपकर बैठी होंगी, खैर, पहिले अपने मालिक को तो छुड़ाओ फिर उन तीनों को भी ढूँढ निकालेंगे, आखिर इस मकान के अन्दर ही तो होंगी।

दूसरा : हाँ जी, देखा जायगा, बस अब इस ताले को भी झटपट तोड़ डालो।

वह ताला भी तोड़ा गया और हाथ में लालटेन लेकर एक आदमी उसके अन्दर उतरा तथा दो उसके पीछे चले। पाँच-चार सीढ़ियों से ज्यादे न उतरे होंगे कि कई आदमियों के टहलने और बातचीत करने की आहट मिली, जिससे ये तीनों बड़े गौर से नीचे की तरफ देखने लगे मगर जो सिपाही सबसे आगे था, उसके सिवाय और किसी को भी कुछ दिखायी न दिया। उसने तहखाने में तीन आदमियों को देखा जो इन सिपाहियों के आने की आहट पाकर और लालटेन की रोशनी देखकर ठिठके हुए ऊपर की तरफ देख रहे थे। इनमें एक मर्द और दो औरतें थीं। तीनों सिपाहियों को निश्चय हो गया कि बेशक यही तीनों माधवी, मनोरमा और शिवदत्त हैं। इन सिपाहियों ने छठीं सीढ़ी पर पैर नहीं रखा था कि नीचे से आवाज आयी, "ठहरो, हम लोग खुद ऊपर आते हैं!"

उन सिपाहियों में से एक आदमी जिसका नाम रामचन्दर था, शिवदत्त का पुराना खैरख्वाह मुलाजिम था और बाकी के दोनों सिपाही मनोरमा के नौकर थे। आवाज सुनकर तीनों सिपाही ऊपर चले आये और तहखाने के अन्दरवाले तीनों व्यक्ति भी, जिन्हें सिपाहियों ने अपना मालिक समझ रक्खा था, बाहर होकर क्रमशः उस कमरे में पहुँचे, जिसमें कमलिनी रहा करती थी और जिसे एक तौर पर दीवानखाना भी कह सकते हैं। यद्यपि लूट-खसोट का दिन था, मगर फिर भी वहाँ इस समय रोशनी बखूबी हो रही थी, और उस रोशनी में सभों ने बखूबी पहिचान लिया कि वे वास्तव में माधवी, मनोरमा और शिवदत्त हैं।

इस समय दुश्मनों की खुशी का अन्दाजा करना बड़ा ही कठिन है, क्योंकि जिसे छुड़ाने के लिए उन लोगों ने उद्योग किया था, उसे अपने सामने मौजूद देखते हैं, लाखों रुपये का माल जो लूट में मिला था, अब पूरा-पूरा हलाल समझते हैं, इसके अतिरिक्त इनाम पाने की प्रबल अभिलाषा और भी प्रसन्न किये देती है। चारों तरफ से भीड़ उमड़ी पड़ती है और शिवदत्त के पैरों पर गिरने के लिए सभी उतावले हो रहे हैं। शिवदत्त ने सभों की तरफ देखा, और नर्म आवाज में कहा, "शाबाश मेरे बहादुर सिपाहियो,

आज जो काम तुमने किया, वह मुझे जन्म-भर याद रहेगा। निःसन्देह तुमने मेरी जान बचायी। देखो इस कैद की सख्ती ने मेरी क्या अवस्था कर दी है, मेरी आवाज कैसी कमजोर हो रही है, मेरा शरीर कैसा दुर्बल और बलहीन हो गया है, मगर खैर कोई चिन्ता नहीं, जान बची है तो ताकत भी हो रहेगी ! यह मत समझो कि मैं इस समय हर तरह से लाचार हो रहा हूँ, अतएव तुम्हारी आज की कार्रवाई के बदले में कुछ इनाम नहीं दे सकूँगा। नहीं नहीं, ऐसा कदापि न सोचना। तुम लोग स्वयं देखोगे कि कल जितनी दौलत मैं इनाम में तुम लोगों को दूँगा, वह इस लूट के माल से सौगुना ज्यादे होगी, जो तुमने इस मकान में से पायी होगी। मैं मर्द हूँ और तुम लोग खूब जानते हो कि मर्दों की हिम्मत कभी कम नहीं होती, जिसने हिम्मत तोड़ दी वह मर्द नहीं, औरत है। इसमें तुम इस बात पर भी विश्वास रखना कि मैं अपने पुराने दुश्मन बीरेन्द्रसिंह का पीछा कदापि न छोड़ूँगा, सो भी ऐसी अवस्था में कि जब तुम लोगों-ऐसे मर्द दिलावर और निमकहलाल सिपाही मेरे साथी हैं। अच्छा यह सब बातें तो फिर होती रहेंगी, इस समय मैं मकान से बाहर निकलकर अपने वीरों को देखा और उनसे मिला चाहता हूँ, क्योंकि यह मकान इतना बड़ा नहीं है कि सब सिपाही इसमें समा जाँय और मैं इसी जगह बैठा-बैठा सबसे मिल लूँ। चलो तुम लोग तालाब के पार चलो, मैं भी आता हूँ !"

शिवदत्त की बातें सुनकर ये सिपाही लोग बहुत ही प्रसन्न हुए और जल्दी के साथ उस मकान से निकलकर तालाब के बाहर हो गये, जहाँ और सिपाही सब खड़े बेचैनी के साथ इन लोगों की राह देख रहे थे, और यह जानने के लिए उत्सुक थे कि मकान के अन्दर क्या हो रहा है।

सिपाहियों के बाहर हो जाने बाद शिवदत्त भी मकान से निकला और तालाब से बाहर हो गया। माधवी और मनोरमा उस मकान के अन्दर ही रह गयीं।

अब सबेरा हो चुका था। पूरब तरफ आसमान पर भगवान सूर्यदेव का लाल पेशखेमा दिखायी देने लगा। शिवदत्त मैदान में खड़ा हो गया, और खुशी के मारे उसकी जयजयकार करते उसके सिपाहियों ने चारों तरफ से उसे घेर लिया, तथा यह सुनने के लिए उत्सुक होने लगे कि देखें अब हमारी तारीफ में हमारे राजा साहब क्या कहते हैं।

पर इसी समय पूरब तरफ से बाजे की आवाज इन लोगों के कानों में पहुँची। सिपाहियों के साथ-साथ शिवदत्त भी चौकन्ना हो गया, और गौर के साथ पूरब तरफ देखता हुआ बोला, "यह तो फौजी बाजे की आवाज है। वह देखो इसकी गत साफ कहे देती है कि राजा बीरेन्द्रसिंह की फौज आ

रही है, क्योंकि बीरेन्द्रसिंह जब चुनार की गद्दी पर बैठे थे तो तेजसिंह ने अपने फौजी बाजेवालों के लिए यह खास गत तैयार की थी। तब से उनकी फौज में प्रायः यह गत बजायी जाती है। मैं इसे अच्छी तरह से जानता हूँ। देखो वह गर्द भी दिखायी देने लगी, अब क्या करना चाहिए? जहाँ तक मैं समझता हूँ, तुम्हारे हमले की खबर रोहतासगढ़ पहुँची है, और वह फौज रोहतासगढ़ से आ रही है, मगर दो तीन-सौ से ज्यादे आदमी न होंगे।"

इसके बाद पश्चिम की तरफ से बाजे की आवाज आयी, और गौर करने पर मालूम हुआ कि पश्चिम तरफ से भी फौज आ रही है।

शिवदत्त के सिपाही बहुत मेहनत कर चुके थे, न भी मेहनत किये हों तो क्या था, राजा बीरेन्द्रसिंह की फौज की खबर पाकर अपने कलेजे को मजबूत रखना ऐसे सिपाहियों का काम न था, जो वर्षों बिना तनखाह के सिर्फ मालिक के नाम पर अपने सिपाहीपन को टेरे जाते हों। उन लोगों ने घबड़ाकर शिवदत्त की तरफ देखा। यद्यपि कैद की सख्ती ने शिवदत्त की सूरत-शकल और आवाज में भी फर्क डाल दिया था, मगर इस समय राजा बीरेन्द्रसिंह की फौज के आने से उसके चेहरे पर किसी तरह की घबराहट या उदासी नहीं पायी गयी। शिवदत्त ने अपने सिपाहियों की तरफ देखा और हिम्मत दिलानेवाले शब्दों में कहा, "घबराओ मत, हिम्मत न हारो, हौसले के साथ भिड़ जाओ और इन सभों का असबाब भी लूट लो मगर इस बात का खूब ध्यान रक्खो कि भागकर इस मकान के अन्दर न घुस जाना, नहीं तो चारों तरफ से घेरकर सहज ही में मार डाले जाओगे। यदि मैदान में डटे रहोगे तो कठिन समय पड़ जाने पर भागने को भी जगह मिलेगी—" इत्यादि।

क्या करें? लड़ें या न लड़ें? रुकें या भाग जाँय? इत्यादि सोच-विचार और सलाह में ही बहुत-सा अमूल्य समय निकल गया और धावा करते हुए राजा बीरेन्द्रसिंह के फौजी सिपाहियों ने पूरब और पश्चिम तरफ से आकर दुश्मनों को घेर लिया। यद्यपि शिवदत्त के सिपाही भागने के लिए तैयार थे, मगर शिवदत्त के हिम्मत दिलानेवाले शब्दों की बदौलत, जिन्हें वह बार-बार अपने मुँह से निकाल रहा था, थोड़ी देर के लिए अड़ गये और राजा बीरेन्द्रसिंह की फौज से जो गिनती में दो-सौ से ज्यादे न होगी जी तोड़के लड़ने लगे। उसके अटल रहने और जी तोड़कर लड़ने का एक यह भी सबब था कि उन लोगों ने राजा बीरेन्द्रसिंह के फौजी सिपाहियों को जो वास्तव में रोहतासगढ़ से आये थे, गिनती में अपने से बहुत कम पाया था।

यह थोड़ी-सी फौज जो रोहतासगढ़ से आयी थी, चुन्नीलाल ऐयार के

अधीन थी। चुन्नीलाल ने जासूसों को भेजकर इस बात का पता पहिले ही लगा लिया था कि तालाबवाले तिलिस्मी मकान पर हमला करनेवाले दुश्मन कितने और किस ढंग के हैं, इसके बाद उसने अपनी फौज को फैलाकर दुश्मनों को चारों तरफ से घेर लेने का उद्योग किया था, और जोकुछ सोच रक्खा था, वही हुआ।

चुन्नीलाल की मातहत फौज ने दुश्मनों को घेरकर बेतरह मारा। चुन्नीलाल स्वयं तलवार लेकर मैदान में अपनी बहादुरी दिखाता हुआ, अपने सिपाहियों की हिम्मत बढ़ा रहा था, और जिधर धँस जाता था, उधर ही दस-पाँच को खीरे-ककड़ी की तरह काट गिराता था। यह हाल देख दुश्मन बगलें झाँकने लगे, मगर लड़ाई इस ढंग से हो रही थी कि यहाँ से बचकर निकल भागना भी मुश्किल था। दो घण्टे की लड़ाई में आधे से भी ज्यादे दुश्मन मारे गये और बाकी भागकर अपनी जान बचा ले गये। बीरेन्द्र-सिंह के केवल बीस बहादुर काम आये। इस घमासान लड़ाई के अन्त में इस बात का कुछ भी पता न लगा कि शिवदत्त बहादुरी के साथ लड़कर मारा गया या मौका मिलने पर निकल भागा।

जब दुश्मनों में से सिवाय उन सभों के जो मौत की गोद में सो चुके थे, या जमीन पर पड़े सिसक रहे थे, और कोई भी न रहा, सब भाग गये, तब केवल दस-बारह आदमियों को साथ लेकर चुन्नीलाल तिलिस्मी मकान की तरफ बढ़ा, मगर मकान में पहुँचने के पहिले ही सिपाही सूरत एक आदमी जो उसी मकान में से निकलकर इनकी तरफ आ रहा था, उसे मिला। उसके हाथ में लिफाफे के अन्दर बन्द एक चीठी थी, जो उसने चुन्नीलाल के हाथ में दे दी, और चुपचाप खड़ा हो गया। चुन्नीलाल ने भी उसी जगह अटककर लिफाफा खोला और बड़े ध्यान से चीठी पढ़ने लगा। समाप्त होने तक कई दफे चुन्नीलाल के चेहरे पर हँसी दिखायी दी, और अन्त में वह बड़े गौर से उस आदमी की सूरत देखने लगा, जिसने चीठी दी थी, तथा इसके बाद इशारे से सिर हिलाया मानो उस आदमी को वहाँ से बेफिक्री के साथ चले जाने के लिए कहा, और वह आदमी भी बिना सलाम किये झूमता हुआ वहाँ से चला गया।

चुन्नीलाल कई आदमियों को साथ लेकर तिलिस्मी मकान के अन्दर गया। उसने वहाँ अच्छी तरह घूम-घूमकर देखा, मगर किसी को न पाया, तब बाहर निकला, और अपने मातहत सिपाहियों को लेकर रोहतासगढ़ की तरफ लौट गया।

सातवाँ बयान

ऊपर का बयान पढ़कर हमारे प्रेमी पाठक ताज्जुब करते होंगे कि यह क्या हुआ और क्या लिखा गया। और बातों को जाने दीजिए, मगर अन्त में यह क्या आश्चर्य की बात हो गयी कि चुन्नीलाल तिलिस्मी मकान के अन्दर आया, और मामूली तौर पर देख-भालकर चला गया, बेचारी किशोरी, कामिनी और तारा की कुछ सुध न ली। खैर, सब्र कीजिए और ज़रा हमारे साथ फिर उस जगह चलिए जहाँ श्यामसुन्दर, भगवनिया, भैरोसिंह, कमलिनी, लाडिली, देवीसिंह और भूतनाथ को छोड़ आये हैं।

जिस समय भगवनिया ने कमलिनी को अपने सामने देखा, वह बदहवास हो गयी, कलेजा काँपने लगा, साँस में रुकावट पैदा हुई और उसे मौत की-सी तकलीफ मालूम होने लगी। उसने चाहा कि कमलिनी के पैरों पर गिरकर अपना कसूर माफ करावे, मगर डर के मारे उसके खून की हरकत बिल्कुल बन्द हो गयी थी, इसलिए वह कुछ भी न कर सकी, बल्कि क्रमशः बढ़ते ही जानेवाले खौफ के सबब बेदम होकर पीछे की तरफ जमीन पर गिर पड़ी।

भगवानी की यह अवस्था देखकर कमलिनी को आश्चर्य मालूम हुआ, क्योंकि उसने अभी तक श्यामसुन्दरसिंह और भगवानी का हाल कुछ न जाना था। भैरोसिंह ने भूतनाथ को रोशनी करने के लिए कहकर संक्षेप में वह सब हाल कमलिनी को कह सुनाया जो भगवानी के विषय में श्यामसुन्दरसिंह से सुना था। कमलिनी को हद से ज्यादा क्रोध चढ़ आया मगर वह बुद्धिमान थी, और इस बात को खूब समझती थी कि ऐसे मौके पर क्रोध के ऊपर अधिकार न कर लेने से प्रायः तकलीफ और नुकसान हुआ करता है, कहीं ऐसा न हो कि डर के मारे या विशेष धमकाने से भगवानी का दम निकल जाय या वह, जिसका दिल और दिमाग बहुत ही कमजोर है, पागल हो जाय, जैसा कि प्रायः हुआ करता है, तो बड़ी ही मुश्किल होगी और किशोरी, कामिनी तथा तारा का कुछ भी पता न लगेगा।

रोशनी हो जाने पर जब कमलिनी ने भगवानी की सूरत देखी तो मालूम हुआ कि उस पर हद से ज्यादे खौफ पड़ चुका है। आँखें बन्द हैं, चेहरे पर जर्दी छायी हुई है, और बदन काँप रहा है। कमलिनी ने कुछ ऊँची आवाज में कहा, "होश में आ और मेरी बातें सुन, एकदम नाउम्मीद न हो, कदाचित तेरी जान बच जाय!"

इस आवाज ने बेशक अच्छा असर किया, जैसाकि कमलिनी ने सोचा था। 'कदाचित तेरी जान बच जाय' यह सुनकर भगवानी ने आँखें खोल

दीं। कमलिनी ने फिर कहा, "यद्यपि तूने बहुत बड़ा कसूर किया है, मगर मैं वादा करती हूँ कि यदि तू झटपट सच्चा-सच्चा हाल कह देगी तो तेरी जान छोड़ दी जायगी।"

अब भगवानी उठ बैठी और अपने को सम्हालकर हाथ जोड़ के काँपती हुई आवाज के साथ बोली, "क्या मेरी जान छोड़ दी जायगी ?"

कमलिनी : हाँ, छोड़ दी जायगी यदि सच्चा-सच्चा हाल कहकर अपना दोष स्वीकार कर लेगी और किशोरी, कामिनी तथा तारा का ठीक-ठीक पता बता देगी।

भगवानी : (कमलिनी के पैरों पर गिरकर और फिर खड़ी होकर) बेशक मैं कसूरवार हूँ। जो कुछ मैंने किया है, मैं साफ कह दूँगी। अफसोस ! लालच में पड़कर मैंने बहुत बुरा किया था। मुझे शिवदत्त ने धोखा दिया, बेसमझे-बूझे मैं···

कमलिनी : बस बस, ज्यादे बात बढ़ाने की कोई जरूरत नहीं, जो कुछ कहना है, जल्दी से कह दे, विलम्ब होना तेरे लिए अच्छा नहीं है।

भगवानी ने सब हाल अर्थात् जो कुछ उसने कसूर किया था, सच-सच कह दिया और अन्त में फिर कमलिनी के पैरों पर गिरकर बोली, "मैंने कोई बात नहीं छिपायी, अब अपनी प्रतिज्ञानुसार मुझे छोड़ दीजिए।"

"हाँ, छोड़ दूँगी।" कहकर कमलिनी ने भूतनाथ और श्यामसुन्दरसिंह की तरफ देखा, और कहा, "इसकी मुश्कें बाँध लो और जहाँ उचित समझो ले जाकर अपनी हिफाजत में रक्खो। हम लोग मकान की तरफ न जाकर पहिले किशोरी, कामिनी और तारा को छुड़ाने का उद्योग करते हैं, और इसके बाद जैसा मौका होगा, किया जायगा। कल इसी समय, इसी जगह, हम लोग या हम लोगों में से कोई आवेगा, तुम मौजूद रहना, अगर भगवानी की बात सच निकली तो ठीक ही है, नहीं तो एक बात भी झूठी निकलने पर कल इसी जगह इसका सिर उतार लिया जायगा। बस, अब मैं एक पल भी नहीं रुक सकती।"

भूतनाथ और भगवानी को इसी जगह छोड़ भैरोसिंह, देवीसिंह और लाडिली को साथ लिये हुए कमलिनी वहाँ से रवाना हुई। इस समय उसके पास तिलिस्मी खंजर मौजूद था, वही तिलिस्मी खंजर जो भैरोसिंह का पत्र पाकर इन्द्रदेव ने उसे दे दिया था।

वहाँ से थोड़ी दूर पर एक पहाड़ी थी, जिससे मिली-जुली छोटी-बड़ी पहाड़ियों का सिलसिला पीछे की तरफ दूर तक चला गया था। कमलिनी अपने साथियों को लिये हुए उसी तरफ रवाना हुई। कमलिनी को अपने मकान के बरबाद होने और लूटे जाने का इतना रंज न था, जितना किशोरी,

कामिनी और तारा की अवस्था पर रंज था। वह आपुस में निम्नलिखित बातें करती हुईं तेजी से उस पहाड़ी की तरफ जा रही थीं—

कमलिनी : अफसोस, तारा ने बड़ा धोखा खाया ! अब देखा चाहिए उन तीनों को मैं जीता पाती हूँ, या नहीं !

लाडिली : किशोरी और कामिनी बेचारी ने न मालूम विधाता का क्या बिगाड़ा है कि सिवा दुख के सुख तो उन्हें···

कमलिनी : दुख ने तो पहिले ही उन्हें अधमुआ कर दिया था, अब देखा चाहिए कि कई दिन की भूख-प्यास ने उन्हें जीता भी छोड़ा है, या नहीं ? (रोकर) सच तो यह है कि यदि वे जीती-जागती आज मुझे न मिलीं तो मैं दोनों कुमारों को मुँह दिखाने लायक न रहूँगी, और जब इस योग्य हो जाऊँगी तो फिर जीकर ही क्या करूँगी ! (कुछ सोचकर) निःसन्देह अगर ऐसा हुआ तो आज मुझे भी उसी जगह मरकर रह जाना होगा। हे ईश्वर, तेरी सृष्टि में एक-से-एक बढ़कर खूबसूरत गुलबूटे मौजूद हैं, इन दोनों के लिए कभी नहीं है, क्या तू नहीं जानता कि उन कुमारों की जिन्दगी के लिए, जिनकी प्रसन्नता पर हमारी प्रसन्नता निर्भर है, केवल ये ही दोनों हैं ? अफसोस, यद्यपि कमबख्त भगवानी से मैं खटकी रहती थी, मगर यह आशा न थी कि वह यहाँ तक कर गुजरेगी।

भैरो : क्या आप जानती थीं कि भगवानी दिल की खोटी है ?

कमलिनी : मुझे इस बात का निश्चय तो न था कि वह खोटी है, मगर उसके बात-बात पर कसम खाने से मैं खटकी रहती थी, क्योंकि मैं खूब जानती हूँ कि जो आदमी लापरवाही के साथ बात-बात पर कसमें खाया करता है, वह वास्तव में झूठा और खोटा होता है। मायारानी के सत्संग के सबब से यदि वह मेरे इस तिलिस्मी मकान के तहखाने के भेद से अनजान रहती तो मैं स्वयं उसे वह भेद कदापि न बताती। तिस पर भी खुटका बना रहने के कारण मैं स्वयं जब ताला खोलकर उस तहखाने और सुरंग में जाती थी, तो ताले को जमीन पर नहीं रख देती थी, बल्कि कुण्डी में लगाकर, ताली अपने पास रख लेती थी, जिससे तहखाने या सुरंग में जाने बाद पीछे से कोई आदमी ताला बन्द करना तो दूर रहे जंजीर भी न चढ़ा सके।

देवी : बेशक यह बड़ी चालाकी की बात है, जब खाली कुण्डी में ताला लगा रहेगा तो किसी तरह कोई जंजीर नहीं चढ़ा सकता।

कमलिनी : और यह बात तारा को मालूम थी, मगर अफसोस उसने इस पर कुछ ध्यान न दिया और धोखा खा गयी। मैं बहुत दिनों से इस फिक्र में थी कि भगवानी को अच्छी तरह जाँचकर खटका मिटा लिया जावे, लेकिन इतनी फुरसत ही न मिली। दस दिन निश्चिन्त होकर घर में बैठने

की कभी नौबत ही न आयी। मगर आश्चर्य की बात है कि भगवानी ने इतनी खोटी होने पर भी हमारे यहाँ की कोई बात मायारानी के कान तक न पहुँचायी, क्योंकि अभी तक कोई ऐसी बात पायी नहीं गयी, जिससे मैं समझती कि मेरा फलाना भेद मायारानी को मालूम हो गया है।

भैरो : यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि मौका मिलने पर आदमी की तबीयत यकायक बदल जाय। एक पुरानी मसल चली आती है कि 'आदमी का शैतान आदमी होता है'। इसका मतलब यही है कि चालाक और धूर्त आदमी अपनी लच्छेदार बातों में फँसाकर किसी भी आदमी की तबीयत को बदल सकता है। मन बड़ा ही चंचल है, इसे स्वाधीन रखना कोई मामूली बात नहीं है। बड़े-बड़े ऋषि-मुनियों का सैकड़ों वर्षों का उद्योग भी जो केवल मन को स्वाधीन करने के विषय में किया गया था, बात-की-बात में वृथा हो चुका है। हाँ, नेक और बद आदमियों के मन में इतना भेद अवश्य होता है कि भाव बदल जाने या धोखे में पड़कर किसी बुराई के हो जाने पर नेक आदमी तुरन्त चौकन्ना हो जाता है और सोचता है कि 'बेशक यह काम मुझसे बुरा हो गया' मगर बुरे मनुष्य में, जिसने अपने मन पर अधिकार जमाने के लिए, कुछ उद्योग न किया हो यह बात नहीं होती। जो आदमी इस बात को सोचता है कि मन क्या वस्तु है, इसकी चंचलता कैसी है, यह कितनी जल्दी बदल जाने की सामर्थ्य रखता है, या उसे अधिकार में न रखने से क्या-क्या खराबियाँ हो सकती हैं, उसके हृदय में एक ऐसी ताकत पैदा हो जाती है, जिसकी उत्पत्ति तो विचार शक्ति से है, मगर यह कहना बहुत कठिन है कि वह स्वयं क्या पदार्थ है? उसका काम यह है कि मन की चंचलता या शिथिलता के कारण यदि कोई बुराई होना चाहती है, तो वह विचित्र ढंग का खुटका पैदा करके, तुरन्त खबर दे देता है कि यह काम बुरा है, या तूने बुरा किया। यह विषय बड़ा गम्भीर है, ऐसे समय में अर्थात् राह चलते-चलते इस विषय को स्पष्ट रूप से मैं नहीं दिखा सकता, मगर मेरे कहने का मतलब केवल यही है कि आदमी का शैतान आदमी होता है। आदमी अपने हमजिन्स की तबीयत को बेशक बदल सकता है। हाँ, यह बात विचारशक्ति की दृढ़ता और स्थिरता पर निर्भर है कि किसका मन कितनी देर में बदल सकता है। भगवानी औरत की जात है, जिनका मन बनिस्बत मर्दों के बहुत कमजोर होता है। ऐसे को यदि तीन धूर्तों की लच्छेदार बातों ने जो आपके यहाँ कैद थे, मौका पाकर बदल दिया तो कोई आश्चर्य की बात नहीं, इससे इस बात को निश्चिन्त नहीं कह सकते कि भगवानी अवश्य पहिले से ही खोटी थी, या पहिले अच्छी थी, बीच में खोटी बना दी गयी।

कमालनी : (भैरोसिंह के विचार से प्रसन्न होकर) बेशक, तुम्हारा कहना बहुत ठीक है, मैं स्वीकार करती हूँ।

देवी : (भैरोसिंह की पीठ मुहब्बत से ठोंककर) शाबाश ! मैं यह जानकर प्रसन्न हुआ कि तुम मन की अवस्था को अच्छी तरह समझते हो, जिसका नतीजा भविष्य में बहुत अच्छा निकलेगा। ईश्वर हमारे उस मनोरथ को पूरा करे, जिसके लिए इस समय तेजी और घबड़ाहट के साथ हम लोग जा रहे हैं, तो किसी समय इस विषय पर बहुत-सी बातें मैं तुमसे कहूँगा।

इन लोगों को राह चलने या स्थान खोजने में किसी तरह की कठिनता न हो, इसलिए विधाता ने आसमान पर कुदरती माहताबी जला दी थी और वह क्रमशः ऊँची होकर पृथ्वी के इस खण्ड की उन तमाम चीजों को, जो किसी आड़ में न थीं साफ दिखायी देने में, सहायता कर रही थीं। यही सबब था कि इन लोगों को उन कठिन रास्तों पर चलने में विशेष कष्ट न हुआ, जो बहुत ही पथरीला, खराब और चकाबू के नक्शे की तरह पेचीला था।

पहाड़ियों पर घूम-फिरकर चढ़ते-उतरते हुए ये लोग एक ऐसे स्थान पर पहुँचे, जिसके दोनों तरफ ऊँचे पहाड़ और बीच में एक बारीक पगडण्डी थी, जिसके देखने से साफ मालूम होता था कि कारीगरों ने बड़े-बड़े ढोकों को काटकर यह रास्ता तैयार किया होगा। यहाँ पर कमलिनी और लाडिली घोड़ों पर से उतर पड़ीं, और उन्हें एक पेड़ से बाँध आगे की तरफ रवाना हुईं। कमलिनी आगे-आगे जा रही थी, उसके पीछे लाडिली और फिर दोनों ऐयार आश्चर्य से चारों तरफ देखते और यह सोचते हुए जा रहे थे कि निःसन्देह अनजान आदमी, जिसे इस रास्ते का हाल मालूम न हो, यहाँ कदापि नहीं आ सकता।

इस पगडण्डी पर दो सौ कदम जाने बाद साफ पानी से भरा हुआ एक पतला चश्मा मिला, जो इन लोगों की राह काटता हुआ, दाहिने से बायीं तरफ को बह रहा था। अब कमलिनी उसी नहर के किनारे-किनारे बायीं तरफ जाने लगी, मगर अपनी तेज निगाहें उन छोटे-छोटे जंगली पेड़ों पर बड़ी सावधानी से डालती जाती थी, जो उस चश्मे के दोनों किनारों पर बड़ी खूबी और खूबसूरती के साथ खड़े इस समय की ठण्डी-ठण्डी हवा के नर्म झोंकों में नये शराबियों की तरह धीरे-धीरे झूम रहे थे।

यकायक कमलिनी की निगाह एक ऐसे पेड़ पर पड़ी, जिसके दोनों तरफ पत्थरों के ढोंके इस तौर पर पड़े हुए थे, मानो किसी ने जान-बूझकर इकट्ठे किये हों। यहाँ पर कमलिनी रुकी और कुछ सोचने बाद अपने

साथियों को लिये चश्मे के पार उतर गयी, जिसके आगे थोड़ी ही दूर जाने बाद ढालवीं जमीन मिली, मगर लाडिली और दोनों ऐयार कमलिनी के पीछे-पीछे चले ही गये। दो-सौ कदम से ज्यादे न गये होंगे कि ये लोग एक गुफा के मुहाने पर पहुँचकर रुक गये। कमलिनी ने देवीसिंह से मोमबत्ती जलाने के लिए कहा और जब मोमबत्ती जल चुकी तो सब उस खोह के अन्दर घुसे। खोह की अवस्था देखने से जाना जाता था कि वर्षों से इसकी जमीन ने किसी आदमी के पैर न चूमे होंगे, बल्कि कह सकते हैं कि शायद किसी जंगली जानवर ने भी इसके अन्दर आने का साहस न किया होगा। थोड़ी ही दूर पर खोह का अन्त हुआ और इन लोगों ने अपने सामने लोहे का एक बन्द दरवाजा देखा। कमलिनी ने लाडिली पर एक भेद-भरी निगाह डाली और कहा, "इस दरवाजे का हाल राजा गोपालसिंह के सिवाय कोई भी नहीं जानता। मुझे तो खून से लिखी हुई किताब की बदौलत इसका हाल मालूम हुआ है, इसकी चाभी भी इसी जगह मौजूद है।" यह कहकर कमलिनी ने तिलिस्मी खंजर के कब्जे से दरवाजे के दाहिनी तरफ बीचोबीच की जमीन ठोंकी, जो वास्तव में किसी धातु की थी, मगर मुद्दत से काम में न आने के कारण उसका रंग पत्थर के रंग में मिल गया था।

ठुकने साथ ही बित्ते-भर का एक पल्ला अलग हो गया, और उसके अन्दर हाथ डालकर कमलिनी ने कोई पेंच दबाया, और इसके साथ ही हलकी आवाज देता हुआ दरवाजा खुल गया। कमलिनी ने उस खिड़की को बन्द कर दिया, जिसके अन्दर हाथ डालकर पेंच घुमाया था और इसके बाद सभों को लिये हुए दरवाजे के अन्दर चली गयी।

दरवाजा खोलने के लिए, जिस तरह की चाभी इस तरफ थी, उसी तरह की दरवाजे के दूसरी तरफ भी थी, अर्थात दूसरी तरफ भी उसी तरह की ताली और पेंच मौजूद था, जिसे घुमाकर कमलिनी ने दरवाजा बन्द किया, और साथियों को साथ लिये हुए आगे की तरफ बढ़ी। इन सभों को घण्टे-भर तेजी के साथ जाना पड़ा, और इसके बाद मालूम हुआ कि सुरंग के दूसरे मुहाने पर पहुँच गये, क्योंकि यहाँ भी उसी रंग-ढंग का दरवाजा बना हुआ था। कमलिनी ने उस दरवाजे को भी खोला और सभों को साथ लिये हुए अन्दर चली गयी। यहाँ पर रास्ता दो हो गया था अर्थात् एक सुरंग बायीं तरफ गयी हुई थी और दूसरी दाहिनी तरफ। कमलिनी ने भैरोसिंह और देवीसिंह की तरफ देखके कहा, "मुझे मालूम है कि दाहिनी तरफ जाने से हम लोग उस कोठरी में पहुँचेंगे, जिसमें कैदी लोग कैद थे या जो कैदखाने के नाम से पुकारी जाती है, और बायीं तरफ जाने से हम लोग उस सुरंग के बीचोबीच में पहुँचेंगे, जिसमें किशोरी, कामिनी और तारा को

भगवनिया ने फँसा रक्खा है। आप लोगों की क्या राय है, किधर चलना चाहिए ?"

देवी : हम लोगों को पहिले उस सुरंग ही में चलना चाहिए, जिसमें किशोरी, कामिनी और तारा को जल्द देखें।

इस बात को सभों ने पसन्द किया और कमलिनी ने बायीं तरफ का रास्ता लिया। दो चार कदम जाने के बाद भैरोसिंह ने कहा, "मैं समझता हूँ कि अब बीस-पचीस कदम से ज्यादे न चलना होगा, और उस ठिकाने पहुँच जायेंगे, जहाँ शीघ्र पहुँचने की इच्छा है !"

कमलिनी : यह बात तुझको कैसे मालूम हुई ?

भैरो : (छत और दोनों तरफ की दीवार की तरफ इशारा करके) देखिए छत और दीवार नम मालूम होती है, कहीं-कहीं पानी की बूंदें भी टपक रही हैं, इससे निश्चित होता है कि इस समय हम लोग तालाब के नीचे पहुँच गये हैं।

कमलिनी ने कहा, "ठाक है, तुम्हारा सबूत ऐसा नहीं है कि कोई काट सके।"

थोड़ी ही दूर आगे जाने बाद एक छोटी-सी खिड़की मिली। इसका दरवाजा भी उसी ढंग से खुलनेवाला था, जैसा कि पहिला और दूसरा दरवाजा, जिसका हाल हम ऊपर लिख आये हैं। कमलिनी ने दरवाजा खोला।

इस समय इन चारों का कलेजा धकधक कर रहा था, क्योंकि अब ये लोग किशोरी, कामिनी और तारा की किस्मतों का फैसला देखनेवाले थे और उनके दिलों का यह खुटका क्रमशः बढ़ता ही जाता था कि देखें बेचारी किशोरी, कामिनी और तारा को हम लोग किस अवस्था में पाते हैं ! कहीं ऐसा न हुआ हो कि वे तीनों भूख-प्यास के दुःख को न सहकर इस दुनिया से कूच कर गयी हों, और इस समय उनकी लाशें सामने पड़कर हम लोगों को भी दीन-दुनिया के लायक न रक्खें।

यहाँ पर एक मोमबत्ती और जला ली गयी। दरवाजा खुला और ये चारों उसके अन्दर गये। आह, यहाँ यकायक जमीन पर सामने की तरफ तीन लाशें पड़ी हुई दिखायी दीं, जिन पर नजर पड़ते ही कमलिनी के मुँह से एक चीख निकल पड़ी, और वह 'हाय' करके उन लोगों के पास जा पहुँची।

ये तीनों लाशें किशोरी, कामिनी और तारा की थीं, जो भूख और प्यास की सतायी हुई, इस अवस्था को पहुँच गयी थीं। तारा के बगल में तिलिस्मी नेजा जमीन पर पड़ा हुआ था, और उसके जोड़ की अँगूठी उसकी खूब-

सूरत उँगली में पड़ी हुई थी।

कमलिनी ने सबसे पहिले किशोरी के कलेजे पर हाथ रक्खा। कलेजे की धड़कन बन्द थी, और शरीर मुर्दे की तरह ठण्डा था। कमलिनी की आँखों से आँसू की बूँदें गिरने लगीं, मगर उसने किशोरी की नब्ज पर हाथ रक्खा और साथ ही इसके खुश होकर बोल उठी, "अहा, अभी नब्ज चल रही है ! आशा है कि ईश्वर मेरी मेहनत सफल करेगा !!"

कमलिनी ने तारा और कामिनी की भी जाँच की, दोनों ऐयारों ने भी सभों को गौर से देखा। किशोरी, कामिनी और तारा तीनों की अवस्था, खराब थी, होश-हवास कुछ भी न था, साँस बिल्कुल मालूम नहीं पड़ती थी, हाँ, नब्ज का कुछ-कुछ पता लगता था, जो बहुत ही बारीक और सुस्त चल रही थी। यद्यपि यह जानकर सभों को कुछ प्रसन्नता हुई कि ये तीनों अभी जीती हैं, मगर फिर भी उन तीनों की अन्तिम अवस्था इस बात का निश्चय नहीं कर सकती थी कि इनकी जान निःसन्देह बच ही जायगी और यही कारण था कि जिससे कमलिनी, लाडिली, देवीसिंह और भैरोसिंह का कलेजा काँप रहा था और आँखें डबडबायी हुई थीं।

देवीसिंह ने अपने बटुए में से एक शीशी निकाली, जिसमें लाल रंग का कोई अर्क था। उसी में से थोड़ा-थोड़ा अर्क उन तीनों के मुँह में (जो पहिले ही से खुला हुआ था) डाला और थोड़ी देर बाद फिर नब्ज पर हाथ रक्खा। नब्ज पहिले से कुछ तेज मालूम हुई, और साँस भी कुछ चलने लगी।

भैरो : इन दोनों को यहाँ से बाहर निकालकर मैदान में ले चलना चाहिए, क्योंकि जब तक ठण्डी और ताजी हवा न मिलेगी, इनकी अवस्था ठीक न होगी !

देवी : बेशक ऐसा ही है, इस सुरंग की बन्द हवा हमारे इलाज को सफल न होने देगी।

कमलिनी : तो पहिले यही काम करना चाहिए।

इतना कहकर कमलिनी ने तारा की उँगली से तिलिस्मी नेजे के जोड़ की अँगूठी निकाल ली और भैरोसिंह को देकर कहा, "इस अँगूठी को तुम पहिर लो, जिसमें इस तिलिस्मी नेजे को अपने पास रख सको, क्योंकि इन तीनों को बाहर ले जाने बाद लाडिली और देवीसिंह को साथ लेकर थोड़ी देर के लिए मैं तुमसे अलग हो जाऊँगी और किशोरी, कामिनी तथा तारा की हिफाजत के लिए तुम अकेले रह जाओगे।"

"मैं आपका मतलब समझ गया।" कहकर भैरोसिंह ने अँगूठी लेकर अपनी उँगली में पहिर ली।

कमलिनी : मेरे इस कहने स तुमने क्या मतलब निकाला ? मेरा

इरादा क्या समझे ?

भैरो : यही कि आप लोग माधवी, मनोरमा और शिवदत्त बनकर उन दुश्मनों को धोखा दिया चाहते हैं, क्योंकि वे लोग अभी तक बेहद उथल-पुथल मचाने पर भी आपके मकान के बाहर न हुए होंगे।

कमलिनी : शाबाश ! तुम्हारी बुद्धि बड़ी तेज है, बेशक, मेरा यही इरादा है।

दो दफे करके हिफाजत के साथ चारों आदमियों ने किशोरी, कामिनी और तारा को सुरंग के बाहर निकाला और देवीसिंह तथा भैरोसिंह बड़ी मुस्तैदी से किशोरी, कामिनी और तारा का इलाज करने लगे। जब कमलिनी को इस बात का निश्चय हो गया कि अब इन तीनों की जान का खौफ नहीं है, तब वह देवीसिंह और लाडिली को साथ लेकर फिर उसी सुरंग में घुसी। अबकी दफे तब वह कैदखानेवाली कोठरी में गयी और वहाँ कार्रवाई का पूरा मौका पाकर इन तीनों ने माधवी, मनोरमा और शिवदत्त बन जो कुछ किया, उसका हाल हम ऊपर के बयानों में लिख चुके हैं।

पाठक महाशय, अब आप तो समझ ही गये होंगे कि दुश्मनों ने खोज-ढूँढ़कर तहखाने में से जिन कैदियों को निकाला, वे वास्तव में माधवी, मनोरमा और शिवदत्त न थे, बल्कि कमलिनी, लाडिली और देवीसिंह थे। खैर, अब इस तरफ आइए और किशोरी, कामिनी तथा तारा का हाल देखिए, जिनकी हिफाजत के लिए केवल भैरोसिंह रह गये थे।

ताकत पहुँचानेवाली दवाओं की बरकत से किशोरी, कामिनी और तारा ने उस समय आँखें खोलीं, जब आसमान पर सुबह की सुफेदी फैल चुकी थी। पूरब से निकलकर क्रमशः फैल जानेवाली लालिमा रात-भर तेजी के साथ चमकनेवाले सितारों और उनके सरदार चन्द्रदेव को सूर्यदेव की अवाई की सूचना दे रही थी और इसी सबब से तारों समेत तारापति भी नौ दो ग्यारह होने के उद्योग में लगे हुए थे तथा भैरोसिंह आसमान की तरफ मुँह किये, बड़ी दिलचस्पी के साथ इस शोभा को देख-देखकर सोच रहा था कि 'वाह, ईश्वर की भी क्या विचित्र गति है ? करोड़ों आदमी ऐसे होंगे जो चन्द्रदेव की यह अवस्था देख सूर्यदेव ही के ऊपर इनसे वैर रखने का कलंक लगाते होंगे, जिनकी बदौलत चन्द्रमा में रोशनी है, और वह खूबसूरती तथा उद्दीपन का मसाला गिना जाता है'।

इस समय भैरोसिंह को यह देखकर कि किशोरी, कामिनी और तारा ने आँखें खोल दी हैं, बड़ी खुशी हुई और उसने समझा कि अब मेरी मेहनत ठिकाने लगी, मगर अफसोस, उसे इस बात की कुछ खबर न थी कि बद-

सूरत उँगली में पड़ी हुई थी।

कमलिनी ने सबसे पहिले किशोरी के कलेजे पर हाथ रक्खा। कलेजे की धड़कन बन्द थी, और शरीर मुर्दे की तरह ठण्डा था। कमलिनी की आँखों से आँसू की बूँदें गिरने लगीं, मगर उसने किशोरी की नब्ज पर हाथ रक्खा और साथ ही इसके खुश होकर बोल उठी, "अहा, अभी नब्ज चल रही है ! आशा है कि ईश्वर मेरी मेहनत सफल करेगा !!"

कमलिनी ने तारा और कामिनी की भी जाँच की, दोनों ऐयारों ने भी सभों को गौर से देखा। किशोरी, कामिनी और तारा तीनों की अवस्था, खराब थी, होश-हवास कुछ भी न था, साँस बिल्कुल मालूम नहीं पड़ती थी, हाँ, नब्ज का कुछ-कुछ पता लगता था, जो बहुत ही बारीक और सुस्त चल रही थी। यद्यपि यह जानकर सभों को कुछ प्रसन्नता हुई कि ये तीनों अभी जीती हैं, मगर फिर भी उन तीनों की अन्तिम अवस्था इस बात का निश्चय नही कर सकती थी कि इनकी जान निःसन्देह बच ही जायगी और यही कारण था कि जिससे कमलिनी, लाडिली, देवीसिंह और भैरोसिंह का कलेजा काँप रहा था और आँखें डबडबायी हुई थीं।

देवीसिंह ने अपने बटुए में से एक शीशी निकाली, जिसमें लाल रंग का कोई अर्क था। उसी में से थोड़ा-थोड़ा अर्क उन तीनों के मुँह में (जो पहिले ही से खुला हुआ था) डाला और थोड़ी देर बाद फिर नब्ज पर हाथ रक्खा। नब्ज पहिले से कुछ तेज मालूम हुई, और साँस भी कुछ चलने लगी।

भैरो : इन दोनों को यहाँ से बाहर निकालकर मैदान में ले चलना चाहिए, क्योंकि जब तक ठण्डी और ताजी हवा न मिलेगी, इनकी अवस्था ठीक न होगी !

देवी : बेशक ऐसा ही है, इस सुरंग की बन्द हवा हमारे इलाज को सफल न होने देगी।

कमलिनी : तो पहिले यही काम करना चाहिए।

इतना कहकर कमलिनी ने तारा की उँगली से तिलिस्मी नेजे के जोड़ की अँगूठी निकाल ली और भैरोसिंह को देकर कहा, "इस अँगूठी को तुम पहिर लो, जिसमें इस तिलिस्मी नेजे को अपने पास रख सको, क्योंकि इन तीनों को बाहर ले जाने बाद लाडिली और देवीसिंह को साथ लेकर थोड़ी देर के लिए मैं तुमसे अलग हो जाऊँगी और किशोरी, कामिनी तथा तारा की हिफाजत के लिए तुम अकेले रह जाओगे।"

"मैं आपका मतलब समझ गया।" कहकर भैरोसिंह ने अँगूठी लेकर अपनी उँगली में पहिर ली।

कमलिनी : मेरे इस कहने स तुमने क्या मतलब निकाला ? मेरा

इरादा क्या समझे ?

भैरो : यही कि आप लोग माधवी, मनोरमा और शिवदत्त बनकर उन दुश्मनों को धोखा दिया चाहते हैं, क्योंकि वे लोग अभी तक बेहद उथल-पुथल मचाने पर भी आपके मकान के बाहर न हुए होंगे।

कमलिनी : शाबाश ! तुम्हारी बुद्धि बड़ी तेज है, बेशक, मेरा यही इरादा है।

दो दफे करके हिफाजत के साथ चारों आदमियों ने किशोरी, कामिनी और तारा को सुरंग के बाहर निकाला और देवीसिंह तथा भैरोसिंह बड़ी मुस्तैदी से किशोरी, कामिनी और तारा का इलाज करने लगे। जब कमलिनी को इस बात का निश्चय हो गया कि अब इन तीनों की जान का खौफ नहीं है, तब वह देवीसिंह और लाडिली को साथ लेकर फिर उसी सुरंग में घुसी। अबकी दफे तब वह कैदखानेवाली कोठरी में गयी और वहाँ कारंवाई का पूरा मौका पाकर इन तीनों ने माधवी, मनोरमा और शिवदत्त बन जो कुछ किया, उसका हाल हम ऊपर के बयानों में लिख चुके हैं।

पाठक महाशय, अब आप तो समझ ही गये होंगे कि दुश्मनों ने खोज-ढूंढ़कर तहखाने में से जिन कैदियों को निकाला, वे वास्तव में माधवी, मनोरमा और शिवदत्त न थे, बल्कि कमलिनी, लाडिली और देवीसिंह थे। खैर, अब इस तरफ आइए और किशोरी, कामिनी तथा तारा का हाल देखिए, जिनकी हिफाजत के लिए केवल भैरोसिंह रह गये थे।

ताकत पहुँचानेवाली दवाओं की बरकत से किशोरी, कामिनी और तारा ने उस समय आँखें खोलीं, जब आसमान पर सुबह की सुफेदी फैल चुकी थी। पूरब से निकलकर क्रमशः फैल जानेवाली लालिमा रात-भर तेजी के साथ चमकनेवाले सितारों और उनके सरदार चन्द्रदेव को सूर्यदेव की अवाई की सूचना दे रही थी और इसी सबब से तारों समेत तारापति भी नौ दो ग्यारह होने के उद्योग में लगे हुए थे तथा भैरोसिंह आसमान की तरफ मुँह किये, बड़ी दिलचस्पी के साथ इस शोभा को देख-देखकर सोच रहा था कि 'वाह, ईश्वर की भी क्या विचित्र गति है ? करोड़ों आदमी ऐसे होंगे जो चन्द्रदेव की यह अवस्था देख सूर्यदेव ही के ऊपर इनसे वैर रखने का कलंक लगाते होंगे, जिनकी बदौलत चन्द्रमा में रोशनी है, और वह खूबसूरती तथा उद्दीपन का मसाला गिना जाता है'।

इस समय भैरोसिंह को यह देखकर कि किशोरी, कामिनी और तारा ने आँखें खोल दी हैं, बड़ी खुशी हुई और उसने समझा कि अब मेरी मेहनत ठिकाने लगी, मगर अफसोस, उसे इस बात की कुछ खबर न थी कि बद-

किस्मती ने अभी तक उन लोगों का पीछा नहीं छोड़ा या विधाता अभी भी उन लोगों के अनुकूल नहीं हुआ।

आठवाँ बयान

भगवानी को भूतनाथ के हवाले करके जब कमलिनी चली गयी तो भूतनाथ एक पत्थर की चट्टान पर बैठकर सोचने लगा। श्यामसुन्दरसिंह किसी काम के लिए चला गया था और भगवानी उसके सामने दूसरी चट्टान पर सिर पकड़े बैठी हुई थी। उसके हाथ-पैर खुले थे, मगर भूतनाथ के सामने से भाग जाने की हिम्मत उसे न थी। भूतनाथ क्या सोच रहा था या किस विचार में डूबा हुआ था, इसका पता अभी न लगता था, मगर उसके ढंग से इतना जरूर मालूम होता था कि वह किसी गम्भीर चिन्ता में डूबा हुआ है, जिसमें कुछ-कुछ लाचारी और बेबसी की झलक भी मालूम होती थी। वह घण्टों तक न जाने क्या-क्या सोचता रहा और बहुत देर बाद लम्बी साँस लेकर धीरे से बोला, "बेशक वही था, और अगर वही था, तो उसने मुझे अपनी आँखों की ओट होने न दिया होगा···"

यह बात भूतनाथ ने इस ढंग से कही, मानो वह स्वयं अपने दिल को सुना रहा और आगे भी कुछ कहा चाहता है, मगर पास ही से किसी ने उसकी अधूरी बात का यह जवाब दे दिया—"हाँ, आँखों की ओट नहीं होने दिया!"

भूतनाथ चौंक पड़ा और मुड़कर पीछे की तरफ देखने लगा। उसी समय एक आदमी भूतनाथ की तरफ बढ़ता हुआ दिखायी दिया जो तुरन्त भूतनाथ के सामने आकर खड़ा हो गया। चन्द्रदेव, जिनको उदय भये अभी आधी घड़ी भी नहीं हुई थी, इस नये आये हुए मनुष्य की सूरत-शक्ल को अच्छी तरह नहीं तो भी बहुत कुछ दिखा रहे थे। इसका कद नाटा, बदन गँठीला और मजबूत था, रंग यद्यपि काला तो न था, मगर गोरा न भी था। चेहरा कुछ लम्बा, सिर पर बड़े-बड़े घुँघराले बाल इतने चमकदार और खूबसूरत थे कि ऐयारों को उन पर नकली या बनावटी होने का गुमान हो सकता था। चुस्त पायजामा और घुटने तक का चपकन, जिसमें बहुत से जेब थे, पहिरे और उस पर रेशमी कमरबन्द बाँधे हुए था, केवल कमरबन्द ही नहीं, बल्कि कमरबन्द के ऊपर बेशकीमत कमन्द इस खूबसूरती के ढंग से लपेटे हुए था कि देखने से औरों को तो नहीं, मगर ऐयारों को बहुत ही खूबसूरत जँचती होगी। कमर में बायीं तरफ लटकनेवाली तलवार की म्यान साफ कह रही थी कि मैं एक हलकी-पतली तथा नाज़ुक तलवार की

हिफाजत कर रही हूँ, पीठ पर गैंडे की एक छोटी-सी ढाल भी लटक रही थी और हाथ में कोई चीज थी, जो कपड़े के अन्दर लपेटी हुई थी। यह सबकुछ था, मगर उसके सर पर टोपी, पगड़ी या मुँड़ासा इत्यादि कुछ भी न था, अर्थात् वह सिर से नंगा था। यह आदमी जिस ढंग और चाल से घूमकर भूतनाथ के सामने आ खड़ा हुआ, उससे मालूम होता था कि इसके बदन में फुर्ती और चालाकी कूट-कूटकर भरी हुई है।

कई सायत तक भूतनाथ चुपचाप गौर से उसकी तरफ देखता रहा और वह भी काठ की तरह खड़ा रहा। आखिर भूतनाथ ने कहा, "क्या तुम बहुत देर से हमारे साथ हो?"

आदमी : बहुत देर ही नहीं, बल्कि बहुत दूर से भी।

भूतनाथ : ठीक है, मैंने रास्ते में तुम्हें एक झलक देखा भी था।

आदमी : मगर कुछ बोले नहीं और मैं भी यह सोचकर छिप गया कि कमलिनी के सामने कहीं तुम्हारी बेइज्जती न हो।

भूतनाथ : और ताज्जुब नहीं कि यह भी सोच लिया हो कि इस समय भूतनाथ अकेला नही है।

आदमी : शायद यह भी हो! (हँसकर) मगर सच कहना, क्या तुम्हें विश्वास था कि कभी मुझे फिर अपने सामने देखोगे?

भूतनाथ : नहीं, कभी नहीं, स्वप्न में भी नहीं।

आदमी : अच्छा तो फिर आज का दिन बहुत मुबारक समझना चाहिए। यह कहकर वह बड़े जोर से हँसा।

भूतनाथ : आज का दिन शायद तुम्हारे लिए मुबारक हो, मगर मेरे लिए तो बड़ा ही मनहूस है।

आदमी : इसलिए कि तुम मुझे मरा हुआ समझते थे?

भूतनाथ : केवल मरा ही हुआ नही, बल्कि पंचतत्व में मिल गया हुआ!

आदमी : और इसीसे तुम निश्चिन्त थे तथा समझते थे कि तुम्हारे सच्चे दोषों को जाननेवाला दुनिया में कोई नहीं रहा!

भूतनाथ : अब मुझे अपने दोषों के प्रकट होने का डर नहीं है, क्योंकि राजा बीरेन्द्रसिंह और उनके लड़कों तथा ऐयारों की तरफ से मुझे माफी मिल गयी है।

आदमी : किसकी बदौलत।

भूतनाथ : कमलिनी की बदौलत।

आदमी : ठीक है, मगर उस सोहागिन की तरफ से तुम्हें माफी न मिली होगी, जिसने अपना नाम तारा रक्खा हुआ है, बल्कि उसे इस बात की

खबर भी न होगी कि तुम उसके···

भूतनाथ : ठहरो ठहरो, तुम्हें इसका खयाल रखके कोई नाजुक बात कहनी चाहिए कि मेरे सिवाय कोई और सुननेवाला तो नहीं है !

आदमी : कोई जरूरत नहीं कि मैं इस बात का ध्यान रक्खूँ। मैं अन्धा नहीं हूँ, इसलिए इतना तो तुम्हें विश्वास ही होना चाहिए कि भगवानी मेरी आँखों की आड़ में न होगी !

भूतनाथ : खैर, तो भगवानी के सामने जरा सम्हल से बातें करो।

आदमी : सो कैसे हो सकता है ? मैं बिना बातें किये टल नहीं सकता, और तुम कमलिनी के डर से भगवानी को बिदा नहीं कर सकते। अच्छा देखो, मैं तुम्हारी इज्जत का खयाल करके भगवानी को बिदा कर देता हूँ ! (भगवानी से) जा रे, तू यहाँ से चली जा ! जहाँ तेरा जी चाहे चली जा !

भूतनाथ : (काँपकर) नहीं नहीं, ऐसा न करो !

आदमी : मैं तो ऐसा ही करूँगा ! (भगवानी से) जा रे ! तैं जाती क्यों नहीं ? क्या मौत के पंजे से बचना तुझे अच्छा नहीं लगता !

भूतनाथ : मैं हाथ जोड़ता हूँ, माफ करो, जरा सोचो तो सही।

आदमी : तुमने उस वक्त क्या सोचा था कि अब मैं सोचूँ ?

भूतनाथ : अच्छा तब एक काम करो, इसके हाथ-पैर बाँधकर अलग कर दो, फिर हम बातें कर लेंगे।

आदमी : (भगवानी से) क्यों रे, हाथ-पैर बँधवा के जान देना मंजूर है या भाग जाना पसन्द करती है ?

इस आदमी और भूतनाथ की बातें सुन भगवानी को बड़ा आश्चर्य हो रहा था। वह सोच रही थी कि क्या सबब है, जो यह अद्भुत मनुष्य बात-बात में भूतनाथ को दबाये जाता है ? इसके मुँह से जितने शब्द निकलते हैं, स हुकूमत और लापरवाही के ढंग के होते हैं और इसके विपरीत भूत-नाथ के मुँह से निकले हुए शब्द उसकी बेबसी, लाचारी और कमजोरी की सूचना देते हैं। साफ-साफ जान पड़ता है कि भूतनाथ इससे दबता है, और इसका इस समय यहाँ आना भूतनाथ को बहुत बुरा मालूम हुआ है। निःसन्देह इसमें और भूतनाथ में कोई भेद की बात गुप्त है, जिसे भूतनाथ प्रकट नहीं करना चाहता। जो हो, पर मुझे इन बातों से क्या मतलब ? सच तो यों है कि इस समय इसका यहाँ आना मेरे लिए बहुत मुबारक है। साफ देख रही हूँ कि वह मुझे चले जाने का हुक्म दे रहा है, और भूतनाथ जोर करके, उसका हुक्म टाल नहीं सकता, अतएव विलम्ब करना नादानी है, जहाँ तक जल्द हो सके, यहाँ से भाग जाना चाहिए। यद्यपि कमलिनी ने वादा किया है कि किशोरी, कामिनी और तारा के मिल जाने पर तेरी जान

छोड़ दी जायगी—फिर भी पराधीन और खतरे में तो पड़ी ही रहूँगी। कौन ठिकाना तारा, कामिनी और किशोरी भूख-प्यास की तकलीफ से मर गयी हों और इस सबब से कमलिनी क्रोध में आकर मेरा सिर उतार ले ! नहीं नहीं, ऐसा न होना चाहिए। इस समय ईश्वर ने मेरी मदद की है, जो इस आदमी को यहाँ भेज दिया है अस्तु जहाँ तक हो सके भाग जाना ही उचित है।

इन बातों को सोचकर भगवानी उठ खड़ी हुई और घने जंगल की तरफ रवाना हो गयी। फिर-फिरकर देखती जाती थी कि कहीं भूतनाथ मेरे पीछे तो नहीं आता, मगर ऐसा न था और इसलिए वह खुशी-खुशी कदम बढ़ाने लगी। उसने यह भी सोच लिया था कि माधवी, मनोरमा और शिवदत्त मेरी बदौलत छूट गये हैं, इसलिए उन तीनों में से चाहे, जिसके पास मैं चली जाऊँगी, मेरी कदर होगी और मुझे किसी बात की परवाह न रहेगी। भगवानी स्वयं तो चली गयी, मगर घबराहट में उसने उन कीमती जेवरों और जवाहिरात की चीजों की गठरी उसी जगह छोड़ दी, जो कमलिनी के घर से लूटकर लायी थी। यह गठरी अभी तक उसी जगह एक पत्थर के ढोंके पर पड़ी हुई थी और इस पर किशोरी, कामिनी तथा तारा को छुड़ाने की जल्दी में कमलिनी ने भी विशेष ध्यान न दिया था, तो भी एक तौर पर यह गठरी भी भूतनाथ के ही सुपुर्द थी।

भगवानी को इस तरह चले जाते देख भूतनाथ की आँखों में खून उतर आया और क्रोध के मारे उसका बदन काँपने लगा। उसने जोर से जफील (सीटी) बुलायी और इसके बाद उस आदमी की तरफ देख के बोला—

"बेशक तुमने बहुत बुरा किया कि भगवानी को यहाँ से बिदाकर दिया, मैं तुम्हारी इतनी जबर्दस्ती किसी तरह बरदाश्त नहीं कर सकता !"

आदमी : (जोश के साथ) तो क्या तुम मेरा मुकाबला करोगे ? कह दो, कह दो—हाँ, कह दो !!

भूतनाथ : आखिर तुममें क्या सुरखाब का पर लगा हुआ है, जो इतना बढ़े चले जाते हो ! मैं भी तो मर्द हूँ !!

आदमी : (बहुत जोर से हँसकर—जिससे मालूम होता था कि बनावट की हँसी है) हाँ हाँ, मैं जानता हूँ कि तुम मर्द हो और इस समय मेरा मुकाबला किया चाहते हो !

यह कहकर उसने पीछे की तरफ देखा, क्योंकि पत्तों की खड़खड़ाहट तेजी के साथ किसी के आने की सूचना देने लगी थी।

पाठकों को याद होगा कि कमलिनी यहाँ पर अकेले भूतनाथ को नहीं छोड़ गयी थी, बल्कि श्यामसुन्दरसिंह को भी छोड़ गयी थी। कमलिनी के

चले जाने के बाद श्यामसुन्दरासह भूतनाथ की आज्ञानुसार यह देखने के लिए वहाँ से चला गया था कि जंगल में थोड़ी दूर पर कहीं कोई ऐसी जगह है, जहाँ हम लोग आराम से एक दिन रह सकें और किसी आने-जानेवाले मुसाफिर को मालूम न हो। यही सबब था कि इस समय श्यामसुन्दरसिंह यहाँ मौजूद था और भूतनाथ ने उसी को बुलाने के लिए जफील दी थी जिसके आने की आहट इन लोगों को मिली।

आदमी : (भूतनाथ से) मैं तो पहिले ही समझ चुका था कि तुम श्यामसुन्दरसिंह को बुला रहे हो, मगर तुम विश्वास करो कि उसके आने से मैं डरता नहीं हूँ, बल्कि तुम्हारी बेवकूफी पर अफसोस करता हूँ। भले आदमी तुमने इतना न सोचा कि जब भगवानी के सामने तुम मेरी बातों को सुन नहीं सकते थे, तो श्यामसुन्दरसिंह के सामने कैसे सुनोगे? खैर, मुझे इन बातों से क्या मतलब, तुम्हें अख्तियार है, चाहे दो सौ आदमी इकट्ठे कर लो!

भूतनाथ : (घबड़ाहट की आवाज से) तुम तो इस तरह की बातें कर रहे हो, जैसे अपने साथ एक फौज लेकर आये हो!

आदमी : बेशक ऐसा ही है, (दो कदम आगे बढ़कर और अपने हाथ की वह गठरी दिखाकर, जिसमें कोई चीज़ लपेटी हुई थी) इसके अन्दर एक ऐसी चीज है, जिसका होना मेरे साथ वैसा ही है, जैसा तुम्हारे साथ एक हजार बहादुर सिपाहियों का होना। क्या तुम नहीं जानते कि इसके अन्दर क्या चीज है? नहीं नहीं, तुम बेशक समझ गये होगे कि इस कपड़े के अन्दर···(कुछ रुककर) हाँ ठीक है, पहिला नाम चाहे कुछ भी हो, मगर अब हमको उसे 'तारा ही कहकर बुलाना चाहिए—अच्छा तो हम क्या कह रहे थे? हाँ याद आया, इस कपड़े के अन्दर तारा की किस्मत बन्द है। क्या तुम इसे खोलने के लिए हुक्म देते हो? मगर याद रक्खो कि खुलने के साथ ही इसमें से इतनी कड़ी आँच पैदा होगी कि जिसे देखते ही तुम भस्म हो जाओगे, चाहे वह आँच मेरे दिल को कितना ही ठण्डा क्यों न करे।

भूतनाथ : (काँपकर और दो कदम पीछे हटकर) ठहरो, जल्दी न करो, मैं हाथ जोड़ता हूँ, ज़रा सब्र करो!

आदमी : अच्छा क्या कहते हो, जल्दी कहो?

भूतनाथ : पहिले यह बताओ कि आज ऐसे समय में तुम मेरे पास क्यों आये हो?

आदमी : (जोर से हँसकर) क्या बेवकूफ आदमी है! अबे तैं इतना नहीं सोच सकता कि मैं उसी दिन से तुझे खोज रहा होऊँगा, जिस दिन तूने मुझ पर सफाई का हाथ फेरा था, मगर लाचार था कि तेरा पता ही नहीं लगता था। मैं नहीं जानता था कि भतनाथ के चोले के अन्दर वही हरामी

सूरत छिपी हुई है, जिसे मैं वर्षों से ढूंढ़ रहा हूँ, अगर जानता तो कभी का तुझसे मिल चुका होता, इतने दिन मुफ्त में गँवाकर आज की नौबत न आयी होती। अच्छा पूछो और क्या पूछते हो!

भूतनाथ : (बहुत देर तक सोचने के बाद सिर नीचा करके) क्या मैं आशा कर सकता हूँ कि थोड़े दिन तक तुम मुझे और छोड़ दोगे? मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि इसके बाद स्वयं तुमसे मुलाकात करूँगा। उस समय तुम खुशी से मेरा सिर उतार लेना, मुझे कुछ भी रंज न होगा।

आदमी : सिर उतार लेना!

भूतनाथ : हाँ, मेरा सिर उतार लेना, मुझे कुछ भी दुःख न होगा।

आदमी : क्या सिर उतार लेने से बदला पूरा हो जायगा?

भूतनाथ : क्यों नहीं, क्या इससे भी बढ़के कोई सजा है?

आदमी : मैं समझता हूँ कि यह कुछ भी सजा नहीं है! क्या तुम नहीं जानते कि प्रायः बुद्धिमान लोग, जिन्हें नादान भी कह सकते हैं, ज़रा-सी बात पर अपनी जान अपने हाथ से बरबाद कर देते हैं और अपनी बेइज्जती कराना नहीं चाहते तथा ऐसा करते समय उन्हें कुछ भी दुःख नहीं होता!

भूतनाथ : (काँपकर) तो क्या तुमने इससे भी कड़ी सजा मेरे लिए सोच रक्खी है?

आदमी : बेशक! बदला उसी को कहते हैं, जो उसके बराबर हो, जिसका बदला लिया जाय।

भूतनाथ : (लम्बी साँस लेकर) वास्तव में तुम ठीक कहते हो? मैं भी इसी फेर में मुद्दत से पड़ा हुआ हूँ, (रुककर) खैर, यह बताओ कि हमारे-तुम्हारे बीच में किसी तरह का मामला तै हो सकता है, या तुम थोड़े दिन के लिए मुझे छोड़ सकते हो, जैसाकि मैं पहिले कह चुका हूँ?

आदमी : नहीं, बल्कि तुम्हें इसी समय हमारे साथ चलना होगा।

भूतनाथ : कहाँ?

आदमी : जहाँ, मैं ले चलूँ।

भूतनाथ : जबर्दस्ती?

आदमी : हाँ, जबर्दस्ती!

भूतनाथ : ऐसा नहीं हो सकता!

आदमी : ऐसा ही होगा!

भूतनाथ : तुम अपनी ताकत पर भरोसा करते हो?

आदमी : हाँ, अपनी ताकत पर और तदबीर पर भी!

भूतनाथ : अच्छा फिर देखेंगे!

आदमी : अच्छा तो श्यामसुन्दरसिंह के सामने (गठरी दिखाकर) इसे

खोलूँ, तुम डरोगे तो नहीं?

भूतनाथ : कोई हर्ज नहीं, मैं श्यामसुन्दर को तुम्हारी भूल समझा दूंगा।

आदमी : (हँसकर) ओ हो हो, तब तो मुझे इससे बढ़कर कोई तदबीर करनी चाहिए ! अच्छा देखो !

इतना कहकर उस अद्भुत आदमी ने तीन दफे ताली बजायी और साथ ही इसके बगलवाले पेड़ों के झुरमुट में से एक आदमी आता हुआ दिखायी दिया जिसने काले कपड़े से सिर से पैर तक अपने को ढाँक रक्खा था। भूतनाथ काँपकर कई कदम पीछे हट गया, और बड़े गौर से उसकी तरफ देखने लगा और इसके बाद श्यामसुन्दरसिंह की तरफ निगाह फेरी, यह जानने के लिए कि देखें इन बातों का असर उसके ऊपर क्या हुआ है, मगर रात का समय और कुछ दूर होने के कारण श्यामसुन्दरसिंह के चेहरे का उतार-चढ़ाव भूतनाथ देख न सका।

भूतनाथ : (जी कड़ा करके) मैं कैसे जान सकता हूँ कि इस खोल के अन्दर कौन छिपा हुआ है ?

नया आदमी : ठीक है, तब यदि कहो तो मैं इस कपड़े को उतार दूँ, मगर ताज्जुब नहीं कि मेरी आवाज तुम्हारे कानों में···

भूतनाथ : (चौंककर) बस बस, यह आवाज ऐसी नहीं है, जिसे मैं भूल जाऊँ। हाय, बेबसी और मजबूरी इसे कहते हैं। (श्यामसुन्दरसिंह से) अच्छा तुम थोड़ी देर के लिए यहाँ से चले जाओ, जब मैं जफील बुलाऊँगा, तब फिर आ जाना।

श्यामसुन्दरसिंह ने इस समय एक ऐसा नाटक देखा था, जिसका उसे गुमान भी न था। उन दोनों आदमियों के आने से भूतनाथ की क्या हालत हो गयी थी, इसे वह खूब समझ रहा था, मगर उसे इस बात का आश्चर्य था कि भूतनाथ जिसके नाम से लोगों के दिल में हौल पैदा होता है, इस समय ऐसा मजबूर और बेबस क्यों हो रहा है ? यद्यपि भूतनाथ का हुक्म वह टाल नहीं सकता था, और उसे वहाँ से टल जाना ही आवश्यक था, मगर साथ ही इसके वह इस सीन को भी छोड़ नहीं सकता था। भूतनाथ की आज्ञा पाकर वह वहाँ से चला तो गया मगर घूम-फिरकर बिल्ली की तरह कदम रखता हुआ लौट आया और एक पेड़ की आड़ में छिपकर खड़ा हो गया, जहाँ से वह उन तीनों को देख सकता था और उनकी बातचीत भी बखूबी सुन सकता था।

जब भूतनाथ ने देखा कि श्यामसुन्दरसिंह चला गया तो उसने उस आदमी से कहा जो पहिले आया था, "क्या हमारे और तुम्हारे बीच में मेल

नहीं हो सकता ?"

आदमी : नहीं।

भूतनाथ : फिर तुम मुझसे क्या चाहते हो ?

आदमी : यही कि चुपचाप हमारे साथ चले चलो।

इस बात को सुनकर भूतनाथ ने सिर झुका लिया और कुछ सोचने लगा। यह अवस्था देखकर उस आदमी ने कहा, "भूतनाथ, मालूम होता है कि तुम भागने की तदबीर सोच रहे हो, मगर इस बात को खूब याद रक्खो कि मेरे सामने से तुम्हारा भाग जाना बिल्कुल ही वृथा है, जब तक कि यह चीज मेरे पास मौजूद है, और मेरे साथी जीते हैं। मैं तुम्हें फिर कहता हूँ कि चुपचाप मेरे साथ चले चलो और जो कुछ मैं कहूँ, करो !"

भूतनाथ : नहीं नहीं, मैं भागना पसन्द नहीं करता, बल्कि इसके बदले में तुम्हारे साथ लड़कर जान दे देना उचित समझता हूँ।

आदमी : अगर यही इरादा है, तो आओ मैं मुस्तैद हूँ !

यह कहकर उस आदमी ने अपने हाथ की गठरी, उस दूसरे आदमी के हाथ में दे दी जो सिर से पैर तक काले कपड़े से अपने को ढाँके हुए था, और उसे वहाँ से चले जाने के लिए कहा। वह व्यक्ति वहाँ से हटकर पेड़ों की आड़ में गायब हो गया और उस विचित्र मनुष्य ने तलवार म्यान से बाहर खैंच ली। भूतनाथ ने भी तलवार खैंच ली और उसके सामने पैंतरा बदलकर आ खड़ा हुआ और दोनों में लड़ाई शुरू हो गयी। निःसन्देह भूतनाथ तलवार चलाने के फन में बहुत होशियार और बहादुर था, मगर श्यामसुन्दरसिंह ने जो छिपकर यह तमाशा देख रहा था, मालूम कर लिया कि उसका वैरी इस काम में उससे बहुत बढ़-चढ़के है क्योंकि घण्टे-भर की लड़ाई में उसने भूतनाथ को सुस्त कर दिया और अपने बदन में एक जख्म भी लगने न दिया, इसके विपरीत भूतनाथ के बदन में छोटे-छोटे कई जख्म लग चुके थे, और उनमें से खून निकल रहा था। केवल इतना ही नहीं। श्यामसुन्दरसिंह ने यह भी मालूम कर लिया कि उस अद्भुत आदमी ने जो लड़ाई के फन में भूतनाथ से बहुत ही बढ़-चढ़के है, कई मौकों पर जान-बूझ के तरह दे दिया और भूतनाथ को छोड़ दिया, नहीं तो अब तक भूतनाथ को कब का खतम कर चुका होता।

मगर क्या भूतनाथ इस बात को नहीं समझता था ? बेशक समझता था ! वह खूब जानता था कि आज मेरा दुश्मन मुझसे बहुत जबर्दस्त है, और उसने कई मौकों पर जबकि वह मेरी जान ले सकता था, जान-बूझकर तरह दे दिया या अगर जख्म पहुँचाया भी तो बहुत कम।

सुबह हो चुकी थी। अब वहाँ की चीजें बिल्कुल साफ-साफ दिखायी

देने लगी थीं। भूतनाथ बहुत ही थक गया था, इसलिए वह सुस्ताने के लिए ठहर गया और बड़े गौर से अपने वैरी की सूरत देखने लगा, जिसके चेहरे पर थकावट या उदासी का कोई चिन्ह नहीं दीख पड़ता था, बल्कि वह मन्द-मन्द मुसका रहा था और उसकी आँखें भूतनाथ के चेहरे पर इस ढंग से पड़ रही थीं, जैसे ओस्तादों की निगाहें अपने नौसिखे शागिर्दों पर पड़ा करती हैं।

भूतनाथ ठहर गया और उसने धीमी आवाज में अपने वैरी से कहा, "अब मैं लड़ने की हिम्मत नहीं कर सकता, विशेष करके इसलिए कि तुम मुझसे उस तरह नहीं लड़ते, जैसे दुश्मनों को लड़ना चाहिए। मैं खूब जानता हूँ कि तुमने कई मौके पर मुझे छोड़ दिया। खैर, अब मैं अपनी भलाई के लिए सिवाय इसके और कोई उपाय नहीं देखता कि अपने हाथ से अपनी जान दे दूं।"

आदमी : नहीं नहीं, भूतनाथ, तुम अपने हाथ से अपनी जान नहीं दे सकते, क्योंकि तुम्हारी एक बहुत ही प्यारी चीज मेरे कब्जे में है, जो तुम्हारे बाद बड़ी तकलीफ में पड़ जायेगी और जिसे तुम 'लामाघाटी' में छोड़ आये थे। मुझे विश्वास है कि तुम उसकी बेइज्जती कबूल न करोगे।

यह एक ऐसी बात थी, जिसने भूतनाथ के दिल को एकदम से ही मसल डाला और इस तकलीफ को वह सह न सका। उसका सिर घूमने लगा, वह धीरे से जमीन पर बैठ गया, और वह विचित्र आदमी इस ढंग से उसे देखने लगा, जैसे व्याध अपने शिकार को काबू में कर लेने के बाद आशा और प्रसन्नता की दृष्टि से उसकी तरफ देखता है।

श्यामसुन्दरसिंह इस दृश्य को गौर और ताज्जुब से देख रहा था। बीच में एक दफे उसकी यह इच्छा भी हुई कि झाड़ी में से बाहर निकले और भूतनाथ के पास पहुँचकर उसकी मदद करे, मगर दो बातों को सोचकर वह रुक गया, एक तो यह कि भूतनाथ ने उसे वहाँ से बिदा कर दिया था, और कह दिया था कि 'जब हम जफील बुलाएँ तब आना' मगर इतनी लड़ाई होने और हार मानने पर भी भूतनाथ ने उसे नहीं बुलाया, इससे साफ मालूम होता है कि भूतनाथ श्यामसुन्दरसिंह का उस जगह आना पसन्द नहीं करता, दूसरे यह कि उसने कमलिनी की जुबानी भूतनाथ की बहुत तारीफ सुनी थी, कमलिनी जोर देकर कहती थी कि लड़ाई के फन में भूतनाथ बहुत ही तेज और होशियार है, मगर इस जगह उस विचित्र मनुष्य के सामने उसने भूतनाथ को ऐसा पाया, जैसे काबिल ओस्ताद के सामने एक नौसिखा लड़का। इससे यह नहीं कहा जा सकता कि भूतनाथ नादान है, बल्कि भूतनाथ ने जिस चालाकी और तेजी से अपने वैरी का मुकाबिला

किया, वह साधारण आदमी का काम नहीं था, असल तो यह है कि भूतनाथ का वैरी ही कोई विचित्र व्यक्ति था। उसकी चालाकी, फुर्ती और वीरता देखकर श्यामसुन्दरसिंह यद्यपि सिपाही था, मगर डर गया और मन में कहने लगा कि यह मनुष्य नहीं है, इसके सामने जाकर मैं भूतनाथ की कुछ भी मदद नहीं कर सकता।

इन्हीं दो बातों को सोचकर श्यामसुन्दरसिंह जहाँ-का-तहाँ रह गया और कुछ न कर सका।

श्यामसुन्दरसिंह छिपा हुआ इन सब बातों को सोच रहा था, भूतनाथ हताश होकर जमीन पर बैठ गया था, और उसका वैरी आशा और प्रसन्नता की दृष्टि से उसे देख रहा था कि इसी बीच में एक आदमी ने श्यामसुन्दरसिंह के मोढ़े पर हाथ रक्खा।

श्यामसुन्दरसिंह चौंक पड़ा और उसने फिरकर देखा तो एक नकाबपोश पर निगाह पड़ी, जिसका कद नाटा तो न था, मगर बहुत लम्बा भी न था। उसका चेहरा स्याह रंग के नकाब से ढँका हुआ था, और उसके बदन का कपड़ा इतना चुस्त था कि बदन की मजबूती, गठन और सुडौली साफ मालूम होती थी। उसका कोई अंग ऐसा न था, जो कपड़े के अन्दर छिपा हुआ न हो। कमर में खंजर, तलवार और पीठ पर लटकती हुई एक छोटी-सी ढाल के अतिरिक्त वह हाथ में दो हाथ का एक डण्डा भी लिये हुए था। हाँ, यह कहना तो हम भूल ही गये कि उसकी कमर में कमन्द और ऐयारी का बटुआ भी लटकता दिखायी दे रहा था।

श्यामसुन्दरसिंह ने बड़े गौर से उसकी तरफ देखा और कुछ बोला ही चाहता था कि उसने चुप रहने और अपने पीछे-पीछे चले आने का इशारा किया। श्यामसुन्दरसिंह चुप तो रह गया, मगर उसके पीछे-पीछे जाने की हिम्मत न पड़ी। यह देख उस नकाबपोश ने धीरे-से कहा, "डरो मत, हमको अपना दोस्त समझो और चुपचाप चले आओ। देखो देर मत करो, नहीं तो पछताओगे।" इतना कहकर नकाबपोश ने श्यामसुन्दरसिंह की कलाई पकड़ ली, और अपनी तरफ खैंचा।

श्यामसुन्दरसिंह को ऐसा मालूम हुआ कि जैसे लोहे के हाथ ने कलाई पकड़ ली हो, जिसका छुड़ाना कठिन ही नहीं बल्कि असम्भव था। अब श्यामसुन्दरसिंह में इनकार करने की हिम्मत न रही, और वह चुपचाप उसके पीछे-पीछे चला गया। दस-बारह कदम से ज्यादे न गया होगा कि नकाबपोश रुका और उसने श्यामसुन्दरसिंह से कहा, "इतना देखने पर भी तुम कमलिनी के नमक की इज्जत करते हो या नहीं?"

श्यामसुन्दर : बेशक इज्जत करता हूँ।

नकाबपोश : अच्छा तो तुम उस मैदान में जाओ, जहाँ भूतनाथ बैठा अपनी बदनसीबी पर विचार कर रहा है, और उस गठरी को उठा लाओ, जिसे भगवनिया चुरा लायी थी। तुम जानते हो कि उसमें लाखों रुपये का माल है। कहीं ऐसा न हो कि वैरी उसे उठा ले जाँय। अगर ऐसा हुआ तो तुम्हारे मालिक का बहुत नुकसान होगा।

श्यामसुन्दर : ठीक है, मगर मैं डरता हूँ कि ऐसा करने से कहीं भूतनाथ रंज न हो जाय।

नकाबपोश : तुम्हें भूतनाथ के रंज होने का खयाल न करना चाहिए, बल्कि अपने मालिक के नफा-नुकसान को विचारना चाहिए। इसके सिवाय मैं तुम्हें विश्वास दिलाता हूँ कि भूतनाथ कुछ भी न कहेगा, हाँ, उसका वैरी कुछ बोले तो ताज्जुब नहीं, मगर नहीं, जहाँ तक मैं समझता हूँ, वह भी कुछ न बोलेगा, क्योंकि वह नहीं जानता कि इस गठरी में क्या चीज है।

श्यामसुन्दर : अगर रोके तो ?

नकाबपोश : मैं छिपकर देखता रहूँगा, अगर वह तुम्हें रोकना चाहेगा तो मैं झट से पहुँच जाऊँगा, और उससे लड़ने लगूँगा, तब तक तुम गठरी उठा कर चल देना।

श्यामसुन्दर : अगर ऐसा ही है तो आप ही पहिले वहाँ जाकर उससे लड़िए, बीच में मैं पहुँचकर गठरी उठा लूंगा।

नकाबपोश : (हँसकर) मालूम होता है कि तुम्हें मेरी बातों पर विश्वास नहीं और तुम उस आदमी से बहुत डरते हो ?

श्यामसुन्दर : बेशक, ऐसा ही है, क्योंकि मैं देख चुका हूँ कि भूतनाथ ऐसे जवाँमर्द और बहादुर को उसने कैसा नीचा दिखाया और जहाँ तक मैं समझता हूँ, आप भी उसका मुकाबला नहीं कर सकते। मालूम होता है कि आपने उसकी लड़ाई नहीं देखी, अगर देखते तो लड़ने की हिम्मत न करते।

नकाबपोश : नहीं नहीं, मैं उसकी लड़ाई देख चुका हूँ, और इसी से उसके साथ लड़ने की इच्छा होती है।

श्यामसुन्दर : अगर ऐसा है तो विलम्ब न कीजिए, जाकर उससे लड़ाई शुरू कर दीजिए, फिर मैं जाकर गठरी उठा लूंगा और चल दूंगा। मगर यह तो बताइए कि आप कौन हैं, और कमलिनीजी के लिए इतनी तकलीफ क्यों उठा रहे हैं ?

नकाबपोश : इसका जवाब मैं कुछ भी न दूंगा ! (कुछ सोचकर) अच्छा तो अब यह बताओ कि गठरी उठा लेने के बाद, तुम कहाँ चले जाओगे ?

श्यामसुन्दर : इसका जवाब मैं क्या दे सकता हूँ ? जहाँ मौका मिलेगा चल दूंगा।

नकाबपोश : नहीं ऐसा न करना, जहाँ तुम्हें जाना चाहिए, मैं बताता हूँ।

श्यामसुन्दर : (चौंककर) अच्छा बताइए !

नकाबपोश : तुम यहाँ से सीधे दक्खिन की तरफ चले जाना, थोड़ी दूर जाने बाद एक पीपल का पेड़ दिखायी देगा, उसके नीचे पहुँचकर बायीं तरफ घूम जाना, एक पगडण्डी मिलेगी, उसी को अपना रास्ता समझना, थोड़ी दूर जाने बाद फिर एक पीपल का पेड़ दिखायी देगा, उसके नीचे चले जाना। वहाँ एक नकाबपोश बैठा हुआ दिखायी देगा, और उसी के पास हाथ-पैर बँधी हुई हरामजादी भगवानी को भी देखोगे, जो मौका पाकर यहाँ से भाग गयी थी।

श्यामसुन्दर : (ताज्जुब में आकर) अच्छा फिर ?

नकाबपोश : फिर तुम भी उसके पास जाकर बैठ जाना, जब मैं उस जगह आऊँगा तो देखा जायगा, या जैसा वह नकाबपोश कहेगा, वैसा ही करना। डरना मत, उसे अपना दोस्त समझना। तुम देखते हो कि मैं जो कुछ कहता या करता हूँ, उसमें तुम्हारे मालिक ही की भलाई है।

श्यामसुन्दर : मालूम तो ऐसा ही होता है।

नकाबपोश : मालूम होता है नहीं, बल्कि यह कहो कि बेशक ऐसा है। अच्छा अब तुम्हें एक बात और कहना है।

श्यामसुन्दर : वह क्या ?

नकाबपोश : यह तो तुम देख ही चुके हो कि उस अद्भुत आदमी ने भूतनाथ को अपने कब्जे में कर लिया है।

श्यामसुन्दर : सो तो प्रकट ही है।

नकाबपोश : अब वह भूतनाथ को अपने साथ ले जायगा।

श्यामसुन्दर : अवश्य ले जायगा, इसी के लिए तो इतना बखेड़ा मचाये हुए है।

नकाबपोश : उस समय मैं भी उसके साथ-साथ चला जाऊँगा।

श्यामसुन्दर : अच्छा तब ?

नकाबपोश : तब रात को तुम अपने साथी नकाबपोश और भगवानी को लेकर उस समय इसी जगह आ जाना, जिस समय कमलिनी ने तुमसे मिलने की प्रतिज्ञा की है, और सब हाल ठीक-ठीक उससे कह देना और यह भी कह देना कि कल शाम को अपने तिलिस्मी मकान के पास मेरी बाट जोहे।

श्यामसुन्दर : अच्छा ऐसा ही करूँगा, मगर आप भी तो विचित्र आदमी मालूम पड़ते हैं।

नकाबपोश : जो हो, लो अब मेरे साथ-साथ चले आओ, मैं उसके मुकाबिले में जाता हूँ।

नकाबपोश और श्यामसुन्दरसिंह की बातचीत बहुत जल्द हुई थी, इसमें आधी घड़ी से ज्यादे न लगी होगी, बल्कि इससे भी कम समय लगा होगा। आखिरी बात कहकर नकाबपोश उस तरफ रवाना हुआ, जहाँ भूतनाथ बैठा हुआ सोच रहा था कि अब क्या करना चाहिए ! श्यामसुन्दर-सिंह भी उसके पीछे-पीछे गया, मगर आगे जाकर पेड़ों की आड़ में छिपकर खड़ा हो गया, जहाँ से वह सबकुछ देख और सुन सकता था।

भूतनाथ अभी तक उसी तरह अपने विचार में निमग्न था और वह अद्भुत व्यक्ति उसकी तरफ बड़े गौर से देख रहा था। इसी बीच नकाबपोश भी उस जगह जा पहुँचा, और उस चट्टान पर बैठ गया, जिस पर गठरी रक्खी हुई थी।

पहिले तो भूतनाथ ने समझा कि यह भी उसी विचित्र मनुष्य का साथी होगा, जिसने मुझे हर तरह से दबा रक्खा है, मगर जब उस आदमी को भी नकाबपोश के यकायक आ जाने से अपनी तरह आश्चर्य में डूबे हुए देखा तो उसे बड़ा ही ताज्जुब हुआ, और वह बड़े गौर से उसकी तरफ देखने लगा। इसके पहिले कि भूतनाथ कुछ कहे उसका दुश्मन नकाबपोश की तरफ बढ़ गया और जरा कड़ी आवाज में उससे बोला, "तुम यहाँ क्यों आये हो और क्या चाहते हो ?"

नकाबपोश : तुम्हें मेरे आने और चाहने से कोई मतलब नहीं, तुम लोग अपना-अपना काम करो।

यह जवाब कुछ ऐसी लापरवाही के साथ दिया गया था कि भूतनाथ और उसका वैरी दोनों ही दंग रह गये। आखिर उस आदमी ने भूतनाथ से कहा, "खैर, हमें इनसे कोई मतलब नहीं, तुम उठो और मेरे साथ चलो।"

नकाबपोश : (दिल्लगी के ढंग पर) न जाय तो गोद में उठाकर ले आओ !

आदमी : क्योंजी, तुम हमारे बीच में बोलने वाले कौन !

नकाबपोश : कोई नहीं, हम तो केवल राय देते हैं कि जिसमें तुम दोनों का बखेड़ा जल्द निपट जाय और किसी तरह इस जगह का पिण्ड छूटे।

आदमी : (चिढ़कर) मालूम होता है कि तुम हमसे मसखरापन कर रहे हो !

नकाबपोश : अगर ऐसा भी समझ लो तो हमारा कोई हर्ज नहीं, मगर यह तो बताओ कि तुम दूसरे की अमलदारी में क्यों हुल्लड़ मचाये हुए हो,

यहाँ से जाते क्यों नहीं।

आदमी : अहा, मालूम होता है, आप ही यहाँ के राजा हैं !

नकाबपोश : नहीं, मगर इस जमीन के ठीकेदार हैं, और इतनी हिम्मत रखते हैं कि अगर तुम लोग बारह पल के अन्दर यहाँ से न चले जाओ तो कान पकड़के इस जंगल से बाहर कर दें, या लिबड़ी बरताना* उतारकर दो लात जमावें और दक्खिन का रास्ता दिखाएँ !

नकाबपोश की इन बातों को बर्दाश्त करके चुप रहने की ताकत उस विचित्र मनुष्य में न थी, झट तलवार खैंचकर सामने आ खड़ा हुआ, और बोला, "बस खबरदार जो अब एक शब्द भी मुँह से निकाला। चुपचाप उठ के चला जा, नहीं तो अभी दो टुकड़े कर दूँगा !!"

नकाबपोश भी फुर्ती के साथ सामने खड़ा हो गया और बोला, "मालूम होता है, तुझे मेरी बातों का विश्वास नहीं हुआ, इसी से ढिठाई करने के लिए सामने आ खड़ा हुआ है। मैं फिर कहता हूँ कि यहाँ से चला जा, और विश्वास रख कि यद्यपि मैं तेरे ऐसे नौसिखे लौंडों के सामने तलवार खैंचना उचित नहीं समझता, तथापि केवल लात और हाथ से तुझे दुरुस्त करके रख दूँगा।"

इतना सुनते ही उस आदमी ने तलवार का एक भरपूर हाथ नकाबपोश पर जमाया, जो अपने हाथ में केवल एक डण्डा लिये उसके सामने खड़ा था, मगर इसका नतीजा वैसा न निकला जैसाकि वह समझे हुआ था, क्योंकि नकाबपोश ने फुर्ती से पैंतरा बदलकर अपने को बचा लिया, और पीछे की तरफ जाकर उस आदमी की कमर पर एक लात ऐसी जमायी कि वह मुँह के बल जमीन पर गिर पड़ा।

भूतनाथ जो दुःख और शोक से कातर हो जाने पर भी आश्चर्य के साथ इस तमाशे को देख रहा था, नकाबपोश की यह फुर्ती और चालाकी देखकर हैरान हो गया और एकदम से बोल उठा, "वाह बहादुर, क्या बात है ! वास्तव में तुम्हारे सामने यह नौसिखा लौंडा ही है !!"

इस कैफियत और भूतनाथ के आवाज कसने से वह आदमी चुटीले साँप की तरह पेंच खाकर पुनः लड़ने के लिए तैयार हो गया, क्योंकि उसने इस तरह शर्मिन्दगी उठाने की बनिस्बत जान दे देना उत्तम समझ लिया था।

पुनः लड़ाई होने लगी और अबकी दफे उस आदमी ने बड़ी फुर्ती, मुस्तैदी और बहादुरी दिखायी, मगर नकाबपोश ने अब भी अपनी कमर से

लिबड़ी बरताना—कपड़ा-लत्ता सामान इत्यादि।

तलवार निकालने का कष्ट स्वीकार न किया, और लकड़ी के डण्डे से ही उसका मुकाबला किया, हाँ, उसने इतना अवश्य किया कि बायें हाथ में अपनी ढाल ले ली जिसके सहारे अपने वैरी की चोटों को बचाता जाता था। इसी बीच में श्यामसुन्दरसिंह वहाँ आ पहुँचा और गठरी उठाकर चलता बना।

थोड़ी ही देर में मौका पाकर नकाबपोश ने वैरी की उस कलाई पर, जिसमें तलवार का बेशकीमत कब्जा था, एक डण्डा ऐसा जमाया कि वह बेकाम हो गयी और तलवार उसके हाथ से छूटकर जमीन पर गिर पड़ी। उसी समय भूतनाथ पुनः चिल्ला उठा, "वाह ओस्ताद, क्या कहना है! तुम-सा बहादुर मैंने आज तक न देखा और न देखने की आशा ही है!!"

अब उस आदमी को हर तरह से नाउम्मीदी हो गयी, और उसने समझ लिया कि इस बहादुर नकाबपोश का मुकाबिला मैं किसी तरह नहीं कर सकता और न यह नकाबपोश मुझे जान से मारने की ही इच्छा करेगा। वह आश्चर्य, लज्जा और निराशा की निगाह से नकाबपोश की तरफ देखने लगा।

नकाबपोश : मैं पुनः कहता हूँ कि मुझसे मुकाबला करने का इरादा छोड़ दो, और जोकुछ मैं हुक्म दे चुका हूँ, उसे मानो, अर्थात् यहाँ से चले जाओ। हाँ, तुम्हारे और भूतनाथ के मामले में मैं किसी तरह की रुकावट न डालूँगा, तुम दोनों में जो कुछ पटे, पटा लो।

आदमी : अच्छा ऐसा ही होगा।

यह कहकर वह भूतनाथ के पास गया और बोला, "अब बोलो मेरे साथ चलोगे या नहीं! जोकुछ कहना हो साफ-साफ कह दो!!"

भूतनाथ : मैं तुम्हारे साथ चलने पर राजी नहीं हूँ।

आदमी : अच्छा तो फिर मुझे भी जो कुछ कहना है, इस बहादुर नकाबपोश के सामने ही कह डालता हूँ, क्योंकि ऐसा बहादुर गवाह मुझे फिर न मिलेगा।

यह कहकर उसने बड़े जोर से ताली बजायी। भूतनाथ समझ गया कि इसने फिर उस आदमी को बुलाया है, जो सिर से पैर तक अपने को ढाँके हुए था, और जिसके हाथ में वह पुलिन्दा भी इसने दे दिया है, जिसमें इसके कथनानुसार तारा की किस्मत बन्द है।

जोकुछ भूतनाथ ने सोचा वास्तव में वही बात थी, मगर थोड़ी देर तक राह देखने पर भी वह आदमी न आया, जिसे उस विचित्र मनुष्य ने ताली बजाकर बुलाया था, इसलिए उसके आश्चर्य का कोई ठिकाना न रहा, और वह स्वयं उसकी खोज में चला गया। थोड़ी देर तक चारों तरफ

खोजता रहा, इसके बाद उसने एक झाड़ी के अन्दर उस आदमी को विचित्र अवस्था में देखा, अर्थात् अब वह कपड़ा उसके ऊपर न था, जिसने सिर से पैर तक उसे छिपा रक्खा था, और इसलिए वह साफ औरत मालूम पड़ती थी। वह जमीन पर पड़ी हुई थी, रस्सी से हाथ-पैर बँधे हुए थे। एक कपड़ा उसके मुँह पर इस तरह बँधा हुआ था कि हजार उद्योग करने पर भी वह कुछ बोल नहीं सकती थी, और वह गठरी भी उसके पास इधर-उधर कहीं नहीं दिखायी देती थी, जिसमें तारा की किस्मत बन्द थी और जो उस आदमी ने लड़ाई करते समय उसके हाथ में दे दी थी।

विचित्र मनुष्य ने झटपट उसके हाथ-पैर खोले, मुँह पर से कपड़ा दूर किया और उसकी इस बेइज्जती का कारण पूछा। कुछ शान्त होने पर उसने कहा, "जिस समय तुम भूतनाथ से लड़ रहे थे, उसी समय एक नकाबपोश यहाँ आया, और उसने एक कपड़ा इस फुर्ती के साथ मेरे मुँह पर डाल दिया, और मुझे बेकाबू कर दिया कि मैं कुछ भी न कर सकी, न तो तुम्हें बुला सकी और न चिल्ला सकी। इसके बाद उसने मेरे मुँह पर मजबूती से कपड़ा बाँधा, और फिर रस्सी से हाथ-पैर बाँधने बाद वह गठरी लेकर चला गया, जो तुमने मुझे दी थी, और जो इस घबराहट में मेरे हाथ से छूटकर जमीन पर जा रही थी।"

आदमी : आह, तो मुझे अब मालूम हुआ कि वह शैतान नकाबपोश मेरा बहुत कुछ नुकसान करने के बाद मैदान में गया, और मुझसे लड़ा था। हाय, उसने तो मुझे चौपट ही कर दिया, भूतनाथ पर काबू पाने का जोकुछ जरिया मेरे पास था, उसमें से बारह आना जाता रहा।

औरत : शायद ऐसा ही हो, क्योंकि मैं नहीं जानती कि किस नकाबपोश से तुमसे लड़ाई हुई, और नतीजा क्या निकला।

आदमी : जो नकाबपोश मुझसे लड़ा था, वह अभी तक अखाड़े में बैठा हुआ है। जहाँ तक मुझे विश्वास होता है, मैं कह सकता हूँ कि उसी ने तुम्हें तकलीफ दी है, मगर अफसोस, लड़ाई का नतीजा अच्छा न निकला, क्योंकि वह मुझसे बहुत जबर्दस्त है।

औरत : (आश्चर्य से) क्या लड़ाई में उसने तुम्हें दबा लिया।

आदमी : बेशक, ऐसा ही हुआ, और इस समय मैं उसका कुछ भी नहीं कर सकता।

औरत : तो क्या वह भूतनाथ का पक्षपाती है।

आदमी : कहता तो वह यही है कि मैं तुम्हारे और भूतनाथ के बीच में कुछ भी न बोलूंगा, तुम अगर चाहो तो भूतनाथ को ले जाओ या जैसा चाहो, उसके साथ बरताव करो।

औरत : मगर मेरे प्यारे मजनूं ! तुम किसी बात की चिन्ता मत करो, क्योंकि मैं उसे पहिचान गयी हूँ, इसलिए आज नहीं तो फिर कभी जब तुम्हें मौका मिलेगा, तुम इस बेइज्जती का बदला उससे ले सकोगे।

आदमी : (खुश होकर) हाँ, तुमने उसे पहिचान किया ! किस तरह पहिचाना ?

औरत : जब वह मेरे हाथ-पैर बांध रहा था, उसी समय इत्तिफाक से उसके चेहरे पर से नकाब हट गया और मैंने उसे अच्छी तरह पहिचान लिया।

आदमी : यह बहुत अच्छा हुआ, हाँ, तो वह कौन है ?

इसके जवाब में औरत ने धीरे-से उसके कान में कुछ कहा, जिसे सुनते ही वह चौंक पड़ा और सिर नीचा करके कुछ सोचने लगा। कई पल के बाद वह बोला, "आह, मुझे गुमान भी न था कि उस नकाब के अन्दर एक ऐसे की सूरत छिपी हुई है, जो अपना सानी नहीं रखता, मगर बहुत बुरा हुआ। वह चीज मेरे हाथ में होती तो भूतनाथ को इतना डर न था, जितना अब है। खैर, क्या हर्ज है, जब पता लग गया तो जाता कहाँ है, आज नहीं कल, कल नहीं परसों, एक-न-एक दिन बदला ले लूंगा। मगर सुनो तो सही, मुझे एक नयी बात सूझी है।"

विचित्र मनुष्य ने उस औरत से धीरे-धीरे कुछ कहा, जिसे वह बड़े गौर से सुनती रही और जब बात पूरी हो गयी तो बोली, "ठीक है ठीक है, मैं अभी जाती हूँ, निश्चय रक्खो कि मेरी सवारी का घोड़ा घण्टे-भर के अन्दर अपनी पीठ खाली कर देगा और बहुत जल्द···

आदमी : बस बस, मैं समझ गया, तुम जाओ और मैं भी अब उसके पास जाता हूँ।

उस औरत को बिदा करके वह विचित्र मनुष्य फिर उसी जगह आया, जहाँ भूतनाथ अभी तक सिर झुकाये हुए बैठा था, मगर उस नकाबपोश का कहीं पता न था।

आदमी : (भूतनाथ से) वह नकाबपोश कहाँ गया ?

भूतनाथ : (इधर-उधर देखकर) मालूम नहीं कहाँ चला गया।

आदमी : क्या तुम उसे जानते हो ?

भूतनाथ : नहीं।

आदमी : मगर वह तुम्हारा पक्ष क्यों करता है ?

भूतनाथ : मैंने तो कोई ऐसी बात नहीं देखी, जिससे मालूम हो कि वह मेरा पक्ष करता था।

आदमी : तुमने कोई ऐसी बात नहीं देखी तो मैं कह देना उचित समझता

हूँ कि वह नकाबपोश वह गठरी बेगम के हाथ से जबर्दस्ती ले गया, जिसमें तारा की किस्मत बन्द थी।

भूतनाथ : चलो अच्छा हुआ, एक बला से तो छुटकारा मिला !

आदमी : छुटकारा नहीं मिला, बल्कि तुम और भी आफत में फँस गये, यदि वास्तव में तुम उसे नहीं जानते !

भूतनाथ : हाँ, ऐसा भी हो सकता है, खैर, जोकुछ किस्मत में बदा है, होगा, मगर तुम यह बताओ कि अब मुझसे क्या चाहते हो ? किसी तरह मेरा पिण्ड छोड़ोगे या नहीं ?

आदमी : क्या हुआ अगर वह गठरी चली गयी, मगर फिर भी तुम खूब समझते होगे कि अभी तक तुम पूरी तरह से मेरे कब्जे में हो और तुम्हारी वह प्यारी चीज भी मेरे कब्जे में है, जिसका इशारा मैं पहिले कर चुका हूँ। अस्तु, मैं हुक्म देता हूँ कि तुम उठो और मेरे साथ चलो !

भूतनाथ : खैर, चलो मैं चलता हूँ।

इतना कहकर भूतनाथ ने आसमान की तरफ देखा और एक लम्बी साँस ली।

इस समय दिन अनुमान पहर-भर के चढ़ चुका था और धूप में हरारत क्रमशः बढ़ती जाती थी। भूतनाथ को साथ लिये हुए वह विचित्र मनुष्य पूरब की तरफ रवाना हो गया।

नौवाँ बयान

दिन बहुत ज्यादे चढ़ चुका था, जब कमलिनी अपना काम करके सुरंग की राह से लौटी और किशोरी, कामिनी तथा तारा को भैरोसिंह के साथ बात-चीत करते पाया। कमलिनी, लाडिली और देवीसिंह बहुत प्रसन्न हुए और क्यों न होते, जिस आदमी की मेहनत ठिकाने लगती है, उसकी खुशी का अन्दाजा करना उसी आदमी का काम है, जो कठिन मेहनत करके किसी अमूल्य वस्तु का लाभ कर चुका हो। किशोरी, कामिनी और तारा को इस तरह पाना कम खुशी की बात न थी, जिनके मिलने के विषय में आशा की भी आशा टूटी हुई थी।

किशोरी, कामिनी और तारा जमीन पर पड़ी बातें कर रही थीं, क्योंकि उनमें उठने की सामर्थ्य बिल्कुल न थी, उन्होंने अपने बचानेवालों की तरफ खास करके कमलिनी की तरफ—अहसान, शुक्रगुजारी और मुहब्बत-भरी निगाहों से देर तक देखा, जिसे कमलिनी तथा उसके साथी अच्छी तरह समझकर प्रसन्न होते रहे। कमलिनी को इस बात की खुशी हद्द से ज्यादे थी

कि किशोरी, कामिनी तथा तारा की जान बच गयी।

कमलिनी, लाडिली, देवीसिंह और भैरोसिंह इस बात पर विचार करने लगे कि अब क्या करना चाहिए। किशोरी, कामिनी और तारा में इतनी सामर्थ्य न थी कि दो कदम भी चल सकें या घोड़े पर सवार हो सकें और दो-तीन दिन के अन्दर इतनी ताकत हो भी नहीं सकती थी।

कमलिनी : अफसोस तो यह है कि दुश्मनों ने मेरे तिलिस्मी मकान की अवस्था बिल्कुल खराब कर दी, और वह मकान अब इस योग्य न रहा कि उसमें चलकर डेरा डालें, बिछावन और बरतन तक उठा के ले गये।

देवी : तालाब की अवस्था भी तो बिल्कुल खराब है, मिट्टी भर जाने के कारण वह स्थान अब निर्भय होकर रहने योग्य नहीं रहा और उसकी सफाई भी सहज में नहीं हो सकती।

कमलिनी : नहीं इस बात की तो मुझे कुछ भी चिन्ता नहीं है, क्योंकि दो दिन के अन्दर मैं उस तालाब को बिना परिश्रम साफ कर सकती हूँ, और ऐसा करने के लिए किसी मजदूर की भी आवश्यकता नहीं है।

भैरो : सो कैसे ?

कमलिनी : उस मकान में एक विचित्र कूआँ है। यदि उसका मुँह खोल दिया जाय तो चश्मे की तरह दो हाथ मोटी धारा पानी की उसमें से निकला करे और महीनों बन्द न हो, इसके अतिरिक्त तालाब में जल को निकासी के लिए भी एक लम्बी-चौड़ी मोहरी बनी हुई है। कारीगरों ने ये दोनों चीजें तालाब की सफाई के लिए बनायी हैं। बस इसीसे तुम समझ सकते हो कि तालाब की सफाई कोई मुश्किल नहीं है। जब कूएँ से बेअन्दाज जल निकलकर तालाब को साफ करता हुआ, दूसरी तरफ से निकल जाने लगेगा तो उतनी मिट्टी का बह जाना कुछ कठिन नहीं है, जितनी दुश्मनों ने तालाब में भर दी है।

देवी : बेशक अगर ऐसा है तो तालाब की सफाई कुछ मुश्किल नहीं है।

तारा : (बारीक और कमजोर आवाज से) अफसोस, यह बात मुझे मालूम न थी नहीं तो तालाब का जल क्यों सूखता और मिट्टी भरने की नौबत क्यों आती !

कमलिनी : ठीक है, और इसी सबब से मैं मकान की बरबादी का इलजाम तुझ पर नहीं लगाती, बल्कि अपने ऊपर लगाती हूँ, इसलिए कि यह भेद मैंने तुझे क्यों न बता रक्खा था। असल तो यह है कि दुश्मनों के इस उद्योग का मुझे गुमान भी न था, खैर, जो होना था, हो गया।

देवी : अच्छा तो जिस तरकीब से आपने कहा है, तालाब को साफ करके इन लोगों को उसी मकान में ले चलना चाहिए। बाकी रहा मकान

के अन्दर का सामान, सो इसके लिए कोई चिन्ता नहीं, देखा जायगा।

कमलिनी : हाँ, मैं भी यही उचित समझती हूँ, दो रोज में मकान और तालाब की दुरुस्ती हो जायगी, तब तक इन लोगों को इसी जगह रखना चाहिए, यह जगह भी बड़ी हिफाजत की है, जिसको रास्ता मालूम न हो, यहाँ कदापि नहीं आ सकता। देखिए चारों तरफ कैसे ऊँचे-ऊँचे पहाड़ हैं। कभी-कभी इन पहाड़ों के ऊपर से जाते हुए मुसाफिर दिखायी देते हैं, मगर वे लोग यदि यहाँ आना चाहें तो नहीं आ सकते। जब तक मकान और तालाब की सफाई न हो जाय, तब तक वहाँ केवल आपका रहना काफी है। सफाई के सम्बन्ध में या और भी जिन-जिन बातों की आवश्यकता है, मैं आपको समझा दूँगी, और फिर इसी जगह आकर इनके पास रहूँगी, और इनका इलाज करूँगी।

देवी : आपका खयाल बहुत ठीक है, जोकुछ आप कहें करने के लिए मैं तैयार हूँ।

कमलिनी : पहिले किशोरी, कामिनी और तारा के खाने-पीने का बन्दोवस्त करना चाहिए। (भैरोसिंह से) देखो इस रमणीक स्थान में तीतरों और बटेरों की कमी नहीं है।

भैरो : और हमारे पास खाना बनाने का सफरी सामान भी है, मैं भी यही समझता हूँ कि इनके लिए तीतर का शोरबा बहुत लाभदायक होगा।

किशोरी : (कमजोर आवाज से) नहीं मैं शोरबा या माँस न खाऊँगी, औरतों के लिए यह···

देवी : (हुकूमत के ढग पर, मगर वह हुकूमत का ढंग ठीक वैसा ही था, जैसा बड़े लोग छोटों पर कर सकते हैं) नहीं, बीमारी की अवस्था में इसका खयाल नहीं हो सकता है, तुम इसे दवा समझके चुप रहो।

बेचारी किशोरी ने इस बात का कुछ भी जवाब न दिया और चुप हो रही। भैरोसिंह उसी समय उठ खड़ा हुआ और तीतर पकड़ने के लिए चला गया। उस धूर्त और चालाक ऐयार को इस काम के लिए तीर या गुलेल इत्यादि किसी विशेष सामान की आवश्यकता न थी, वह केवल अपनी फुर्ती और चालाकी से बात-की-बात में सब्ज घास पर चरते हुए और खटका पाने के साथ ही झाड़ियों में घुसकर छिप जानेवाले* कई तीतरों को पकड़

---

*तीतरों और बटेरों की प्रकृति है कि यदि उनके पीछे दौड़िए तो वे भी आगे-आगे पहिले तो दौड़ते हैं, और इसके बाद अगल-बगल की झाड़ी में ऐसे घुस बैठते हैं कि जल्दी पता नहीं लगता, हाँ, जब साफ मैदान पाते हैं, अर्थात् पास में कोई छोटी या बड़ी झाड़ी नहीं होती तो उड़ भी जाते हैं।

लाया और शोरबा पकाने का बन्दोबस्त करने लगा। इधर कमलिनी और देवीसिंह में बातचीत होने लगी।

देवी : उन दोनों घोड़ों की भी सुध लेनी चाहिए, जिन्हें यहाँ से थोड़ी ही दूर पर एक पेड़ से बाँधकर छोड़ आये हैं।

कमलिनी : हाँ, उन घोड़ों को भी जिस तरह बने धीरे-धीरे यहाँ तक ले आना चाहिए, नहीं तो बेचारे जानवर भूख और प्यास के मारे मर जायँगे। एक तो यहाँ का रास्ता ऐसा खराब है कि घोड़ों पर सवार होकर मैं आ नहीं सकती थी, दूसरे रात का समय था, इसलिए लाचार होकर उनको उसी जगह छोड़ देना पड़ा, पर अब हम लोगों को वहाँ तक जाने की कोई आवश्यकता नहीं जान पड़ती।

देवी : ठीक है, अगर कहिए तो मैं उन दोनों घोड़ों को यहाँ ले आऊँ, अब तो दिन का समय है, और जब तक भैरोसिंह खाने की तैयारी करता है, तब तक बेकार बैठे रहने से कुछ काम ही करना अच्छा है।

कमलिनी : अगर ले आइए तो अच्छी बात है, मगर हाँ सुनिए तो सही, भूतनाथ और श्यामसुन्दरसिंह को कहा गया था कि आज रात के समय हम लोगों से मिलने के लिए उसी ठिकाने पर तैयार रहें, जहाँ भगवानी उनके हवाले की गयी थी।

देवी : जी हाँ, कहा गया था, मगर मैं समझता हूँ कि अब हम लोगों का वहाँ जाना वृथा ही है, अगर आप कहिए तो मैं उन लोगों के पास जाऊँ, और यदि इस समय मुलाकात हो जाय तो इस बात की इत्तिला भी देता आऊँ या उन लोगों को इसी जगह लेता आऊँ ?

कमलिनी : एक तो रात होने के पहिले उन लोगों से मुलाकात ही नहीं हो सकती, कौन ठिकाना वहाँ हों या दूसरी जगह चले गये हों, दूसरी बात यह है कि मैं उन लोगों को यह जगह दिखाना नहीं चाहती, और न यहाँ का भेद बताना चाहती हूँ, क्योंकि आजकल की अवस्था देखकर श्यामसुन्दरसिंह पर से भी विश्वास उठा जाता है, बाकी रहा भूतनाथ। वह यद्यपि मेरे आधीन है, और इस बात का उद्योग भी करता है कि हम लोगों को प्रसन्न रक्खे, मगर वह कई ऐसी भयानक घटनाओं का शिकार हो रहा है कि बहुत लायक और खैरखाह होने पर भी मैं उसे किसी भी योग्य नहीं समझती, और न इसी बात का विश्वास है कि उसका दिल वैसा ही रहेगा जैसा आज है, बल्कि मैं कह सकती हूँ कि वह अपने दिल का मालिक आप नहीं है।

देवी : यह तो आप एक ऐसी बात कहती हैं, जिसे पहेली की तरह उल्टी भूमिका कहने की इच्छा होती है।

कमलिनी : बेशक, ऐसा ही है। इस जगह तिनके की ओट पहाड़ीवाली कहावत ठीक बैठती है। न मालूम वह कौन-सा भेद है, जिसको जानने के लिए पहाड़ ऐसे पचासों दिन नष्ट करने की आवश्यकता होगी।

देवी : तो क्या आप भूतनाथ को अच्छी तरह नहीं जानतीं ?

कमलिनी : मैं भूतनाथ के सात पुश्त को जानती हूँ, जिसका परिचय आप लोगों को भी आप-से-आप मिल जायगा। निःसन्देह भूतनाथ दिल से हम लोगों का खैरखाह है, परन्तु उसका दिल निरोग नहीं है, और उसके भीतर का लँगर जो फौलाद की तरह ठोस है, किसी चुम्बक की समीपता के कारण सीधी चाल नहीं चलता। मैं इस फिक्र में हूँ कि उसे हर तरह से स्वतन्त्र कर दूँ, मगर उसके मुँह पर किसी जबर्दस्त घटना के हाथ की लगी हुई मोहर उसके द्वारा कोई भेद प्रकट होने नहीं देती, निःसन्देह उस पर किसी अनुचित कार्य का काला धब्बा ऐसा मजबूत लगा है कि वह केवल आँसुओं के जल से धुलकर साफ नहीं हो सकता। हाय, एक दफे की चूक जन्म-भर के लिए बवाल हो जाती है। आप स्वयं चालाक हैं, यदि मेरी तरह खोज में लगे रहेंगे तो बहुतकुछ पता पा जाँयगे। वह बेशक हम लोगों का खैरखाह है, निमकहराम नहीं, मगर जिसका दिल इश्क का लव-लेश न होने पर भी अपने अख्तियार में न हो, उसका क्या विश्वास।

कमलिनी की इन भेद-भरी बातों ने केवल देवीसिंह ही को नहीं, बल्कि किशोरी, कामिनी और तारा को भी हैरानी में डाल दिया, जो असाध्य रोगियों की तरह जमीन पर पड़ी हुई थीं, और उनसे थोड़ी ही दूर पर बैठे हुए भैरोसिंह ने भी कमलिनी की बातों को अच्छी तरह सुना और समझा, मगर जिस तरह देवीसिंह के दिल पर उन बातों ने असर किया, उस तरह भैरोसिंह के दिल पर उन बातों से मालूम होता है, असर नहीं किया, क्योंकि भैरोसिंह के चेहरे पर उन बातों को सुनने से आश्चर्य या उत्कण्ठा की कोई निशानी नहीं पायी जाती थी।

कुछ देर तक सोचने बाद देवीसिंह यह कहकर उठ खड़े हुए, "अच्छा मैं पहिले घोड़ों की फिक्र में जाता हूँ, फिर जैसा होगा, देखा जायगा।"

आधा घण्टा सफर करने बाद देवीसिंह उस जगह पहुँचे, जहाँ एक पेड़ के साथ दोनों घोड़े बँधे हुए थे। वहाँ से थोड़ी दूर पर एक चश्मा बह रहा था, देवीसिंह दोनों घोड़ों को वहाँ ले गये और पानी पिलाने बाद लम्बी बाग-डोर के सहारे पेड़ों के साथ बाँध दिया, जहाँ उनके चरने के लिए लम्बी घास बहुतायत के साथ जमी हुई थी।

देवीसिंह ने सोचा कि यद्यपि कुसमय है, मगर फिर भी वहाँ अवश्य चलना चाहिए, जहाँ भगवानी को छोड़ आये थे, शायद भूतनाथ या श्याम-

लाया और शोरबा पकाने का बन्दोबस्त करने लगा। इधर कमलिनी और देवीसिंह में बातचीत होने लगी।

देवी : उन दोनों घोड़ों की भी सुध लेनी चाहिए, जिन्हें यहाँ से थोड़ी ही दूर पर एक पेड़ से बाँधकर छोड़ आये हैं।

कमलिनी : हाँ, उन घोड़ों को भी जिस तरह बने धीरे-धीरे यहाँ तक ले आना चाहिए, नहीं तो बेचारे जानवर भूख और प्यास के मारे मर जायँगे। एक तो यहाँ का रास्ता ऐसा खराब है कि घोड़ों पर सवार होकर मैं आ नहीं सकती थी, दूसरे रात का समय था, इसलिए लाचार होकर उनको उसी जगह छोड़ देना पड़ा, पर अब हम लोगों को वहाँ तक जाने की कोई आवश्यकता नहीं जान पड़ती।

देवी : ठीक है, अगर कहिए तो मैं उन दोनों घोड़ों को यहाँ ले आऊँ, अब तो दिन का समय है, और जब तक भैरोसिंह खाने की तैयारी करता है, तब तक बेकार बैठे रहने से कुछ काम ही करना अच्छा है।

कमलिनी : अगर ले आइए तो अच्छी बात है, मगर हाँ सुनिए तो सही, भूतनाथ और श्यामसुन्दरसिंह को कहा गया था कि आज रात के समय हम लोगों से मिलने के लिए उसी ठिकाने पर तैयार रहें, जहाँ भगवानी उनके हवाले की गयी थी।

देवी : जी हाँ, कहा गया था, मगर मैं समझता हूँ कि अब हम लोगों का वहाँ जाना वृथा ही है, अगर आप कहिए तो मैं उन लोगों के पास जाऊँ, और यदि इस समय मुलाकात हो जाय तो इस बात की इत्तिला भी देता आऊँ या उन लोगों को इसी जगह लेता आऊँ ?

कमलिनी : एक तो रात होने के पहिले उन लोगों से मुलाकात ही नहीं हो सकती, कौन ठिकाना वहाँ हों या दूसरी जगह चले गये हों, दूसरी बात यह है कि मैं उन लोगों को यह जगह दिखाना नहीं चाहती, और न यहाँ का भेद बताना चाहती हूँ, क्योंकि आजकल की अवस्था देखकर श्यामसुन्दरसिंह पर से भी विश्वास उठा जाता है, बाकी रहा भूतनाथ। वह यद्यपि मेरे आधीन है, और इस बात का उद्योग भी करता है कि हम लोगों को प्रसन्न रक्खे, मगर वह कई ऐसी भयानक घटनाओं का शिकार हो रहा है कि बहुत लायक और खैरखाह होने पर भी मैं उसे किसी भी योग्य नहीं समझती, और न इसी बात का विश्वास है कि उसका दिल वैसा ही रहेगा जैसा आज है, बल्कि मैं कह सकती हूँ कि वह अपने दिल का मालिक आप नहीं है।

देवी : यह तो आप एक ऐसी बात कहती हैं, जिसे पहेली की तरह उल्टी भूमिका कहने की इच्छा होती है।

कमलिनी : बेशक, ऐसा ही है। इस जगह तिनके की ओट पहाड़ीवाली कहावत ठीक बैठती है। न मालूम वह कौन-सा भेद है, जिसको जानने के लिए पहाड़ ऐसे पचासों दिन नष्ट करने की आवश्यकता होगी।

देवी : तो क्या आप भूतनाथ को अच्छी तरह नहीं जानतीं ?

कमलिनी : मैं भूतनाथ के सात पुश्त को जानती हूँ, जिसका परिचय आप लोगों को भी आप-से-आप मिल जायगा। निःसन्देह भूतनाथ दिल से हम लोगों का खैरखाह है, परन्तु उसका दिल निरोग नहीं है, और उसके भीतर का लँगर जो फौलाद की तरह ठोस है, किसी चुम्बक की समीपता के कारण सीधी चाल नहीं चलता। मैं इस फिक्र में हूँ कि उसे हर तरह से स्वतन्त्र कर दूँ, मगर उसके मुँह पर किसी जबर्दस्त घटना के हाथ की लगी हुई मोहर उसके द्वारा कोई भेद प्रकट होने नहीं देती, निःसन्देह उस पर किसी अनुचित कार्य का काला धब्बा ऐसा मजबूत लगा है कि वह केवल आँसुओं के जल से धुलकर साफ नहीं हो सकता। हाय, एक दफे की चूक जन्म-भर के लिए बवाल हो जाती है। आप स्वयं चालाक हैं, यदि मेरी तरह खोज में लगे रहेंगे तो बहुतकुछ पता पा जाँयगे। वह बेशक हम लोगों का खैरखाह है, निमकहराम नहीं, मगर जिसका दिल इश्क का लव-लेश न होने पर भी अपने अख्तियार में न हो, उसका क्या विश्वास।

कमलिनी की इन भेद-भरी बातों ने केवल देवीसिंह ही को नहीं, बल्कि किशोरी, कामिनी और तारा को भी हैरानी में डाल दिया, जो असाध्य रोगियों की तरह जमीन पर पड़ी हुई थीं, और उनसे थोड़ी ही दूर पर बैठे हुए भैरोसिंह ने भी कमलिनी की बातों को अच्छी तरह सुना और समझा, मगर जिस तरह देवीसिंह के दिल पर उन बातों ने असर किया, उस तरह भैरोसिंह के दिल पर उन बातों से मालूम होता है, असर नहीं किया, क्योंकि भैरोसिंह के चेहरे पर उन बातों को सुनने से आश्चर्य या उत्कण्ठा की कोई निशानी नहीं पायी जाती थी।

कुछ देर तक सोचने बाद देवीसिंह यह कहकर उठ खड़े हुए, "अच्छा मैं पहिले घोड़ों की फिक्र में जाता हूँ, फिर जैसा होगा, देखा जायगा।"

आधा घण्टा सफर करने बाद देवीसिंह उस जगह पहुँचे, जहाँ एक पेड़ के साथ दोनों घोड़े बँधे हुए थे। वहाँ से थोड़ी दूर पर एक चश्मा बह रहा था, देवीसिंह दोनों घोड़ों को वहाँ ले गये और पानी पिलाने बाद लम्बी बाग-डोर के सहारे पेड़ों के साथ बाँध दिया, जहाँ उनके चरने के लिए लम्बी घास बहुतायत के साथ जमी हुई थी।

देवीसिंह ने सोचा कि यद्यपि कुसमय है, मगर फिर भी वहाँ अवश्य चलना चाहिए, जहाँ भगवानी को छोड़ आये थे, शायद भूतनाथ या श्याम-

सुन्दरसिंह से मुलाकात हो जाय, अगर किसी से मुलाकात हो गयी तो कह देंगे कि आज प्रतिज्ञानुसार इस जगह कमलिनी से मुलाकात न होगी। अगर यह काम हो गया तो रात के समय पुनः बीमारों को छोड़के इस तरफ आने की आवश्यकता न पड़ेगी।

इन बातों को सोचकर देवीसिंह वहाँ से आगे की तरफ बढ़े, मगर सौ कदम से ज्यादे दूर न गये होंगे कि सामने की तरफ से किसी के आने की आहट मालूम पड़ी। देवीसिंह ठहर गये और बड़े गौर से उधर देखने लगे, जिधर से किसी के आने की आहट मिल रही थी। थोड़ी ही देर में दो आदमी निगाह के सामने आ पहुँचे, जिनमें से एक को देवीसिंह पहिचानते थे और दूसरे को नहीं। पाठक समझ गये होंगे कि उन दोनों में से एक तो भूतनाथ था, और दूसरा वही विचित्र आदमी, जिसने भूतनाथ पर अपना अधिकार कर लिया था, और जो उसे इस समय अपने साथ न मालूम कहाँ लिये जाता था।

देवीसिंह ने भूतनाथ के उदास और मुर्झाये चेहरे को बड़े गौर से देखा और फिर आगे बढ़कर उससे पूछा—

देवी : क्यों साहब, आप कहाँ जा रहे हैं और वह आपका साथी कौन है ?

भूतनाथ : (अपने साथी की तरफ इशारा करके) इन्हें आप नहीं जानते, इनके साथ मैं एक जरूरी काम के लिए जा रहा हूँ। आप कमलिनी जी से कह दीजियेगा कि आज रात को प्रतिज्ञानुसार मैं उनसे मिल नहीं सकता।

देवी : सो क्यों ?

भूतनाथ : इसलिए कि इनके साथ जाता हूँ, क्या जाने कब छुट्टी मिले !

देवी : इनके साथ कहाँ जाते हो ?

भूतनाथ : (घबराहट और लाचारी के ढंग से) सो तो मुझे मालूम नहीं !

इतना कहके उसने एक लम्बी साँस ली। अब देवीसिंह के दिमाग में वे बातें घूमने लगीं जो भूतनाथ के विषय में कमलिनी ने कही थीं। देवीसिंह ने भूतनाथ की कलाई पकड़ ली और एक तरफ से जाकर पूछा, "दोस्त, क्या तुम इतना भी नहीं बता सकते कि कहाँ जा रहे हो ? ऐयार लोगों का आपुस में क्या ऐसा ही बर्ताव होता है ! क्या तुम और हम दोनों एक ही पक्ष के नहीं हैं, और क्या तुम अपने दिल की बातें मुझसे भी नहीं कह सकते ? बोलो बोलो, मेरी बातों का कुछ जवाब दो ! वाह वाह, यह क्या,

तुम रो क्यों रहे हो ?"

भूतनाथ : (आँखों से आँसू पोंछकर) हाय, मैं कुछ भी नहीं कह सकता कि मेरे दिल की क्या अवस्था है। (मुहब्बत से देवीसिंह का हाथ पकड़के) मैं तुमको अपना बडा भाई समझता हूँ, और तुम इस बात का अपने दिल में ध्यान भी न लाना कि भूतनाथ तुम्हारे साथ चालबाजी की बातें करेगा, मगर हाय, मैं मजबूर हूँ, कुछ नहीं कह सकता ! (विचित्र मनुष्य की तरफ इशारा करके) मैं और मेरा सर्वस्व इस हरामजादे की मुट्ठी में है, और छुटकारे की कोई आशा नहीं ! अफसोस ! अच्छा दोस्त अब मुझे बिदा दो, अगर जीता रहा तो फिर मिलूंगा !

देवी : भूतनाथ, तुम कैसी बेसिर-पैर की बातें कर रहे हो, कुछ समझ में नहीं आता ! आश्चर्य है कि तुम्हारे ऐसा बहादुर आदमी और इस तरह की बातें करे। साफ-साफ कहो तो कुछ मालूम हो, कदाचित् मैं तुम्हारी कुछ मदद कर सकूँ।

भूतनाथ : नहीं तुम कुछ भी मदद नहीं कर सकते, मेरा नसीबा बिगड़ा हुआ है और इसे वही ठीक कर सकता है, जिसने इसे बनाया है।

देवी : मैं इस बात को नहीं मानता, निःसन्देह ईश्वर सबके ऊपर है, परन्तु साथ ही इसके यह भी समझना चाहिए कि वह किसी को बनाने और बिगाड़ने के लिए अपने हाथ-पैर से काम नहीं लेता, यदि ऐसा करे या हो तो उसमें और मनुष्य में कोई भेद कहने के लिए भी बाकी न रह जाय, अतएव कह सकते हैं कि केवल उसकी इच्छा ही इतनी प्रबल है कि वह किसी तरह टल नहीं सकती और वह इस पृथ्वी का काम इसी पर रहने-वालों से कराता रहता है। इसका तत्व यह है कि वह जिस मनुष्य द्वारा अपनी इच्छा पूरी किया चाहता है, उसके अन्दर उस बुद्धि और साहस का संचार करता है, जिसका मुकाबला करनेवाला पृथ्वी में सिवाय बुद्धि और साहस के और कोई नहीं, इसके साथ-ही-साथ, जिससे वह रुष्ट होता है, उससे बुद्धि और साहस छीन लेता है। बस इन्हीं दो बातों द्वारा वह अपनी इच्छा पूरी करके नित्य नवीन नाटक देखा करता है, और यही उसकी कारीगरी है। मैं इस समय जब अपनी तरफ ध्यान देता हूँ तो ईश्वर की कृपा से अपने में साहस की कमी नहीं देखता, और दिल को तुम्हारी मदद के लिए व्याकुल पाता हूँ, और इससे निश्चय होता है कि मैं तुम्हारी सहायता कर सकता हूँ, और यही ईश्वर की इच्छा भी है। तुम एकदम हताश मत हो जाओ, और जान-बूझके अपनी जान के दुश्मन मत बनो, असल-असल हाल कहो, फिर देखो कि मैं क्या करता हूँ।

भूतनाथ : तुम्हारा कहना बहुत ठीक है, परन्तु मुझे निश्चय है कि जब

मैं अपना असल भेद तुमसे कह दूंगा तो तुम स्वयं मुझसे घृणा करोगे और चाहोगे कि यह दुष्ट किसी तरह मेरे सामने से दूर हो जाय !! प्यारे दोस्त, जबसे मैंने अपनी प्रकृति बदलने का उद्योग किया है, और ईश्वर के सामने कसम खायी है कि अपने माथे से बदनामी का टीका दूर करके नेक, ईमानदार, सच्चा और सुयोग्य बनूँगा, तबसे मेरे हृदय की विचित्र अवस्था हो गयी है। जब मुझे यह मालूम होता है कि मेरी पिछली बातें अब प्रकट हुआ चाहती हैं, तब मुझे मौत से भी बढ़के कष्ट होता है, और जब यह चाहता हूँ कि अपनी जान देकर भी किसी तरह इन बातों से छुटकारा पाऊँ तो उसी समय मुझे मालूम होता है कि मेरे अन्दर दिल के पास ही बैठा हुआ कोई कह रहा है कि खबरदार ऐसा न कीजियो। तू कसम खा चुका है कि अपने सिर से बदनामी का टीका दूर करेगा। यदि ऐसा किये बिना मर जायगा तो ईश्वर के सामने झूठा होने के कारण नर्क का भागी होगा, अर्थात् तेरी आत्मा जो कभी मरनेवाली नहीं है, बड़ा कष्ट भोगेगी और हजारों वर्ष तक बिना पानी के मछली की तरह तड़पा करेगी। हाय, ये बातें ऐसी हैं कि मुझे बेचैन किये देती हैं, ऐसी अवस्था में तुम स्वयं सोच सकते हो कि अपनी बुराइयों को मैं अपने ही मुँह से कैसे प्रकट करूँ और तुमसे क्या कहूँ। यदि जी कड़ा करके कुछ कहूँगा भी तो निःसन्देह तुम मुझसे घृणा करोगे जैसाकि मैं तुमसे कह चुका हूँ।

देवी : नहीं नहीं, कदापि नहीं, मैं शपथपूर्वक कहता हूँ कि यदि मुझे यह भी मालूम हो जायगा कि तुम मेरे पिता के घातक हो, जिन पर मेरा बड़ा ही स्नेह था, तो भी मैं तुम्हें इसी तरह मुहब्बत की निगाह से देखूँगा, जैसा कि अब देख रहा हूँ ! कहो अब इससे ज्यादे मैं क्या कह सकता हूँ !

इतना सुनते ही भूतनाथ जिसने अपनी पीठ विचित्र मनुष्य की तरफ इसलिए कर रक्खी थी कि चेहरे के उतार-चढ़ाव से वह उसकी बातों का कुछ भेद न पा सके, देवीसिंह के पैरों पर गिर पड़ा और रोने लगा। देवीसिंह ने उसे उठाकर गले से लगा लिया और कहा—"देखो, जी कड़ा करो, घबराओ मत, ईश्वर जोकुछ करेगा, अच्छा ही करेगा, क्योंकि नेकी की राह पर चलनेवालों की वह सहायता किया ही करता है, और उनके पिछले ऐबों पर ध्यान नहीं देता, यदि वह जान जाय कि यह भविष्य में नेक और सच्चा निकलेगा।"

विचित्र मनुष्य जो दूर खड़ा यह तमाशा देख रहा था जी में बहुत ही कुढ़ा और उसने भूतनाथ से ललकारके कहा, "भूतनाथ, यह क्या बात है ? तुम राह चलते हरएक ऐरे-गैरे के सामने खड़े होकर घण्टों कलपा करोगे और मैं खड़ा पहरा दिया करूँगा ? यह नहीं हो सकता। मैं तुम्हारा ताबेदार

नहीं हूँ, बल्कि तुम तावेदार हो, चलो जल्दी करो, अब मैं नहीं रुक सकता !"

भूतनाथ ने लाचारी और मजबूरी की निगाह देवीसिंह पर डाली और सिर नीचा करके चुप हो रहा। देवीसिंह ने पहिले तो भूतनाथ के कान में धीरे-से कुछ कहा और इसके बाद विचित्र मनुष्य की तरफ बढ़कर बोले—

देवी : क्यों बे, क्या तूने मुझे ऐरे-गैरों में समझ लिया है ? जुबान सँभालके नहीं बोलता ! क्या तू नहीं जानता कि मैं कौन हूँ ?

विचित्र मनुष्य : मैं खूब जानता हूँ कि तुम्हारा नाम देवीसिंह है, और तुम राजा बीरेन्द्रसिंह के ऐयार हो, मगर मुझे इससे क्या मतलब ? तुमने मेरे आसामी को इतनी देर तक क्यों रोक रक्खा ?

देवी : भूतनाथ तेरा आसामी नहीं है, बल्कि मेरा साथी ऐयार है। कदाचित अपने पागलपन में तूने इसे अपना आसामी समझ लिया हो तो भी जोकुछ कहना हो भूतनाथ से कह, तुझे पागल समझकर मैं कुछ न कहूँगा छोड़ दूंगा, मगर तू इतना हौसला नहीं कर सकता कि राजा बीरेन्द्रसिंह के ऐयारों को 'ऐरे-गैरे' कहकर सम्बोधन करे ! क्या तू नहीं जानता कि ऐयार की इज्जत राजदीवान से कम नहीं होती ? मैं बेशक तुझे इस बेअदबी की सजा दूंगा।

विचित्र मनुष्य : तुम मुझे क्या सजा दोगे, मैं तुम्हें समझता ही क्या हूँ !

देवी : तो मैं दिखाऊँ तमाशा तुझे और बता दूं कि राजा बीरेन्द्रसिंह के ऐयार लोग कैसे होते हैं ?

विचित्र : हाँ हाँ, जोकुछ करते बने करो, मैं तैयार हूँ, तुमसे डरनेवाला नहीं।

इतना कहकर विचित्र मनुष्य ने म्यान से तलवार निकाल ली और देवीसिंह ने भी जमीन पर से पत्थर का एक टुकड़ा उठा लिया। विचित्र मनुष्य ने झपटकर देवीसिंह पर तलवार का वार किया। देवीसिंह उछलकर दूर जा खड़े हुए और उस पत्थर के टुकड़े से अपने वैरी पर वार किया, मगर उसने भी पैंतरा बदलकर अपने को बचा लिया और देवीसिंह पर झपटा। अबकी दफे देवीसिंह ने फुर्ती के साथ पत्थर के दो टुकड़े दोनों हाथों में उठा लिये और दुश्मन के वार को खाली देखकर एक पत्थर चलाया। जब तक विचित्र मनुष्य उस वार को बचाये, तब तक देवीसिंह ने दूसरा टुकड़ा चलाया, जो उसके घुटने पर बैठा और उसे सख्त चोट लगी। देवीसिंह ने विलम्ब न किया, फिर एक पत्थर उठा लिया, और अपने वैरी को दूर से ही मारा। पैर में चोट लग जाने के कारण वह उछलकर अलग न हो सका, और देवी-

सिंह का चलाया हुआ दूसरा पत्थर उसके दूसरे घुटने पर इस जोर से लगा कि वह चलने लायक न रहा, इसके बाद देवीसिंह का चलाया हुआ फिर एक पत्थर उसकी दाहिनी कलाई पर बैठा, और तलवार उसके हाथ से छूटकर जमीन पर गिर पड़ी। विचित्र मनुष्य की कलाई नकाबपोश की लड़ाई में पहिले ही चोट खा चुकी थी, अबकी दफे तो वह ऐसी बेकाम हुई कि उसे विश्वास हो गया कि कई महीने तक तलवार का कब्जा न थाम सकेगी। वह घबराहट के साथ देवीसिंह की तरफ देख ही रहा था कि देवीसिंह का चलाया हुआ एक और पत्थर आया, जिसने उसका सिर तोड़ दिया, और उसने त्योराकर जमीन पर गिरते-गिरते यह सुना, "देखा, राजा बीरेन्द्रसिंह के ऐयार की करामात !"

देवीसिंह तुरन्त उस विचित्र मनुष्य के पास पहुँचे जो जमीन पर बेहोश पड़ा हुआ था। अपने बटुए में से बेहोशी की दवा निकालकर उसे सुँघायी और उसके हाथ-पैर बाँधने के बाद पुनः भूतनाथ के पास आये और बोले, "तुम मेरी इस कार्रवाई से किसी तरह की चिन्ता मत करो और देखो कि मैं इस कमबख्त को कैसा छकाता हूँ।"

भूतनाथ : मैं आपकी जितनी तारीफ करूँ थोड़ी है। कोई जमाना ऐसा था कि ऐसे दुष्ट लोग मेरे नाम से काँपा करते थे, परन्तु अब तो बात ही उल्टी हो गयी। अब यह जब मेरे सामने आता है तो 'बालि' बनकर आता है, अर्थात् इसकी सूरत देखते ही मेरी ताकत, फुर्ती और चालाकी हवा खाने चली जाती है या इसी दुष्ट का साथ देती है। अच्छा तो अब मुझे क्या करना चाहिए ? हाँ, इस बात पर भी विचार कर लेना कि मेरी इज्जत अर्थात् मेरी स्त्री इसके कब्जे में है, न मालूम इसने उसे कहाँ कैद कर रक्खा है !

देवी : (आश्चर्य से भूतनाथ का मुँह देखके) खैर, पहिले यह बताओ कि यह कौन है, इससे तुमसे कब मुलाकात हुई और क्या हुआ ?

भूतनाथ ने यह तो नहीं बताया कि वह विचित्र मनुष्य कौन है, मगर जिस समय से वह मिला, और उसके बाद जो-जो हुआ सब पूरा-पूरा कह सुनाया और देवीसिंह आश्चर्य के साथ सुनते रहे।

देवीसिंह कुछ देर तक सोचते रहे। भगवनिया के छूट जाने का उन्हें बहुत रंज था, क्योंकि उन्हें या भूतनाथ को इस बात की खबर नहीं थी कि भगवनिया भूतनाथ के कब्जे से निकलकर नकाबपोश के कब्जे में जा फँसी है ! देवीसिंह इस बात पर देर तक गौर करते रहे कि नकाबपोश कौन होगा, तारा की किस्मत क्या चीज होगी, जो गठरी में थी, और वह घूमती-फिरती नकाबपोश के कब्जे में कैसे जा पहुँची ? देवीसिंह को विश्वास तो था कि

तारा की किस्मत के विषय में भूतनाथ से बढ़कर साफ कोई नहीं समझा सकता, मगर साथ ही इसके यह भी निश्चय था कि भूतनाथ अपने मुँह से इन भेदों को इस समय कदापि न खोलेगा और ऐसा करने के लिए जोर देने से उसे कष्ट होगा।

देवी : अच्छा भूतनाथ, यह बताओ कि तुम मुझ पर विश्वास कर सकते हो ? मैं इस दुष्ट के पंजे से तुम्हें छुड़ाने का उद्योग करूँगा। तुम इस बात की चिन्ता न करो कि मैं इसे मार डालूँगा या बहुत दिनों तक, कैद कर रक्खूँगा, क्योंकि ऐसा करने से तुम्हारी स्त्री को कष्ट होगा और यह बात मुझे मंजूर नहीं है !

भूतनाथ : मैं शपथ-पूर्वक कहता हूँ कि अपनी जिन्दगी का सबसे नाजुक और कीमती हिस्सा आपके हवाले करता हूँ, आप जैसा चाहें उसके साथ बरताव करें, मगर मेरी एक प्रार्थना अवश्य स्वीकार करें।

देवी : वह क्या ?

भूतनाथ : यही कि इस भेद के विषय में मेरी जुबान से कुछ कहलाने का उद्योग न करें और तहकीकात करने पर जोकुछ भेद आपको मालूम हों, उन भेदों को भी बिना मेरी इच्छा के राजा बीरेन्द्रसिंह, उनके दोनों कुमार, राजा गोपालसिंह, तारा और कमलिनी पर प्रकट न करें। बस इससे ज्यादे कुछ न कहकर आशा करता हूँ कि मुझे अपना कनिष्ठ भ्राता समझकर इस दुष्ट के पंजे से छुटकारा दिलावेंगे। हाँ, एक बात कहना भूल गया, वह यह है कि इस दुष्ट को कैद करके आप बेफिक्र न रहियेगा, इसके मददगार लोग बड़े ही शैतान और पाजी हैं।

देवी : जोकुछ तुमने कहा मुझे मंजूर है, मैं वादा करता हूँ कि जब तक तुम आज्ञा न दोगे, तुम्हारे भेद अपने दिल के अन्दर रक्खूँगा और उद्योग करूँगा, जिसमें तुम्हारी आत्मा निरोग हो और तुम स्वतन्त्र होकर विचार कर सको--अच्छा एक काम करो।

भूतनाथ : कहिए।

देवी : इस दुष्ट को तो मैं अपने कब्जे में करता हूँ, जहाँ मुनासिब समझूँगा ले जाऊँगा, तुम यहाँ से जाओ, कल सवेरे तालाबवाले तिलिस्मी मकान में जिसे दुश्मनों ने खराब कर डाला है, मुझसे और कमलिनी से मुलाकात करो, इस बीच में अगर हो सके तो श्यामसुन्दरसिंह को खोज निकालो, और उसे भी अपने साथ उसी जगह लेते आओ, फिर जोकुछ मुनासिब होगा किया जायेगा।

भूतनाथ : (चौंककर) तो क्या ये सब बातें आप कमलिनी से कहेंगे ?

देवी : हाँ, यदि आवश्यकता होगी तो कहूँगा और इसमें तुम्हारा कुछ

हर्ज नहीं है, परन्तु विश्वास रक्खो कि इन बातों का असल भेद जिनका पता भविष्य में मैं लगाऊँगा, अपनी प्रतिज्ञानुसार किसी से न कहूँगा।

भूतनाथ : (मजबूरी के ढंग से) बहुत अच्छा, मैं जाता हूँ।

भूतनाथ वहाँ से चला गया। देवीसिंह ने उस विचित्र मनुष्य की गठरी बाँधी और उस जगह आये, जहाँ दोनों घोड़ों को छोड़ा था। घोड़ों पर जीन कसने के बाद एक पर उस आदमी को लादा, और दूसरे पर आप सवार होकर उस तरफ रवाना हुए, जहाँ कमलिनी, किशोरी, कामिनी इत्यादि को छोड़ा था।

दसवाँ बयान

दिन ढल चुका था, जब देवीसिंह विचित्र मनुष्य की गठरी और दोनों घोड़ों को लिये हुए वहाँ पहुँचे, जहाँ किशोरी, कामिनी, तारा, कमलिनी, लाडिली और भैरोसिंह को छोड़ा था। तीतर का शोरवा पीने से किशोरी, कामिनी और तारा की तबीयत ठहरी हुई थी, और वे इस योग्य हो गयी थीं कि दीवार के सहारे कुछ देर तक बैठ सकें, अस्तु, इस समय जब देवीसिंह वहाँ पहुँचे तो वे तीनों पत्थर की चट्टान के सहारे बैठी हुई कमलिनी और भैरोसिंह से बातचीत कर रही थीं। वहाँ जंगली पेड़ों की घनी छाया थी, जिनकी टहनियाँ तेज हवा के झपेटों से झोंके खा रही थीं, और पत्तों की खड़खड़ाहट की मधुर-ध्वनि बहुत ही भली मालूम देती थी।

जिस समय भैरोसिंह ने देखा कि देवीसिंह के साथ दोनों घोड़े ही नहीं हैं, बल्कि एक गठरी भी है, वह उठकर आगे बढ़ गया और विचित्र मनुष्य की गठरी अपनी पीठ पर लादकर कमलिनी के पास ले आया। उस समय सभी की आश्चर्य-भरी निगाहें उसी गठरी की तरफ पड़ रही थीं। दोनों घोड़ों को पेड़ से बाँधकर जब देवीसिंह कमलिनी के पास पहुँचे तो उन्होंने अपने पास की गठरी खोली और सभों ने बड़े गौर से विचित्र मनुष्य के चेहरे पर नजर डाली। यद्यपि देवीसिंह ने उसके फटे हुए सिर पर कपड़ा बाँध दिया था, मगर थोड़ा-थोड़ा खून अभी तक बह रहा था।

कमलिनी : इसे आप कहाँ से लाये और यह कौन है ?

देवी : मुझे अभी तक मालूम न हुआ कि यह कौन है।

कमलिनी : (आश्चर्य से) क्या खूब ! अगर ऐसा ही था तो इसे कैद क्योंकर लाये ?

देवी : इसका किस्सा बड़ा ही विचित्र है। मुझे अब निश्चय हो गया कि भूतनाथ निःसन्देह किसी भारी घटना का शिकार हो रहा है, जैसाकि

आपने कहा था।

कमलिनी : अच्छा अब मैं टूटी-फूटी बातें नहीं सुनना चाहती, जोकुछ हाल हो खुलासा-खुलासा कह जाइए।

इस जगह पुनः उन बातों को दोहराना पाठकों का समय नष्ट करना है, अतएव इतना ही कह देना काफी है कि देवीसिंह ने अपना पूरा हाल तथा भूतनाथ की जुबानी इस विचित्र मनुष्य और नकाबपोश वगैरह का जोकुछ हाल सुना था, कमलिनी से कह सुनाया, जिसे सुनकर कमलिनी को बड़ा ही ताज्जुब हुआ। कमलिनी से भी ज्यादा ताज्जुब तारा को हुआ, जब उसने सुना कि इस विचित्र मनुष्य के हाथ में एक गठरी थी, जिसके विषय में यह कहता था कि इसके अन्दर तारा की किस्मत बन्द है, और गठरी घूमती-फिरती किसी नकाबपोश के हाथ में चली गयी, मालूम नहीं वह नकाबपोश कौन था, या कहाँ चला गया।

कमलिनी : (तारा से) जब तुम्हारी किस्मत की गठरी इस आदमी के हाथ में थी तो मालूम होता है कि तुम इसे जानती भी होगी !

तारा : कुछ भी नहीं, बल्कि जहाँ तक मैं कह सकती हूँ, मालूम होता है कि मैंने इसकी सूरत भी कभी नहीं देखी होगी।

कमलिनी : ठीक है, इस समय इसके विषय में तुमसे कुछ पूछना भूल है क्योंकि साफ मालूम होता है कि इस आदमी की सूरत वास्तव में वैसी नहीं है, जैसी हम देख रहे हैं। जरूर इसने अपनी सूरत बदली है, और इसके बाल भी असली नहीं, बल्कि बनावटी हैं, जब वे अलग किये जायँगे और इसका चेहरा धोया जायगा तब शायद तुम इसे पहिचान सको।

तारा : कदाचित ऐसा ही हो।

कमलिनी : अच्छा तो पहिले इसका चेहरा साफ करना चाहिए।

देवी : मैं भी यही मुनासिब समझता हूँ, इसके बाद इसे होश में लाकर जोकुछ पूछना हो पूछा जायगा।

इतना कहकर देवीसिंह ने अपने बटुए में से लोटा निकाला, भैरोसिंह का लोटा भी उठा लिया और जल भरने के लिए चश्मे के किनारे गये। चश्मा बहुत दूर न था, इसलिए बहुत जल्द लौट आये और बाल दूर करके उसका चेहरा धोने लगे। आश्चर्य की बात है कि जैसे-जैसे उस विचित्र मनुष्य का चेहरा साफ होता जाता था, तैसे-तैसे तारा के चेहरे की रंगत बदलती जाती थी, यहाँ तक कि उसका चेहरा अच्छी तरह साफ हुआ भी न था कि तारा ने एक चीख मारी और 'हाय' कहके गिरने के साथ ही बेहोश हो गयी। उस वक्त सभों का खयाल तारा की तरफ जा रहा और कमलिनी ने कहा, "निःसन्देह इस मनुष्य को तारा पहिचानती है !"

उसी समय भैरोसिंह की निगाह सामने की तरफ जा पड़ी और एक नकाबपोश को अपनी तरफ आते हुए देखकर उसने कहा, "देखिए, एक नकाबपोश हम लोगों की तरफ आ रहा है ! आश्चर्य है कि उसने यहाँ का रास्ता कैसे देख लिया ! कदाचित् चाचाजी के पीछे छिपकर चला आया हो। बेशक ऐसा ही है, नहीं तो इस भूलभुलैया रास्ते का पता लगाना कठिन ही नहीं, बल्कि असम्भव है ! जो हो मगर मैं कसम खाकर कह सकता हूँ कि यह वही नकाबपोश है, जिसका हाल इस समय सुनने में आया है। और देखो उसके हाथ में एक गठरी भी है। हाँ, यह वही गठरी होगी, जिसके विषय में कहा जाता है कि इसमें तारा की किस्मत बन्द है !!"

कमलिनी : बेशक ऐसा ही है।

देवी : हाँ, इसके लिए तो मैं भी कसम खा सकता हूँ।

बारहवाँ भाग

पहिला बयान

हम ग्यारहवें भाग के अन्त में लिख आये हैं कि जब देवीसिंह ने उस विचित्र मनुष्य का चेहरा धोकर साफ किया तो शायद तारा ने उसे पहिचान लिया और इस घटना का उस पर ऐसा असर हुआ कि वह चिल्ला उठी, उसका सर घूमने लगा और वह ज़मीन पर गिरने के साथ ही बेहोश हो गयी। उसी समय सामने से वह नकाबपोश भी आता हुआ दिखायी दिया, जिसने उस विचित्र मनुष्य को हैरान और परेशान कर दिया था, और उस गठरी को भी अपने कब्जे में कर लिया था, जिसमें विचित्र मनुष्य के कहे मुताबिक तारा की किस्मत बन्द थी। इस बयान में भी हम उसी सिलसिले को जारी रखना उचित समझते हैं।

बात-की-बात में नकाबपोश उस जगह आ पहुँचा, जहाँ वह विचित्र मनुष्य और उसके सामने एक पत्थर की चट्टान पर तारा बेहोश पड़ी हुई थी, तथा कमलिनी बड़ी मुहब्बत से तारा का सर थामे ताज्जुब-भरी निगाहों से हरएक को देख रही थी।

देवी : (नकाबपोश से) आप यहाँ कैसे आये ? क्या यहाँ का रास्ता आपको मालूम था ?

नकाबपोश : नहीं नहीं, मैं तुम्हारे पीछे-पीछे यहाँ तक आया हूँ।

इतना कहकर नकाबपोश ने अपने चेहरे से नकाब उठाकर पीछे की तरफ उलट दी, और सभों ने तेजसिंह को पहिचानकर बड़ा ही आश्चर्य किया। भैरोसिंह ने दौड़कर अपने पिता का चरण छुआ, देवीसिंह भी तेजसिंह के गले मिले और किशोरी, कामिनी, लाडिली तथा कमलिनी ने भी उन्हें प्रणाम किया।

देवी : (तेजसिंह से) क्या आप ही वह नकाबपोश हैं, जिसका विचित्र

हाल भूतनाथ की जुबानी मैंने सुना है ?

तेज : हाँ मैं ही था, मगर भूतनाथ को इस बात का शक भी न हुआ होगा कि नकाबपोश वास्तव में तेजसिंह है। (विचित्र मनुष्य की तरफ इशारा करके) इसके और भूतनाथ के बीच में जो-जो बातें या घटनाएँ हुईं, वह भूतनाथ की जुबानी तुमने सुनी ही होंगी ?

देवी : हाँ, सुनी तो हैं, मगर मुझे विश्वास नहीं है कि भूतनाथ ने जो कहा सब सच कहा होगा।

तेज : ठीक है, रात से मेरा खयाल भी भूतनाथ की तरफ से ऐसा ही हो रहा है, खैर, मैं स्वयं सब हाल तुम लोगों को कहता हूँ। मैं तारासिंह को साथ लिये हुए रोहतासगढ़ गया था। उस समय मैं रोहतासगढ़ ही में था, जब यह खबर पहुँची कि कमलिनी के तिलिस्मी मकान को दुश्मनों ने घेर लिया है, और उस पर अपना दखल जमाया ही चाहते हैं। मैंने तुरन्त थोड़े-से फौजी सिपाहियों को दुश्मन से मुकाबला करने के लिए रवाना किया और दो घण्टे बाद तारासिंह को साथ लेकर सूरत बदले हुए खुद भी उसी तरफ रवाना हुआ। रात की पहिली अँधेरी थी, जब हम दोनों एक जंगल में पहुँचे, और उसी समय घोड़े के टापों की आवाज आने लगी। यह आवाज पीछे की तरफ से आ रही थी, और क्रमशः पास होती जाती थी। हम दोनों यह सोचकर पेड़ की आड़ में खड़े हो गये कि जब यह सवार आगे निकल जाँय, तब हम लोग चलेंगे, मगर जब यह घोड़ा उस पेड़ के पास पहुँचा, जिसकी आड़ में हम दोनों छिपे खड़े थे, तो हमने देखा कि उस घोड़े पर एक नहीं, बल्कि दो आदमी सवार हैं, जिनमें से एक औरत है, जो पीछे की तरफ बैठी हुई है। उसका औरत होना मुझे इस तरह मालूम हुआ कि जब घोड़ा उस पेड़ के पास पहुँचा, जिसकी आड़ में हम लोग छिपे हुए थे तो उस औरत ने कहा, "ज़रा ठहर जाइए, मैं इस जगह उतरूँगी और दस-बारह पल के लिए आपसे जुदा होऊँगी।" बस इस आवाज ही से मुझे निश्चय हो गया कि वह औरत है। घोड़ा रोककर सवार उतर पड़ा, और हाथ का सहारा देकर उस औरत को भी उसने उतारा।

इतना कहकर तेजसिंह रुक गये और कमलिनी की तरफ देखकर बोले, "मगर मुझे इस समय अपना किस्सा कहते अच्छा नहीं मालूम होता।"

कमलिनी : सो क्यों ?

तेज : इसलिए कि मैं एक तरफ बेचारी तारा को बेहोश देखता हूँ, दूसरी तरफ किशोरी और कामिनी को ऐसी अवस्था में पाता हूँ, जैसे वर्षों की बीमार हों और तुमको भी सुस्त और उदास देखता हूँ, इन कारणों से मेरी यह इच्छा होती है कि पहिले इस तरफ का हाल सुन लूँ।

कमलिनी : आपका कहना बहुत ठीक है, फिर भी मैं यही चाहती हूँ कि पहिले आपका हाल सुन लूँ।

तेज : खैर, मैं भी अपना किस्सा मुख्तसर ही में पूरा करता हूँ।

इतना कहकर तेजसिंह ने फिर कहना शुरू किया—

"जब वह औरत उस काम से छुट्टी पा चुकी, जिसके लिए उतरी थी तो घोड़े के पास आयी और अपने साथी से बोली, "भूतनाथ ने जिस समय आपको देखा उसके चेहरे पर मुर्दनी छा गयी।" इसका जवाब उस आदमी ने जो वास्तव में (विचित्र मनुष्य की तरफ इशारा करके) यही हजरत थे, यों दिया, "बेशक ऐसा ही है क्योंकि भूतनाथ मुझे मुर्दा समझे हुए था। देखो तो सही आज मेरे और उसके बीच कैसी निपटती है। मैं उसे अवश्य अपने साथ ले जाऊँगा और नहीं तो आज ही उसका भण्डा फोड़ दूँगा जो बड़ा अच्छा, नेक और बहादुर बना फिरता है !!" इतना कह दोनों पुनः घोड़े पर सवार हुए और आगे की तरफ चले। मेरे दिल में तरह-तरह के खुटके पैदा हो रहे थे, और मैं अपने को उनके पीछे-पीछे जाने से किसी तरह रोक नहीं सकता था। लाचार हम दोनों भी उनके पीछे तेजी के साथ रवाना हुए। इस बात की फिक्र मेरे दिल से बिल्कुल जाती रही कि हमारे फौजी सिपाही दुश्मनों के मुकाबले में कब पहुँचेंगे और क्या करेंगे। अब तो यह फिक्र पैदा हुई कि यह आदमी कौन है, और इससे तथा भूतनाथ से क्या सम्बन्ध है, इस बात का पता लगाना चाहिए, और इसीलिए हम लोग अपना रास्ता छोड़कर घोड़े के पीछे-पीछे रवाना हुए, मगर हम लोगों को बहुत देर तक सफर करना न पड़ा और शीघ्र ही हम लोग उस जंगल में जा पहुँचे, जिसमें भगवानी और श्यामसुन्दर की कहा-सुनी हो रही थी, और थोड़ी ही देर बाद आप लोग भी पहुँच गये थे। मैं जानबूझकर आप लोगों से नहीं मिला और इस विचित्र मनुष्य के पीछे पड़ा रहा, यहाँ तक कि आप लोग चले गये और मुझे वह विचित्र घटना देखनी पड़ी।"

इसके बाद तेजसिंह ने वह सब हाल कहा, जिसे हम ऊपर लिख आये हैं और पुनः इस जगह दोहराकर लिखना वृथा समझते हैं, हाँ, उस दूसरे नकाबपोश के विषय में कदाचित् पाठकों को भ्रम होगा इसलिए साफ लिख देना आवश्यक है कि वह दूसरा नकाबपोश, जिसने भगवानी को भागने से रोक रक्खा था, और जिसके पास पहुँचने के लिए तेजसिंह ने श्यामसुन्दर-सिंह को नसीहत की थी, वास्तव में तारासिंह था, जिसका हाल इस समय तेजसिंह के बयान करने से मालूम हुआ।

जोकुछ हम ऊपर लिख आये हैं, उतना बयान करने बाद तेजसिंह ने कहा, "जब यह विचित्र मनुष्य भूतनाथ को लेकर रवाना हुआ तो मैं भी

इसके पीछे-पीछे चला पर बीच ही में उससे और देवीसिंह से मुलाकात हो गयी, देवीसिंह उसे पकड़के यहाँ ले आये और मैं भी देवीसिंह के पीछे-पीछे चुपचाप यहाँ तक चला आया।"

इतना कहकर तेजसिंह चुप हो गये और तारा की तरफ देखने लगे।

कमलिनी : यह घटना तो बड़ी ही विचित्र है, निःसन्देह इसके अन्दर कोई गुप्त रहस्य छिपा हुआ है।

तेज : जहाँ तक मैं समझता हूँ मालूम होता है कि आज बड़ी-बड़ी गुप्त बातों का पता लगेगा। अब कोई ऐसी तरकीब करनी चाहिए, जिसमें यह (विचित्र मनुष्य की तरफ इशारा करके) अपना सच्चा हाल कह दे।

देवी : तो इसे होश में लाना चाहिए।

तेज : नहीं, इसे अभी इसी तरह पड़ा रहने दो, कोई हर्ज नहीं और पहिले तारा को होश में लाने का उद्योग करो।

देवी : बहुत अच्छा।

अब देवीसिंह तारा को होश में लाने का उद्योग करने लगे, और तेजसिंह ने कमलिनी से कहा, "जब तक तारा होश में आवे तब तक तुम अपना हाल और इस तरफ जोकुछ बीता है, सो सब हाल कह जाओ।" कमलिनी ने ऐसा ही किया अर्थात् अपना और किशोरी, कामिनी तथा तारा का सब हाल संक्षेप में कह सुनाया, और इसी बीच में तारा भी होश में आकर बातचीत करने योग्य हो गयी।

कमलिनी : (तारा से) क्यों बहिन अब तबीयत कैसी है?

तारा : अच्छी है।

कमलिनी : तुम इस विचित्र मनुष्य को देखकर इतना डरीं क्यों? क्या इसे पहिचानती हो?

तारा : हाँ, मैं इसे पहिचानती हूँ, मगर अफसोस कि इसका असल भेद अपनी जुबान से नहीं कह सकती। (विचित्र मनुष्य की तरफ देखके) हाय, इस बेचारे ने तो किसी का कुछ भी नुकसान नहीं किया, फिर आप लोग क्यों इसके पीछे पड़े हैं?

कमलिनी : बहिन मेरी समझ में नहीं आता कि तुम इसका भेद जानके भी इतना क्यों छिपाती हो? क्या तुमने अभी नहीं सुना कि इसके और भूतनाथ के बीच में क्या बातें हुई हैं? मगर फिर भी ताज्जुब है कि इसे तुम अपनायत के ढंग से देख रही हो!!

तारा : (लम्बी साँस लेकर) हाय, अब मैं अपने दिल को नहीं रोक सकती। उसमें अब इतनी ताकत नहीं है कि उन भेदों को छिपा सके, जिन्हें इतने दिनों तक अपने अन्दर इसलिए छिपा रक्खा था कि मुसीबत के दिन

निकल जाने पर प्रकट किये जायेंगे। नहीं नहीं, अब मैं नहीं छिपा सकती ! बहिन कमलिनी, तू वास्तव में मेरी बहिन है, और सगी बहिन है, मैं तुझसे बड़ी हूँ, मेरा ही नाम लक्ष्मीदेवी है।

कमलिनी : (चौंककर और तारा को गले लगाकर) ओह ! मेरी प्यारी बहिन ! क्या वास्तव में तुम लक्ष्मीदेवी हो ?

तारा : हाँ, और यह विचित्र मनुष्य हमारा बाप है !

कमलिनी : हमारा बाप बलभद्रसिंह !!

तारा : हाँ, यही हमारे-तुम्हारे और लाडिली के बाप बलभद्रसिंह हैं। कमबख्त मायारानी की बदौलत मेरे साथ मेरे बाप भी कैदखाने की अँधेरी कोठरी में सड़ते रहे। हरामजादा दारोगा इस पर भी सन्तुष्ट न हुआ और उसने इनको जहर दे दिया, मगर ईश्वर ने एक सहायक भेज दिया, जिसकी बदौलत जान बच गयी। पर फिर भी उस जहर के तेज असर ने इनका बदन फोड़ दिया और रंग बिगाड़ दिया, बल्कि इस योग्य तक नहीं रक्खा कि तुम इन्हें पहिचान सको। इतना ही नहीं और भी बड़े-बड़े कष्ट भोगने पड़े। (रोकर) हाय ! अब मेरे कलेजे में दर्द हो रहा है। मैं उन मुसीबतों को बयान नहीं कर सकती ! तुम स्वयं अपने पिता ही से सब हाल पूछ लो, जिन्हें मैं कई वर्षों के बाद इस अवस्था में देख रही हूँ !

पाठक, आप समझ सकते हैं कि तारा की इन बातों ने कमलिनी के दिल पर क्या असर किया होगा, तेजसिंह और भैरोसिंह की क्या अवस्था हुई होगी और देवीसिंह कितने शर्मिन्दा हुए होंगे, जिन्होंने पत्थर मारकर उस विचित्र मनुष्य का सर तोड़ डाला था। कमलिनी दौड़ी हुई अपने बाप के पास गयी और उसके गले से चिपटकर रोने लगी। तेजसिंह भी लपककर उनके पास गये और लखलखे की डिबिया उनके नाक से लगायी। बलभद्र-सिंह होश में आकर उठ बैठे और ताज्जुब-भरी निगाहों से चारों तरफ देखने लगे। तारा, कमलिनी और लाडिली पर निगाह पड़ते ही, उद्योग करने पर भी न रुकनेवाले आँसू उनकी आँखों में डबडबा आये और उन्होंने कमलिनी की तरफ देखकर काँपती हुई आवाज में कहा, "क्या तारा ने मेरे या अपने विषय में कोई बात कही है ? तुम लोग जिस निगाह से मुझे देख रही हो उससे साफ मालूम होता है कि तारा ने मुझे पहिचान लिया और मेरे तथा अपने विषय में कुछ कहा है !!"

कमलिनी : (गद्गद होकर) जी हाँ, तारा ने अपना और आपका परिचय देकर मुझे बड़ा ही प्रसन्न किया है।

बलभद्र : तो बस, अब मैं अपने को क्योंकर छिपा सकता हूँ, और इस बात से क्योंकर इनकार कर सकता हूँ कि मैं तुम तीनों बहिनों का बाप हूँ।

आह ! मैं अपने दुश्मनों से अपना बदला स्वयं लेने की नीयत से थोड़े दिन तक और अपने को छिपाना चाहता था, मगर समय ने ऐसा करने न दिया ! खैर, मर्जी परमात्मा की ! अच्छा कमलिनी सच कहियो, क्या तुझे इस बात का गुमान भी था कि तेरा बाप जीता है ?

कमलिनी : मैं अफसोस के साथ कहती हूँ कि कई पितृपक्ष ऐसे बीत गये, जिसमें मैं आपके नाम तिलांजली दे चुकी हूँ, क्योंकि मुझे विश्वास दिलाया गया था कि हम लोगों के सर पर से हमारे प्यारे बाप का साया जाता रहा, और इस बात को भी एक जमाना गुजर गया। जो हो, मगर आज हमारी खुशी का अन्दाजा कोई भी नहीं कर सकता।

बलभद्रसिंह उठकर तारा के पास गये, जिसमें चलने-फिरने की ताकत अभी तक नहीं आयी थी, तारा उनके गले से लिपट गयी और फूट-फूटकर रोने लगी। उसके बाद लाडिली की नौबत आयी, और उसने भी रो-रोकर अपने कपड़े भिगोये और मायारानी को गालियाँ देती रही। आधे घण्टे तक यही हालत रही, अन्त में तेजसिंह ने सभों को समझा-बुझाकर शान्त किया और फिर बातचीत होने लगी।

देवी : (बलभद्रसिंह से) मैं आपसे माफी माँगता हूँ, मुझसे जोकुछ भूल हुई, वह अनजाने में हुई है !

बलभद्र : (हँसकर) नहीं नहीं, मुझे इस बात का रंज कुछ भी नहीं है, बल्कि सच तो यों है कि अब मुझे केवल आप ही लोगों का भरोसा रह गया, मगर अफसोस इतना ही है कि भूतनाथ आप लोगों का दोस्त है, और मैं उसे किसी तरह भी माफ नहीं कर सकता।

तेज : हम लोगों को बड़ा ही आश्चर्य हो रहा है और बिल्कुल समझ में नहीं आता कि आपके और भूतनाथ के बीच में किस बात की ऐंठन पड़ी हुई है।

बलभद्र : (तेजसिंह से) मालूम होता है कि अभी तक आपने वह गठरी नहीं खोली, जो आपने एक औरत के हाथ से छीनी थी, और जो इस समय भी मैं आपके पास देख रहा हूँ।

तेज : (गठरी दिखाकर) नहीं, मैंने इसे अभी तक नहीं खोला।

बलभद्र : तभी आप ऐसे पूछते हैं, अच्छा अब इसे खोलिए।

कमलिनी : वह औरत कौन थी ?

बलभद्र : उसका भी हाल मालूम हो जायगा, ज़रा सब्र करो ! (तेजसिंह से) हाँ, साहब अब वह गठरी खोलिए।

"बहुत अच्छा" कहकर तेजसिंह उठे और गठरी लिये हुए उस तरफ बढ गये, जहाँ किशोरी, कामिनी और तारा पड़ी थीं। इसके बाद सभों की

तरफ देखके बोले, "इस गठरी में क्या है, सो देखने के लिए सभों का जी बेचैन हो रहा होगा, बल्कि मैं कह सकता हूँ कि तारा सबसे ज्यादे बेचैन होगी, इसलिए मैं किशोरी, कामिनी और तारा ही के पास बैठकर यह गठरी खोलता हूँ, जिन्हें उठने और चलने में तकलीफ होगी, आइए आप लोग भी इसी जगह आ बैठिए।"

इतना कहकर तेजसिंह बैठ गये, बलभद्रसिंह उनके बगल में जा बैठे, और बाकी सभों ने तेजसिंह को इस तरह घेर लिया, जैसे किसी मदारी को खेल करते समय मनचले लड़के घेर लेते हैं। तेजसिंह ने गठरी खोली और सभों की निगाह उसके अन्दर की चीजों पर पड़ी।

इस गठरी में पीतल की एक छोटी-सी सन्दूकड़ी थी, जिसे कलमदान भी कह सकते हैं, और एक मुट्ठा कागजों का था। बलभद्रसिंह ने कहा, "पहिले इस कागज के मुट्ठे को खोलो।" तेजसिंह ने ऐसा ही किया और जब कागज का मुट्ठा खोला गया तो मालूम हुआ कि कई चीठियों को आपस में एक दूसरे के साथ जोड़के वह मुट्ठा तैयार किया गया है।

तेज : (मुट्ठा खोलते हुए) इसे शैतान की आँत कहें या विधाता की जन्मपत्री !

बलभद्र : (हँसकर) आप जो चाहें कह सकते हैं। इन चीठियों और पुर्जों को मैंने क्रम के साथ जोड़ा है, आप शुरू से एक-एक करके पढ़ना आरम्भ कीजिए।

तेज : बहुत अच्छा।

तेजसिंह ने पहिला पुर्जा पढ़ा, उसमें ऊपर की तरफ यह लिखा हुआ था—

"श्रीयुत् रघुबरसिंह योग्य लिखी हेलासिंह का राम राम।" और बाद में यह मजमून था—

"मेरे प्यारे दोस्त,

आपको मालूम है कि राजा गोपालसिंह की शादी बलभद्रसिंह की लड़की लक्ष्मीदेवी के साथ होनेवाली है, मगर मैं चाहता हूँ कि आप कृपा करके कोई ऐसा बन्दोबस्त करें, जिसमें वह शादी टूट जाय और उसके बदले में मेरी लड़की मुन्दर की शादी राजा गोपालसिंह के साथ हो जाय। अगर ऐसा हुआ तो मैं जन्म-भर आपका अहसान मानूंगा और जोकुछ आप कहेंगे करूँगा। मुझे आपकी दोस्ती पर बहुत भरोसा है। शुभम्।"

बलभद्र : लीजिए पहिले नम्बर की चीठी समाप्त !

तारा : रघुबरसिंह किसका नाम है ?

तेज : इस भूतनाथ का नाम रघुबरसिंह है, और नानक इसी का

आह ! मैं अपने दुश्मनों से अपना बदला स्वयं लेने की नीयत से थोड़े दिन तक और अपने को छिपाना चाहता था, मगर समय ने ऐसा करने न दिया ! खैर, मर्जी परमात्मा की ! अच्छा कमलिनी सच कहियो, क्या तुझे इस बात का गुमान भी था कि तेरा बाप जीता है ?

कमलिनी : मैं अफसोस के साथ कहती हूँ कि कई पितृपक्ष ऐसे बीत गये, जिसमें मैं आपके नाम तिलांजली दे चुकी हूँ, क्योंकि मुझे विश्वास दिलाया गया था कि हम लोगों के सर पर से हमारे प्यारे बाप का साया जाता रहा, और इस बात को भी एक जमाना गुजर गया। जो हो, मगर आज हमारी खुशी का अन्दाजा कोई भी नहीं कर सकता।

बलभद्रसिंह उठकर तारा के पास गये, जिसमें चलने-फिरने की ताकत अभी तक नहीं आयी थी, तारा उनके गले से लिपट गयी और फूट-फूटकर रोने लगी। उसके बाद लाडिली की नौबत आयी, और उसने भी रो-रोकर अपने कपड़े भिगोये और मायारानी को गालियाँ देती रही। आधे घण्टे तक यही हालत रही, अन्त में तेजसिंह ने सभों को समझा-बुझाकर शान्त किया और फिर बातचीत होने लगी।

देवी : (बलभद्रसिंह से) मैं आपसे माफी माँगता हूँ, मुझसे जोकुछ भूल हुई, वह अनजाने में हुई है !

बलभद्र : (हँसकर) नहीं नहीं, मुझे इस बात का रंज कुछ भी नहीं है, बल्कि सच तो यों है कि अब मुझे केवल आप ही लोगों का भरोसा रह गया, मगर अफसोस इतना ही है कि भूतनाथ आप लोगों का दोस्त है, और मैं उसे किसी तरह भी माफ नहीं कर सकता।

तेज : हम लोगों को बड़ा ही आश्चर्य हो रहा है और बिल्कुल समझ में नहीं आता कि आपके और भूतनाथ के बीच में किस बात की ऐंठन पड़ी हुई है।

बलभद्र : (तेजसिंह से) मालूम होता है कि अभी तक आपने वह गठरी नहीं खोली, जो आपने एक औरत के हाथ से छीनी थी, और जो इस समय भी मैं आपके पास देख रहा हूँ।

तेज : (गठरी दिखाकर) नहीं, मैंने इसे अभी तक नहीं खोला।

बलभद्र : तभी आप ऐसे पूछते हैं, अच्छा अब इसे खोलिए।

कमलिनी : वह औरत कौन थी ?

बलभद्र : उसका भी हाल मालूम हो जायगा, ज़रा सब्र करो ! (तेजसिंह से) हाँ, साहब अब वह गठरी खोलिए।

"बहुत अच्छा" कहकर तेजसिंह उठे और गठरी लिये हुए उस तरफ बढ गये, जहाँ किशोरी, कामिनी और तारा पड़ी थीं। इसके बाद सभों की

तरफ देखके बोले, "इस गठरी में क्या है, सो देखने के लिए सभों का जी बेचैन हो रहा होगा, बल्कि मैं कह सकता हूँ कि तारा सबसे ज्यादे बेचैन होगी, इसलिए मैं किशोरी, कामिनी और तारा ही के पास बैठकर यह गठरी खोलता हूँ, जिन्हें उठने और चलने में तकलीफ होगी, आइए आप लोग भी इसी जगह आ बैठिए।"

इतना कहकर तेजसिंह बैठ गये, बलभद्रसिंह उनके बगल में जा बैठे, और बाकी सभों ने तेजसिंह को इस तरह घेर लिया, जैसे किसी मदारी को खेल करते समय मनचले लड़के घेर लेते हैं। तेजसिंह ने गठरी खोली और सभों की निगाह उसके अन्दर की चीजों पर पड़ी।

इस गठरी में पीतल की एक छोटी-सी सन्दूकड़ी थी, जिसे कलमदान भी कह सकते हैं, और एक मुट्ठा कागजों का था। बलभद्रसिंह ने कहा, "पहिले इस कागज के मुट्ठे को खोलो।" तेजसिंह ने ऐसा ही किया और जब कागज का मुट्ठा खोला गया तो मालूम हुआ कि कई चीठियों को आपस में एक दूसरे के साथ जोड़के वह मुट्ठा तैयार किया गया है।

तेज : (मुट्ठा खोलते हुए) इसे शैतान की आँत कहें या विधाता की जन्मपत्री !

बलभद्र : (हँसकर) आप जो चाहें कह सकते हैं। इन चीठियों और पुर्जों को मैंने क्रम के साथ जोड़ा है, आप शुरू से एक-एक करके पढ़ना आरम्भ कीजिए।

तेज : बहुत अच्छा।

तेजसिंह ने पहिला पुर्जा पढ़ा, उसमें ऊपर की तरफ यह लिखा हुआ था—

"श्रीयुत् रघुबरसिंह योग्य लिखी हेलासिंह का राम राम।" और बाद में यह मजमून था—

"मेरे प्यारे दोस्त,

आपको मालूम है कि राजा गोपालसिंह की शादी बलभद्रसिंह की लड़की लक्ष्मीदेवी के साथ होनेवाली है, मगर मैं चाहता हूँ कि आप कृपा करके कोई ऐसा बन्दोबस्त करें, जिसमें वह शादी टूट जाय और उसके बदले में मेरी लड़की मुन्दर की शादी राजा गोपालसिंह के साथ हो जाय। अगर ऐसा हुआ तो मैं जन्म-भर आपका अहसान मानूंगा और जोकुछ आप कहेंगे करूँगा। मुझे आपकी दोस्ती पर बहुत भरोसा है। शुभम्।"

बलभद्र : लीजिए पहिले नम्बर की चीठी समाप्त !

तारा : रघुबरसिंह किसका नाम है ?

तेज : इस भूतनाथ का नाम रघुबरसिंह है, और नानक इसी का

लड़का है, (बलभद्रसिंह से) क्या हेलासिंह मायारानी के बाप का नाम है ?

बलभद्र : जी हाँ, और मायारानी का असल नाम मुन्दर है।

कमलिनी : अच्छा आगे पढ़िए।

तेजसिंह ने दूसरी चीठी पढ़ी। उसमें यह लिखा था—

"मेरे प्यारे दोस्त हेलासिंह,

आपका पत्र पहुँचा। मैं इस बात का उद्योग कर सकता हूँ, मगर इस काम में हद से ज्यादा मेहनत करनी पड़ेगी। खुल्लम-खुल्ला तो आपकी लड़की की शादी राजा गोपालसिंह से नहीं हो सकती, क्योंकि राजा गोपालसिंह को आपकी लड़की का विधवा होना मालूम है, हाँ, उनका दारोगा अगर हमारे साथ मिल जाय तो कोई तरकीब निकल सकती है, लेकिन उसमें भी यह कठिनाई है कि दारोगा लालची है, और आप गरीब हैं।

—रघुबरसिंह"

देवी : वाह वाह, भूतनाथ तो बड़ा शैतान मालूम होता है ! यह सब काँटे क्या उसी के बोये हुए हैं !

कमलिनी : मगर अफसोस है कि आप उसे अपना दोस्त बनाने के लिए कसम खा चुके हैं !

बलभद्र : मैं ठीक कहता हूँ कि थोड़ी देर बाद देवीसिंहजी को अपने किये पर पछताना पड़ेगा।

लाडिली : खैर, जो होगा देखा जायगा, आप तीसरी चीठी पढ़िए।

बलभद्र : मालूम नहीं है कि भूतनाथ की चीठी का जवाब हेलासिंह ने क्या दिया था, क्योंकि वह चीठी मेरे हाथ नहीं लगी। यह तीसरी चीठी जो आप पढ़ेंगे वह भी भूतनाथ ही की लिखी हुई है।

तेजसिंह तीसरी चीठी पढ़ने लगे। उसमें लिखा हुआ था—

"प्रियवर हेलासिंह,

आपने लिखा कि 'यद्यपि मुन्दर विधवा है और उसकी उम्र भी ज्यादे है परन्तु नाटी होने के सबब वह ज्यादे उम्र की मालूम नहीं पड़ती' ठीक है, मगर बहुत-सी बातें ऐसी हैं, जो औरों को चाहे मालूम न हों, मगर उससे किसी तरह छिपी नहीं रह सकतीं, जिसके साथ उसकी शादी होगी और इसी बात से राजा गोपालसिंह का दारोगा भी डरता है, मगर मैंने भविष्य के लिए उसके खयाल में ऐसे-ऐसे सरसब्ज बाग पैदा कर दिये हैं कि जिसकी बेसुध और मदहोश कर देनेवाली खुशबू को वह अभी से सूंघने लग गया है, तिस पर भी मैं इस बात का तुम्हें विश्वास दिलाता हूँ कि यह शादी प्रकट रूप से नहीं हो सकती। इसके लिए उस ब्याहवाले दिन ही कोई अनोखी चाल चलनी पडेगी। अस्तु, दारोगा साहब ने यह कहा है कि आज के आठवें

दिन गुरुवार को सन्ध्या समय दारोगा साहब के बँगले में आप उनसे मिलें, मैं भी वहाँ मौजूद रहूँगा फिर जो कुछ तै हो जाय वही ठीक है।

वही रघुबर।"

कमलिनी : मुझे यह नहीं मालूम था कि भूतनाथ के हाथ से ऐसे-ऐसे अनुचित कार्य हुए हैं। उसने यही कहा था कि मैं राजा बीरेन्द्रसिंह का दोषी हूँ और इस बात का सबूत मायारानी और उसकी सखी मनोरमा के कब्जे में है। जहाँ तक मुझसे बना मैंने भूतनाथ का पक्ष करके उन सबूतों को गारत कर दिया, मगर मैं हैरान थी कि भूतनाथ को धमकाने, कब्जे में रखने, या तबाह करने के लिए मायारानी ने इतने सबूत क्यों बटोर रक्खे हैं, या उसे भूतनाथ की परवाह इतनी क्यों हुई! मगर आज उस बात का असल भेद खुल गया। इस समय मालूम हो गया कि लक्ष्मीदेवी और गोपालसिंह के साथ दगा करने में भूतनाथ शरीक था, और इस बात का डर केवल भूतनाथ और दारोगा ही को नहीं था, बल्कि मायारानी को भी था और वह भी अपने को भूतनाथ और दारोगा के कब्जे में समझती थी। राजा गोपालसिंह को कैद करने के बाद यह डर और भी बढ़ गया होगा और भूतनाथ ने भी उसे कुछ डराया-धमकाया या रुपये वसूल करने के लिए तंग किया होगा, और उस समय भूतनाथ को अपने आधीन करने के लिए मायारानी ने यह कार्रवाई की होगी, अर्थात् भूतनाथ को राजा बीरेन्द्रसिंह का दोषी ठहराने के लिए बहुत से सबूत इकट्ठे किये होंगे।

भैरो : मैं भी यही सोचता हूँ।

तेज : निःसन्देह ऐसा ही है।

कमलिनी : ओफ ओह! अगर मैं पहिले ही ऐसा जान गयी होती तो भूतनाथ का इतना पक्ष न करती, और न उसे अपना साथी ही बनाती।

देवी : मगर इधर तो उसने आपके कामों में बड़ी मेहनत की है, इसलिए कुछ मुरौवत तो करनी पड़ेगी!

कमलिनी : नहीं नहीं, मैं उसका कसूर कभी माफ नहीं कर सकती, चाहे जो हो!

देवी : मगर फिर वह भी आप ही लोगों का दुश्मन हो जायगा। जहाँ तक मैं समझता हूँ, इस समय वह अपने किये पर आप पछता रहा है।

कमलिनी : जो हो, मगर यह कसूर ऐसा नहीं है, जिसे मैं माफ कर सकूँ। ओह, आह! क्रोध के मारे मेरा अजब हाल हो रहा है!

तेज : उसने कसूर भी भारी किया है।

बलभद्र : अभी क्या है, अभी तो कुछ देखा ही नहीं! उसने जो किया है, उसका हजारवाँ भाग भी अभी तक आपको मालूम नहीं हुआ है! जरा